Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साक्षात्कार

354-355
जून–जुलाई 2009

आपातकाल पर केन्द्रित

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नये प्रकाशन

साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, भोपाल

मजलिसे इक़बाल (भाग-11)
प्रधान संपादक देवेन्द्र दीपक, संपादक झम्मूं छुगाणी — 100.00

कुछ बात है
प्रधान संपादक देवेन्द्र दीपक, संपादक झम्मूं छुगाणी — नि:शुल्क

मजलिसे इक़बाल (भाग-12)
प्रधान संपादक देवेन्द्र दीपक, संपादक झम्मूं छुगाणी — 100.00

कलम दस्ता
प्रधान संपादक देवेन्द्र दीपक, संपादक झम्मूं छुगाणी, सहायक संपादक बद्र वास्ती — नि:शुल्क

निमाड़ी साहित्य का इतिहास
डॉ. श्रीराम परिहार — 100.00

मालवी साहित्य का इतिहास
डॉ. श्यामसुंदर निगम — 150.00

साक्षात्कार के नये विशेषांक

डॉ. रामकुमार वर्मा, डॉ. रामविलास शर्मा,
आपातकाल (जून-जुलाई 05, जून-अगस्त 06, जून-जुलाई 09)
प्रवासी भारतीय हिन्दी लेखन, प्रथम स्वतंत्रता संग्राम,
कश्मीर विस्थापन तथा नरेश मेहता पर केन्द्रित

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc No. 3799
Dated 11/12/2023

सलाहकार

मनोज श्रीवास्तव
सचिव, संस्कृति विभाग

श्रीराम तिवारी
संचालक, संस्कृति संचालनालय

देवेन्द्र दीपक
निदेशक / प्रधान संपादक
साहित्य अकादमी, भोपाल

हरि भटनागर
संपादक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साक्षात्कार

जून–जुलाई 2009
354-355

संपादन सहयोग : रामनिवास झा, श्रवण कुमार शर्मा, महेश प्रसाद सिंह

प्रूफ रीडिंग : मोहन सगोरिया

आवरण : 'धागों से बँधे घूमते' : राजाराम
(माध्यमः रंगीन कागज़ चस्पा काम)
एच-8 सप्तवर्णी सूर्या आवासीय परिसर,
कोलार मार्ग, भोपाल

रेखांकन : आर.एस. पगारे
ई-3/32, अरेरा कॉलोनी, भोपाल

सम्पादकीय एवं ग्राहकीय पत्र-व्यवहार : निदेशक / प्रधान सम्पादक, साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद, संस्कृति भवन, बाण गंगा, भोपाल-3, फ़ोन : 2554782, 2760486 (कार्यालय), फैक्सः 2557942 प्रधान संपादक / निदेशक : 9425679044 (मो.), 2495600 (निवास),

संपादक : 9424418567 (मो.), 0755-2493508 (निवास)
e-mail : sahitya_academy@yahoo.com

वार्षिक सदस्यता शुल्क

व्यक्तिगत ग्राहकों के लिए	:	150 रुपये
संस्थाओं के लिए	:	180 रुपये
आजीवन	:	1500 रुपये

यह अंक : 30 रुपये

समस्त चेक / बैंक ड्राफ्ट / मनीआर्डर 'निदेशक, साहित्य अकादमी, भोपाल' के नाम स्वीकार्य होंगे।

शब्द संयोजन : मुबश्शिर खान, राकेश सिंह

मुद्रण : शासकीय मुद्रण तथा लेखन सामग्री विभाग म.प्र., अरेरा हिल्स, मैदा मिल रोड, भोपाल. फोन : 2550931, 2551069

'साक्षात्कार' में प्रकाशित रचनाकारों के विचार अपने हैं। प्रधान संपादक / संपादक या साहित्य अकादमी का उनके विचार के प्रति सहमत होना आवश्यक नहीं है।

साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद का मासिक प्रकाशन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्रम

कविता

फणीश्वरनाथ रेणु / 7
अटल बिहारी वाजपेयी / 8
हंसराज रहबर / 11
विश्वनाथ प्रसाद तिवारी / 12
राजेन्द्र अनुरागी / 15
श्रीराम वर्मा / 19
रामदरश मिश्र / 22

कहानी

वल्लभ सिद्धार्थ / 24
रमेश शिवप्रसाद / 48

लेख

कमल किशोर गोयनका / 57
वामन राव पाठक / 61

वक्तव्य

उमाशंकर जोशी / 75
बल्देव वंशी / 80

संस्मरण

धनंजय वर्मा / 85
विष्णु पण्ड्या / 91
कन्हैया सिंह / 97
शिव बरूआ / 104
जगन सिंह / 111

कविता

रमानाथ अवस्थी / 119
श्रीकांत जोशी / 120
रमानाथ त्रिपाठी / 124
आशा रानी व्होरा / 125

संस्मरण

127 / शिवराजसिंह चौहान
129 / रामभुवन सिंह कुशवाह
138 / कप्तान सिंह सोलंकी
143 / घनश्याम सक्सेना
147 / संतोष कुमार शर्मा

पत्राचार

150 / शैवाल सत्यार्थी

कविता

153 / ज्योत्स्ना मिलन
154 / रॉबिन शॉ पुष्प
159 / बलदेव वंशी
164 / प्रकाश वैश्य
166 / बलवीर सिंह 'करुण'
170 / प्रेमशंकर रघुवंशी
185 / राजेन्द्र मिश्र
189 / सूर्यभानु गुप्त

लेख

192 / अरुण कुमार भगत
211 / उदय प्रताप सिंह

बहस

213 / प्रियंवद
215 / कृष्णदत्त पालीवाल

पाठक मंच

218 / आपातकाल की प्रतिनिधि कविताएँ
227 / जंगल चुपचाप

236 / चिट्ठी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

7 जून, विदिशा में आयोजित 'बेतवा उत्सव' से लौटते हुए सड़क दुर्घटना में चालक खेमचंद सहित कवि ओमप्रकाश 'आदित्य', नीरजपुरी और लाड़सिंह गुर्जर का देहावसान हो गया। 8 जून की सुबह रंगकर्मी हबीब तनवीर हमसे अलविदा कह गये। घायल कवि ओम व्यास 'ओम' भी माह भर मृत्यु से लड़ते हुए अंततः हार गए

'साक्षात्कार' परिवार और मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी की भावभीनी श्रद्धांजलि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रधान संपादक की क़लम से...

भारत में पुरा-आख्यानों का अक्षय भण्डार है। ये पुरा-आख्यान हमारी जातीय स्मृति का अभिन्न अंग हैं। इनमें जीवन और उससे जुड़ी विभिन्न समस्याओं के लिए सटीक समाधान हैं। इन पुरा-आख्यानों को बार-बार स्मरण करते रहना चाहिए। यदि हमारे कर्ता-धर्ता इन पुरा-आख्यानों को ध्यान में रखकर अपनी नीतियों का निर्धारण और कार्यान्वयन करें, तो उनकी अनेक बाधाएँ समाप्त होंगी। बाधाएँ समाप्त क्या होंगी, बाधाएँ खड़ी ही नहीं होंगी।

आपातकाल के संदर्भ में दो पुरा-आख्यान बड़े काम के हैं— भस्मासुर का आख्यान और हिरण्यकशिपु का आख्यान। हमारे शासक अपने तात्कालिक लाभ के लिए भस्मासुर पैदा करते हैं और भस्मासुर के काबू से बाहर होने पर दौड़ते फिरते हैं। उस समय तो विष्णु ने बचा लिया। अब विष्णु कहाँ?

हिरण्यकशिपु की अंधी आकांक्षा उसे पतन के सीमांत पर ले आई। यही सब कुछ प्रकारान्तर से आपातकाल की घोषणा और उसके बाद चुनाव की घोषणा के समय हुआ। 'काल पात्र' गाड़ने का विचार और उसका क्रियान्वयन आखिर क्या संकेत करता है?

आपातकाल की घोषणा और उसकी वापसी और उसके बाद हुए चुनावों के परिणामों ने यह सिद्ध कर दिया कि आपातकाल की घोषणा को भारत की जनता ने उचित नहीं माना। उचित नहीं माना, इतना भर नहीं। कहना चाहिए कि भारत की जनता ने तत्कालीन सत्ताधीशों को बुरी तरह दण्डित किया।

आपातकाल के दो पाठ हैं— सत्ता में रहकर शासकों को क्या करना चाहिए और विरोधियों को सत्ता में आने के बाद क्या नहीं करना चाहिए।

स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस की ही तरह आपातकाल के प्रसंग को भी बार-बार याद किया जाना चाहिए और देश, समाज, सत्ता और अभिव्यक्ति को लेकर अपने से प्रश्न करते रहना चाहिए।

साक्षात्कार में 2005 में जून के अंक में हमने आपातकाल सम्बन्धी कुछ सामग्री दी। जून 2006 में भी कुछ सामग्री दी। इन अंकों में प्रमुखता से नागार्जुन, धर्मवीर भारती, राजेन्द्र मिश्र, भवानी प्रसाद मिश्र, राजेन्द्र अनुरागी, जयकुमार जलज, हरीभाऊ जोशी, जगदीश तोमर, प्रेमशंकर रघुवंशी, श्याम बिहारीलाल शर्मा, राजेन्द्र माथुर, कुलदीप नैयर, दया प्रकाश सिन्हा, कमल किशोर गोयनका, कन्हैया सिंह, मायाराम सुरजन, नर्मदाप्रसाद त्रिपाठी, अरुण पलनीटकर, रामप्रकाश, प्रभाकर शर्मा, मंजु अग्रवाल, शैलेन्द्र श्रीवास्तव, शांता कुमार, अरुण भगत, शिव बरुआ, शैवाल सत्यार्थी, रमानाथ त्रिपाठी, दिवाकर वर्मा, कमलकांत सक्सेना, बिशन टंडन, अज्ञेय, बलवीर सिंह रंग, दुष्यंत कुमार, सत्यदेव शास्त्री भोंपू, धूमकेतु, रमेश माहेश्वरी, प्र.ग. सहस्त्रबुद्धे, माणिकचंद बाजपेयी आदि रचनाकारों को प्रकाशित किया है।

यह अंक जून-जुलाई का संयुक्त अंक है। इसमें आपातकाल पर कुछ सामग्री हम और दे रहे हैं।

इस अंक को तैयार करते-करते एक प्रसंग सामने आया। लघु पत्रिकाओं पर केन्द्रित आयोजन में भारत भवन में 13-14 जून 2009 प्रियंवद ने आपातकाल पर कुछ सवाल उठाए। पटना के 'नई धारा' के सम्पादक डॉ. शिवनारायण सिंह ने उसी सत्र में उनके कथन को चुनौती दी और अपने वक्तव्य में पटना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
के उदयराज सिंह के आपातकाल पर आधारित उपन्यास 'अँधेरे के विरुद्ध' की चर्चा की।

प्रियंवद का यही लेख **जनसत्ता** के 5 जुलाई 2009 के अंक में छपा। इस लेख के उत्तर में **जनसत्ता** के 26 जुलाई के अंक में डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल का एक लेख छपा। प्रियंवद के लेख के आपातकाल विषयक अंश और डॉ. पालीवाल के लेख दोनों को हम साक्षात्कार के इस अंक में प्रकाशित कर रहे हैं।

आपातकाल की घोषणा का समर्थन करनेवालों में प्रमुख नाम थे सर्वश्री **डॉ. भगवतशरण उपाध्याय, कैफ़ी आज़मी, गुलाम रब्बानी तांबा, डॉ. मोहन सिंह, केदारनाथ अग्रवाल, कालिंदी चरण, पाणिग्रही, डॉ. नामवर सिंह, हबीब तनवीर, शमशेर बहादुर सिंह, कमलेश्वर, कामतानाथ, मोहन श्रोत्रिय, तरुण सान्याल, भीष्म साहनी, करणजीत सिंह, सरदार अली ज़ाफरी।**

आपातकाल के समर्थन में अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक महासंघ की 12–13 अगस्त 1975 को दिल्ली में बैठक हुई। उस बैठक की रपट पहल–5 में छपी है। * इस सूची का आधार यह रपट ही है। मध्यप्रदेश में डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन', हरिशंकर परसाई, श्रीकांत वर्मा आपातकाल के प्रमुख समर्थक थे। दिल्ली में बच्चन जी को समर्थन चर्चा में रहा।

इस अंक में हम मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान का लेख भी प्रकाशित कर रहे हैं। प्रो. कप्तानसिंह सोलंकी का लेख भी इस अंक में है। आपातकाल के विरोध में लिखनेवालों की मंशा पर संदेह करने वाले यह तो जानते ही होंगे कि आपातकाल के समर्थन में क्या कुछ होता रहा। धनंजय वर्मा का लेख उस पर कुछ रोशनी डालता है।

इस अंक को अन्तिम रूप देने में श्री आनंद सिन्हा ने सहयोग दिया। अगस्त अंक से श्री आनंद सिन्हा साक्षात्कार के सम्पादक रहेंगे। श्री आनंद सिन्हा पूर्व में 'कला वार्ता' का सम्पादन करते रहे हैं।

— डॉ. देवेन्द्र दीपक

---

* मुख्य प्रस्ताव था—वर्तमान स्थिति और लेखक की भूमिका। प्रस्ताव महासंघ के महासचिव भीष्म साहनी ने रखा। प्रस्ताव में जहाँ एक ओर आपात स्थिति का स्वागत किया गया वहाँ इस बात को भी रेखांकित किया गया कि अगर आपात स्थिति की घोषणा में एक दिन की भी देरी हो जाती तो देश के भीतर की प्रतिक्रियावादी ताकतें बाहर की नवउपनिवेशवादी ताकतों के साथ सांठगांठ करके देश को अराजकता की स्थिति में फेंक देतीं। सरकार की चुस्त व सुदृढ़ कार्रवाई ने उस संकट को फौरी तौर पर ढाल दिया जो देश को एक बहुत ही खतरनाक स्थिति में डाल सकता था।

प्रस्ताव में प्रधानमन्त्री द्वारा घोषित बीस सूत्रीय कार्यक्रम का स्वागत करते हुए यह विश्वास प्रकट किया गया कि इस कार्यक्रम पर निष्ठापूर्वक अमल होने से गरीब तबकों को राहत मिलेगी जो कि बेहद ज़रूरी है। कार्यक्रम के अमल के सम्बन्ध में यह अनुभव किया गया कि जनता की सक्रिय व घनिष्ठ भागीदारी से ही इसकी सही तामील हो सकती है। अगर इसके क्रियान्वयन को शुद्ध रूप से अफसरशाही पर ही छोड़ दिया गया तो जो कुछ अब तक हासिल हुआ है वह इस मायने से रद्द हो सकता है कि कुछ पुरानी बुराइयाँ वापिस पनप सकती हैं और खतरनाक स्थिति पैदा कर सकती हैं। इस बात पर प्रसन्नता जाहिर की गई कि साम्प्रदायिक व नव फासिस्ट ताकतों पर सही वक़्त पर अंकुश लगाकर दूरंदेशी का परिचय दिया गया। ये काली ताकतें और संगठन देश के जीवन के हर क्षेत्र में अपने जहरीले असर को फैला रही थीं।

प्रस्ताव में आगे कहा गया है कि शिक्षा, संस्कृति, सूचना और प्रसारण के क्षेत्रों में भी इसी तरह के निर्णायक कदम उठाए जाने चाहिए। निहित स्वार्थ इनका इस्तेमाल जनता के मनोबल को कमजोर करने को कर रहे हैं। पाठ्य पुस्तकों, प्रकाशनों, फिल्मों रेडियो, टेलीविजन कार्यक्रमों को जनहित में ढालने के लिए उसकी काँट छाँट की ज़रूरत है। महसूस किया गया है कि यह बेहद महत्त्वपूर्ण कार्य प्रबुद्ध और प्रतिबद्ध लेखकों की सक्रिय भागीदारी के बिना पूरा नहीं हो सकता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फणीश्वरनाथ रेणु

इमरजेंसी : दोहरी त्रासदी

इस ब्लॉक के मुख्य प्रवेश द्वार के सामने
हर मौसम आकर ठिठक जाता है, सड़क के उस पार
चुपचाप दोनों हाथ
बगल में दबाये साँस रोके, ख़ामोश
इमली के शाखों पर हवा
'ब्लाक' के अंदर एक ही ऋतु
हर 'वार्ड' में बारहों मास, हर रात रोती काली बिल्ली
हर दिन प्रयोगशाला से बाहर फेंकी हुई —
रक्त रंजित सुफेद खरगोश की लाश
'ईथर' की गंध से ऊँघती ज़िंदगी —
रोज का यह सवाल, 'कहिये! अब कैसे हैं?'
रोज का यह जवाब, ठीक है! सिर्फ कमजोरी
थोड़ी खाँसी और... तनिक-सा... यहाँ पर... मीठा-मीठा दर्द!
इमरजेंसी वार्ड की ट्रालियाँ हड़हड़-खड़खड़ करती
ऑपरेशन थियेटर से निकलती हैं — इमरजेंसी!
सेलाइन और रक्त की बोतलों में ज़िंदगी —
रोग-मुक्त, किंतु, बेहोश काया में
बूँद-बूँद टपकती रहती है — इमरजेंसी!
सहसा मुख्य-द्वार पर ठिठके हुए मौसम
और तमाम चुपचाप हवाएँ एक साथ
मुखर और प्रसन्न शुभकामना के स्वर-इमरजेंसी!

(स्व. फणीश्वरनाथ रेणु की, उन्हीं के हस्तलेख में वह कविता, जिसे श्री जुगनू शारदेय ने धर्मयुग को देते हुए बताया कि अस्पताल के इमरजेंसी वार्ड में पड़े श्री रेणु के लिए इमरजेंसी के दो अर्थ हो चुके थे और इसलिए वह उनके लिए दोहरी त्रासदी बन चुकी थी — धर्मयुग 26 जून 1977 से साभार)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अटल बिहारी वाजपेयी

अनुशासन पर्व

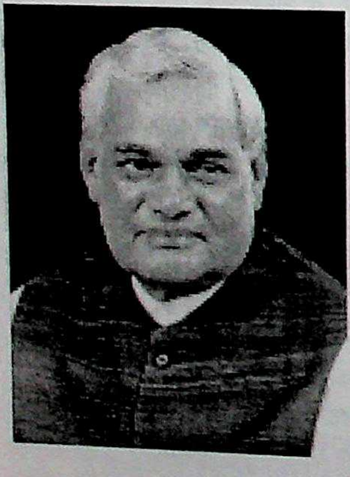

अनुशासन का पर्व है,
बाबा का उपदेश;
हवालात की हवा भी
देती यह संदेश;
देती यह संदेश,
राज डंडे से चलता;
जज हज करने जाएँ,
रोज क़ानून बदलता;
यह कैदी कविराय,
शोर है अनुशासन का;
लेकिन ज़ोर दिखाई
देता दुःशासन का!

मातृपूजा प्रतिबंधित

अनुशासन के नाम पर,
अनुशासन का खून;
भंग कर दिया संघ को,
कैसा चढ़ा जुनून;
कैसा चढ़ा जुनून,
मातृपूजा प्रतिबंधित;

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुलटा करती केशव —
कुल की कीर्ति कलंकित;
यह कैदी कविराय,
तोड़ कानूनी कारा;
गूँजेगा भारत माता,
की जय का नारा।

करो पूत परसन्न

बीस सूत्र रटते रहो,
बेड़ा होगा पार;
अंधा बाँटे रेवड़ी,
लेना हाथ पसार;
लेना हाथ पसार,
न देना फूटी कौड़ी;
खूब लगाओ पेड़,
कराओ सड़कें चौड़ी;
कह कैदी कविराय,
मिलेगी मनसबदारी;
करो पूत परसन्न,
मनाओ या महतारी।

मीसा मंत्र महान

दोषी औ' निर्दोष में,
जिसकी दृष्टि समान;
वीजा है वह जेल का,
मीसा मंत्र महान;
मीसा मंत्र महान,
राजगद्दी का रक्षक;
इंद्राणी को लेकर,
स्वाहा होगा तक्षक;
कह कैदी कविराय,
मार मीसा की मारी;
रौलट की संतान,
त्रस्त है जनता सारी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छोटे सरकार

सब सरकारों से बड़े,
हैं छोटे सरकार;
गड्डी जिनकी चढ़ रही,
दिल्ली के दरबार;
दिल्ली के दरबार,
बुढ़ापा खिसियाता है;
पूत सवाया सिंहासन
चढ़ता आता है;
कह कैदी कविराय,
लोकशाही की छुट्टी;
बेटा राज करेगा,
पीकर मुगली घुट्टी

पुनः चमकेगा दिनकर

आज़ादी का दिन मना,
नई गुलामी बीच;
सूखी धरती, सूना अंबर,
मन आँगन में कीच;
मन आँगन में कीच,
कमल सारे मुरझाए;
एक-एक कर बुझे दीप,
अंधियारे छाए;
कह कैदी कविराय,
न अपना छोटा जी कर;
चीर निशा का वक्ष,
पुनः चमकेगा दिनकर।

— 6-ए, कृष्णा मेनन मार्ग,
नई दिल्ली

(कैदी कविराय की कुण्डलियाँ से साभार)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हंसराज रहबर

ग़ज़ल

वह झुठलाता फिरे दावा हमारा।
समझ पाएगा कब नुक़्ता हमारा।

तुम्हारी बदगुमानी बेसबब है
नहीं हरगिज था यह मंशा हमारा।

सितमगर हो गया दुनिया में रुसवा
सितम सह कर बढ़ा रुतबा हमारा।

हमारी बात कुछ मत पूछिएगा
हर इक महफिल में है चर्चा हमारा।

उनासर [1] मुख़ालिफ यों कैद होंगे
ख़याल ऐसा कभी था क्या हमारा?

अगर अब इत्तफाकन हैं इकट्ठे
ज़रा सोचे हो क्या रस्ता हमारा?

किसी बदजौक [2] से सोहबत है रहबर
वह क्या समझेगा अफसाना हमारा।

(काला इतिहास से साभार)

1. तत्त्व,
2. कुत्सित

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

यह सन्नाटा

कैसे टूटेगा यह सन्नाटा
जो एक भयानक तूफान के बाद
हमारे चेहरों पर उतर आया है

सुरंगों में घिर गये हैं सहयात्री
ख़ामोश हो गई हैं मन्दिरों की घंटियाँ
एक हाथी मरा पड़ा है न्यायालय के कठघरे में
बाहर कोई पत्ता तक नहीं हिलता

केवल अँधेरा है
जो आहिस्ते-आहिस्ते
फैलता जा रहा है कमरे में
और बाहर रेतीले तट पर
जहाँ शिथिल हो गया है सागर
और हवाओं में चीखने की ताक़त नहीं रह गई है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सही भाषा

अभी-अभी लौटा हूँ उस अन्धकार से
जहाँ वे पूछते थे तुम्हारे शब्दों के अर्थ
उन्हें कैसे समझाता
कि शब्द अर्थ ही होता है
या फिर व्यर्थ होता है

उन्होंने उन फैसलों के नहीं समझा
जिन्हें तुमने अपनी रोशनी में लिखा था
और वे अपने अन्धकार में कराहते हुए ठंडे हो गये
ईश्वर को पुकारते और भद्दी गालियाँ बकते हुए
तुम मेरी आँखों में अब भी उन्हें देख सकते हो
उनमें वे अनकहे शब्द हैं
जो मरते समय उनकी जुबान पर थे

तुम चाहो तो उस अन्धकार की ओर लौट सकते हो
जिसमें वे अपने बाल-बच्चों सहित खो गये
उस अन्धकार में असंख्य ध्वनियाँ हैं
उस मिट्टी, पानी, धूप, हवा तक पहुँचाने के लिए
जहाँ सही भाषा बनती है
और कोश और परिभाषाएँ

हमारी घाटी

हमारी घाटी हमें वापस कर दो
वापस कर दो हमारी घाटी
तुम नहीं समझ सकते
ओस में भीगी चट्टानों का दर्द
न उस संगीत को
जब दूधिया चाँदनी में धुल जाता है जंगल
तारों-भरी रात में फूल झरते हैं
और काँपती हवाओं
हिलती वनस्पतियों के बीच
हम एक दूसरे के लिए
भोर तक प्रतीक्षा करते हैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सीमाएँ

अक्सर मैं उन्हीं-उन्हीं मोर्चों पर छोड़ दिया जाता हूँ
जहाँ कोई नहीं होता
सिर्फ मेरी सीमाएँ होती हैं
एक कटीला तार होता है
और उससे लटकती एक तख्ती
जिस पर लिखा होता है 'निषिद्ध क्षेत्र'

सीमान्त की एक खूबसूरत सड़क
रेखाओं को तोड़ती
एक गहरे कटाव को जोड़ती हुई निकल जाती है
चेकपोस्ट पर एक सिपाही आता है
रोक कर वीसा माँगता है

बीच में एक कटा हुआ फासला होता है
जिसमें गर्जन करता है क्षुब्ध सागर
हवाएँ चीखती हैं

तट से बँधी हुई नावें डगमगाती-टकराती हैं
एक मल्लाह देखता रहता है
एक समुद्री चिड़िया उड़ती है
और उड़ती रहती है

एक भरी हुई नाव

ऊँची घासदार ढलानों से
देखता हूँ नीचे
दूर-दूर जंगल
और सोई हुई घाटी
जैसे एक भरी हुई नाव
धीरे-धीरे डूब रही हो

— बेतियाहाता
गोरखपुर-273001

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राजेन्द्र अनुरागी

वे लोक नायक को देखने गईं

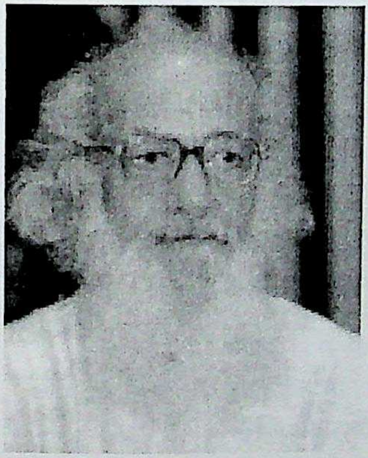

मैडम तानाशाही
भी कल जे.पी. को देखने जसलोक गईं
और खिड़की के काँच से देखा
एक बूढ़ा मौन
जो तब मुखर हुआ था
जब बाकी सब मौन थे
मैडम अच्छी तरह से जानती हैं
कि वे कौन थे?
जो तभी लोक नायक की अंत्येष्टि का
इन्तज़ाम कर रहे थे
और निरपराध लोगों के खून से
अपने जाम भर रहे थे
मैडम आज क्या देखना चाहती हैं
यह, कि आखिर यह बूढ़ा इतने दिन कैसे जी लिया?
बावजूद उन सारी ज़्यादतियों के
जिन्हें हरियाणा जेल में जे.पी. ने भुगता था
कैसे हैं गुर्दे वे,
जो इतने दिन पचाए रहे
रेडियम की आग
और पिघले नहीं,
(काश, ये छोटीकार के मेटल में ढल पाते —

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चमड़े की मशक के ये सिक्के ही चल जाते)
मैडम यह हुआ नहीं
दधीचि की हड्डियों के वज्र से
वृत्रासुर फिर मारा गया
पराभूत हुई कुनबाई तानाशाही
पंचों ने वापस पाई
फिर अपनी प्रभु सत्ता।
और मृत तानाशाही की
प्रेत छाया सी तुम
अभी भी सवार हो उन लोगों पर
जो भीतर से कमजोर हैं
और पूरी तरह तुम्हारे कब्जे में है
या फिर कुछ उन पर भी
जिनके सिरों पर सिर्फ जब तुम आ जाती हो
तभी वे बिफरते हैं
बाकी चुप रहते हैं, जाने क्या करते हैं
कुछ को भय है, अपना अस्तित्व खो जाने का
और ये खुद को बनाए रखने के लिए
तुम्हें बनाए रखना चाहते हैं
भुतही हो गई है मेरे देश की राजनीति
इतिहास चक्र चिन्तन को
सर्कस के जोकर में
और एक आत्म मानवता
पोखर में ढूँढ़ती है
ये कभी इसे तो कभी उसे मूँडती है
कोई ओझा - गुनिया नहीं
जो कील दे प्रेत छाया को
और मेरे देश की राजनीति को
इन भूतों से मुक्त करे;
वर्तमान जीने दे।
वर्द्धमान जीने दे।

कालपात्र

वे आलेख, आज जिनको हम
इतिहासी आधार मानते,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खुले खज़ाने लिखे गए थे, चौराहों पर
शिलालेख में,
जो भी चाहें, चलें, देख लें,
हर पीढ़ी पढ़ती थी, खुद गवाह होती थी
किंवदन्तियों की भी एक थाह होती थी,
जिसके नीचे कहीं कोई तो ठोस सत्य का तल होता था
'आज' जिसे पहिचान चुका हो, ऐसा कोई 'कल' होता था

वर्तमान का पत्र, अनिश्चित भविष्यतों को
गोपनीय नस्ती-सा बन्द कैपसूलों में
गिना जाएगा कल जो इतिहासी भूलों में,
उसमें अपने वर्तमान की कैसी-क्या तस्वीर बन्द है,
रीति गागर-सा कवि का युग-बोध छन्द है

इतिहासों के हल के बदले
प्रश्नचिह्न मंजूषा बो दी
ताला लगा दिया सूरज पर
अंधियारे में चाबी खो दी

सावधान

एक बीस अँगुलियों वाला हाथ
फिर फिर कर लहरों से ऊपर उठता है
और बुलाता है उन लोगों को
जो एक टूटे हुए जहाज़ के पटियों पर बैठे हैं
और खो रहे हैं उसे नाव की तरह
किनारे की ओर

लहरों से ऊपर उठ कर
आकर्षक मुद्रा में हिल रहे हाथ की
बीसों अँगुलियों में रतनजड़ी अँगूठियाँ हैं
जो बाहर से जगमगा रही हैं
लेकिन भीतर की ओर छुपे हैं बाघनख
हत्यारे, खून सने

ग़ौर से देखो ज़रा
लहरों से ऊपर उठा हुआ वह आकर्षक हाथ
कहीं किसी धड़ से जुड़ा ही नहीं है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कटे हुए उस आकर्षक हाथ को
थामे हुए हैं अनेक खून लगी जिह्वाएँ
और उन्हीं के लपलपाने से
हिल रहा है वह बीस अँगुलियों वाला हाथ
फिर फिर कर लहरों से ऊपर उठता है
और बुलाता है उन लोगों को
जो एक टूटे हुए जहाज़ के पटियों पर बैठे हैं
और खे रहे हैं उसे नाव की तरह
किनारे की ओर

कालरात्रि का अन्तिम प्रहर

प्रजातंत्र के गलत पटवारी से लिखवा ली
अपने और अपने खानदान के नाम
दो हज़ार मील लम्बी और दो हज़ार मील चौड़ी ज़मीन
और फिर मुड़कर भी नहीं देखा
कि तुम्हारे सत्ता बूटों के निशान
निरपराध बच्चों के खून से भर गए हैं

ओ बहेलिए तानाशाह,
तू कैसा भी मोहिनीअट्टम करते हुए आ
हम तुझे पहचान लेते हैं
और फिर देते हैं आवाज़
जो सिर्फ तू भर नहीं सुन पाता
बाकी सब सुन लेते हैं
और फिर वे उड़ते हैं एक साथ
तेरा समूचा जाल अपनी नन्हीं नन्हीं अँगुलियों में थामे हुए
और मुक्त हो जाते हैं
रह जाता है फ़क़त उनके बाएँ हाथ की तर्जनी अँगुली पर
एक छोटा-सा निशान
उनकी शक्ति का प्रतीक
यही निशान अँगुलियों अँगुलियों में फैलता जाता है
और जन्म लेती है शक्ति,
लक्ष भुजा, कोटि नेत्रा, कैलाशमिव दुर्द्धषीय; कालाग्निमिव दुस्सहा
या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता
जय जनता, जय जनता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्रीराम वर्मा

चार सौ साल बाद पृथ्वीराज * का पत्र

जहाँ हमारी आस्था अनंतता को छूती है
गहिरतर जलता एक दीया है वहाँ
जिसका नाम हल्दीघाटी है

एक लौ जिसे हम महाराणा के नाम से जानते हैं
हमारी आत्मा के भूगोल और हमारे इतिहास की आत्मा में
लप-लप लोलायमान दिप-दिप जलती है अनवरत

मेरे देशवासियो
गुजर जाएँगी काल-वाहिनियाँ
हमें चुका नहीं पाएँगी
हमारा अतीत सिर्फ विराट् का मन:पूत संस्मरण नहीं,
हमारे कर्पूरगौर वर्तमान का दृष्टिपूत प्रस्थान-बिन्दु है

मेरे देशवासियो
हजार-हजार चेतकों से कुछ नहीं होगा,
जब तक हमारी निगाहें महज हौदे और सवार पर रहेंगी

* शिवाजी के काल का एक संत कवि, जो तत्कालीन मुस्लिम शासक के दरबार में था और जिसने शिवाजी के संधि-पत्र को जाली बताकर शिवाजी को दृढ़ रहने के लिए पत्र लिखा था। उसने भारतीय अस्मिता को इस तरह बचा लिया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देशवासियो मेरे
सूँड़ से लटकती तलवार पर
नज़र रखो और अडिग रहो
आत्मानुशासन में

मत बेचो अपने को;
सपने को

घास की रोटी और जंगलों की खाक
हमें हजार पराधीनताओं से अलग
मुक्ति के मयूरासन पर प्रतिष्ठित करती है

और निरीहताएँ, सिर्फ निरीहताएँ
बनबिलावों को जन्म देती है

एक बरायनाम शिशु का रुदन
स्वतंत्रता का भक्षक नहीं
अयोध्या-आत्मा के स्थापत्य का तक्षक है

देखो, मेरे देशवासियो, देखो
यह आसमान किसी भील की तरह
आज भी तुम्हारा सहचर है
— तुम्हारे यज्ञों के उठे हुए धुएँ से
सुगंधि— नील आसमान —

ये हल्दिया रेत लो, उठाओ
और आत्मा तक जलती
उस लौ के सामने ले जाओ
और दीप्ति दो ऐसी कि
वह रेत सितारों की तरह चमक उठे
यानी कि चार सौ साल पहले का
एक भील पृषदश्व
आसमान हो उठे

सर्वभुक् यह जाति केवल पीला सुनसान नहीं
मूल्यों की कमाई हुई कसौटी है
इस कसौटी पर अपने को कसते रहो;
पसीने को सहते रहो गहन तक दूसरों से
थहते रहो, कोसते रहो दूसरों को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वैसे कोसने को तुम निकलते सूर्य को देखोगे:
गुफा के द्वार पर
तुम्हें भील-शिशु का कटा सर याद आएगा

तुम चाँद भी देखोगे कोसने को:
तुम्हें उसकी रोटियाँ याद आएँगी

स्वतंत्रता के उज्ज्वल तुरंगो,
वलयाकार हरे रोमांच-सी पवित्री में प्राण अटके हैं
समाधि से जागो मेरे उपनिषद प्रतापी सूर्यो!
काल नदी का यज्ञोपवीत धारे
देश गति के लिए स्थगित है
और दृष्टि के लिए भी नीलाकमल नहीं,
तीसरे आयाम की ज़रूरत है

(काला इतिहास से साभार)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रामदरश मिश्र

चिड़ियाघर

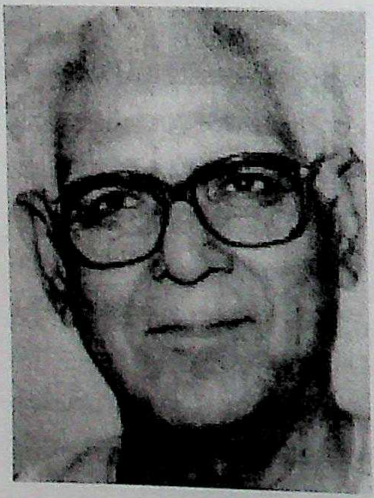

भालू हाथ जोड़कर मूँगफली माँगता रहा
पाने पर एक लंबा सलाम दागता रहा
बंदर उछलते-कूदते रहे
किलकिलाते रहे
चने के दाने बीन-बीन खाते रहे
हाथी हौदे से सजधज कर
पीठ पर बच्चों को घुमाता रहा
और अंकुश के नीचे गजराज कहाता रहा
गैंडा नाले के पार
मस्ती से घास खाता रहा
दर्शकों को देखकर थूथन हिलाता रहा
लेकिन इस शेर को क्या हुआ
पिंजड़े में चुपचाप बैठा रहा
दर्शक तालियाँ बजाते रहे
किंतु वह अपने में खोया
अपमान से ऐंठा रहा
एक ने कंकड़ फेंका, एक ने गाली दी
एक ने सीटी मारी, एक ने ताली दी
खिंच गई जलती-सी एक रेखा
फिर एक जँभाई लेकर वह भीतर चला गया
जैसे भीड़ से कहा गया हो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
ओ लीला-धर्मी महान आत्माओ
तमाशा देखने शेरों के पास नहीं जाया करते
जाओ, सर्कस के जोकरों के पास जाओ

पतझर की हवाएँ

हवाओं से कौन कहे
कि वे इतना शोर न करें
बसंत पर संवाद के लिए
उठे हुए पेड़ों के स्वर
बीच ही में डूबे जा रहे हैं
खालीपन का एक जल-चक्र
लगातार चक्कर काट रहा है उनके बीच
और जंगल का हर दिन
पेपरवेट से दबे पन्ने की तरह
अपनी जगह फड़फड़ाता है
हवाओं से कौन कहे
कि धूल उड़ाने से
या कि मुनादी करने से
बसंत का आना नहीं जाना जाता
जमे हुए शून्य और भीगे अंधकार से
लगातार टकराते
फूलों और किरणों के संगीत से बनता है
और जब वह आता है
तो पूरी धरती अपने आप गा उठती है
ओह बसंत आ गया
और स्वयं उद्धत-वाचाल हवाएँ
नए मकरंद से नत-मौन हो
सबके बीच सेतु बन जाती हैं
लेकिन हवाओं से कौन कहे
आखिर हवाएँ तो हवाएँ हैं

(काला इतिहास से साभार)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वल्लभ सिद्धार्थ

ब्लैक-आउट

एक : चीख़ उर्फ बगावत उर्फ़ नेमेमिस

'नहीं ई ई ई ...'

वह एक घुटी हुई मगर तेज, धारदार और चमचमाती हुई आवाज़ थी। अपनी सम्पूर्ण दहशत और नफरत और प्रतिकार के साथ अपनी असहायता में खिंची हुई, जैसी कि किसी बर्बर आततायी द्वारा अपने प्रतिरोध को पूरी हिंसा से कुचल देने से निकल सकती है... एक खौफ, हिकारत, शर्म और ठण्डी बारूद की तरह रोम-रोम से जिस्म के अन्दर धँसती, थरथराती हुई, एक लम्बी ची-त्का-र...।

धूल से भरे नीम-अंधेरे कोने में बुत की तरह बेजुम्बिश मगर सन्नद्ध बॉक्सर की मुद्रा में खड़े हुए जीनियस के शरीर में तेज़ी से हरकत हुई थी। उसने आश्चर्यजनक फुर्ती से अपने चेहरे को दायीं मुट्ठी की गार्ड में लेकर, बायीं से उस तरफ की हवा पर तीन-चार भरपूर प्रहार किये थे। कुछ हिस्टीरिकल तरीके से... (बाहर से, वह बजाय चीख की वजह से, खुद चीख के खिलाफ़ लड़ता नज़र आ रहा था) और फिर दरवाजे से झूलते टाट के पर्दे की तरफ टकटकी बाँधकर देखता हुआ उसी सन्नद्ध बेजुम्बिशी की मुद्रा में खड़ा हो गया था।

'ओय शाबाश! शाबाश, मेरे मिट्टी के शेर! दरवाजे पर झूलते टाट के पर्दे के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
आगे, पर्दे के पीछे होने वाली घटना की मुस्तैदी से चौकसी कर रहे नेता ने बारी-बारी से अपने दोनों पैरों पर झूलते हुए ताली बजायी थी और भरपूर मनोरंजन पाने के अन्दाज़ में खुलकर, एक ताकतवर हँसी हँसने लगा था। उसका ताली बजाने का तरीका पर्दे के पीछे आने वाली चीख को बगावत, और उसकी हँसी चीख के पक्ष में की जाने वाली किसी भी कोशिश को एक निहायत बेवकूफाना काम घोषित कर रही थी। उसके चेहरे पर लोमड़ी जैसा एक गहरा षड्यन्त्रकारी भाव था। जैसे चीख़ के खिलाफ होने में उसका कोई चुपचाप फायदा हो, जिसकी हिफाज़त के लिए वह अपनी सम्पूर्ण प्रशासन-समर्थक शक्ति के साथ टूट पड़ेगा।

यों अभी तक वह खुद भी हमारी ओर से आश्वस्त नहीं था और हमारी सम्भावित प्रतिक्रिया को लेकर चौकन्नेपन से भरा हुआ था... भाँप रहा था कि हम वहाँ पर कौन, क्या और किसलिये हो सकते हैं। पर अब जीनियस के रबड़ के पुतले की तरह हवा में मुट्ठियाँ भाँजने और मेरी सायास चुप्पी से उसने समझ लिया था कि हमें अलग-अलग या एकसाथ खतरनाक होने जैसी गम्भीरता से नहीं लिया जा सकता।

'चीयरियो...' उसने जीनियस को उकसाने की गरज से फिर ताली बजाते हुए कहा था। काफी बेफिक्र स्वर में, और झूमने लगा था। खाकी-कद्दावर ने चम्पा के साथ पर्दे के पीछे होने के पहले जेब से एक खूबसूरत बोतल निकाल कर नेता के साथ पी थी। हमारी ओर से निश्चिन्त होने के साथ अब उसको चढ़ने लगी थी।

कोने में खड़े जीनियस का चेहरा, शरीर के जोड़ों को कँपा देने वाली सर्दी के बावजूद पसीने से तर-बतर हो रहा था। अपनी मुट्ठियों को सँभाले रखने में उसे टनों शक्ति लगानी पड़ रही थी। उसकी तमाम कोशिश के बावजूद उसकी युयुत्सु-मुद्रा का उसके चेहरे पर व्यक्त 'डैस्पैरेशन' के साथ कोई ताल-मेल नहीं बैठ रहा था। वह एक साथ दो परस्पर विरोधी व्यक्ति नज़र आ रहा था —'डॉन क्विक्जट'... लेकिन बावजूद इसके स्पष्ट था कि उसका बहुत कुछ दाँव पर लग चुका है जिसके लिए वह आखिरी दम तक संघर्ष करेगा... हालाँकि पता नहीं किस तरीके से।

'बक-अप मिस्टर अपोजीशन...!' इस बार नेता ने उसकी ओर एक कंकड़ी फेंकी थी।

जैसे चौंककर जीनियस ने फिर हवा में मुट्ठियाँ फेंकी थीं। नेता ने दोनों पैरों को फैलाकर कमर पर हाथ रख लिये थे और ठठाकर हँसने लगा था।

जीनियस हास्यास्पद दिख रहा था।

जीनियस उन लोगों में से है जिन्हें चर्म यातना के क्षणों में उनका डिफेन्स-मिकेनिज्म एक विदूषक बना देता है।

●

काफी देर तक अकेले-अकेले हँस चुकने के बाद, नेता ने थोड़ी-सी खीज के साथ मेरी ओर देखा था। मेरी तटस्थता से, उसका यह सोचना, जैसा कि जनता के बारे में उसका तजुर्बा था, कि अब

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
मैं खुद-ब-खुद उसकी अपराजेयता के पक्ष में हो जाऊँगा, एक निहायत जायज निष्कर्ष था। पर एक ख़ामोश चुप्पी के अलावा मेरे अन्दर अभी तक कुछ भी तय नहीं हो सका था। अलावा इसके कि इस ठण्डी, अँधेरी और डरावनी रात में, मैं उस डरावनी चीख और उसके लिए जिम्मेदार उन दोनों की ताकत से लगातार दहशत खा रहा हूँ, और मेरा जेहन धुआँ-धुआँ हो रहा है, मैं और कुछ भी महसूस नहीं कर पा रहा था।

पूरी ताकत से अपने होशो-हवास कायम रखने की कोशिश में, मैंने खपरैल को सँभालने वाले लट्ठे से, पतले तार के सहारे झूलती लालटेन की बेहद मद्धिम रोशनी में, अपनी टेबिल पर नज़र डाली थी और आश्चर्य और खुशी के साथ पाया था कि मेरी प्लेट में आधी से अधिक रोटी और आधा गिलास पानी मौजूद है। इसका मतलब था कि मैं काफी समय तक अपनी व्यस्तता की ओट लेता हुआ, कोई भी प्रतिक्रिया व्यक्त करने से बचा रह सकता था।

नेता असहज होने लगा था।

उसने अपने गांधी आश्रम से खरीदे गये देशी ऊन के बन्द गले वाले कोट के बक्सुए को सहलाया था। फिर जेब से एक सिगरेट निकालकर सुलगायी थी और एक लम्बा कश खींचकर जीनियस की तरफ हवा में धुएँ के तीन-चार बड़े-बड़े छल्ले छोड़े थे। वह जीनियस को 'प्रोबोक' कर रहा था। जीनियस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। वह उसी तरह बगैर पलकें झपकाये नेता की ओर देखता रहा था। पर अब उसमें फ़र्क आ चुका था। उसका कन्फ्यूज़न जा चुका था। उसकी जगह उसकी आँखों में एक गहरा, चमकीला, बेधने वाला ठण्डापन आ गया था। उसके चेहरे पर तनाव की जगह एक व्यंग्य भरा कसाव था। नेता ने दूसरी सिगरेट सुलगाकर मेरी ओर धुएँ के छल्ले फेंके थे। उतनी देर में, मैं बची हुई रोटी के साथ आधा गिलास पानी पी चुका था। मेरा सन्तुलन लौट आया था और मुझे विश्वास होने लगा था कि मैं नेता को डिसीव कर सकता हूँ। जीनियस की ओर से ज़रूर डर लग रहा था। वह अपने 'कांशियंस' की आवाज़ को सुनता हुआ किसी भी खतरनाक हद तक जा सकता था... जैसा कि दिख रहा था।

'दिलचस्प आदमी है...' जीनियस पर व्यंग्य के साथ हँसता हुआ नेता मुझे घूरने लगा था। उसकी आँखों में कैफियत तलब करने वाला भाव था।

अब...?

मैं समझ रहा था कि जितनी देर तक खाकी-कद्दावर अन्दर रहेगा, नेता मुझे बातों में लगाये हुए तय करने की कोशिश करता रहेगा कि अन्ततः हमारे साथ क्या किया जाय। अब सब कुछ इस पर निर्भर करता था कि मैं उसे किस हद तक अपने 'हानि-रहित' होने का विश्वास दिला पाता हूँ। अपने मुसीबत में पड़ने मात्र के ख्याल से मुझे अपने परिवार, ख़ासकर भयानक रूप से दयनीय हो गये अपने बच्चों के चेहरे याद आने लगे थे। मैं ऐसी स्थिति में पहुँचता जा रहा था जब आपके लिए खुद की सुरक्षा ही सबसे बड़ी नैतिकता हो जाती है। खाकी-कद्दावर और नेता, हालाँकि, इमरजेंसी के कानूनों से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
शक्तिमान, जनता में व्याप्त आतंक से सुरक्षित और अपनी क्रूरता के प्रभाव से आश्वस्त लोग थे। फिर भी उन्हें अहसास था कि वे एक जघन्य काम कर रहे हैं और वे खुद एक हद तक भीतर-बाहर से घबराये हुए थे। हो सकता है इस घटना की खबर किसी तरह लोगों में फैल जाय और वे इसे एक अफवाह मानने से इनकार कर दें; बलात्कार की इस मामूली-सी घटना को प्रशासन का जुल्म मान लें और प्रतिकार पर आमादा हो जायें। और कुछ नहीं तो यही हो कि पार्टी और विभागीय स्तर पर ही 'एक्शन' ले लिया जाय...।

'आपका शुभ नाम...?'

नेता की ओर बिना देखे ही मैं समझ जाता हूँ कि 'आप' से उसका आशय 'अन्य पुरुष' से है। बजाय जीनियस के, उसने जीनियस के बारे में मुझसे सवाल किया है।

'जीनियस' मैं बताता हूँ।

यों जीनियस अपना परिचय 'सत्यानुसन्धानी' के नाम से देना ज़्यादा पसन्द करता है, 'आवर सेन्स ऑव हिस्ट्री शुड नॉट ऑनली इन्वाल्व द पास्टनेस ऑव द पास्ट, बट इट्स प्रेजेन्स आलसो।' उसका तकिया कलाम वाक्य है।

'मैं खाकी-कद्दावर के बारे में सोचने लगा हूँ जो कुछ देर पहले 'अशेंशियल कमोडिटी एक्ट' के अन्तर्गत, अन्दर की तलाशी लेने के लिए चम्पा को पर्दे के पीछे घसीट ले गया था। मैं समझने की कोशिश कर रहा हूँ कि वैसी क्रूरता बरतते समय आदमी की कैसी मानसिकता हो जाती होगी। खाकी-कद्दावर — उस चीख का कारण, जो अभी तक मेरी चेतना में कानखजूरे के दंश की तरह झनझना रही है।

'जीनियस माने...?' नेता पूछता है।

'पढ़ा-लिखा, सोचने-समझने वाला प्राणी।'

'या नौटंकी का जोकर... क्यों भाई तुम हमारे प्रचार एजेण्ट बनना पसन्द करोगे? हम तुम्हारे लिए छींट की एक बढ़िया ड्रेस और एक लम्बी टोपी बनवा देंगे...।'

'आपकी तारीफ?' जीनियस उससे उलटकर पूछता है।

'मैं... मैं... नगर... कमेटी का अध्यक्ष, जिला अपराध निरोधक समिति का मन्त्री... नगर का बच्चा-बच्चा जानता है। आप कोई बाहरी व्यक्ति मालूम पड़ते हो।'

इसके अलावा भी नेता बहुत कुछ था। मसलन, वह पी.डब्ल्यू.डी. का 'ए' ग्रेड का ठेकेदार, इस क्षेत्र से चुने गये एम.एल.ए. का खासुल्खास और शहर की राजनीति का सर्वेसर्वा था। इस नाते उसकी पहुँच नगर और जिला प्रशासन से लेकर मन्त्रियों तक थी। शहर में उसके भाई की सीमेण्ट, वनस्पति और शक्कर के थोक-व्यापार की बहुत बड़ी फर्म थी। जब शहर में इन चीज़ों का अभाव आता और उसकी शह पर एस.डी.एम. छोटे-छोटे खुदरा व्यापारियों की दूकानों पर छापे डालता, उसके माल से ठसाठस गोदामों पर शासक पार्टी का झण्डा बड़ी शान से लहराता रहता। झण्डा, जिसके नीचे होकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
आज़ादी की लड़ाई लड़ी गयी थी और आज़ादी आने पर राष्ट्रपिता ने जिसे दफ़ना देने की सलाह दी थी।

'आप बतायेंगे मि. अध्यक्ष, ये पर्दे के पीछे क्या हो रहा है। लिदीत्से, भाई-लाई या चेकेस्लोवाकिया...?' नेता के रौबीले परिचय को कतई नज़रअन्दाज़ करते हुए जीनियस ने एक-एक शब्द तौल-तौलकर पूछा था।

'ये हम अपना महान् क्रान्तिकारी कार्यक्रम पूरा कर रहे हैं...।' जीनियस की ओर गुस्सैल नज़रों से देखते हुए नेता ने हवा में हाथ हिलाते हुए, चुनौती भरे अन्दाज़ में कहा था।

●

रोटी का अन्तिम टुकड़ा मुँह में डालकर मैं पानी का एक लम्बा घूँट भर लेता हूँ। दरअसल उनके होटल में आ धमकने के साथ ही मुझे महसूस हो गया था कि हम गलत समय पर गलत जगह पर हैं। इसलिए जब जिरह के बाद खाकी कद्दावर चम्पा को अन्दर ले जाने लगा, तभी मुझे भय हुआ था कि अब कुछ भयावह घटने वाला है और मैं पूरी शक्ति से अपनी मानसिक तैयारी में जुट गया था। होटल में घुसते समय भट्टी के पास वाली दीवार से, प्रधानमंत्री के चित्र और बड़े-बड़े अक्षरों में लिखे हुए उनके बीस-सूत्री कार्यक्रम वाले पोस्टर को जीनियस ने ही फाड़ा था। सिर्फ इतना ही नहीं, उसने पोस्टर को बीच से फाड़कर आधा अपनी जेब में रख लिया था और आधा एक खतरनाक सबूत के रूप में वहीं दीवार से चिपका रहने दिया था। वह एक भयानक भूल थी... गश्त पर निकले खाकी-कद्दावर और नेता की मोटर साइकिल का फोकस सीधा इसी फटे हुए पोस्टर पर पड़ा था और वे दबोच लेने वाली तेजी से सड़क पर जूते बजाते हुए अन्दर आ धमके थे।

जीनियस की जेब में फटा हुआ पोस्टर पड़ा होगा। हो सकता है कुछेक उसके अपने लिखे हुए पर्चे भी हों। उसे कम से कम अपने मिशन का ख्याल तो करना ही चाहिए। इतनी बड़ी संक्रान्ति के दौर में यह कोई अकेली घटना तो होगी नहीं। सिर्फ कानाफूसी से जितना जाना जा सकता है हम वही तो जान सकते थे। रेडियो, टेलीविजन, अख़बारों, सिनेमा, सभाओं, प्रस्तावों, नारों या अपरिचितों में कभी-कभार हो जाने वाली बातचीत का यही तो एक विषय हुआ करता था — प्रधानमंत्री और उनका बीस-सूत्री कार्यक्रम, जिसके बारे में कोई भी पूरी तौर से नहीं जानता था, मगर जिसके खिलाफ़ कुछ भी कहना-सुनना या पढ़ना-लिखना, एक गम्भीर अपराध हो गया था। यद्यपि इस आशय का कोई भी प्रस्ताव संसद में पारित नहीं हुआ था, न ही यह बात कानून की किताबों में आयी थी, न ही इस आशय का कोई राष्ट्रपति का अध्यादेश आया था, फिर भी मौत का इन्तज़ार कर रहे बूढ़ों से लेकर अधेड़ों, नौजवानों, किशोरों और होश संभाल रहे बच्चों तक यह बात फैल चुकी थी। नहीं तो और क्या कारण है कि हर व्यक्ति आतंकित, आशंकित, चुपचाप और चेहराविहीन हो गया था — ऐसी ही किसी एक घटना का शिकार हो जाने का भय। सारे देश के लोगों की मानसिकता, कानाफूसी द्वारा फैली ऐसी घटनाओं की अफवाहों से बनी थी।

जीनियस की निगाहें मेरे चेहरे पर टिकी हुई हैं। उसे इन्तज़ार है कि मैं उसके साथ शरीक हो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाऊँगा। मुझे वह एकदम गैर-जिम्मेदार लग रहा है।

'आपने बताया नहीं महामहिम।' जीनियस ने नेता से फिर पूछा है।

'ये... ये... हम अपने महान् क्रान्तिकारी कार्यक्रम की बैक-ग्राउण्ड तैयार कर रहे हैं।' नेता चुनौती भरी उद्दण्डता से कहता है — 'हम समाजवाद लाना चाहते हैं...।'

जीनियस की बड़ी-बड़ी आँखें घृणा से सिकुड़कर छोटी-छोटी हो जाती हैं — 'समाजवाद तो हम भी लाना चाहते हैं। पर यह बलात्कार भी नहीं हत्या है...।'

जीनियस ने एक बेहद खतरनाक बात कह दी है... कि उनके जुल्म और जुर्म की उस घटना का अस्तित्व है, घटना को एक संज्ञा दी है और घोषित किया है कि वह उसका साक्षी है।

'वे प्रजातंत्र की हत्या कर रहे हैं फैलो-ट्रेवलर...।'

'...अब?'

उन्होंने चीख के पक्ष में और उसके खिलाफ़ अपनी-अपनी पोजीशनें ले ली हैं।

'दे आर रेपिंग मदर-इण्डिया...' जीनियस के स्वर में चुनौती है। मेरे लिए... मेरी शख़्सियत के उस समूचे हिस्से के लिए जिसकी वजह से मैं अपने आपको आदमी कहने का दावा कर सकता हूँ।

'दे आर गिविंग हर द रुडीमेण्ट्स आँव सोशल जस्टिस..' पता नहीं कैसे मेरे मुँह से निकल जाता है।

'यू टू...यू टू, फैलो ट्रेवलर...' जीनियस हकबका कर मेरा चेहरा देखने लगता है। उसके स्वर में हिकारत से ज़्यादा अफसोस है।

सहसा मुझे महसूस होता है कि मैंने अपना स्टेण्ड ले लिया है...। चीख के प्रति मेरी पहली प्रतिक्रिया हड़बड़ाहट की हुई थी। दूसरे ही क्षण इस ख्याल से कि सिद्धान्ततः अब हमें कुछ करना चाहिए, मेरे सामने कुछ कर सकने की व्यर्थता और उसके खतरे उजागर होने लगे थे। मुझ पर डिप्रेशन फैलने लगा था। काफी देर की तकलीफदेह दिमागी कसरत के बाद मैंने पाया था कि मेरे ज़ेहन की धुँध किसी ठोस निर्णय की शक्ल ले रही है और मैं किसी अज्ञात रूप से सोल्जेनित्सिन के 'केन्सर-वार्ड' के शुंलुबिन का नाम दोहरा रहा हूँ :

— सबसे मुश्किल ज़िन्दगी वे नहीं जीते मेरे नौजवान दोस्त, जो समुद्रों में गोता लगाते हैं या पानी की तलाश में रेगिस्तानों की खुदाई करते हैं। सबसे मुश्किल ज़िन्दगी उसकी होती है जो सुबह घर से काम पर निकलता है और जब शाम को काम से वापस आता है तो उसके दरवाज़े की चौखट उसके सिर से टकराती है, क्योंकि वह और भी नीची हो गयी होती है... अपने बच्चों की खातिर, मैं लगातार और, और निचली ज़िन्दगी जीना स्वीकार करता गया। ...और जानते हो सयाने होने पर मेरे बच्चों ने मेरे साथ क्या किया... 'दे डिनाउंस्ड मी।'

मैं आँखों-आँखों में जीनियस का ध्यान, संविधान के उन्नीसवें अनुच्छेद के निलम्बन, राष्ट्रपति के हाल के अध्यादेश, दण्डनीय मौलिक कर्तव्यों और पिछली रात को रेडियो से प्रसारित किये गये

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रधानमंत्री के 'राष्ट्र के नाम सन्देश' की ओर खींचने की कोशिश करता हूँ —'वी आर अण्डर इमरजेन्सी। वी हैव नो लॉ टु डिफेण्ड ऑवरसेल्ज़..।'

मेरे सारे संकेतों को नकारता हुआ जीनियस मुझे लगातार घूरने लगा है। उसकी आँखों में एक अजीब-सी ठण्डी, पैनी और हिप्नोटाइजिंग झुरझुरी है, जो मेरी आँखों से होती हुई मेरे लहू में फैलने लगती है। मुझे महसूस होता है जैसे मैं इन्सान न होकर कोई ममी हो रहा हूँ... मेरी भवें, आँखें, नाक और कान बर्फ के चूरे की तरह झड़-झड़कर गिर रहे हैं। ...मैं बेशिनाख़्त, बेशक्ल और विरूप होता जा रहा हूँ।

'चीख एक मानवीय इश्यू है फैलो-ट्रेवलर! हमें हस्तक्षेप करना चाहिए।' जीनियस कहता है।

'हमें चीख को तेजी से बनते हुए इतिहास के परिप्रेक्ष्य में देखना चाहिए...।' मैं उत्तर देता हूँ।

'हाँ... इश्यू है... एक... पर उससे क्या होता है' नेता हस्तक्षेप करता हुआ कहता है, 'ख़ास चीज़ होती है ब्यूटी... यौवन...।' वह शायद कोई बहुत नंगा शब्द बोलने जा रहा था पर मुझे अपनी अश्लीलता में शरीक होता न देखकर रुक जाता है और गिरगिट की तरह रंग बदल कर कहता है, '...और राष्ट्रीय कार्यक्रम।'

दूसरे कोने में एक झिगले खटोले पर सोये हुए चम्पा के बच्चे को देखता हुआ मैं यों ही कह देता हूँ, 'हर विकासशील राष्ट्र के पास एक राष्ट्रीय कार्यक्रम होता है।'

'बिलकुल-बिलकुल...' नेता सन्तोष से सिर हिलाकर भाषण देने के अन्दाज़ में शुरू हो जाता है, 'तो अब समझिये कि राष्ट्र क्या होता है... ऐं... ऐं... राष्ट्र माने राष्ट्र की जनता और जनता माने उसके द्वारा चुने गये प्रतिनिधि यानी संसद-सदस्य, यानी स्वयं संसद। इसीलिए कहा गया है कि संसद राष्ट्र की आकांक्षाओं की प्रतीक है। ...अब संसद माने संसद का नेता यानी प्रधानमंत्री। अब ज़रा सोचिये कि जो व्यक्तित्व स्वयं राष्ट्र हो उसके खिलाफ़ फैसला देने का किसी हाईकोर्ट को क्या अधिकार है। और विरोधी पार्टियों को क्या हक है कि प्रधानमंत्री से इस्तीफे की माँग करें, सीधी-सादी जनता को भड़कायें...।' नेता भाषण बन्द करने के अन्दाज़ में चुप हो जाता है। वह सरकार को लेकर गिल्टी-कांशियंस है। बेज़रूरत इमरजेंसी की सफाई दे रहा है।

'फ्यूहरर इज जर्मनी।' मैं कह देता हूँ। मुझे एडोल्फ हिटलर का ख़्याल हो आता है।

'तुम अधिनायकवाद के पक्ष में कभी नहीं थे फैलो-ट्रेवलर!' जीनियस मेरे साथ बहस पर उतर आया है।

'ख़ास चीज़ होती है प्रोडक्शन...।' जीनियस को एक आरोपती नज़र से देखने के बाद नेता मेरी ओर मुख़ातिब होता है, 'विरोधी पार्टियों वाले नहीं चाहते कि उत्पादन बढ़े, गरीबी मिटे और हमारा विश्ववन्द्य भारत-भूतल प्रगति के मार्ग पर अग्रसर हो, इसलिए इमरजेन्सी।'

'आपातकाल अनुशासन पर्व है।' नेता की बात को पूरी गम्भीरता से लेने का दिखावा करता हुआ मैं, राष्ट्रपिता के उत्तराधिकारी सन्त की सूक्ति को दुहरा देता हूँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समय, मुझे, चींटी की रफ्तार से रेंगता हुआ महसूस होता है। लगता है कि मैं एक अर्से से घटती हुई उस घटना के ख़त्म होने का इन्तज़ार कर रहा हूँ और एक अर्से तक करता रहूँगा।

'आपातकाल लोकतन्त्र की रक्षा के लिए।' नेता हाथ उठाकर नारा लगाने के अन्दाज़ में, ऊँचे स्वर में कहता है और मेरी तरफ देखता है। मैं दबी ज़बान से दोहरा देता हूँ। ज़ाहिर है नेता मेरे बारे में अपनी राय बदल रहा है। वह मुझे कायदे से चलने वाला आदमी मानने लगा है।

...पर बावजूद इसके मुझे जीनियस की नज़र बर्दाशत नहीं होती। वह मेरी ओर व्यंग्य से, बल्कि तरस खाने वाली निगाहों से देखता हुआ मुस्कुरा रहा है...।

●

एक कदम पीछे हटकर नेता पर्दे से कान सटा देता है, उसके चेहरे पर खीज, बल्कि ऊब है। उसके ख्याल से खाकी-कद्दावर ज़रूरत से ज़्यादा समय ले रहा है। कुछ देर तक अन्दर से आने वाली दबी-दबी आहटों की टोह लेने के बाद वह दोनों पैरों को फैलाकर खड़ा हो जाता है।

'और जनाब आप...?' वह मुझसे पूछता है।

'ही इज एव्रीबडीज फैलो-ट्रेवलर।' जीनियस के स्वर में मेरे लिए हल्की-सी तिक्तता है।

'क्या मतलब?' मिचमिचाती आँखों से सबका जायज़ा लेने के बाद वह फिर घुटनों में सिर डाल लेता है। सिर्फ उसके कन्धे धीरे-धीरे हिलते हैं। वह रो रहा है। कुछ देर बाद उसके कन्धों का हिलना बन्द हो जाता है। फिर लगता है जैसे वह वहाँ पर हो ही नहीं।

नेता, जो शिवदयाल के गर्दन उठाने के साथ चौकन्ना हो उठा था फिर आश्वस्त होकर सिगरेट सुलगा लेता है। उस पर साफ हो चुका है कि जीनियस उनके विरोध में कतई अकेला है। वहाँ तक चम्पा के शौहर का सवाल है, यह घटना उसके लिए नहीं है। अगर है, तो उसे इससे कोई सरोकार नहीं। वह इसका साक्षी होने से इनकार करता है।

'...मुँह-चोर' मैं शिवदयाल के लिए मन ही मन दुहराता हूँ। दरअसल मैं उम्मीद कर रहा था कि अब वह आवेश में आकर कुछ करेगा। ...पर वह जिस तरह से पस्त हो रहा था उससे मुझे उस पर गुस्सा आ रहा था। जीनियस ने चेहरा घुमाकर शिवदयाल की ओर देखा है। उसकी आँखें तरल हो रही हैं और उनमें चमक है। उनमें शिवदयाल के प्रति गहरी सहानुभूति है... गहरीकरुणा। पर मैं शिवदयाल को कभी क्षमा नहीं कर सकता। मेरे मन में उसके प्रति वितृष्णा है। डरपोक, बुजदिल, हिजड़ा...। और मैं खुद क्या हूँ...। चम्पा मेरी प्रेमिका, बीवी, या मेरे बच्चे की माँ नहीं है... इसके अलावा मैं इस घटना के लिए कतई जिम्मेदार भी नहीं हूँ। जीनियस है। पोस्टर उसी ने फाड़ा था। ज़्यादा से ज़्यादा मैं एक गवाह हो सकता हूँ... पर उसका भी कोई महत्त्व नहीं।

नेता की फैली हुई टाँगों के पीछे पर्दे का कोना थोड़ा-सा हिलता है। अन्दर की मोमबत्ती की हिलती हुई पीली रोशनी में, पर्दे को खींचता हुआ एक चूड़ियों वाला दुबला हाथ दीखता है, फिर उसे झपटकर अपने काबू में करता हुआ खाकी आस्तीन वाला एक दूसरा मज़बूत हाथ। पर्दे का कोना फिर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से गिर जाता है।

'हे-राम...।' अन्दर से घिसटती हुई चम्पा की आवाज़। आवाज़ से ज़्यादा एक कराह...।

'इट्स ए रेप ऑन मदर इण्डिया...।' जीनियस उत्तेजना से थरथराते हुए कहता है।

'इट ओनली प्रूव्स दैट हिस्ट्री मूव्स डाइलेक्टीकली।'

'अगर तुम्हारे अन्दर आत्मा है तो सुनो कि वह क्या कहती है।'

'वे एक ऐतिहासिक दौर पूरा कर रहे हैं।'

अगर हम मौजूद न होते तो वे उस घटना को कतई अनहुआ मानकर दफ़ना देते। पर 'घटना' हम दो सोचने-समझने वालों के साक्ष्य में घट रही थी। ज़ाहिर अब इसके बारे में उनका एक 'ऑफीशियल-वर्शन' होगा। यदि हम कार्यक्रम-विरोधी और इस अर्थ में देशद्रोही नहीं तो हमें उससे असहमत नहीं होना चाहिए। हो सकता है कि यह सचमुच ही उनके कार्यक्रम का हिस्सा हो। आतंक... आतंक... 'टेरर इज द मोस्ट इफेक्टिव मीन्स ऑव परसुएशन...।'

'वे मानवीयता के विरुद्ध जघन्य अपराध कर रहे हैं।'

'उन्हें बयालीसवें संशोधन का समर्थन प्राप्त है।'

'फैलो ट्रेवलर तुम्हें तय कर लेना चाहिए कि तुम किस तरफ हो।'

'मैं इतिहास की तरफ हूँ।'

'यस, यस!' हमारी नितान्त व्यक्तिगत बातचीत में हस्तक्षेप करता हुआ नेता कहता है — 'चूँकि हम तेजी से भ्रष्टाचार और गरीबी को ख़त्म करना चाहते हैं और अराजकता को रोककर यथाशीघ्र प्रगति पथ पर आरूढ़ होना चाहते हैं, इसलिए बयालीसवाँ संशोधन।'

'यह आपके कार्यक्रम का कौन-सा सूत्र है, आपने बताया नहीं मि. अध्यक्ष?'

'यह कार्यक्रम का मंगलाचरण है।' कहने के बाद वह ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगता है। कायदे से मुझे हँसने में उसका साथ देना चाहिए था, पर मैं गर्दन झुकाकर जूते के फीते कसने लगता हूँ।

'क्या यह आपका असली कार्यक्रम नहीं है?'

'नहीं,' नेता होंठ चबाता हुआ कहता है — 'असली कार्यक्रम थाने में होता है।'

पल भर के लिए नेता की आँखों में एक हिंस्र चमक कौंधती है। उसके दिमाग में जीनियस को अनुशासित करने का कोई तरीका आया है।

'आप जानते हैं मेरे दोस्त, एक बुद्धिजीवी हैं और बुद्धिजीवी स्वभाव से... हें... हें...' मैं कहता हूँ। ज़ाहिर है मैं मध्यस्थता करना चाहता हूँ।

मुझसे आँखें मिलते ही नेता के चेहरे का अपराध-भाव एक जबरदस्ती लाये हुए रुआब में तब्दील हो जाता है।

'क्या होते हैं, वह मैं अच्छी तरह से जानता हूँ,' नेता मुँह बिगाड़कर फर्श पर थूक देता है, 'टुकड़ेखोर या जूताखोर होते हैं।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक ठण्डी निगाह नेता पर फेंकने के बाद जीनियस मेरी ओर देखता है। मैं दहल जाता हूँ। जीनियस की आँखों में ठण्डा लावा रिस रहा है। मेरी समझ में सहसा आ जाता है कि नेता के चेहरे पर इतनी हड़बड़ाहट क्यों है और अभी-अभी उसने फर्श पर थूका क्यों था।

'तुम्हें तय कर लेना चाहिए फैलो-ट्रेवलर...।' जीनियस के स्वर में मेरे लिए अन्तिम मौका, अन्तिम आग्रह, अन्तिम सलाह और अन्तिम चुनौती है। उसकी आँखों में वही सवाल हैं, चीख का — चमचमाते हुए खंजर जैसा।

'मैं... मैं...', उत्तर के लिए शब्द तलाशता-तलाशता मैं हकबका कर चुप हो जाता हूँ। जीनियस का सवाल एक बिल्कुल वास्तविक खंजर की शक्ल लेकर, मेरे सिर के ठीक ऊपर किसी अदृश्य रस्सी के सहारे गोल-गोल चक्कर काटने लगा है — 'द सोर्ड ऑव डेमोक्लीज।' उसके चमचमाते हुए फल पर खुदे हुए अक्षरों को मैं साफ-साफ पढ़ सकता हूँ, 'ने-मे-सि-स'। मुझे जानना चाहिए कि अपनी शहादत से इनकार करने के लिए मेरे पास क्या नैतिक आधार है। मुझे जानना चाहिए कि अपने द्वारा लिये गये स्टेण्ड के लिए मेरे पास पर्याप्त नैतिक कारण हैं। दूसरे ही क्षण मेरी आँखों के आगे मेरे वृद्ध पिता, रुग्णा पत्नी और छोटे-छोटे बच्चों के दुबले और निर्दोष चेहरे तैर जाते हैं।

'शु-लु-बि-न! शु-लु-बि-न!! शु-लु-बि-न!!!'

मैं मन ही मन दुहराता हूँ।

दो : एक फटा हुआ पोस्टर

हल्का-सा खुटका तो मुझे उसी वक़्त हुआ था। मुझे महसूस हुआ था कि पोस्टर के आधे हिस्से का वहीं दीवार पर छूट जाना खतरे से खाली नहीं, पर एक हद तक यह जीनियस का अपना मामला था। इसके अलावा जिस आत्म-विश्वास और सफलता के साथ, वह पिछले पन्द्रह दिनों से यह काम कर रहा था, उसे नहीं लगता था कि वह कोई गलती कर सकता है। सोचा था हो सकता है उसने इरादतन ऐसा किया हो... उन लोगों के लिए कोई संकेत, जो जीनियस के 'मिशन' में अज्ञात रूप से शरीक हो गये थे।

वह पन्द्रह दिन पहले की एक ऐसी ठण्डी रात थी। जीनियस ने शहर के चार प्रमुख चौराहों के पोस्टर उतारकर उनकी जगह अपने 'इमरजेन्सी-बुलेटिन' चिपकाये थे। दूसरी रात फाड़े हुए पोस्टरों और हाथ द्वारा लिखे गये 'बुलेटिनों' की संख्या पैंतीस थी, जबकि जीनियस ने नौ पोस्टर ही फाड़े थे और उनकी जगह नौ बुलेटिन ही चिपकाये थे। अगले दिन हम दोनों के सहित पूरे शहर ने हैरत से देखा था कि लगभग पूरे शहर के पोस्टर फटे हुए हैं और उनकी जगह तानाशाही विरोधी नारे लिखे हुए हैं। प्रशासन पर इसकी जबरदस्त प्रतिक्रिया हुई थी। सर्किट हाउस में जिलाधिकारी की अध्यक्षता में एक मीटिंग बुलाई गयी थी। शाम को पी.ए.सी. के दो ट्रक आये थे, जो उसी रात पूरे शहर में चार-चार की टुकड़ियों में फैलकर गश्त देने लगे थे। लोगों का ध्यान बाँटने और आतंक फैलाने की गरज से तीन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खुदरा दुकानदारों को 'मीसा' में पकड़ लिया गया था। शाम को एस.डी.एम. ने नगर के तथाकथित प्रतिष्ठित व्यक्तियों को बुलाकर उनसे प्रधानमन्त्री के कार्यक्रम का लिखित समर्थन कराया था। हालाँकि उन 'प्रतिष्ठितों' ने इसे भी प्रतिष्ठा और राहत के रूप में ही लिया था। पर जो भाषण एस.डी.एम. ने शुरू में दिया वह धमकी से भरा हुआ था। अगले दिन जिला पार्टी के मुख्यालय से, प्रचार अभियान को तेज करने के उद्देश्य से तीन गट्ठर पोस्टर आये थे। पर दूसरे दिन पी.ए.सी. के गश्त के बावजूद कुछ खास-ख़ास जगहों को छोड़कर सारे शहर के पोस्टर फटे हुए और नारे लिखे हुए थे। जीनियस ने उस रात कुल मिलाकर सैंतीस पोस्टर ही फाड़े थे, जबकि फटे हुए पोस्टरों की संख्या कई हज़ार थी। यह एक हैरतअंगेज बात थी। भावावेश में जीनियस रोने लगा था। उसकी आँखें चमकने लगी थीं, साँस फूलने लगी थी। जब भावुकता का ज्वार कम हुआ तो उसने हिसाब लगाया था, 'इसका मतलब होता है कि सैकड़ों लोग हमारे साथ शरीक हो गये हैं। जैसे भी हो लोगों का 'मोराल' बना रहना चाहिए। उन्हें एहसास होता रहना चाहिए कि प्रजातान्त्रिक मूल्यों के लिए संघर्ष जारी है। उतना ही आवश्यक यह है कि वे विश्वास कर लें कि तानाशाही के जुए को देर-सवेर उतार ही फेंकेंगे।'

अगली रात वह अपने प्रचार-युद्ध में कई गुने उत्साह से जुट गया था। आमतौर पर वह रात को बारह बजे अपने 'सेल' से निकलता और चार बजे तक वापस आ जाता है और सुबह दस बजे तक सोया रहता। फिर बारह बजे तक नहा-धोकर 'रॉक्सी' सिनेमा के पिछवाड़े गुप्ता लॉज में खाना खाता और वहीं से समता प्रेस, जहाँ वह कम्पोजीटर से लेकर डिस्ट्रीब्यूटर और प्रूफ-रीडर तक का काम समय-समय पर कर लिया करता था, चला जाता। लौटते वक़्त, घण्टाघर के पास वाले 'जनता टी हाउस' में सस्ती चाय सुड़कता हुआ, लोगों की कानाफूसियाँ सुनता।

एक रात उसे सड़क की तरफ खुलने वाली खिड़की के नीचे साइक्लोस्टाइल्ड बुलेटिनों का एक बण्डल और कार्बन से लिखा हुआ एक पत्र मिला था। पत्र में उसे 'प्रिय साथी' कहकर सम्बोधित किया गया था। आगे कहा गया था कि उसके जनतांत्रिक मूल्यों के लिए, अकेले-अकेले किये जाने वाले संघर्ष से 'हमें' बहुत बल मिला है। 'हमें' पूर्ण विश्वास है कि संघर्ष चाहे कितना भी लम्बा क्यों न हो अन्तिम विजय 'हमारी' होगी। देश, अपने ऊपर लादे जाने वाले कुलीनतन्त्र को कभी बर्दाश्त नहीं करेगा। ... फिर एक या दो दिन के अन्तराल से नियमित रूप से पेम्फ्लेटों के बण्डल मिलने लगे। कभी उसके पास समय होता तो वह खुद अपना 'इमरजेन्सी बुलेटिन' लिख डालता।

'अन्तिम विजय तक' वह जब-तब अपना संकल्प दुहराया करता।

•

मोटर-साइकिलें वहीं छोड़कर वे डामर की सड़क पर जूते बजाते हुए तेजी से अन्दर आ धमके थे।

'अबे ओ', खाकी-कद्दावर ने हाथ के डण्डे से दीवार की ओर संकेत करते हुए पूछा था —'ये पोस्टर किसने फाड़ा?'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'हमें क्या पता किसने फाड़ा। न हमसे पुछकर चिपकाया था, न हमसे पूछकर फाड़ा।' चम्पा ने हाथ रोक कर जवाब दिया था। फिर सामने खड़े नेता और कोतवाल से नज़रें हटाकर, रोटी को भट्टी पर रखे हुए तवे पर डाल दिया था।

'क्यों बे।' खाकी-कद्दावर ने टंकी के पास झूठी प्लेटें धोते हुए शिवदयाल से पूछा था।

'हमने नहीं देखा साहब। न हमारे सामने चिपकाया, न फाड़ा।' कहने के बाद शिवदयाल फिर उसी तरह सिर झुकाकर प्लेटें साफ करने में जुट गया था।

'पानी।' मुँह में निवाला चबाते हुए जीनियस ने टेबिल पर गिलास ठोका था। शिवदयाल चुपचाप टेबिल पर मग रखकर वापस चला गया था।

अपनी अवज्ञा पर उन्हें गुस्सा आने लगा था।

'क्या मजाक है।' नेता ने खाकी-कद्दावर को उकसाते हुए कहा था।

'अबे ओ, क्या नाम है तेरा। इधर चल।' शिवदयाल के करीब आने पर खाकी-कद्दावर उसके पेट में डण्डा कोंचता हुआ गुर्राया था, 'साला लाट साहब समझता है अपने को... कब से खड़े हैं हम यहाँ। क्यों बे साले, हम चूतिये हैं क्या।'

'हुजूर... हुजूर...' पेट की तकलीफ से शिवदयाल का चेहरा सिकुड़ गया था — 'हमें कुछ नहीं मालूम...।'

'पता है प्रधानमंत्री के पोस्टर फाड़ने की क्या सज़ा है।' नेता उसे धमकाते हुए कहता है, 'मीसा।'

शिवदयाल एकदम डर गया है। हाथ जोड़कर कहता है, 'मुझे नहीं मालूम, माई-बाप।'

'हमें क्या करना प्रधानमंत्री के फोटू से, या बीस-सूत्री कार्यक्रम से। चौबीस घण्टे पेट के घातम से छुट्टी नहीं। पहले अस्पताल के पास बैठते थे तो वह जगह तुड़वा दी। बढ़ाव खत्म किया जा रहा है। अब जैसे-तैसे यहाँ मड़ैया डाली तो बीस-सूत्री कार्यक्रम फाड़ा है।' चम्पा को लगा था यह भी उसे यहाँ से हटाने का कोई षड्यंत्र है। वह होठों-होठों में भुनभुनायी थी —'जितने भी गलत काम ई जगत में होते, ओ सब के सब गरीब ही करते हैं।'

खाकी-कद्दावर को, जिसे होटल में पैर रखते ही, बड़ी-बड़ी आँखों, लम्बे चेहरे और कसे हुए शरीर वाली चम्पा आकर्षक लगी थी, अब दुर्दम्य लगने लगी थी। चम्पा की तल्ख़ी, उसे अपने बढ़े हुए अधिकारों बल्कि अपनी मर्दानगी के लिए भी एक चुनौती लगी थी। उसकी चढ़ी हुई आँखों में चम्पा की कसी देह को रौंद डालने की ख्वाहिश साँप की जीभ की तरह लपलपाई थी।

'हमें सब पता है क्या-क्या होता है यहाँ पर...।'

पल भर के लिए चम्पा ने सिर उठाया था और उसकी आँखों में झाँकती अश्लीलता से कुढ़कर फिर झुका लिया था।

'अपन न चोरी करें न डकैती, न चोरबाज़ारी। मेहनत का करते खाते हैं।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'एक घण्टे से बक-बक कर रही है। किरोसिन और माचिस का अवैध धन्धा नहीं होता तेरे यहाँ...।' खाकी कद्दावर झपट कर बोला था।

'देखिये हुजूर...', शिवदयाल ने हाथ जोड़कर कहा था, 'हम गरीब ज़रूर हैं, पर इज़्जतदार और ईमानदार आदमी हैं। कोई गलत काम करें तो आप सरकार, फाँसी पर चढ़ा दीजिये।'

'चो...प! मादर...।' खाकी-कद्दावर गला फाड़कर चीखा था।

'अब ब्लैक करने वाले हो गये।' चम्पा ने दबी ज़बान से कहा था, 'जो करते हैं उन्हें कोई कुछ नहीं कहता।'

'चल, खाना तलाशी दे अन्दर की।'

'मि. कानून-रक्षक, आप कानून के नाम पर एक महिला के साथ अशिष्टता से पेश नहीं आ सकते।' जीनियस ने खाना रोककर कहा था।

'तू कौन है बे?' खाकी-कद्दावर लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ जीनियस के पास जा पहुँचा था, 'क्या कर रहा है रात के साढ़े ग्यारह बजे यहाँ पर?'

'मैं हिन्दुस्तान का एक साधारण नागरिक', जीनियस ने निहायत शराफत से बताया था, 'इस होटल का नियमित ग्राहक हूँ, आप देख रहे हैं, इस वक़्त मैं भोजन कर रहा हूँ और सूचनार्थ निवेदन है कि इस समय सिर्फ साढ़े नौ बजा है। आप...।'

सहसा, बिल्कुल अप्रत्याशित तरीके से जीनियस के मुँह पर खाकी-कद्दावर का एक भरपूर झापड़ पड़ा था। जीनियस कुर्सी सहित होटल के कच्चे फर्श पर चारों ख़ाने चित्त जा गिरा था। फिर कुछ भी न समझता हुआ-सा उठा था और दोनों हाथों से कपड़े झाड़ता, लड़खड़ाता हुआ उठकर खड़ा हो गया था।

'सरकारी मामलों में गुण्डागर्दी दिखायेगा तो मार जूतों के सारा कानून झाड़कर रख दूँगा।' हवा में झापड़ लहराता हुआ खाकी-कद्दावर जीनियस की ओर बढ़ने लगा था। जीनियस का होंठ कट गया था और उससे खून बह रहा था। वह धीरे-धीरे पीछे हटता हुआ कोने से जा टकराया था।

'कम...।' महसूस होते ही कि वह कार्नर हो गया है, जीनियस मुट्ठियाँ तानकर खड़ा हो गया था।

पर खाकी-कद्दावर जल्दी में था। वह बिना जीनियस की ओर ज़्यादा ध्यान दिये चम्पा को घसीटकर अन्दर ले गया था। नेता जो अब तक तमाशबीन की तरह चुपचाप खड़ा हुआ था, झपटकर पर्दे के आगे आ गया था।

'और... ये... ये...।' अन्दर से पेटियों और कनस्तरों को बूटों से ठोके जाने के साथ खाकी-कद्दावर का वजनी स्वर... इसके बाद छीना-झपटी की आहटें... फिर वह लम्बी चीख 'नहीं-ई-ई....।'

'खबरदार कोई अपनी जगह से हिला तो...।' नेता ने कोट की जेब में हाथ डालकर हमें

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पिस्तौल दिखायी थी और वापस जेब में रखता हुआ बोला था, 'उम्मीद है आप कानून और व्यवस्था को बनाये रखने में हमारी मदद करेंगे।'

●

नेता ने ऊबकर घड़ी देखी थी। ऐसे मौकों पर समय अजगर की तरह रेंगकर चलने लगता है। फिर खाकी-कद्दावर को अन्दर गये काफी समय हो चुका था।

'इमरजेन्सी की उपलब्धियों के बारे में आपकी क्या राय है?' नेता ने समय काटने की गरज से पूछा है।

बावजूद इसके कि उनका पक्ष, कानून-व्यवस्था और सरकार का पक्ष एक कतई नैतिकताविहीन पक्ष है। उनकी स्पष्ट ताकत और हमारी कमजोरी के बावजूद हमारे और उनके बीच एक स्पष्ट मनोवैज्ञानिक भय-सन्तुलन है। यहाँ तक कि हम जीनियस की युयुत्सा का उपयोग कर सकते हैं, यदि उन्हें विश्वास हो जाय कि हम किसी भी सिद्धान्त या विचारधारा में विश्वास न करने वाले, काम-काजी किस्म के लोग हैं और उनकी ताकत, निरंकुशता और नृशंसता का पूरा समर्थन करते हैं।

मैं जीनियस से छिपाता हुआ नेता से नज़रें मिलाकर मुस्कुराता हूँ, कि मैं जीनियस के बारे में, उसके द्वारा की गयी टिप्पणियों से सहमत हूँ, कि कानून और व्यवस्था के नाम पर वे जो भी करते हैं, उसका पूरा समर्थन करता हूँ, कि मैं अपने बद्‌दिमाग साथी के सहित, जिसे कतई गम्भीरता से नहीं लिया जाना चाहिए, एकदम हानिरहित व्यक्ति हूँ...।

'आजकल शहर में जरायम बहुत बढ़ गया है। कीमतों को बढ़ने से रोकना है, भ्रष्टाचार को रोकना है, प्रतिक्रियावादी-अराजकतावादियों को रोकना है, जनतंत्र की रक्षा करनी है। इसके साथ ही गरीबी को हटाना और समाजवाद लाना है...।' नेता देश के बारे में अपनी चिन्तायें गिनाने लगता है।

'...हमारा देश मूलत: एक कृषि-प्रधान देश है...' समय काटने की गरज से मैं एक कतई निर्विवाद बात कह देता हूँ।

'और आपको पता है...' नेता मुझे विश्वास में लेता हुआ कहता है; 'मैं आपको एक गुप्त बात बताता हूँ... कि प्रधानमंत्री के चित्र के फटे पाये जाने की क्या सज़ा है... मीसा, ...ऊपर से ऐसे आदेश हैं।'

'मीसा' शब्द के उच्चारण पर शिवदयाल घुटनों से सिर निकालकर हमारी ओर देखता है।

'साहब, हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि पोस्टर हमने नहीं फाड़ा...' वह करीब-करीब रोता हुआ कहता है, 'आप सी.आई.डी. से इन्क्वारी करा लें साहब। हम दिल से बीस-सूत्री कार्यक्रम के साथ हैं। मेरी बीवी ने महीना भर पहले नसबन्दी का ऑपरेशन कराया था। हम हमेशा सरकार के साथ हैं मालिक...' शिवदयाल घुटनों पर ठुड्डी रखकर सुबकने लगता है।

मैं सिर उठाकर, ऊपर हवा में सबके सिरों पर चक्कर काटती हुई तलवार को देखने लगता हूँ... ने-मे-सि-स।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर्दे के अन्दर से टॉर्च जलाये जाने के साथ पेटियों और कनस्तरों को ठोके जाने की आवाज़ें आती हैं... फिर एक तरफ को पर्दा हटाकर खाकी-कद्दावर का सख़्त क्रूर चेहरा झाँकता है। उसके सिर पर छोटे-छोटे बाल हैं, पहलवानों जैसे। आँखें छोटी-छोटी, पैनी, चालाक और चमकीली हैं, जबड़े भिचे हुए, जैसे सिर्फ दूसरों पर एहसान करने के लिए, अपने एकदम जायज़ गुस्से पर काबू किये हुए हो। जिस तरह अधमिची और सावधान आँखों से वह बाहर का जायज़ा लेता है, उससे लगता है कि यह आदमी 'सरप्राइज-अटैक' करता होगा... अपनी पूरी ताकत और नफरत और बर्बरता के साथ...।

•

अपना सन्तुलन बनाये रखने के लिए मैं फिर पानी का एक लम्बा घूँट भर लेता हूँ। मुझे और शिवदयाल को सरसरी नज़र से देखने के बाद खाकी-कद्दावर कोने में, लड़ाकू मुद्रा में खड़े हुए जीनियस पर आँखें गड़ा देता है।

'शिव दयाल! अबे ओ शिव दयाल के बच्चे!' अचानक वह पूरा गला फाड़कर चिल्लाता है। शिव दयाल सुबकना छोड़कर हड़बड़ाता हुआ चादर फेंक देता है और हाथ जोड़े, कमर झुकाये, दौड़ता हुआ पर्दे के अन्दर चला जाता है।

पर्दा गिरकर थोड़ी देर तक हिलता है और फिर पहले की तरह हो जाता है।

'क्यों बे साले... माचिसें बेचता है... और कहता है कि नहीं।' झापड़ की एक बहुत तेज आवाज़।

'न्... न्... न... न... नहीं साहब। नहीं साहब।'

एक और तेज झापड़ की आवाज़ पहले से ज़्यादा ज़ोरदार।

'फिर ये बंडल...'

'ये तो साहब अपने इस्तेमाल के लिए लाये थे। एक दर्जन माचिसें महीने भर के लिए हो जाती हैं...।'

'मुझको... मुझको', झापड़! झापड़!! झापड़!!! ...मुझको चरा रहा है कमीना।'

'मर जाऊँगा... ओ... ओ... ओ। मर गया, मर गया, सरकार...।'

लात-घूसों की आवाज़ें।

'इन्टेरोगेशन... उससे कन्फेस कराया जा रहा है।' जीनियस कहता है।

'आप लोग औरतों जैसे दिल के लोग हैं...' नेता दर्प से कहता है, 'पेशेवर बदमाशों से जुर्म कबूल कराना, एक बहुत टेढ़ा, बहुत टेढ़ा काम होता है।' कहने के बाद वह मुस्कुराता है।

'और ये किरोसिन के तेल का कनस्तर...' झापड़! झापड़!! बूट से कनस्तर को ज़ोर-ज़ोर से ठोके जाने की आवाज़ें — 'कहेगा ये भी अपने इस्तेमाल के लिए।'

झापड़! झापड़!! बदन पर डण्डे पड़ने की आवाज़ें...

'मर गये, मर गये!' शिवदयाल की पस्त और पहले के मुकाबले बहुत धीमी आवाज़ जिसमें

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
प्रतिरोध, सफाई या अपने को निर्दोष साबित करने की कोई कोशिश नहीं है।

'कहेगा, ये भी अपने इस्तेमाल के लिए...'

'नहीं... नहीं... नहीं...'

इस बार शिवदयाल 'अपने इस्तेमाल के लिए' नहीं कहता। खाकी-कद्दावर की मार से बिलकुल पस्त हो चुका है।

'लायसेन्स है किरोसिन बेचने का...?'

शिव दयाल कोई जवाब नहीं देता।

'क्या पूछा है अभी हमने तुमसे।' खाकी-कद्दावर पुचकारते स्वर में पूछता है।

'नहीं...' शिवदयाल का घबराया हुआ स्वर।

'बाहर मूल्य-तालिका लटका रखी है?'

'नहीं।'

'क्यों नहीं?'

'हाँ... हाँ... और छीटें दे मुँह पर, देखा, कहा था न कि मक्कर किये पड़ी है। ठीक... अब चल बाहर... अबे ओ... ये कनस्तर और माचिस का बंडल उठा... चल दिया ऊँट की तरह... मैं तेरे बाप का नौकर हूँ...' भीतर से खाकी-कद्दावर की आवाज़।

एक हाथ में माचिस का पुड़ा, दूसरे में छोटा-सा कनस्तर लिये शिव दयाल बाहर आ गया है। उसने बारी-बारी सबके चेहरे देखे हैं... पहले कुछ अपेक्षा से, फिर उदासीनता के साथ। अपनी नियति को समर्पित...।

•

ज़्यादा इन्तज़ार नहीं करना पड़ता। टाट का पर्दा हटाकर खाकी-कद्दावर प्रकट होता है। वह दरवाजे के बीचों-बीच, कमर पर हाथ रखकर, दोनों पैरों को फैलाकर खड़ा हो जाता है, डिक्टेटर की तरह। और गर्दन घुमाकर एक उचटती निगाह से सबका जायज़ा लेता है। समझाने की कोशिश करता है कि गड़बड़ी कहाँ है। मैं या शिव दयाल उससे निगाह मिलाने की हिम्मत नहीं कर पाते। कुछ देर तक वह यों ही अपने आतंक को सूँघता हुआ-सा खड़ा रहता है। सिर्फ, सन्नद्ध बॉक्सर की मुद्रा में खड़ा हुआ जीनियस, उसकी तरफ बिना पलकें झपकाये देखता रहता है।

होठों को चबाता हुआ खाकी-कद्दावर आहिस्ता-आहिस्ता टहलता हुआ कुर्सी पर बैठ जाता है। शिव दयाल को लालटेन लाने का हुक्म देकर, वह जेब से कागज़ निकालता है और लिखने लगता है।

हड्डियाँ कँपा देने वाली ठंड में, बदन पर सिर्फ एक अंडरवियर और बनियान पहने शिव दयाल बारी-बारी से नेता और खाकी-कद्दावर का मुँह ताकता है। उसके चेहरे पर अजीब तरह की शून्यता है। वह ऐसे वहशी की तरह दिखता है जो कुछ नहीं देखता, कुछ नहीं सुनता और कुछ नहीं कहता। खुद

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
ही अपनी बीवी पर हुए ज़ुल्म को न उसने देखा, न सुना, न ही इसके बारे में उसे किसी से कुछ कहना है। वह सिर्फ इतना चाहता है कि नेता और खाकी-कद्दावर यहाँ से जायें और वह चम्पा को विश्वास दिलायें कि इस सबके बावजूद वह उसका धरम-पति और उसके बच्चे का धरम-पिता है। और उनके प्रति उतना ही वफादार है, बावजूद उस सबके जो अभी-अभी घटा है।

गम्भीर मुद्रा बनाकर खाकी-कद्दावर पैन खोलता है। नेता टॉर्च दिखाता है।

'नाम...' कागज़ पर कलम चलाता हुआ खाकी-कद्दावर पूछता है। मुँह बाये हुए, कुछ न समझता हुआ शिवदयाल उनका मुँह देखता रहता है।

'ए...नाम बताओ अपना...' खाकी-कद्दावर काम-काजी तरीके से दुहराता है।

'मीसा या डी.आई.आर.' नेता पूछता है।

'नाम शिवदयाल'

'वल्द...'

'रामदयाल'

'वल्द रामदयाल... पेशा, जनता पवित्र भोजनालय... निवासी कस्बा... जिला... आवश्यक वस्तु अधिनियम धारा... मूल्य-तालिका नहीं... स्टॉक रजिस्टर नहीं... किरोसिन का लायसेन्स नहीं... बरामद वस्तु... एक पुड़ा माचिस, एक कनस्तर किरोसिन जिसमें लगभग बारह किलो... ग्राहकों को रसीद नहीं देता... बयान पढ़कर सुना व समझकर तस्दीक व कबूल किया...' लिखने के बाद खाकी-कद्दावर शिवदयाल की ओर मुखातिब होता है —'हाँ, ले भाई दस्तख़त बना यहाँ पर...'

'फ्रेमिंग ए चार्जशीट अगेन्स्ट देयर विक्टिम...' जीनियस बुदबुदाता है।

'दस्कत करना नहीं जानता...' शिवदयाल भर्राये गले से कहता है, 'अंगूठा लगाता हूँ।' शिव दयाल अंगूठा लगाता है।

'ए मि. पागल चन्द चलो इधर...' खाकी-कद्दावर जीनियस को उँगली के संकेत से बुलाता है, 'साक्षी की जगह दस्तखत करो।'

'यू वॉन्ट माई टेस्टीमनी...'

'हाँ, हाँ जल्दी करो'

'यू उड बेटर आस्क मि. ज्याँ पाल सार्त्र...' जीनियस उँगली से मेरी ओर संकेत करता है, 'ही विल विलिंगली डू इट... ही इज ऑन द साइड ऑव हिस्ट्री...'

'इसका वाकई दिमाग खराब हो गया है' खाकी-कद्दावर मुझसे कहता है — 'दे विल ट्रीट दि इन्सीडेन्ट एज नॉट हेपेन्ड, एण्ड वरी इट इन देयर नेक्स्ट टाइम-केप्सूल...।'

खाकी-कद्दावर की आँखें छोटी-छोटी होने लगती हैं। शायद वह कोई सामूहिक जुर्म गढ़ रहा है। और अधिक जब्त करने में असमर्थ वह सहसा कुर्सी से उठ खड़ा होता है और जीनियस की ओर बढ़ने लगता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'ए...' वह शिवदयाल को उठने का संकेत देता है। पर शिवदयाल वैसा ही बैठा रहता है — दहशत में जमा हुआ...

'उठ, मुँह सूँघ इसका...'

शिवदयाल बेवकूफ-सा दिखता हुआ एक-एक क़दम जीनियस की ओर बढ़ने लगता है — पास पहुँचने पर सिर झुकाकर उसका मुँह सूँघता है।

'लगता है नहीं पिये है...'

'पिये है।' खाकी-कद्दावर, एक के खिलाफ दूसरे को उपयोग करने की अपनी सुनिश्चित नीति पर चल रहा है।

शिवदयाल झुककर दुबारा जीनियस का मुँह सूँघता है, 'लगता तो नहीं है, हुजूर...'

'अबे तू हट' खाकी-कद्दावर झल्लाकर कहता है, 'मैं देखता हूँ...'

खाकी-कद्दावर ने फुर्ती से हाथ के पैन को टेबिल पर खुली हुई चार्जशीट पर छोड़ा था और गुस्से से अन्धे सांड की तरह जीनियस की ओर झपट पड़ा था। बर्फानी सर्दी के बावजूद मुझे लगा था कि मेरा जिस्म पसीना-पसीना हो रहा है।

...सरप्राइज अटेक!

तीन : नियति उर्फ एक नये ईश्वर की तलाश

नहीं। पहली बार मेरा अनुमान गलत निकला था। मैंने सोचा था कि अब खाकी-कद्दावर, सीधा जीनियस की छाती पर सवार होकर अपनी पूरी पाशविकता के साथ उसकी मरम्मत करने में जुट जायेगा, पर जीनियस की ओर फुर्ती से चार-पाँच क़दम बढ़ने के बाद सहसा वह धीमा पड़ा था। खाकी-कद्दावर की उत्तेजना के कतई खिलाफ जीनियस के चेहरे पर समझदारी, ठण्डापन और सन्तुलन था। उसे अपनी ओर झपटकर आता देखकर जीनियस पोजीशन लेने के लिए कोने से दो क़दम आगे बढ़ आया था, और खाकी-कद्दावर की आँखों में अपनी समूची एकाग्रता से देखता हुआ बुदबुदाया था :

'कम... कम... मि. लेवरेन्ती बेरिया... वी मेड ए ट्रायस्ट विद डेस्टिनी...'

'मैं कहता हूँ, इस पर दस्तखत कर दो सीधी तरह से'

'.....'

'मैं कहता हूँ तेरे बाप को भी दस्तखत करने पड़ेंगे। मैं चमड़ी खींचकर गवाही ले लेता हूँ... मेरा... नाम...'

'आप शायद नहीं जानते कि आप प्रजातन्त्र के एक बुनियादी मूल्य के हत्यारे होने का इकबालिया बयान दे रहे हैं।'

खाकी-कद्दावर जीनियस की भाषा को कतई नहीं समझता। जीनियस उसे व्यक्तिगत रूप से अपने लिये खतरनाक लगने लग रहा है। हवा में झापड़ तौलता हुआ वह जीनियस की तरफ, बिल्ली की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
तरह धीमे-धीमे बढ़ने लगता है। जीनियस एक क़दम पीछे की तरफ, बिल्ली की तरह धीमे-धीमे बढ़ने लगता है। जीनियस एक क़दम पीछे की तरफ हटता है, पीठ के पीछे दीवार महसूस होते ही, वह अपना सम्पूर्ण वजन पिछले पैर पर डालकर खड़ा हो जाता है। ...अवश्यम्भावी से निपटने के लिए।

...और सहसा जैसे ट्रिगर पर उँगली पड़ गयी हो। जीनियस ने बिजली की तेज़ी के साथ एक क़दम आगे बढ़कर खाकी-कद्दावर के चेहरे पर बायीं मुट्ठी का भरपूर प्रहार किया था, फिर दायीं का उसकी बायीं कनपटी पर। टाट के बाहर निकलती लड़खड़ाती चम्पा, बच्चे की चीख और जीनियस की मुट्ठियों का प्रहार। तीनों एक साथ, एक क्षण के अन्तराल में। खाकी-कद्दावर हड़बड़ाकर पीछे हटा था। उसके चेहरे पर बेवकूफों जैसा भाव उभरा था।

'सूँघना चाहते हो मेरा मुँह, आपके ख्याल से कोई भी आदमी सही दिमागी हालत में आपका विरोध नहीं कर सकता।'

कुछ देर तक, भौंचक हुआ खाकी-कद्दावर, कभी चम्पा, कभी मेरा, कभी अध्यक्ष का, कभी बच्चे का और अन्त में जीनियस का मुँह देखता हुआ खड़ा रहा था... कमजोर होने के बावजूद जीनियस अपनी जगह पर प्राणान्तक युद्ध के लिए सन्नद्ध था... उसके पास एक नैतिक कारण था।

अध्यक्ष फुर्ती से आगे बढ़कर खाकी-कद्दावर के बगल में जा खड़ा हुआ था। 'आपको किसी ऐरे-गैरे नत्थू-खैरे से स्वयं नहीं उलझना चाहिए। आपकी प्रेस्टिज के ख़िलाफ़ है। इसे बाद में देख लेंगे।'

खाकी-कद्दावर धीरे-धीरे, टहलता हुआ-सा पीछे हटने लगा था। जीनियस फिर वैसी ही सन्नद्ध बेजुम्बिशी की मुद्रा में खड़ा हो गया था। उसका चेहरा राख की तरह हो रहा था। फौलाद के वजनी कवच की तरह उस मुद्रा को सम्भाले रखने में उसकी टनों शक्ति ख़र्च हो चुकी थी। मैं देख रहा था कि वह बुरी तरह थक चुका है।

'गवाहों की क्या कमी है, जितनों की भी ज़रूरत पड़ेगी मिल जायेंगे' नेता ने खाकी-कद्दावर को पीठ सहलाते हुए घड़ी देखी थी।

'चल भाई शिवदयाल!'

शिवदयाल ज़िबह किये जाने वाले बकरे की तरह खाकी-कद्दावर की बगल में जा खड़ा हुआ था।

'इन दोनों के नाम-पते वगैरह जानता है...'

'नहीं सरकार'

होटल के बाहर होने के पहले खाकी-कद्दावर ने, ठीक से पहचान लेने की गरज से हमें गौर से देखा था —'कोई बात नहीं सब पता लगा लेंगे...'

'मेरा क्या होगा सरकार' शिवदयाल के चेहरे पर भय था। वह अब भी अपनी सलामती की उम्मीद कर रहा था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'तुम्हारा चालान किया जायेगा, पर हम जो-जो कहें वैसा कह देगा तो कुछ नहीं बिगड़ेगा।'

'सरकार, माई-बाप!' शिवदयाल खाकी-कद्दावर के बगल में बैठकर उसका पैर सहलाने लगा था। खाकी-कद्दावर ने जेब से रूमाल निकालकर उसके हाथ बाँधे थे और आगे की तरफ धकेल दिया था।

'आल द वर्ड्स आर हियर...' (नाजी कंसेन्ट्रेशन केम्पों में मृत्यु-दण्ड पाने वाले कैदी के आगे बाजों के साथ गाये जाने वाले गाने की पहली कड़ी) जीनियस खोयी-खोयी आवाज़ में बुदबुदाया था। उसकी आँखों की कोरें भीगी हुई थीं।

अन्धेरे में डूबी हुई सड़क, दो बत्तियों की तेज रोशनी से चमकी थीं। फिर एक साथ दो मोटर साइकिलों के स्टार्ट होने की आवाज़ें आयी थीं।

●

'चले गये' जीनियस ने जैसे नींद से जागकर पूछा था।

'हाँ... अब हमें भी चलना चाहिए...' मैंने घड़ी देखते हुए कहा था, 'साढ़े-दस...!' मैं चाह रहा था कि हम जल्द से जल्द वारदात के स्थान से दूर हो जायें।

जेब से एक बीस रुपये का नोट निकालकर जीनियस, बच्चे के पास से, सबको फटी-फटी आँखों से देखती चम्पा के पास जा पहुँचा था।

'कुछ नहीं, कुछ नहीं।' उससे आँखें मिलते ही जीनियस की पथरायी आँखों से पानी बहने लगता है, उसके चेहरे का वहशीपन मिटने लगता। चम्पा उसे हैरानी और आत्मीयता से देखने लगती है।

'रहने दो बाबू जी' चम्पा का चेहरा करुण होते हुए भी अजीब तरह से सख़्त है। ठीक-ठीक अन्दाज़ा लगाना मुश्किल है कि उसके अन्दर कितनी हलचल है।

'रख लो इसे, रख लो इसे भारत माता' जीनियस का गला फँसने लगा था।

'चलो' मैंने जीनियस को हाथ से पकड़कर खींचा था। अब तक वे थाने में पहुँच गये होंगे और तय कर चुके होंगे कि हमारे साथ क्या किया जाये।

जीनियस ने झुककर हाथ के नोट को चम्पा की हथेली में भींच दिया था। मैं उसका हाथ पकड़कर दरवाजे की तरफ घसीटने लगा था। भयजनित उत्तेजना से। उन्होंने हमें पकड़ने के लिए गारद भेज दी होगी। बेवकूफ, जबरदस्ती शहादत देना चाहता है।

सड़क पर घुप्प अन्धेरा है। स्ट्रीट लाइट और वहाँ से दिखने वाली शहर की बत्तियाँ गुल हैं। आपातकाल का नारा है — कम से कम उपभोग। ...अपने जूतों की आवाज़ से बचने के लिए हम सड़क छोड़कर कच्ची पगडंडी पर उतर जाते हैं, जिसके ऊपर घने पेड़ों की एक लम्बी कतार है। हमारे होटल आने के वक़्त हवा में हल्की-सी नमी थी, जो इस वक़्त तक जमने लगी थी। पेड़ों के पत्तों पर जमी हुई ओस लगातार हम पर बड़ी-बड़ी बूँदों की शक्ल में टपक रही थी, क्षणों के अन्तराल से।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

...कभी एक-एक, कभी एक साथ कई...। अन्धेरा काफी घना था। रोशनी के नाम पर आकाश में सिर्फ बिल्लौरी तारे थे, सर्दी से ठिठुरते हुए, काँपते हुए-से। कुछ ही देर बाद हमें उस पगडंडी पर चलना भी असुरक्षित लगने लगा था। टटोल-टटोल कर चलने के बावजूद हमारी रफ्तार काफी तेज़ थी। सहसा जीनियस का पसीजता हुआ हाथ मेरी कलाई पर कस गया था। उसने एक झटके से, अपनी पूरी ताकत के साथ मुझे अपनी तरफ खींचा था।

'यहाँ से होकर ज़्यादा ठीक रहेगा...' उसी तेज़ी से दायीं ओर को मुड़ते हुए उसने फुसफुसाया था —'इधर का एक सुनसान रास्ता मेरा देखा हुआ है।' रास्ता न दिखने के कारण मैं झिझकता हुआ खड़ा रहा था। 'जंगल से होकर चलते हैं। सड़क पर गश्ती टुकड़ियाँ घूम रही होंगी' जीनियस ने समझाया था और मेरा हाथ थामे हुए अपनी चाल तेज़ कर दी थी। अन्धेरे में जिस तेज़ी से वह चल रहा था, उससे लगता था वह इस रास्ते का अभ्यस्त है। 'तो भी हमें पुल से होकर चलना पड़ेगा...' मैंने शंका की थी। 'हो सकता है वे वहीं हमारा इन्तज़ार कर रहे हों।'

'नदी से होकर चलेंगे; घुटनों से ज़्यादा पानी नहीं होगा।' जीनियस के स्वर में थकान थी... पर उतनी नहीं जितनी मेरे ख़्याल से, उस चरम उत्तेजना से गुज़रने के बाद होनी चाहिए थी। वह हर कीमत पर अपने 'सेल' के लिए एक शार्ट-कट चाहता था।

नदी के नाम भर से मेरे रोम-रोम में झुरझुरी फैल गयी थी। फिर भी मुझे सुरक्षा के मामले में, जीनियस का इन्ट्यूशन अपने से ज़्यादा सही लगा था।

'हुँ-आँ, हुँआँ-हुँआँ...'

पीछे से एक साथ सम्मिलित आवाज़ें आई थीं। हमने चौंककर पीछे देखा था। थोड़ी ही दूर पर अन्धेरे में घुलती हुई-सी नौ-दस जंगली सियारों की आकृतियाँ दिखी थीं।

'अब...' मैं जीनियस को ठेलता हुआ बोला था।

'सियार आक्रमण नहीं करते, बशर्ते हम ज़ाहिर न करें कि हम उनसे डर गये हैं।' जीनियस ने निहायत विश्वास के साथ कहा और ज़मीन से पत्थर उठाकर सियारों पर फेंकना शुरू कर दिया। मैंने उसका साथ दिया। सियारों का झुण्ड अन्धेरे में गुम हो गया। फिर भी हम उत्तेजना में आकर काफी देर तक पत्थर फेंकते रहे, जब तक बिलकुल ही थक नहीं गये।

'अब वे नहीं आयेंगे' कहने के बाद जीनियस ने एक गहरी साँस छोड़ी थी। उसके चुप होने के साथ ही फिर से अन्धेरे में कुछ हिलता हुआ दिखा था...

'हुँआँ, हुँ-आँ-हुँ....आँ...'

उनकी ओर पत्थर फेंकता हुआ जीनियस बायीं ओर घूमकर सड़क के समानान्तर चलने लगा था। तेज़ी से सड़क के किनारे-किनारे।

कुछ देर बाद आश्वस्त होने पर कि सियार भाग गये हैं, जीनियस रुककर खड़ा हो गया था।

'सिगरेट पियोगे...'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसके पूछने के साथ ही लगा था कि मैं न जाने कब से सिगरेट की तलब दबाये हुए चल रहा हूँ।

सिगरेट सुलगाने के लिए जीनियस माचिस की तीली घिसता है। तीली की झपकती हुई रोशनी ज़मीन में गड़े हुए एक शिला-लेख पर पड़ती है वह चौकोर-पत्थर का एक शिलान्यास था। जीनियस करीब जाकर उसे पढ़ने लगा था।

'वृहत केन जल प्रदाय योजना'

1. अनुमानित सिंचित होने वाली भूमि...
2. अनुमानित सिंचन क्षमता...
3. अनुमानित लागत...

यह शिलान्यास प्रधानमंत्री के कर-कमलों द्वारा दिनांक..... सन्..... को सम्पन्न हुआ।

शिलान्यास पर एक पोस्टर चिपका हुआ था। प्रधानमंत्री के चित्र और उनके महान कार्यक्रम वाला।

'मैं अपनी सबसे क्रान्तिकारी कविता लिखूँगा...' जीनियस ने अपनी पैन्ट की बटनें खोलते हुए कहा था। सड़क से कई जोड़ा बूटों की आवाज़ों के साथ सीटियों की आवाज़ें आयी थीं।

'डिक्टेटर्स थर्ड आई...!' जीनियस ने तेज़ी से मुझे अपने साथ खंदक में गिरा लिया था। एक ताकतवर टॉर्च का तेज़ फोकस पेड़ों के तनों, झाड़ियों और बंजर ज़मीन पर फिसलता हुआ शिलालेख के भीगे हुए पोस्टर के कोने पर गिरा था।

'ये हमारी तलाश में जा रहे हैं।'

'हो सकता है वे चम्पा को अपने साथ लेते आयें। उसे, वे हर हालत में चुप कर देना चाहेंगे।'

'राज्य के ख़िलाफ़ अब अपने को कोई भी डिफेण्ड नहीं कर सकता, तुमने सॉलीसिटर जनरल द्वारा, सुप्रीम कोर्ट में की गयी, राष्ट्रपति के नये अध्यादेश की व्याख्या पढ़ी। ऑवर राइट टु लिव हैज बीन सस्पेन्डेड...'

'मैं उसी समय तय कर चुका था कि चम्पा के लिए अधिक कुछ नहीं किया जा सकता।'

जीनियस चुपचाप सिगरेट के कश खींचता रहता है... मैं उसका चेहरा नहीं देख सकता पर महसूस कर सकता हूँ कि इस वक़्त उनमें विद्रूप होगा। 'किया जा सकता है... कोई वक़्त होता है जब हमें सिद्धान्त पर टिकना पड़ता है। जब सब कुछ स्टेक पर लग चुका हो तो हमें रेजिस्ट करना ही चाहिए... जानते हो आतताई सबसे ज़्यादा किस बात से डरता है... एक्सपोज होने से... इसीलिए सेन्सरशिप... आई विल एक्सपोज देम इन माई नेकस्ट इमर्जेंसी-बुलेटिन...।'

पूरब के आकाश में कृष्ण पक्ष की चतुर्थी का चन्द्रमा उग आया है। उसकी राख जैसी रोशनी में चारों तरफ का दृश्य अजीब तरह से डरावना लगता है — भुतेला, डिप्रेसिंग।

'अन्याय का प्रतिकार न करने का अर्थ होता है उसके साथ सहयोग करना' जीनियस कहता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं धुँधली चाँदनी में, हवा में सरसराती हुई झाड़ी की पत्तियों को देखता रहता हूँ, सिगरेट पीता हुआ। कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहता है।

'मेरा इन्ट्यूशन कहता है, अब मुझे अपना 'सेल' बदल देना चाहिए। वहाँ पर रहना अब खतरे से खाली नहीं।'

'कल ही वे ज़ोरों के साथ हमारी खोज प्रारम्भ कर देंगे...'

'तुम्हें नहीं लगता कि इस शासन का अन्त किया जा सकता है...'

'कम से कम दस साल तक तो नहीं।'

'अन्त जल्द होगा। हालाँकि मैं नहीं समझ पाता कि कैसे...'

'विशफुल थिंकिंग...' मैं जीनियस की बात को शुद्ध बेवकूफी समझता हूँ।

जीनियस, कुछ क्षणों तक गम्भीरता से मेरी बात पर सोचता हुआ चुप बना रहता है। उसका चेहरा हर क्षण सिकुड़ता फैलता है। वह किसी गहरे और निर्णायक आत्म-संघर्ष से गुज़र रहा है।

'आई विल रेजिस्ट...' वह होठों-होठों में बुदबुदाता है। वह अभी तक उस घटना के प्रभाव में दिखता है।

कुछ देर तक चुप रहने के बाद वह फिर कहता है, 'सड़क पर पुलिस की टुकड़ियों का पहरा होगा। मैं जल्द से जल्द अपने 'सेल' में पहुँचकर अपना ताज़ा बुलेटिन लिखना चाहता हूँ।'

'सुनो, उस वक़्त तुम्हें क्या हो गया था। तुम जितने साहस, धैर्य और बहादुरी से खाकी-कद्दावर का मुकाबला कर रहे थे, उसका मैं विश्वास नहीं कर पा रहा था... हालाँकि अब भी मेरा ख़्याल है कि वह एक बेवकूफी भरा काम था। पर उस वक़्त मुझे हैरत और ईर्ष्या हो रही थी... आई हैड नेवर नोन यू टु बी सच ए करेजियस परसन। अपने कौतूहल को बहुत देर तक दबाने में असमर्थ मैं पूछ ही लेता हूँ।

'मैं कतई नहीं समझ पाता... वह... क्या था... ट्रान्स जैसी हालत... हालाँकि उसे व्यक्त करने के लिये यह उपयुक्त शब्द नहीं है... यह उसे सही-सही और पूरी तौर से व्यक्त नहीं करता... वेल आई वाज फीलिंग, एज एफ आई वाज पसेस्ड बाई... समथिंग क्वाइट बियोन्ड माइसेल्फ... लग रहा था जैसे कि मैं टाइम-स्पेस की चोटी पर खड़ा हुआ विगत और अनागत के सीमाहीन विस्तार को देख रहा हूँ... और कोई कर्ता न होकर एक चिरन्तन, कॉस्मिक कास्तिक-लॉ का माध्यम हो गया हूँ और अपने विरोध के ज़रिए इतिहास के एक निश्चित बिन्दु पर अपने लिए नियत एक नैतिक भूमिका अदा कर रहा हूँ... मैं खुद नहीं समझ पाता, वह कैसी मन:स्थिति थी, लेकिन था ह्विच डिफाइड आल नोन लॉज़ ऑफ लॉजिक एंड साइकोलॉजी। यह मेरा इंट्यूशन था, तुम्हें अपनी अनुभूति का विश्वास करना पड़ता है। मैं नहीं जानता, मैं बाहर से कैसा दिख रहा था, लेकिन अंदर से मैंने अपने को कभी इतना द्वंद्वमुक्त, भयमुक्त और एकाग्र नहीं पाया।'

''तुम हिस्टीरीकल लग रहे थे।'' मैं कह देता हूँ, हालाँकि उसके चेहरे को देखते हुए किसी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के लिए भी उसका अविश्वास करना असंभव था।''

मेरी प्रतिक्रिया का कोई नोटिस लिए बिना जीनियस अपनी आँखें मलने लगता है, जैसे किसी लंबे दुस्वप्न से जाग रहा हो।

''उस समय मुझे पहली बार साफ साफ लगा कि मेरे अंदर एक आत्मा है।'' ...कहीं एक ईश्वर है।''

''नैतिकता, आत्मा, ईश्वर...!'' अगर जीनियस ने कुछ देर वह रिश्मा न किया होता तो निश्चय ही मैं उस पर खुलकर हँसता।

''सुनो, ऐसा असंभव स्थितियों में खुद को सस्टेन करने के लिए हमें आस्था की ज़रूरत होती है।''

''आस्था...?'' मैं कतई नहीं समझ पाया जीनियस क्या कहना चाहता है।

''ईश्वर की...'' जीनियस फुसफुसा कर कहता है। जैसे कोई रहस्य खोल रहा हो।

''ईश्वर को मृत घोषित किया जा चुका है एक शताब्दी पहले, नीत्शे...''

''तब हमें अपने लिए नए ईश्वर की तलाश कर लेनी चाहिए।''

जीनियस मुस्कुराता हुआ मेरे हाथ पर हाथ रख देता है। उसकी हथेली में एक गुनगुनी, आत्मीय-सी झुरझुरी है, जो मेरी हथेली से उतरती हुई लहू में फैल जाती है। गरमाती, आश्वस्त करती हुई।

'तुमने हवा में टँगे उस खंजर को देखा था, जिसपर नेमेसिसि लिखा हुआ था...' सहसा याद आने पर मैं पूछ लेता हूँ।

''नेमोसिस!... तुमने उसे देखा था? हाँ!...'' जीनियस की आँखें चमकती हैं।

चंद्रमा बदली की ओट चला गया है। चारों घुप्प अंधेरा। हमें एक दूसरी की बाल्याकृति के अलावा कुछ नहीं दिखता।

''हमें एक ईश्वर की ज़रूरत है...'' जीनियस दोहराता है। संपूर्ण आत्मविश्वास के साथ।

चंद्रमा और भी गहरे बादलों के पीछे चला गया है। और भी काला ठंडा अंधेरा। जैसे हमारे और शेष संसार के बीच एक अभेद्य पर्दा पड़ गया हो।

''ईश्वर...?'' मैं बुदबुदाता हूँ।

एक दूसरे के कतई अदृश्य, एक दूसरे की आवाज़ों से एक एक प्रेत बनाते हुए हम बर्फीले, डरावने अंधकार में चुपचाप चलने लगे हैं।

— दमेले कॉलेज मार्ग,
मऊरानीपुर, झाँसी (उ.प्र.)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रमेश शिवप्रसाद

लगे रहो! गिनती बाद में बता देना...

किसी महत् कार्य को सफल बनाने के आयोजन में, जहाँ कई हाथ लगे हों, वहाँ ऐसे उत्साहवर्धक या पुर-असर शब्द सुने जा सकते हैं। 'लगे रहो मुन्ना भाई' आज एक आम फहम फिकरा है और उसमें निहित अर्थ समझना साधारण सी बात है किन्तु शीर्षक के ये शब्द, शायद अपने संदर्भ और काल का स्मरण कराते हैं।

कहने को तो बहुत गूढ़ बातें शंभुनाथजी के मुख से सुनने को मिली हैं किन्तु जो बातें, उनकी सेवानिवृत्ति के अन्तिम वर्षों के कटु अनुभवों को उजागर करती हैं- उनसे सहसा लगने लगा कि सन् सैंतालीस में भारत आजाद नहीं हुआ था। अंग्रेज अपना हाकिमी भूत इस सरजमी पर छोड़ गये थे, जो हुक्मी को डराता रहता था। उनका यह कथन, कि सैंकड़ों साल की गुलामी ने भारतीय मानस को इतना अधिक क्षतिग्रस्त कर दिया है कि वह अपनी क्षमताओं की पहचान ही भूल गया और मात्र 'जी हजूरी' की ढाल पर अपनी सुरक्षा करने लगा- किसी प्रामाणिकता की आवश्यकता नहीं चाहता। शंभुनाथ जी का कहना था कि उस समय की राजनीति ऐसे ध्रुव की ओर बढ़ रही थी जहाँ सत्ता थी। दुर्भाग्य से यह उसका दर्शन भी बन चुका था। राजनेताओं को नैतिकता से कोई सरोकार नहीं था। अगर सरोकार रहा भी हो तो वह सत्ता हथियाने के बाद की बात थी। उन्होंने बतलाया कि आपातकाल कोई आसमानी वस्तु नहीं बल्कि सत्ता संघर्ष से उपजी वह घिनौनी व्यवस्था है जिसे हाकिम अपनी साख को बचाने में उपयोग में लाता है। उसे इस बात का कतई ख़्याल नहीं होता कि इससे व्यवस्थाएँ गड़बड़ा जाती हैं और प्रशासकीय

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सेवाएँ न रह कर प्रशासनिक उन्माद बन, आतंकित करती हैं। उन्हीं के शब्दों को यथावत रखते हुए इस कहानी को आगे बढ़ाता हूँ- वे कहते गए भाई और अधिक भूमिका बांधने की आवश्यकता नहीं, अपनी बात पर सीधे आता हूँ। एक दोपहर मेरे परिचित महाशय अचानक मेरे कक्ष में आए तथा एक चिट्ठी मुझे थमा दी। वे महाशय कुछ मिनिट पूर्व ही सर्विस बस से उतरे थे और कह रहे थे कि मेरे महकमे के कोई बशीर अहमद साहब ने हाथों-हाथ सुपुर्द करने को कहा था सो आपको यह चिट्ठी सौंप कर अपने घर को जाऊँगा। मेरा माथा ठनका, बशीर अहमद ने यह चिट्ठी क्यों भेजी, वैसे कोई बात या सूचना होती थी तो आने जाने वाले के हाथ, जुबानी ही सब होता रहा है। अपने कौतूहल को न दबाकर मैंने चिट्ठी खोली और पहले काग़ज़ के मोड़ को सीधा किया। चिट्ठी में रेखांकित दो पंक्तियाँ मेरा ध्यान ले उड़ीं। वे पंक्तियाँ थीं...संस्था प्रमुख एक सरकारी नौकर है। उसे इस भान में न रहना चाहिए कि शिक्षण संस्था एवं शिक्षण संबंधी क्रिया-कलापों तक ही उसका दायित्व सीमित है...'। मैं चौंका और इन पंक्तियों के आगे और पीछे भेद भरी बातों को जानने की उत्कंठा न दबा सका। बशीर अहमद लिखते हैं-

'आदरणीय शंभूनाथ जी सविनय नमस्कार, पत्र एक परिचित के हाथों ही आपके लिए भेज रहा हूँ ताकि अविलंब प्राप्त हो और आप शीघ्र सचेत हो जायें। इन दिनों अनपेक्षित निरीक्षण हो रहा है...आपके पास अपने विभाग से कोई लिखित आदेश या कोई सूचना इस संबध में हो तो उसकी हस्तलिखित प्रति यथाशीघ्र यहाँ भिजवाने की कृपा करें। आप तो जानते ही हैं कि मैं यहाँ कार्यवाहक प्राचार्य हूँ। यह बड़ी विचित्र स्थिति होती है, ठीक उस दूल्हे की तरह जिसकी घोड़ी की दो लगामें रहती हैं, एक उसके खुद के हाथ में जो शोभा की वस्तु से अधिक कुछ नहीं, दूसरी, मगर असली वह, जो तंत्ररूपी साईस संभालता है, लेकिन दुल्हन के घर नहीं ले जाता, देखने वाले कहते जरूर हैं, देखो बारात जा रही है। बहरहाल बात यह थी कि परसों अचानक जिलाधीश महोदय द्वारा मेरी संस्था का 'सिंहावलोकन' किया गया। गनीमत समझिए कि उनके संस्था में अचानक आने की सूचना मात्र पंद्रह मिनिट पूर्व, एक संस्था-हितेषी पालक ने मुझे भिजवा दी थी। उस वक़्त लाँग रिसेस का समय था। इस आधे घंटे की छुट्टी में अधिकांश छात्र या तो स्कूल के परिसर में घूम रहे थे और, जिनके घर शाला के समीप थे वे वहाँ चले गए थे। स्टाफ-सदस्य चाय के लिए टी-रूम में बैठे हल्का-फुल्का मनोरंजन कर रहे थे। मैंने वहाँ पहुँच तत्काल वस्तुस्थिति से सबको अवगत कराया। संस्था का पी.टी.आय. (व्यायाम शिक्षा प्रभारी) जो कि संस्था के छात्रों को अनुशासित रखने का भार वहन करता है, संस्था प्रमुख के लिए अत्यंत उपयोगी सहायक होता है। मेरे यहाँ सन्तू बर्वे यह कार्य बखूबी कर रहे हैं, तो तब उन्होंने छुट्टी समापत होने की घंटी तत्काल तीव्र टनटनाहट के साथ लगवा दी। सन्तू बर्वे अपने हाथ में एक छोटी छड़ी लिये शाला-परिसर में भाग-भाग कर छात्रों को अपनी-अपनी कक्षाओं में पहुँचाने के कार्य में जुट गये। उनके हाथ की छड़ी, छात्रों के लिए किसी विशेष आयोजन, घटना अथवा अप्रत्याशित छुट्टी किये जाने का संकेत भर थी। वह प्रहार के लिए कभी इस्तेमाल नहीं की गई, यह तथ्य उनका छात्रों में लोकप्रिय होना उजागर करता है। छात्र अपनी अपनी कक्षाओं में जाने का उपक्रम करने लगे थे तथा सभी शिक्षक, 'टाईम-टेबल' के अनुसार अपना-अपना पीरियड लेने के लिए कक्षाओं में जाने लगे थे तथा जाते जाते छात्रों को कक्षा में पहुँचने का आदेश भी देते जा रहे थे। किशोरावस्था और जिज्ञासा,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बड़ा गाढ़ा रिश्ता होता है। उस समय छात्रों का कौतूहल चरम पर था, कुछ तो अपनी अपनी कक्षा में पहुँच गए थे किन्तु अधिकांश शाला भवन के प्रमुख द्वार पर इकट्ठा हो यहाँ वहाँ देखने लगे थे।

शाला परिसर के प्रवेश पर तैनात, भृत्य भगवानदीन ने दोनों हाथ हिला हिला कर संकेत दिया कि गाड़ियाँ आ रही हैं। मैंने देखा कि एक जीप और उसके पीछे एक खुशनुमा एम्बेसडर गाड़ी परिसर द्वार पर रुकी और भगवानदीन ने अपनी कार डेढ़ गुना झुकाकर जीप की खिड़की से झांकते तहसीलदार को लम्बा नमस्कार किया। कुछ क्षणों में ही दोनों गाड़ियाँ शाला भवन के प्रमुख द्वार तक आ गयीं। वस्तुस्थिति को समझते हुए मैं अभिवादन हेतु कार के पास पहुँचा। वैसे उस दिन के पूर्व न तो मैंने जिलाधीश महोदय को देखा था और न उनके बारे में सुना था। लेकिन मेरे कार के पास पहुँचने के पूर्व ही ड्रायवर पिछला दरवाजा खोल चुका था।

औसत से कुछ कद लेकिन भरे बदन के एक महाशय अफसरी रौब से कार से उतरे और धूप का चश्मा उतार अपनी चटक बूशर्ट की ऊपरी जेब में रखकर को क़दम आगे चले और फरमाया-

'प्रिन्सीपल कहाँ हैं...?'

'जी मैं ही हूँ', कह कर मैं उनके समक्ष पहुँचा लेकिन हाथ जोड़ अभिवादन करना न भूला।

'चलिये, अंदर चलते हैं...' जिलाधीश ने यह कहा और शाला भवन की ओर उन्मुख हुए। मैं उनके पीछे पहुँच पाऊँ इस के पूर्व, पूरा अमला जिसमें डिप्टी कलेक्टर, जो कि उस क्षेत्र के एस.डी.ओ.पी. भी थे, स्थानीय तहसीलदार, दो नायब तहसीलदार, बी.डी.ओ. और अन्य छोटे मोटे अधिकारी मेरे आगे शाला भवन में दाखिल हो चुके थे। एक ऐसा दृश्य उपस्थित हो रहा था कि प्रशासनिक अमला शिक्षण संस्था के बजाय किसी वारदात की जगह जा रहा हो। आगन्तुकों का समूह प्रवेश द्वार को लांघता हुआ दाहिनी ओर, खुले बरामदे के मध्य में रुका। हालात की नजाकत को भाँपते हुए सन्तू बर्वे छात्रों को कमरों में दाखिल करवाने में सफल हो चुके थे। यह अलग बात है कि ग्यारहवीं का छात्र नौंवी के कमरे में ढकेल दिया गया था और विज्ञान सेक्शन का विद्यार्थी कला कक्ष में पहुँचा दिया गया था।

जिलाधीश बरामदे में रुके और दाँये बाँये देखने लगे फिर पूछा प्रिंसीपल कहाँ रह गये...?

''सर! वे पीछे आ रहे हैं'' तहसीलदार ने जबाव दिया।

तेज़ी से कदम बढ़ाकर मैं जिलाधीश के समीप पहुँचा।

''कौन कौन कक्षाएँ हैं यहाँ, और टोटल स्टूडेंट संख्या क्या है...?'' उनका प्रश्न।

मैंने उन्हें कक्षाओं के बारे में सामान्य जानकारी दी। और छात्र संख्या का सही आंकड़ा भी बतला दिया।

''स्टाफ पूरा ही होगा...बड़ी शांति लग रही है.... चलें एक कक्षा में चलते हैं।'' यह कहकर वे आगे कमरे के दरवाजे पर खड़े हो गये। उस समय नियत टाईम टेबल के अनुसार कक्षा नौ का इतिहास का पीरियड था और श्री उमेश्वर शर्मा पढ़ा रहे थे। बगैर किसी औपचारिकता के जिलाधीश कक्षा में प्रवेश कर गये। उनके सम्मान में सभी छात्र खड़े हुए।

'बैठो-बैठो' छात्रों को बैठने का कहकर श्री शर्मा की ओर देख जिलाधीश ने पूछा- ''इस

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समय क्या टॉपिक पढ़ा रहे हैं?''

''सर! सामाजिक अध्ययन के अंतर्गत इतिहास का एक टॉपिक इस समय ले रहा हूँ- मुगलकाल...'' श्री शर्मा ने यथा संभव सटीक जबाव दिया।

''अच्छा अच्छा...मुगल पीरियड...!'' जिलाधीश बोले। फिर छात्रों की ओर मुख कर प्रश्न किया...

''अकबर भी एक मुगल बादशाह था, कोई बता सकता है उसका शासनकाल क्यों अच्छा माना जाता है और उसकी राजनैतिक खूबियाँ क्या थीं...'' प्रश्न करने के बाद उनकी उंगली एक छात्र की ओर उठी जो पिछली बेंच पर दुबका सा बैठा था। छात्र जैसे तैसे खड़ा हुआ उसके चेहरे पर हवाईयाँ स्पष्ट रूप से उड़ रही थीं।

''सर! यह नहीं बता पायेगा...'' शर्मा जी ने बड़ी विनम्रता से जिलाधीश से कहा।

''क्यों नहीं? यह तो किसी भी इतिहास के विद्यार्थी के लिए साधारण सी बात है।'' इतना कहकर जिलाधीश मुस्कुराये और गनीमत यह थी कि कक्षा के बाहर आ गये और मुझे कहा....''चलिये दूसरी किसी कक्षा में चलते हैं...टीचर ठीक से पढ़ाते नहीं हैं...''। लेकिन उस वक्त जिलाधीश को कौन बताये कि जिस छात्र से उन्होंने प्रश्न किया वह कक्षा ग्यारहवी का विज्ञान विषय का छात्र था जिसे छ:माही परीक्षा में 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त हुए थे तथा संस्था को उससे बड़ी उम्मीदें थीं।

''यह कौन सी क्लास है...?'' उनका अगला प्रश्न जब वे आगे के एक कमरे के द्वार पर खड़े हो चुके थे।

''सर यह कक्षा ग्यारहवी है और अर्थशास्त्र का पीरियड श्री चौधरी ले रहे हैं...'' मैंने उन्हें बताया।

''अर्थशास्त्र में कौन सा टॉपिक पढ़ा रहे हैं आप इस समय...'' उन्होंने शिक्षक से पूछा।

''सर! इस समय भूमि के बारे में बता रहा हूँ, उसकी परिभाषा आदि छात्रों को समझा रहा हूँ'' श्री चौधरी ने उत्तर दिया।

''हाँ! भूमि महत्त्वपूर्ण टॉपिक है।'' उन्होंने कहा। वैसे जिलाधीश ही क्या, तहसीलदार, नायब तहसीलदार, नाजिर, पटवारी से लेकर पटेल तक इस टॉपिक में अत्यधिक रुचि रखते हैं। फिर छात्रों की ओर देखते हुए वे बोले- ''भूमि की परिभाषा कोई बतलाए...तुम बताओ'' जिलाधीश ने एक छात्र की तरफ अपनी तर्जनी से संकेत दिया। छात्र ने अपनी पाठ्यपुस्तक में दी गई परिभाषा अक्षरशः बता दी। व्याख्याता श्री चौधरी की ओर देखते हुए जिलाधीश ने जानना चाहा कि क्या वह परिभाषा ठीक थी।

''जी हाँ! छात्र ने परिभाषा सही बताई है।'' श्री चौधरी ने उत्तर दिया।

''नहीं! मुझे यह सही नहीं लगती।'' जिलाधीश ने कहा और श्री चौधरी की ओर कुछ क्षणों तक देखते रहे।

''सर! निर्धारित पाठ्य पुस्तक में यही परिभाषा दी गयी है, आप यदि पुस्तक देखना चाहें तो कृपया देख लीजिए।' टीचर टेबल पर रखी पुस्तक को हाथ में लेकर श्री चौधरी वांछित पृष्ठ बताने का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उपक्रम करने लगे। तभी कमरे के बाहर खड़े हुए एस.डी.ओ. अंदर आये और जिलाधीश के कान में कुछ फुसफुसाया। बाद में पता चला कि किसी वायरलेस मेसेज के संबंध में बताने आये थे। जिलाधीश उठे और कमरे के बाहर आ गये तथा तहसीलदार को आदेश दिया कि गाड़ी द्वार पर लगवा दी जाये। बरामदा पार करते हुए मुझसे मुखातिब हो फरमाया कि इतिहास के टीचर कुछ ठीक नहीं लग रहे हैं...अन्य किसी को वह क्लास दे दी जाये। भूमि की सही परिभाषा उनकी जानकारी में क्या थी इस बारे में उन्होंने बतलाना ठीक नहीं समझा या नहीं बताया कुछ कहा नहीं जा सकता, बहरहाल श्री चौधरी सही परिभाषा जानने के लिए आज भी उत्सुक हैं। उसके बाद चंद मिनटों में ही वे अपनी कार में बैठे और मेरे नमस्कार का जबाव दे ड्रायवर को चलने का आदेश दिया। जब सभी आगंतुक विद्यालय परिसर के बाहर हो गये तब कमरों की खिड़कियों झांकते छात्रों ने एक साथ शोर किया। शायद उस समय के अप्रत्याशित तनाव को दूर करने का यही एक सहज रास्ता उन्हें मिला। एक छात्र जो अपनी वाचलता के लिए अकसर डांट खाता था अपनी टिप्पणी करने में नहीं चूका। वास्तव में टिप्पणी नहीं वे उसके शरारत भरे शब्द थे जो शायद इस तरह थे-

- तीतर के दो पीछे तीतर-
पीछे जिनके पाँच बटेर
बता कालिया कितने थे...?

पी.टी.आय. सन्तू बर्वे ने तब सीटी नहीं बजाई और न कोई कॉशन दिया, शायद उनको भी ऐसी किसी प्रतिक्रिया की दरकार थी ताकि वे अपनी सहज स्थिति में आ सकें।

बशीर अहमद के पत्र के आखिरी पृष्ठ की खास बातें इस प्रकार थीं...उन्होंने लिखा था-'भाई साहब! आपने उपरोक्त विवरण से समझ ही लिया होगा कि शिक्षण प्रक्रिया में- जिसमें बाल-मनोविज्ञान एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है, यह थोंपा हुवा आयोजन किस तरह अर्थपूर्ण या प्रासंगिक हो सकता है। मुझे तो इस भौंडे चुटकुले का कोई संदर्भ दिखलाई नहीं देता। खैर जो भी संदर्भ हो उस पर न सोचते हुए निवेदन करना चाहता हूँ कि मेरी संस्था में यह बीस-पच्चीस मिनिट का अचानक निरीक्षण मात्र एक आनुशांगिक प्रशासनिक क्रियाकलाप ही कहा जा सकता है, किन्तु आपके यहाँ जो हो सकता है उसकी कल्पना आप कर लीजिए क्योंकि वह पूर्व निर्धारित है। मुझे ज्ञात है कि आपको गाँव में सभी का पूर्ण सहयोग प्राप्त है और वैसे भी जो शिविर लग रहा है उसका दायित्व आपका नहीं बल्कि संबंधित विभाग का है फिर भी एक शिक्षण संस्था में पुरुष नसबंदी केम्प का लगना मुझे बड़ा अटपटा लग रहा है...

आपका अपना
बशीर अहमद

यहाँ वे रुके, क्योंकि पत्र की अंतिम पंक्ति और प्रेषक बशीर अहमद साहब का नाम पढ़ा जा चुका था। पत्र से यह स्पष्ट हुआ कि शासकीय आदेशानुसार गाँव के विद्यालय में नसबंदी शिविर लगना था जहाँ श्री शंभूनाथ जी प्राचार्य पद पर पदस्थ थे।

वे फिर अपनी बात पर आए '...तो देखा भाई! मेरे शुभचिंतक बशीर अहमद साहब ने आने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वाली परिस्थिति का सामना करने के लिए मुझे पहले से सचेत कर दिया। उनका पत्र पढ़कर मेरे सहज ज्ञान ने यह संकेत दे दिया कि संस्था में हो रहे अध्ययन, अध्यापन अथ्वा शाला संबंधी समस्या के बारे में मुझे नहीं सोचना है। वास्तव में मुझे उन परिस्थितियों का पूर्वानुमान लगाना है जो शिविर के समय उपस्थित हो सकती हैं। बशीर अहमद के पत्र ने मुझे सचेत ही नहीं किया बल्कि दो दिन पूर्व हुए घटनाक्रम को अपनी चेतना में पुनरावृत्ति हेतु बाध्य कर दिया। मैं एक्शन रिप्ले में देख रहा हूँ कि संबंधित एस.डी.ओ. महोदय एक छोटे लबाजमें के साथ जिसमें स्थानीय अस्पताल के डाक्टर, सरपंच और कुछ नये चेहरे थे शाला भवन के आँगन में आ गए हैं और बरामदे की सीढ़ियाँ चढ़ मेरे कक्ष में बगैर किसी औपचारिकता के प्रवेश ले चुके हैं।

''आपको मालूम होगा ही कि यहाँ पुरुष नसबंदी शिविर लगना है। विद्यालय के कमरे काम में लिये जाएँगे। इसलिए कमरों का फर्नीचर अन्यत्र रखवाना आवश्यक है ताकि शिविर का सामान वहाँ रखा जा सके। सब सामान आजकल में आ जायेगा...''। एस.डी.ओ. महोदय ने मुझे कहा। उस वक्त मैं अपने स्थान पर खड़ा होकर आगंतुकों के लिये कुर्सियाँ लाने के लिये कह रहा था। जन सहयोग से बने उस भवन को विभाग को हस्तांतरित अवश्य कर दिया गया किन्तु सरपंच उस पर पंचायत का आधिपत्य समझते हुए इस प्रकार फरमा रहे थे-

''आप निश्चित रहें साहब! सब कमरे खाली हो जाएँगे, शिविर का सामान रखने में कोई परेशानी नहीं आयेगी।''

मुझे लगा मैं अपने इस कक्ष में बैठकर शायद, अभी तक झक मारता रहा हूँ, क्योंकि मेरी औपचारिक अनुमति तो दूर जानकारी के बिना ही हो रहा है।

संस्था में शिविर के दिन कक्षाएँ न लगे इसलिए मुझे परेशान न होना पड़ा, क्योंकि सौभाग्य से उस दिन रविवार था। विद्यालय के अधिकांश शिक्षक तथा व्याख्याता अपनी सुविधा के लिहाज से गाँव में न रहकर बीस किलोमीटर दूर कस्बे में निवास करते थे और अनुकूल बस उपलब्ध होने से विद्यालय-समय साधकर अपना निर्धारित कार्य कर लेते थे। जो स्थानीय थे वे सदैव उपलब्ध रहते थे। यह बात मुझे शक्ति देती थी कि मेरा स्टाफ मेरे साथ है और किसी भी विषम परिस्थिति में मैं अकेला नहीं हूँ। मुझे महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ उन्हीं के माध्यम से प्राप्त होती थीं। मुझे अच्छी तरह याद है कि संस्था के उच्च श्रेणी शिक्षक श्री पाठक ने बताया था कि इस शिविर में कम से कम सौ ऑपरेशन तो होना ही है। स्वास्थ्य विभाग से शिविर संबंधी आवश्यक सामग्री आज-कल में गाँव पहुँच जाएगी। तीन या चार डॉक्टर उसी दिन गाँव पहुँचेंगे और सुबह से ही काम शुरू कर देंगे। उन्हें जल्दी शुरू करना ही होगा क्योंकि गाँव में अभी बिजली नहीं आ पाई है। गाँव में प्रवेश के पहले जो बरसाती नदी पड़ती है उस पर पुल बनते ही बिजली के खंभे लग जावेंगे और गाँव में बिजली आ जाएगी। श्री पाठक ने और भी बताया जैसे जिनके नसबंदी ऑपरेशन होना है उन्हें शासन द्वारा निश्चित धनराशि दी जायेगी तथा जो व्यक्ति ऑपरेशन के लिए पुरुषों को प्रेरित कर लाता है उसे भी कुछ धन दिया जायेगा। इस जानकारी से स्पष्ट हो गया कि शिविर का टारगेट पूरा किया जायेगा जिसमें प्रलोभन के अतिरिक्त छल-बल का प्रयोग भी होगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उस रविवार प्रात: से ही शिविर में हलचल शुरू थी और नसबंदी के लिये तैनात स्टॉफ अपने काम में लग चुका था। विद्यालय प्रांगण के आसपास कुछ बैलगाड़ियाँ भी दिखलाई दीं, शायद कुछ लोग भीतरी क्षेत्र के छोटे से गाँवों-खेड़ों से भी लाये गये थे। जिस तरह सब कुछ हो रहा था उसमें शासन की चतुराई साफ झलकती थी। शिविर के बारे में कोई ढोल-ढमाका नहीं किया गया क्योंकि राजनैतिक तौर पर यह एक संवेदनशील इश्यू बन सकता था। विद्यालय प्रांगण में इस जमघट की हर किसी को कोई जानकारी नहीं थी। शिविर स्थान के सामने की सड़क से आने-जाने वाले लोग अपनी जिज्ञासा का समाधान आसानी से नहीं कर पा रहे थे।

सब कार्य ठीक तरह से चल रहा था और मध्याह्न काल के ढलते एक समय ऐसा भी आया कि जब एक लघु विश्राम की आवश्यकता सभी कायकर्ताओं को प्रतीत हुई। शिविर के कार्य संपादन में अत्यधिक व्यस्त हमारे अस्पताल के डॉक्टर साहब बाहर आते दिखलाई दिये। मैंने उन्हें रास्ते में रुकवा कर पूछा '...कितने हो गये...?' मुझे जवाब मिला 'अभी सत्तावन ही हुए हैं...कुछ अड़चन आ रही है...'। मैंने अगला सवाल किया 'डॉक्टर साहब! यह शिविर आप अपने अस्पताल भवन में ही लगवा सकते थे...?' उनका जवाब 'वहाँ पन्द्रह वर्षों से ठीक से मरम्मत ही नहीं हुई ...और फिर स्थानीय मरीज और इमरजेंसी पेशेन्ट को भी देखना रहता है।' इतना कहकर डॉक्टर वापस शिविर की ओर जाने लगे। लेकिन इसी समय मैंने पूछ लिया- 'आज ही सब को निपटा देंगे ना? या कल स्कूल की छुट्टी करना होगी मुझे...?'

'नहीं, छुट्टी की जरूरत नहीं पड़ेगी, आज ही सब करना है चाहे रात हो जाये-पेट्रोमेक्स का प्रबंध करवा रखा है...और फिर लोग रुकते कहाँ हैं, पकड़-पकड़ कर लाना पड़ता है' डॉक्टर साहब का कथन जिससे स्पष्ट था कि शिविरावधि में वृद्धि संभव नहीं थी। उनका कहना ठीक ही था- लोग रुकते कहाँ हैं। मैंने सोचा लोग रुकें कैसे? दिहाड़ी मजदूर, खेतीहर मजदूर, जिनिंग फेक्टरी में काम करने वाले कामगार और वे जो बेरोजगार हैं कैसे रुकें, उन्हें तो जहाँ पेट पालने को पैसा मिलेगा वहीं जाना पड़ेगा।

विद्यालय प्रांगण में छोटे-छोटे झुंड बना जमीन पर बैठे वे लोग कोई ऐसा परिदृश्य नहीं प्रस्तुत कर रहे थे जहाँ ऐसा लगे कि वह एक सहर्ष समूहन था। मुरझाए चेहरे सही बात बता देते हैं। हर किसी को अपनी पारी का इंतज़ार था और बाद में गिने-गिनाये नोटों के बंद लिफाफे का जो हथेली पर रख दिया जाएगा।

मध्यांह काल कभी का बीत चुका था और बसाहट की भेड़ बकरियों का झुंड नदी पार कर गाँव में प्रवेश कर रहा था। नवंबर की शाम जल्दी आ जाती है। गायों के गले में बंधी घंटियों और घर की ओर लौटते चरवाहों की आवाज सुनाई देने लगी थी। ढोर-ढंगर सभी को अपनी ठौर पहुँचना था। शिविर परिसर में भृत्यों की चहलकदमी बतला रही थी कि पेट्रोमेक्स की दरकार हो गयी है और उसी समय अस्पताल का एक वार्ड बॉय जिसकी ड्यूटी शिविर में लगाई गयी थी किन्हीं दो नामों को लेकर ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा था।

एस.डी.ओ. महोदय और अन्य सरकारी ओहदेदार गांव में वन-विभाग के डॉक बंगले में डेरा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डाले हुए थे और शिविर में चल रही गतिविधियों की ताजा जानकारी साईकिल-वाही भृत्यों से पाते रहते थे- उन्हें बस उस समय की प्रतीक्षा थी कि कब कोई संदेशवाहक आकर बता दे कि सौ का आंकड़ा पार हो गया है। उनकी कर्त्तव्यपरायणता का दर्शन जिलाधीश स्वयं कर लें इस आशा से सभी गाँव में मौजूद थे वरना ऐसे गाँव में जिसकी नदी पर पुल ही नहीं बना है और न बिजली है कैसे रात गुजारी जा सकती है।

''नायब तहसीलदार वाघमरे ने अभी तक किसी को भेजा नहीं...'' मालूम तो पड़ता कितने हो चुके हैं, अब तो शाम भी खत्म हो रही है...'' अफसरी तुनक में एस.डी.ओ. ने तहसीलदार से जानना चाहा। इतने में एक भृत्य साईकिल तेजी चलाता हुआ वहाँ आया और एक कागज तहसीलदार को थमाते हुए बोला ''हुजूर। नायब तहसीलदार ने भिजवाया है...।'' वैसे उस वक़्त एस.डी.ओ. स्वयं व्यग्र थे और भृत्य से ही पूर्ण हो चुके ऑपरेशन की संख्या जानना चाहते थे, लेकिन बड़ा अफसर हुक्म देने का आदी होता है उसे जानकारियाँ दी जाती हैं, वह सब से पूछता नहीं है।

मैं अपने स्टाफ सदस्यों के साथ शिविर के आसपास ही था और सोच रहा था कि यह समस्त घटनाक्रम और भाई बशीर द्वारा वर्णित निरीक्षण क्या संकेत देते हैं। क्या यह सब देश हित में हो रहा है या फिर एक नया छलावा, जो देता कुछ नहीं, एक आम आदमी को कुंठाग्रस्त अवश्य कर देता है। अचानक मुझे हमारे डॉक्टर साहब शिविर परिसर से पुनः बाहर आते दिखे, शायद उन्होंने मुझे देख लिया था क्योंकि वे इसी तरफ आ रहे थे।

''आंकड़ा कहाँ तक पहुँचा?'' मैंने पूछा। समीप आकर मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए बोले, ''बड़ी परेशानी आ गई है, सिविल सर्जन और डी.एच.ओ. दोनों मुझे लताड़ेंगे अगर सौ न पूरे हो सके तो, लोग जिनका ऑपरेशन शेष है उन्हें कब तक रोकूँ...थानेदार महोदय भी अपनी मोटरसाईकिल पर इलाके में निकल गये हैं....।'' पेट्रोमेक्स की हल्की रोशनी में डॉक्टर के माथे पर चिंता की लकीरें और पीसने की बूँदें देखीं गईं, वैसे नवंबर में मौसम में सुहावनापन आ जाता है लेकिन उनका चेहरा कुछ और बात बता रहा था। डॉक्टर इस गाँव में पदस्थ थे सो हम सब के ही तो हुए। मैंने सहज रूप में उनसे कहा...''डॉक्टर साहब मैं कुछ कर सकता हूँ...''

''आप ही के पास तो आया हूँ...।'' डॉक्टर साहब ने तत्काल जवाब दिया। लेकिन उनके अगले वाक्य ने मुझे चौंका दिया...।

''एस.डी.ओ. स्वयं यहाँ आपके पास आएँगे, उन्हें खबर भेज दी है...''। मैं सोचने लगा ऐसा कौन सा काम है जिसके लिए डॉक्टर साहब मेरे पास आए हैं और एस.डी.ओ. भी आ रहे हैं। डॉक्टर साहब अब बड़ी आत्मीयता से बोले- ''शंभुनाथ जी अब आपको क्या बताएँ, छियत्तर हो गये हैं, लेकिन चौबीस अभी बाकी हैं।''

''तो उनको भी निपटा दीजिए ना... मैं देख रहा हूँ लोग वहाँ बैठे इन्तजार कर रहे हैं।'' मैंने अपनी उंगली विद्यालय प्रांगण की ओर दिखलाते हुए कहा।

''यही इंतजार तो खाये जा रहा है- सो शिविर का स्टॉफ रुका हुआ है, सभी डॉक्टर परेशान हो रहे हैं।'' डॉक्टर साहब ने कहा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''क्यों रुके हुए हैं?...'' मैंने पूछा, लेकिन कुछ रुककर डॉक्टर साहब बोले-''वो ऐसा है कि शिविर के काम में लगाए गये दो स्थानीय कर्मचारी काम छोड़कर चले गये हैं...''।

''यहाँ डॉक्टर फिर रुके। कुछ क्षण बाद बोले ''वास्तव में शंभुनाथ जी! ऑपरेशन के पूर्व पेशेन्ट को टेबल पर लिटाया जाता है और प्रारंभिक तैयारी की जाती है, पेशेन्ट के स्थान- विशेष के बाल साफ किए जाते हैं, और यह कार्य सभी लोग नहीं करते। वैसे सुबह से ही ये लोग लगे हुए थे, शायद काम करते-करते थक गए होंगे लेकिन वार्ड बॉय मकबूल ने बताया कि वे थके हुए नहीं थे, बल्कि गुस्से में काम छोड़कर चले गये थे, क्योंकि किसी ने बाहर से आवाज लगा दी थी- गोवर्धन और मांगीलाल, लगे रहो! गिनती बाद में बता देना।'' यह कहकर डॉक्टर साहब चुप हो गये। मैं और मेरे साथ खड़े दोनों शिक्षक सोच में पड़ गये। मैं चुप कब तक रहता, मैंने पूछा- ''आप बताएँ मैं क्या कर सकता हूँ।''

''बताना क्या है शंभुनाथ जी आपकी संस्था में ही तो दोनों के लड़के पढ़ते हैं।'' कृपया उनके घर अविलंब सूचना भेज दें कि आपने बुलाया है अथवा मेरी व्यक्तिगत विनती पर स्वयं वहाँ चले जाएँ तो बात बन सकती है...आखिर लड़कों को परीक्षा में पास होना है या नहीं!...''

डॉक्टर साहब का सुझाव जिसमें उनकी परेशानी का हल छुपा हुआ था।

''सर! आप कहें तो हम दोनों वहाँ चले जाते हैं...'' श्री पाठक और वर्मा दोनों लगभग साथ-साथ बोले और मेरे उत्तर की प्रतीक्षा करने लगे।

अपनी गर्दन पीछे की ओर घुमाकर मैंने देखा की प्रांगण में पेट्रोमेक्स की घटती-बढ़ती रोशनी में कुछ लोग अभी भी बैठे थे और कुछ खड़े-खड़े बड़बड़ा रहे थे। सरपंच उनकी मिन्नत मनुहार में लगे थे। मैं उन विचारों की दशा या दुर्दशा समझ चुका था- सब सुबह से ही आये थे, दिन बीता, शाम बीती और कब रात भी आ चली थी, उनके सब्र की सीमा तो हो ही गई होगी। और अधिक न सोचकर मैंने श्री पाठक को अपना स्वीकृति संकेत दे दिया। फिर डॉक्टर साहब की ओर मुड़कर कहा।

''देखिये-मेरी ओर से यदि और कोई सहयोग आप चाहते हों तो बेहिचक कहें। वैसे मैं क्षौर कार्य अपने आप ही करता हूँ और मुझे तनिक भी हिचक नहीं होगी यदि मेरी सेवाएँ आप इस शिविर में लेना चाहें...''

''...क्यों शर्मिन्दा कर रहे हैं प्राचार्य महोदय, आप तो जानते ही हैं... !...'' डॉक्टर साहब ने अपना वाक्य पूरा नहीं किया।

— 36, रूपराम नगर
माणिक बाग
इन्दौर (म.प्र.)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कमल किशोर गोयनका

महात्मा गांधी : आपातकाल में हस्तलिखित समाचार-पत्र

महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने पर 'नवजीवन', 'यंग इंडिया', 'हरिजन' आदि समाचार-पत्रों का सम्पादन किया और उनके पत्रकार ने देश के स्वाधीनता-संग्राम में महत्त्वपूर्ण योगदान किया, परन्तु भारत में गांधी की पत्रकारिता का समय एक प्रकार से आपातकाल का ही समय था। यह आपातकाल भारत की प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी द्वारा 26 जून, 1975 में लगाए गए आपातकाल से कुछ भिन्न था। इन्दिरा गांधी ने लोकतन्त्र में आपातकाल लगाया था। यह आपातकाल कुल अठारह महीने रहा, फिर चुनाव हुए और पुन: लोकतन्त्र की स्थापना हुई। गांधी का समय अंग्रेजों की गुलामी का समय था और एक प्रकार से पूरा कालखण्ड ही देश के लिए आपातकाल था। उस समय अंग्रेजी सरकार ने प्रेस कानूनों में संशोधन करके उन्हें और भी दमनकारी तथा घातक बना दिया था। यह वास्तव में आपातकाल ही था जब भाषण, प्रकाशन तथा सभा करने पर प्रतिबन्ध था और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता नहीं थी। जब कोई विदेशी सरकार, देश का शासक अथवा लोकतन्त्र में चुने गए प्रतिनिधियों की सरकार अभिव्यक्ति पर अंकुश लगाती है और नागरिकों की संविधान प्रदत्त स्वन्त्रता को छीन लेती है तो वह आपातकाल ही होता है। गांधी ने ऐसे आपातकाल में दक्षिण अफ्रीका में भी काम किया था जब उन्हें जेल की सज़ा हुई थी और भारत में तो उन्हें कई बार ऐसे आपातकाल का सामना करना पड़ा और दण्डित भी होना पड़ा। गांधी को अपनी सम्पूर्ण पत्रकारिता ऐसी ही आपातकालीन परिस्थितियों में करनी पड़ी और दमन, आतंक एवं अन्याय के बीच अपने समाचार पत्रों को निकाला और उचित समझा तो उनका प्रकाशन ही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बन्द कर दिया। गांधी का दर्शन था कि जब सरकार प्रेस की स्वतन्त्रता कर अंकुश लगाए, समाचार-पत्र और प्रेस से ज़मानत माँगे अथवा सम्पादक को जेल में बन्द कर दे तो मालिक को समाचार-पत्र का प्रकाशन तथा प्रेस बन्द कर देना चाहिए। वे जमानत जमा करके तथा सम्पादक मालिक द्वारा माफ़ी माँगकर समाचार-पत्र निकालने के बिलकुल पक्ष में नहीं थे, लेकिन इन दमन एवं आतंकवादी स्थितियों में गांधी एक और विकल्प का प्रस्ताव करते हैं और वह है हस्तलिखित समाचार-पत्र का प्रकाशन। सरकार समाचार-पत्र, प्रेस और सम्पादक को बन्द कर सकती है, लेकिन वह हाथ से लिखे समाचार-पत्र और उनके वितरण को कैसे रोक सकती है?

गांधी के जीवन में तथा एक पत्रकार के रूप में 'यंग इंडिया' तथा 'नवजीवन' के सम्पादक-काल में ऐसे कुछ प्रसंग घटित होते हैं जब अंग्रेजी सरकार प्रेस की स्वतन्त्रता का हरण करती है और जमानत ज़ब्त करके, प्रेस बन्द करके, सम्पादक को गिरफ़्तार करके तथा अदालत से सज़ा दिलाकर बन्दी-गृह में बन्द कर देती है। लोकमान्य तिलक तो कई वर्षों तक अपने लेखों के कारण जेल में रहे थे, गांधी को भी ऐसी ही अपराध में सज़ा हुई थी। गांधी के सामने 'इंडिपेंडेंट' समाचार-पत्र के जॉर्ज जोजफ की गिरफ़्तारी, फिर महादेव देसाई के दो हज़ार की जमानत देने और तेरह दिन बाद 20 दिसम्बर, 1921 को ज़ब्त होने का प्रसंग आया तो उन्होंने 'यंग इंडिया' के 22 दिसम्बर, 1921 को 'इंडिपेंडेट का दमन' से अपने सम्पादकीय में लिखा, 'इंडिपेंडेंट' मर सकता है, लेकिन जनता में जो भावना उसने जाग्रत कर दी है वह कभी मर नहीं सकती। 'इंडिपेंडेंट' भले ही न छपे, उसे लिखा तो जा ही सकता है। सम्पादक को जहाँ मालिकों के हितों की रक्षा करनी पड़ती है, वहीं अपने व्यक्तित्व को भी अक्षुण रखना पड़ता है। महादेव देसाई... मुझे आशा है अब वे छापने के स्थान पर अपना अख़बार लिखना शुरू कर देंगे। ख़बरों और सम्पदकीय टिप्पणियों को मजबूरी के कारण और भी सार-रूप में प्रस्तुत करने से पाठकों का भी लाभ होगा। अधिक संख्या में प्रतियाँ तैयार करने के लिए मेरा सुझाव है कि रोनियो, साइक्लोस्टाइल अथवा क्रोमोग्राफ से काम लेना चाहिए और यदि कानून और उसकी मनमानी व्याख्या सरकार को साइक्लोस्टाइल अथवा रोनियो मशीन तक ज़ब्त कर लेने की अनुमति देती हो, तब भी श्री देसाई की लेखनी तब तक देश की सेवा करती रह सकती है, जब तक खुद उनको पकड़कर इलाहाबादी सेंट्रल जेल में न डाल दिया जाए। राष्ट्रवादी अख़बारों के मालिक ख़बरदार रहें।[1]

गांधी की इस टिप्पणी के आस-पास ही महादेव देसाई ने दो हज़ार की ज़मानत के जब्त हो जाने के बाद 'इंडिपेंडेंट' का हस्तलिखित संस्करण निकालना आरम्भ कर दिया था। ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय तक हस्तलिखित पत्र-पत्रिकाएँ निकालने की परम्परा शुरू हो गई थी, लेकिन सरकारी अंकुश और सेंसरशिप के दवाब में हस्तलिखित समाचार-पत्र निकालने के सम्भवतः ये आरम्भिक प्रयोग थे। गांधी इस नए प्रयोग की उपयोगी और महत्त्वपूर्ण मान रहे थे। 'इंडिपेंडेंट' के अब तक चार सम्पादक-सी.एस. रंगा अय्यर, जॉर्ज जोजेफ कबाड़ी और महादेव देसाई गिरफ्तार हो गए थे और फिर भी उसका हस्तलिखित संस्करण निकल रहा था। गांधी ने 'यंग इंडिया' के 5 जनवरी 1922 के अंक में लिखा, "यह एक साहसपूर्ण प्रयोग है और उसमें महत्त्वपूर्ण सम्भावनाएँ निहित हैं। मुमकिन है कि सरकार पत्र के ख़िलाफ़ अपनी कार्यवाही की कोई हद ही न बाँधे और प्रत्येक नए सम्पादक को गिरफ्तार करती चली जाए। इस नए प्रयोग का उद्देश्य यह दिखाना है कि जब सज़ा भुगतने के लिए काफ़ी आदमी मौजूद हों तो कोई भी सरकार अपनी मर्जी के खिलाफ़ जबरदस्ती अपनी इच्छा नहीं लाद

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
सकती।''[2] गांधी तो ऐसे हस्तलिखित समाचार-पत्र की प्रतिलिपियाँ तैयार करने, वितरण एवं एजेन्टों की व्यवस्था करने, ग्राहकों की सूची बनाने तथा कर्मचारियों एवं पाठकों के बीच निकट और सजीव सम्पर्क स्थापित करने की आवश्यकता पर बल देते हैं और उसकी रूपरेखा इसी टिप्पणी में प्रस्तुत करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे गांधी ही हस्तलिखित समाचार-पत्र निकाल रहे हों और उसकी व्यवस्था पूरे सोच-विचार के साथ निश्चित कर ली हो।

गांधी के सम्मुख 'इंडिपेंडेंट' समाचार-पत्र का ही मामला नहीं है। 'डेमोक्रेट' सरकार सेंसरशिप से बन्द हो गया है तथा तिलक के 'केसरी' तथा गणेश शंकर विद्यार्थी के 'प्रताप' पर भी तलवारें उठ चुकी हैं तथा 'वन्देमारतम्' को दो हजार रुपये ज़मानत के रूप में जमा कर अपनी जान बचानी पड़ी है। स्थिति विकट है और 'केसरी' एवं 'प्रताप' से दस-दस हज़ार रुपये की ज़मानते माँग ली गई है। गांधी इस आपातकाल में इनके सम्पादकों की यह सलाह देते हैं कि ये 'इंडिपेंडेंट' की तरह अपने विचार हाथ से लिखकर ही प्रकाशित करते रहें, क्योंकि जब तक वे जेल से बाहर हैं तब तक उनका मुँह आसानी से बन्द नहीं हो सकता। गांधी आगे लिखते हैं, ''इसलिए पहले तो सीसे के टाइप और यन्त्र-रूपी मूर्ति को हमें तोड़-फोड़ डालना चाहिए। हमारी कलम ही टाइप बनाने वाली फाउण्डरी का काम देगी और खुशी-खुशी नकल करके प्रतियाँ तैयार करने वालों के हाथ छापने के यन्त्र का काम देंगे।... इसलिए जब तक हम अपने विचारों का प्रकाशन स्वतन्त्रतापूर्वक कर सकें तब तक अवश्य यन्त्र और टाइप का उपयोग करें, किन्तु जब तक 'प्रजावत्सल' सरकार, जो बड़ी चिन्ताकुल होकर मुद्रण-यन्त्र और टाइपों की अक्षर योजना पर बड़े गौर से निगाह गढ़ाए बैठी हो और उस पर अंकुश रखे हुए हो, हमारे हाथ से मुद्रण-यन्त्र छीन ले, तो हमें लाचार और दीन नहीं हो जाना चाहिए, तथापि मैं मानता हूँ कि हस्तलिखित समाचार-पत्र एक असाधारण समय के लिए एक असाधारण वीरोचित उपाय ही है।... भाषण स्वातन्त्र्य, सभा-सम्मेलन की स्वतन्त्रता और मुद्रण-स्वातन्त्र्य इन तीनों अधिकारों की पुनः स्थापना लगभग पूर्ण स्वराज्य के समान है।''[3] गांधी प्रयाग के 'स्वराज्य' के ज़मानत जब्त होने पर उसके हस्तलिखित रूप में निकलने पर उसका स्वागत करते हैं।[4] वे इसी प्रकार बिहार के 'मदरलैंड' समाचार-पत्र के सम्पादक द्वारा ज़मानत जमा न करके उसे हस्तलिखित रूप में निकालने की घोषणा का यह कहकर स्वागत करते हैं कि मुद्रित 'गीता' के स्थान पर हस्तलिखित 'गीता' का महत्त्व अधिक होता है। गांधी मानते हैं कि हस्तलिखित समाचार-पत्रों के उत्तरोत्तर विकास से इस कला का पुनरुत्थान होगा, समाचारों और विचारों को संक्षिप्त करने की क्षमता का विकास होगा। 'स्वराज्य' (प्रयाग), 'काँग्रेस' (गोहाटी) आदि हस्तलिखित समाचार-पत्र इस कला को विकसित कर रहे हैं।[5]

गांधी दासता एवं दमन के आपातकाल में हस्तलिखित समाचार-पत्रों को एक शक्ति के रूप में देखते थे। वे चाहते थे कि लोगों में देश-हित के लिए मेहनत करने का भाव एवं शक्ति उत्पन्न हो जाए तो असंख्य हस्तलिखित अख़बार रोज़ निकल सकते हैं[6] तथा इस प्रकार के अख़बारों को लिखने और प्रकाशित करने का साहस करने वाले लोग जब तक मौजूद हैं तब तक कोई भी सरकार उन पर नियन्त्रण नहीं कर सकती। वे बस इतना चाहते हैं कि ये हस्तलिखित समाचार-पत्र समाचारों के चयन में सावधानी बरतें, अहिंसा का पालन करें तथा संयत भाषा का प्रयोग करें।[7]

गांधी इस प्रकार पराधीनता के दमनकारी चक्र और प्रेस नियन्त्रण के अधिनियमों के विरुद्ध स्वतन्त्र अभिव्यक्ति के लिए समाचार-पत्रों के हस्तलिखित संस्करणों के प्रकाशन एवं वितरण का दिल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खोलकर समर्थन करते हैं और आपातकाल में उसे वीरोचित कार्य मानते हैं। गांधी की दृष्टि में स्वराज्य के लिए प्रेस की स्वतन्त्रता आवश्यक है। वे तो यहाँ तक कहते हैं कि भाषण, सभा-सम्मेलन और मुद्रण की स्वतन्त्रता पूर्ण स्वराज्य 'नव जीवन' भी[8] उनके पवित्र तथा नैतिक साधनों में आते हैं। यह गांधी की सनिवय अवज्ञा तथा सत्याग्रह दर्शन का ही अंग है कि अलोकतान्त्रिक एवं अमानवीय कानूनों को भंग किया जाए और पत्रकारिता में एक नए स्वरूप के विकास और उसके कलात्मक ऊँचाइयों तक पहुँचाने में मदद करते हैं। मॉरिशस में भी गुलामी के समय प्रवासी भारतीयों ने 'दुर्गा' हस्तलिखित पत्रिका (1935-38) निकाली थी और हिन्दी, भारतीयता एवं स्वतन्त्रता की चेतना को उत्पन्न करने का ऐतिहासिक प्रयास किया था।[9] विदेशी गुलामी या स्वदेशी गुलामी हो अथवा इन्दिरा गांधी जैसा लोकतान्त्रिक अपातकाल हो, यह हस्तलिखित पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन एवं वितरण जनता को अपना प्रतिरोध व्यक्त करने तथा अन्याय के विरुद्ध जन-चेतना को बनाए रखने का अहिंसक प्रयास होता है और मैं भी जब गिरफ्तार हुआ और तिहाड़ जेल, नई दिल्ली में रहा तो जेल तक में ऐसे समाचार-पत्र, फोल्डर, पत्रादि हमें मिलते रहे जिनसे वहाँ बन्दी दो सौ प्रोफेसरों में साहस बना रहा और बाहर के प्रतिरोध की जानकारी मिलती रही। गांधी भी हस्तलिखित पत्र पत्रिकाओं का समर्थन भी इसीलिए करते हैं क्योंकि वे दमन के विरुद्ध जनता को जाग्रत रखना चाहते हैं। अत: किसी भी आपातकाल में यह हस्तलिखित पत्रकारिता बड़ी महत्त्वपूर्ण एवं प्रभावशाली बन जाती हैं और दमन एवं क्रूरता के राज्य में स्वत: पनपने लगती है।

— ए-98, अशोक विहार,
फेज प्रथम, दिल्ली-110052

संदर्भ :

1. 'सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय', खण्ड-22, पृष्ठ 84-85
2. वही, खण्ड-22, पृष्ठ 137
3. वही, खण्ड-22, पृष्ठ 188-90
4. वही, खण्ड-22, पृष्ठ 254
5. वही, खण्ड-22, पृष्ठ 326
6. वही, खण्ड-42, पृष्ठ 404
7. वही, खण्ड-22, पृष्ठ 474
8. वही, खण्ड-45, पृष्ठ 312, गांधी, 'नवजीवन' (गुजराती) के 15 मार्च, 1931 के अंक में 'नव जीवन' के ग़ैर कानूनी ढंग से प्रकाशित करके उसे दस हज़ार ग्राहकों तक पहुँचाने का समर्थन करते हैं और अपने सहयोगियों की त्यागवृत्ति एवं उत्साह की प्रशंसा करते हैं।
9. मॉरिशस की हस्तलिखित पत्रिका 'दुर्गा' (1935-38) के सम्पादक सूर्यप्रसाद मंगर 'भगत' थे। यह मासिक पत्रिका थी और केवल सदस्यों में ही वितरित होती थी। इसकी पूरी फाइल की फोटोकॉपी मेरे पास है तथा इस पर मेरा शोध-लेख हिन्दी प्रचारिणी सभा, लाँग माउन्टेन, मॉरिशस ने प्रकाशित किया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वामन राव पाठक

आपात स्थिति और महाराष्ट्र राज्य

महाराष्ट्र राज्य विशाल भारत देश का अभिन्न अंग है। सन् 1975 में इस देश की जनसंख्या साठ करोड़ थी और महाराष्ट्र राज्य की जनसंख्या छः करोड़ थी। देश में तथा प्रदेश में लोकतंत्र के आधार पर शासन चल रहा था। परन्तु 26 जून 1975 को एकाएक घोषणा कर दी गई कि देश में आपातकाल लागू हो गया है। महाराष्ट्र राज्य में प्रधानमंत्री की आपातकाल की घोषणा से प्रतिक्रिया हुई। सन् 1947 से 1975 तक महाराष्ट्र राज्य में निरन्तर कांग्रेस का ही शासन चल रहा था। इस समय भी कांग्रेस के मुख्यमंत्री शंकरराव चव्हाण राज्य का शासन लोतांत्रिक पद्धति से चला रहे थे। कांगेस को विपक्षी दलों को धर दबोचने का स्वर्ण योग प्राप्त हो गया था और विरोधी दल और उनकी समर्थक जनता को तानाशाही के आतंक का डर लगने लगा।

लोकतंत्र को ग्रहण

भारत राष्ट्र के इतिहास में सन् 75 से 77 का 29 माह का अवधि काला अध्याय ही था। तानाशाही की घोषणा से प्रजातंत्र को मानो ग्रहण लग गया। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने मंत्रिमंडल की सलाह के बिना तत्कालीन राष्ट्रपति फखरूद्दीन अली अहमद से आपातकाल की घोषणा पर शिक्कामोर्तब करा लिया। साथ-साथ भारत सरकार ने जनता के मौलिक अधिकारों को निरस्त कर दिया था। देश के सभी समाचार पत्रों की स्वतंत्रता भी छीन ली थी। न्यायपालिका की निष्पक्षता संदिग्ध बना दी थी। प्रमुख नेताओं और कार्यकर्ताओं को जेलों में बंद करके गला घोंट दिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उपर्युक्त परिस्थिति के कारण महाराष्ट्र राज्य की जनता में असंतोष फैल गया। परन्तु मीसा, डीआईआर और सेंसरशिप जैसे खतरनाक कानूनों के कारण जनता का मुँह बन्द हो गया था। जबरी नसबंदी, महानगरों का सुन्दरीकरण और अफसरों की तानाशाही के विरूद्ध जनता में रोष व्याप्त था। कर्मचारी और मजदूर वर्ग संकट में फंस गया। परन्तु महाराष्ट्र राज्य के उद्योगपति प्रसन्न हो गये। बड़े उद्योगपतियों ने अनुशासन, औद्योगिक शांति और उत्पादन में वृद्धि के बड़े गुन गाये। इंदिरा जी के सुपुत्र संजय गांधी ने विदेशों में प्रचार किया कि विदेशी पूँजीपतियों को इस देश में सस्ता मजदूर मिलेगा जिसके हाथ-पाँव आपातकाल के कानूनों ने जकड़ लिए हैं।

बारह जून 1975 अशुभ दिन

सन् 1972 के सार्वजनिक चुनाव में रायबरेली से श्री राजनारायण के विरुद्ध खड़े होकर इंदिरा विजयी हुई। चुनाव में धांधली हुई है ऐसी शिकायत राजनारायण ने कोर्ट में बारह जून को इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायधीश श्री जगमोहन लाल ने अपना ऐतिहासिक निर्णय सुनाया। इस निर्णय के अनुसार 'श्रीमती इंदिरा गांधी अपने चुनाव में भ्रष्टाचार में लिप्त प्रमाणित हुई है। अत: उनकी लोकसभा की सदस्यता रद्द की जाती है तथा उन्हें आगामी छह वर्ष के लिये किसी भी चुनाव में खड़े होने के लिए अयोग्य घोषित हकिया जाता है।' श्रीमती इंदिरा जी को यह निर्णय अनपेक्षित था। वह क्रोध से लालबूँद हो गईं।

इसी दिन शाम को गुजरात विधान सभा के चुनाव परिणाम घोषित हो गए जिसके अनुसार इंदिरा कांग्रेस पराजित हो गई और जनता मोर्चा विजयी हो गया था।

बिहार की जनता ने सर्वोदयी नेता को जयप्रकाश को 'लोकनायक' कहकर गौरवान्वित किया था। बिहार आन्दोलन की चिंगारी सारे देश में फैल गई। जयप्रकाश जी ने समग्र क्रान्ति की घोषणा की और 6 मार्च 1975 को देश की राजधानी दिल्ली में विशाल जनसभा ली और इंदिरा जी से प्रधानमंत्री पद त्यागने की मांग की थी। इस सभा में एक ही नारा गूँज रहा था, 'सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।'

उपर्युक्त स्थिति में इंदिरा जी का सिंहासन डाँवाडोल होने लगा। उन्होंने आनन फानन में बंगाल के सिद्धार्थ शंकर राय की सलाह ली। उन्होंने कहा कि आंतरिक आपातकाल घोषित कर, उसके द्वारा प्रदत्त शक्तियों का उपयोग विरोधियों को दबाने हेतु करना ही एक मात्र मार्ग है।

सम्पूर्ण देश एक कारागार

दिनांक 26 जून 1975 से 29 मार्च 1977 तक के 29 माह के अवधि में भारत के स्वातंत्र्यसूर्य को आंतरिक आपातकाल के राहू ने ग्रस लिया था। आपातकाल की जंजीरों में सम्पूर्ण देशवासी जनता को जकड़ लिया गया। हजारों छोटे-बड़े नेताओं को तथा कार्यकर्ताओं को इंदिरा जी ने कारागारों में ठूंस दिया। सब निर्दोष, निरपराध थे। परन्तु कोई भी इसके विरोध में आवाज़ नहीं उठा सकता था। एकाधिकारवाद का क्रूर राक्षस अपने हाथ फैला रहा था और तानाशाही रूपी सुरसा अपना जबड़ा अधिकाधिक पसार रही थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समाचार पत्रों की प्रतिक्रिया

महाराष्ट्र राज्य के समाचार पत्र आपातकाल स्थिति के विरूद्ध थे परन्तु सेंसर ने उनके कलम तोड़ दिये थे। अत: कई समाचार पत्रों ने संपादकीय लेख लिखना बंद कर दिया और उसके स्थान पर वे कोरा कॉलम रखने लगे। विरोध का यह तरीका भी प्रभावी साबित हुआ।

इलाहाबाद उच्च न्यायालय का निर्णय 12 जून को घोषित होने के बाद श्रीमती इंदिरा गांधी के त्यागपत्र की बात संघर्ष मोर्चा ने उठायी और उसका साथ दिया सभी विरोधी दलों ने। देश के और प्रदेश के सभी समाचार पत्रों ने बड़े प्रखर ढंग से त्यागपत्र के औचित्य का प्रतिपादन किया था।

हिन्दुस्थान टाईम्स, दिल्ली के दिनांक 13 जून 1975 के अंक में लिखा था, 'वर्तमान परिस्थितियों में प्रधानमंत्री के लिए यह उचित होगा किं त्यागपत्र दे जिससे की न्यायपालिका और भारत के जनतंत्र का सम्मान होगा।'

एस.एम.जोशी का नेतृत्व

दिनांक 26 जून को देश के बड़े बड़े नेताओं को जेल में ठूँसने के बाद मोरारजी देसाई और नानाजी देशमुख की गिरफ्तारी की गई। अब संघर्ष समिति का नेतृत्व महाराष्ट्र के समाजवादी नेता एस.एम. जोशी को करना पड़ा। इस कार्य को उन्होंने भली-भाँति निभाया। महाराष्ट्र के दूसरे नेता श्री नाना साहेब गोरे द्वारा किया गया प्रकट जन जागरण और लोकनाथ जोशी का भूमिगत जागरण बहुत महत्त्वपूर्ण रहे। पूना के युवा तुर्क नेता मोहन धारिया के प्रयासों को भुलाया नहीं जा सकता।

पद्मभूषण श्रीमती दुर्गा भागवत का आह्वान

मराठी भाषा की प्रसिद्ध लेखिका तथा अखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलन की अध्यक्ष श्रीमती दुर्गा भागवत ने समस्त जनता से आह्वान किया कि वे आपात स्थिति रहते हुए सभी सरकारी कार्यक्रमों का बहिष्कार करें। इसके बाद उन्होंने स्वयं शासन द्वारा प्रदत्त पद्मभूषण आदि अलंकरण वापस कर दिये। बड़ी बड़ी सभाओं में उन्होंने आपातकाल विरोधी भाषण कठोर शब्दों में दिये और लेख लिखे। परिणाम स्वरूप अन्त में उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। गिरफ्तारी के समय उन्होंने वीरोचित शब्दों में कहा, 'अपना भाषण स्वातंत्र्य छिन जाने की अपेक्षा मैं मरना पसंद करूँगी।'

श्री प्रभाकर शर्मा का आत्मदाह

महाराष्ट्र राज्य में सर्वत्र विरोध का सिलसिला हुआ। व्यक्तिगत स्वरूप में लोग आगे बढ़े। अपने-अपने तरीके से आपात स्थिति का विरोध होने लगा। विदर्भ प्रदेश में वर्धा जिले के एक ग्राम में दिनांक 14/10/76 को सर्वोदयी नेता प्रभाकर शर्मा ने आत्मदाह किया। यह प्रसंग सन्त विनोबा भावे के नाक के नीचे हुआ और इससे सबकी नींद उड़ गयी।

अनुशासन पर्व

सन्त बिनोभा भावे ने श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा घोषित आपात स्थिति को मानो समर्थन ही दिया है। उन्होंने कहा, इस कानून के तहत राष्ट्र को अनुशासित किया जा सकता है। यह हमारे देश के लिए 'अनुशासन पर्व' है। उनकी इस घोषणा से जनतंत्र प्रेमी कार्यकर्ताओं को और क्रोधित किया। मानो आग में घी डाल दिया हो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दूसरे सर्वोदय के नेता आचार्य दादा धर्माधिकारी ने अपना निषेध प्रकट करते हुए कहा था, 'यह अनुशासन पर्व नहीं, आतंक पर्व है। श्रीमती इंदिरा जी के तानाशाही के सामने घुटने टेकना जैसा है।'

कुछ महत्त्वपूर्ण पत्र

महाराष्ट्र के कुछ जननेताओं ने प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के नाम पत्र लिखे और आपात स्थिति का विरोध दर्शाया। इनमें प्रमुख थे- सरसंघ चालक बालासाहेब देवरस, श्रीमती कृष्णा बाई निंबकर, मधु लिमये आदि।

राष्ट्र संघ के डॉ. कुर्टवाल्कहैम को दिनांक 9.12.76 को विदर्भ के डॉ. वसंतराव वरखेड़कर ने पत्र भेजा था जो बहुत प्रभावी रहा। यूनो में आपात-स्थिति चर्चा का विषय बन गया।

गैर कम्युनिस्ट नेताओं की गिरफ्तारी

आपातकालीन स्थिति की घोषणा होते ही देशभर में लाखों लोगों की धरपकड़ हो गई। 9 जुलाई 1975 को इंदिरा ने अपना बीस सूत्रीय आर्थिक कार्यक्रम जाहिर किया। उसके पूर्व 26 जून को गिरफ्तारियों का इंदौर चला। मीसा में देश भर में 1 लाख 75 हजार लोग बिना कारण बताये बंद कर दिये गये थे। कम्युनिस्ट नेताओं को छोड़कर अन्य विरोधी पक्षों के जैसे समाजवादी, संगठन कांग्रेस और जनसंघ के कार्यकर्ता बड़ी संख्या में गिरफ्तार किये गए।

व्यक्तिगत सत्याग्रह

आपात स्थिति को विरोध दर्शाने हेतु महाराष्ट्र राज्य में भी स्थान-स्थान पर प्रदर्शन किये गये। संघ कार्यकर्ताओं की भी गिरफ्तारी बड़ी संख्या में हुई। उन दिनों कांग्रेसी और कम्युनिस्ट कार्यकर्ता गुप्तचर बने हुए थे। उन्होंने सर्वत्र आतंक फैला रखा था। उनके इशारों पर निर्दोष व्यक्तियों को भी जेल की हवा खानी पड़ी। महाराष्ट्र शासन के पुलिस गिरफ्तारियाँ किस प्रकार करते थे इसके कुछ नमूने इस प्रकार हैं :-

1. वर्धा की श्रीमती रमाबाई के घर पर रात 9 बजे पुलिस ने दस्तक दी और रमाबाई को पुलिस जीप में बिठाकर ले गयी। घर में पुरुष कोई नहीं था। दो छोटी बच्चियाँ थीं जो बिलखती रहीं।
2. रामटेक तहसील के मायाराम को रास्ते में ही पकड़ लिया गया। उनके संबंधियों को सूचना तक नहीं दी गई। खोजते-खोजते कुछ दिन बाद उन्हें पता चला कि वे तो जेल की हवा खा रहे हैं।

अंधाधुँध गिरफ्तारियों का दौर ऐसा चला कि हर एक को डर लगता था। जनता के मन में आतंक बिठाने के लिए सरकार का दुष्प्रचार चल रहा था। जयप्रकाश नारायण के बारे में हिंसक, षडयंत्रकारी, विदेशों के एजंट, अराजकता के उपासक, जनतंत्र के दुश्मन के रूप में सभी समाचार पत्रों द्वारा प्रचार किया जा रहा था।

पूना के महापौर भाई वैद्य तथा जनसंघ नेता रामभाऊ म्हालगी ने एक विशाल सार्वजनिक सभा में आपात स्थिति के विरोध में भाषण दिये। पुलिस ने दोनों को गिरफ्तार किया।

मुम्बई के बार के समस्त सदस्य आपात काल विरोध प्रकट करने हेतु न्यायालयों में उपस्थित नहीं रहे। मुम्बई नगर निगम ने आपातकाल का निषेध करने के लिए एक प्रस्ताव पारित किया।

वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी आचार्य कृपलानी, स.का.पाटील, श्रीमती मृणाल गोरे आदि के नेतृत्व

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में 'हुतात्मा चौक से' एक जुलूस निकाला गया। आपातकाल विरोधी नारे लगाते हुए वह जुलूस काला घोड़ा तक पहुँचा जहाँ एक सभा की गई। नेताओं को गिरफ्तार किया गया।

आपातकाल के विरोध में भारत के अतिरिक्त महाधिवक्ता एफ.एस. नरिमन ने विरोध करते हुए अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। रिजर्व बैंक के संचालक एम.एल.दंतेवाला तथा मध्यप्रदेश के महाधिवक्ता वाई. एस. धर्माधिकारी ने भी अपने पदों से त्यागपत्र दे दिये।

अभिनव नाट्य प्रयोग

मुम्बई में आपातकाल का विरोध दर्शाने हेतु एक नाटक कंपनी बनाई गई। इस नाटक कंपनी द्वारा लगभग 75 स्थानों पर हिन्दी मराठी में नाटक प्रस्तुत किये गये। नाटक की विषय वस्तु व्यंग्यात्मक थी।

भारत में एक रानी ने आदेश निकाला कि उनके राज्य में शोर नहीं होना चाहिए। इस नियम के कारण बच्चा या जच्चा प्रसव के समय रो नहीं सकता था, कारण रोने पर पिता को जुर्माना देना पड़ता था। एक रात बुढ़िया के घर में एक चोर घुस आया। चोर को देखकर कुत्ता भौंकने लगा। शोर हुआ तो पड़ौसी दौड़ पड़े और उन्होंने चोर का पकड़ लिया। मामला रानी के सामने गया। रानी ने चोर को तो छोड़ दिया परन्तु शोर मचाने के अपराध में कुत्ते को जेल भेज दिया। बुढ़िया ने रानी से कहा कि कुत्ते का आवाज़ करना अधिकार है। भोंक कर ही वह अपना विरोध जताता है तब रानी ने तुरन्त जबाव दिया कि मेरे राज्य में कुत्ते को भौंकने की इजाज़त नहीं है, वे केवल दुम हिला सकते हैं।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक पर पाबंदी

महाराष्ट्र में सन् 1948 में पहली बार आर.एस.एस. पर पाबंदी लगाई गई थी। पूना के एक हिन्दुत्व निष्ठ व्यक्ति नाथूराम गोड़से ने पूज्य महात्मा गांधी की हत्या की थी। परन्तु आर.एस.एस. में महाराष्ट्रीय ब्राह्मणों की संख्या अधिक होने के कारण आर.एस.एस. को गांधी की हत्यारी संस्था मानकर पाबंदी लगा दी थी। हजारों स्वयं सेवकों को बंदी बना लिया था। आर.एस.एस. के समर्थकों के घर जलाये, दुकानें जलाईं प्रेस जलाये और क्रूर अत्याचार किये थे। महाराष्ट्र सरकार के काँग्रेसी मंत्रीमंडल में कभी भी ब्राह्मण मंत्री बनाया नहीं गया था।

यह पुन: अवसर मिल गया। महाराष्ट्र शासन ने चुन चुन कर आर.एस.एस. वादी ब्राह्मणों को जेल की हवा खिलवाई। पुलिस में ब्राह्मणेतर ही थे इसलिये उन्होंने तहेदिल से बदला लिया। जिन छब्बीस संस्थाओं पर प्रतिबंध लगाया गया था उनमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ही एकमेव देशव्यापी प्रभावी संगठन था।

आर.एस.एस. दुश्मन

दिनांक 27 जून को दिल्ली में श्रीमती इंदिरा गांधी ने केन्द्रीय सचिवालय के अधिकारियों की विशेष बैठक में कहा था कि, 'इन सब मामलों की जड़ आर.एस.एस. है।' कांग्रेस अध्यक्ष देवकान्त बरुआ ने यूथ कांग्रेस के अधिकारियों के समक्ष तुरन्त कहा कि आर.एस.एस. देश की दुश्मन है और हम उसे समूल नष्ट करना चाहते हैं।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सर संघचालक का आह्वान

नागपुर से सर संघचालक बाला साहेब देवसरजी ने दिनांक 30 जून को अपने संघ स्वयंसेवकों को इस प्रकार आह्वान किया :-

'प्रयाग उच्च न्यायालय के निर्णय के कारण, दुर्भाग्य से प्रधानमंत्री इंदिरा जी अपना सन्तुलन खो बैठी हैं। उन्होंने आंतरिक आपात स्थिति की घोषणा करते हुए विभिन्न राजनीति नेताओं को बंदी बनाया है। सभी समाचार पत्रों पर बंधन लगाये हैं। उनकी इन कारवाइयों के कारण देश की लोकतांत्रिक शासन पद्धति पर आघात हुआ है। जनता के मूल भूत अधिकारों का हनन हुआ है। अतएव स्वयंसेवक अपना सन्तुलन न खोवें। सरकार्यवाह माधवराव जी मुले के आदेशानुसार संघकार्य जारी रखें।'

इसके बाद 30 जून को ही सर संघचालक बाला साहेब देवरस को बंदी बनाया गया और उसके बाद 4 जुलाई 1975 से आर.एस.एस. पर दूसरी बार प्रतिबंध लगाया गया। देश में लगभग दस हजार संघ कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। फिर देश के विभिन्न जेलों में निम्नांकित नारे गूँजने लगे- भारत माता की जय! तानाशाही नहीं चलेगी। देश का नेता जयप्रकाश!

नागविदर्भ का सत्याग्रह

सत्याग्रह के दौरान कुल 2378 लोग गिरफ्तार हुए जिनमें 34 अन्य को छोड़कर शेष सभी संघ के थे। स्वयं सत्याग्रही में पुरुषों की संख्या 1767 तथा महिलाओं की संख्या 329 थी। कुल 2095 लोग थे। ये सत्याग्रही कुल 166 गांवों से आये थे। उन्होंने 215 जत्थों में 69 केन्द्रों पर सत्याग्रह कर अपनी गिरफ्तारी स्वयं दी थी। सत्याग्रह विदर्भ के सभी आठ जिलों में निरन्तर चलता रहा।

महाराष्ट्र राज्य की द्वितीय राजधानी नागपुर में सत्याग्रह जोरदार हुआ। नागपुर नगर के 550 सत्याग्रही थे जिन्होंने नागपुर में 45 जत्थों में 40 केन्द्रों पर सत्याग्रह किया। प्रशासन में लगातार रस्साकशी चलती रही।

नागपुर की महिलाओं का सत्याग्रह

रानी झांसी चौराहे पर दिनांक 14 नवंबर को पंडित जवाहरलाल नेहरू के जन्मदिन पर श्रीमती निर्मला पुराणिक के नेतृत्व में 25 महिलाओं का अभूतपूर्व सत्याग्रह हुआ। ठीक साढ़े पांच बजे शाम को महिलाओं का जत्था निम्नांकित नारे लगाते हुए आगे बढ़ा। नारे थे- 'इंदिरा तेरी तानाशाही नहीं चलेगी, नहीं चलेगी', 'इमरजेंसी हटाओ, नेताओं को रिहा करो!', 'लोकनायक जयप्रकाश जिंदाबाद'। पुलिस वाहन द्वारा सभी महिलाओं को पुलिस स्टेशन ले गए और वहाँ उनको चेतावनी दी कि आपको पांच साल सश्रम कारावास भुगतना पड़ेगा इसलिए आप घर लौट जाओ। परन्तु 70 वर्ष की वृद्धा से लेकर 14 वर्ष की किशोरी तक कोई भी पीछे नहीं हटी। पुलिस ने सब को जेल भेज दिया।

महिलाओं का दूसरा जत्था

नागपुर के मेडिकल चौक पर महिलाओं का सत्याग्रह होने वाला था। पुलिस को भनक लग गई। इसलिये समय से पूर्व स्थान बदलकर कॉटन मार्केट चौराहा तय कर दिया। ठीक समय पर 33 महिलायें पुष्पहार पहनकर और आपात स्थिति के खिलाफ नारे लगाते हुए कॉटन मार्केट चौराहे पर पहुँच गईं। नारों को दोहराते हुए पुष्पित जनता ने उनका स्वागत किया। बाद में पुलिस उन्हें पकड़कर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ले गई।

पण्डाल गूँज उठा

नागपुर विद्यापीठ की लायब्रेरी के पास हिन्दी की उपाधि परीक्षा का दीक्षांत समारोह चल रहा था। केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री धर्मवीर सिन्हा अध्यक्षीय भाषण देने जैसे ही उठ खड़े हुए वैसे ही पण्डाल में आपातकाल विरोधी नारे गूँज उठे। श्री सिन्हा गुस्से में लाल पीले हो गए। बाद में पुलिस ने बमुश्किल शान्ति प्रस्थापित की।

डॉ. जोशी का सत्याग्रह

ब्रह्मपुरी तहसील के स्थान पर डॉ. सुधाकर राव जोशी के नेतृत्व में सत्याग्रह हुआ। इस दिन साप्ताहिक बाजार चल रहा था जहाँ 70-80 गांवों के लोग एकत्रित हो गए थे। सत्याग्रहियों ने आपातकाल विरोधी नारे लगाये और हजारों को सत्याग्रह का संदेशा पहुँचाया।

इसी प्रकार विदर्भ के पांढरकबडा मेहेकर, नांदूरा, चांदा में सत्याग्रह हो गए। वर्धा में श्रीमती सरोजनी देशपांडे के नेतृत्व में सत्याग्रह हुआ।

पश्चिम महाराष्ट्र के सत्याग्रह

पश्चिम महाराष्ट्र में सत्याग्रह के कारण 4823 गिरफ्तारियाँ हुईं। इनमें से केवल 351 बंदी अन्य दलों के हैं। शेष संघ परिवार के हैं। सभी 20 जिलों में निरन्तर सत्याग्रह चला था। इस प्रदेश के 394 ग्राम तथा नगरों में सत्याग्रह यज्ञ में कार्यकर्ताओं ने अपनी आहुति डाली। 509 जत्थों में 134 केन्द्रों पर 4194 कार्यकर्ताओं ने सत्याग्रह कर अपनी गिरफ्तारी दी। इनमें 460 महिलाएँ भी शामिल थीं।

मुम्बई महानगर में प्रथम दिवस पर निम्नांकित स्थानों पर सत्याग्रह हुए :-

1.	लालबाग	नेतृत्व मधुकर चव्हाण	सत्याग्रही संख्या 7
2.	मलाड	नानू परमार (समाजवादी)	संख्या 90
3.	पार्ले	विजय कुलकर्णी	संख्या 9
4.	बोरीबंदर	चेंबुरकर	झुग्गी झोपड़ी वाले
5.	माटुंगा	भाटिया	संख्या 9
6.	अंधेरी	मेहराजी	संख्या 10
7.	चर्चगेट	डॉ. वसंत कुमार पंडित (जनसंघ)	संख्या 15
8.	विश्वविद्यालय परिसर	बाल आप्टे, अ.भा.वि.प. के अध्यक्ष	संख्या 15

पाईपलाईन पर नारे

बांद्रा के पास रेलवे लाईन के समानान्तर 10 किलोमीटर भारी पाईपलाईन पर किशोर स्वयं सेवकों ने आपात स्थिति विरोधी नारे लिखे थे। रेलवे से आने जाने वाले हजारों प्रवासी रोज उसे पढ़ते थे।

मुम्बई में श्रमिकों तथा कामगारों ने भी सत्याग्रह में भारी योगदान दिया। सरकारी बोनस नीति के विरोध में सत्याग्रह हुआ। इसका नेतृत्व भारतीय मजदूर संघ के संगठक योगेन्द्र प्रसाद ने किया। उन्होंने विशाल जनसमुदाय के सामने भाषण दिये।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुलिस अधिकारियों ने कहा, 'जेलों में अब कोई जगह नहीं है। इसलिये आप लोग कृपया घर चले जाइये।' श्रमिकों का आन्दोलन लालबाग, परेल, प्रभादेवी, कुर्ला, नेरी, बरली आदि अनेकों स्थानों पर हुआ।

बसई जिला ठाणा में 16 कार्यकर्ताओं ने सत्याग्रह किया। उनमें 6 पुरुष और 10 महिलाएं थीं। इस जत्थे का नेतृत्व डॉ. उमेश पै ने किया था। पुलिस ने इन्हें गिरफ्तार किया।

मुख्यमंत्री की सभा में प्रचार

मुख्यमंत्री शंकरराव चव्हाण एक विशाल सभा में सोलापुर में भाषण दे रहे थे। संघर्ष समिति के स्वयंसेवकों ने इस सभा में हजारों पत्रक बाँटें तथा नारेबाजी की। सभा उध्वस्त हो गई। पुलिस ने केवल दो किशोरों को पकड़ा। मुख्यमंत्री बेहद नाराज़ हो गए।

आकाशवाणी पर नारेबाजी

किशोर सत्याग्रही रवीन्द्र देसाई ने पूना के आकाशवाणी केन्द्र में घुसकर आपात स्थिति के विरोध में नारे लगाये वे इस प्रकार थे :- 'भारत माता की जय, आपात काल समाप्त करो, तानाशाही नष्ट करो, राजबंदियों को मुक्त करो, संघ पर की पाबंदी उठाओ।' पुलिस ने रवीन्द्र को पकड़कर मजिस्ट्रेट के सामने प्रस्तुत किया। उन्होंने रवीन्द्र को पूछा कि आपने आकाशवाणी पर नारे क्यों लगाये? रवीन्द्र ने कहा कि 'हजारों लोगों को मैं अपने नारे सुनाना चाहता था। मेरी इच्छा पूरी हो गई।'

क्रिकेट के मैदान में

अहमदनगर के वाडिया पार्क मैदान में विशेष क्रिकेट मैच खेला जा रहा था। मंत्री सुशील कुमार शिंदे उपस्थित थे। यहाँ गावस्कर ने शतक पूरा किया। उसके अभिनन्दन हेतु लोग मैदान में दौड़ पड़े। इसका लाभ उठाकर बाल खंदारे और सतीश मुले ने दस हजार प्रेक्षकों के बीच आपात काल विरोधी पर्चे बाँटे और नारे लगाये। हजारों लोगों ने उनके नारे दोहराए।

संक्रान्ति का दिन

जवाहरलाल नेहरू की जयंती 14 नवम्बर से 14 जनवरी तक सत्याग्रह आन्दोलन चलता रहा। संक्रान्ति के दिन फोर्ट क्षेत्र में लाखों का जन समुदाय इकट्ठा हुआ था। इस स्थान पर 61 महिलाओं के साथ 589 सत्याग्रही इकट्ठा हुए। उनके नारों और पत्रकों से वायुमंडल में जागृति का संचार हुआ। सैकड़ों पुलिस के उपस्थिति में लोग नारे लगा रहे थे। इन 589 सत्याग्रहियों में 132 जत्थों में 146 स्थानों पर सत्याग्रह किया था।

विभिन्न प्रकार से प्रदर्शन

कई सत्याग्रहियों ने आतिशबाजी की और पटाखों धमाकों से भीड़ को आकर्षित किया। कुछ जत्थों ने अपनी छाती और पीठ पर 'तानाशाही खत्म करो' जैसे नारे लिखकर जुलूस निकाले। कुछ सत्याग्रहियों ने बड़े बड़े गुब्बारे हवा में छोड़े जिन पर लिखा था 'जय प्रकाश जिंदाबाद', 'भारत माता की जय। जनसंघ, समाजवादी दल, संगठन कांग्रेस आदि अनेक पक्षों के सदस्यों ने सत्याग्रह में अच्छा सहयोग दिया। कंधार जिला नांदेड़ के केशवराव घोंगड़े के नेतृत्व में शेनकरी कामपुरी पक्ष के 150 अनुयायियों ने सत्याग्रह किया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रा.स्व.संघ का योगदान

सर संघचालक बालासाहेब देवरस जी ने कहा कि आपातकाल विरोधी सत्याग्रह आन्दोलन में रा.स्व.संघ ने संगठन के रूप में सहभाग नहीं लिया है। परन्तु समाज के दायित्वपूर्ण अंग के नाते स्वयंसवेकों ने जो उचित समझा वह सब कुछ किया। लोकतंत्र की हत्या के कारण संघ स्वयं सेवकों के मन में व्यथा थी और उसी की पुनः स्थापना के लिए पूरी शक्ति लगाकर प्रयास करने का निश्चय संघ स्वयं सेवकों ने किया है। आपातकाल जन्म तानाशाही का डटकर विरोध करना संघ सेवकों के लिए स्वाभाविक कर्तव्य ही बन गया है। आपातकाल को हटाना यह हमारा उद्देश्य नहीं परन्तु तानाशाही को हटाने के लिए हम सब प्रयत्न करेंगे।

प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने कहा था, 'गुप्तचर विभाग की रिपोर्ट के आधार पर यह कहा जा सकता है कि रा.स्व.संघ समाप्त हो गया है। परन्तु देशव्यापी सत्याग्रह के पीछे रा.स्व.संघ की शक्ति का ही आज प्रदर्शन हो रहा है।'

सत्याग्रहियों की संख्या

महाराष्ट्र राज्य में मीसा और डी.आई.आर. के अंतर्गत बंदियों की संख्या - मीसा में 2211 डी.आई.आर. - 231 सत्याग्रही संख्या- 15220 गिरफ्तार 9048 सत्याग्रहियों की ग्राम संख्या- 634

भूमिगत आन्दोलन

आपात स्थिति की घोषणा होने के बाद हजारों कार्यकर्ताओं को महाराष्ट्र पुलिस ने बंदी बनाया था। संघ के स्वयंसेवक और अन्य पक्षों के कार्यकर्ता बड़ी संख्या में भूमिगत हो गए और कुछ अन्य कुछ समय बाद योजनाबद्ध तरीकों से सर्वत्र आन्दोलन शुरू हो गए। महाराष्ट्र राज्य में सोशलिस्ट, संगठन कांग्रेस, सर्वोदयी, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट आदि विभिन्न पक्ष कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करते रहे। समाजवादी नेता एस.एम.जोशी, नाना साहेब गोरे, मधु लिमये, मधु दंडवते, मृणाल गोरे, सर्वोदयी नेता दादा धर्माधिकारी संघ कार्यकर्ता दत्तोपंत ठेंगड़ी, डॉ. आबाजी थत्ते, बालासाहब हरदास, बलनराव देशपांडे जी ने सबसे सघन सम्पर्क किया और आन्दोलन को योग्य दिशा दी।

विदर्भ में भूमिगत कार्यों में राष्ट्र सेविका समिति की महिला कार्यकर्ताओं का अभूतपूर्व योगदान रहा। आपातकाल विरोधी एक आचार्य सम्मेलन नागपुर में हुआ, जिसमें रा.कृ.पाटिल, आचार्य देशपाण्डे, प्रा.ना.रा. देशपाण्डे, दादा साहेब बार्लिंगे, एकनाथ पटवर्धन आदि के भाषण हो गए। इसी समय 26 जून को आंतरिक आपात स्थिति का एक वर्ष पूरा हो गया अतएव पचास हजार भित्ति पत्र को छापकर सारे विदर्भ में दिवालों पर लगाए गए। इसके बाद 18 जुलाई 1976 को जनता मोर्चा के नेता जयप्रकाश नारायण आचार्य विनोबा से मिलने के लिए पवनार गए थे।

रा.स्वसेवक संघ के केन्द्रीय अधिकारी स्व. पांडुरंगपंत क्षीरसागर का निधन ठाणे जेल में हो गया। उनका शव नागपुर में संघ के नेता घराटे के घर लाया गया। दाह संस्कार के समय लगभग दस हजार लोग उपस्थित थे और आपात स्थिति के विरुद्ध नारे लगा रहे थे।

पश्चिम महाराष्ट्र में भूमिगत आंदोलन

दिनांक 4 जुलाई 1975 के पूर्व ही महाराष्ट्र प्रान्त प्रचारक बसन्तराव केलकर, प्रान्त कार्यवाह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बसन्तराव भिडे, शिवराय तेलंग, दामुअण्णा दाते, तात्या बापट, सुरेश केतकर आदि संघ कार्यकर्ता भूमिगत हो गए थे। इसी प्रकार समाजवादी कार्यकर्ता श्री पन्नालाल सुराणा, श्रीमती मृणाल गोरे, जगन्नाथ जाधव आदि अनेक कार्यकर्ता भूमिगत हो गए।

पूना के येखड़ा जेल में सरसंघचालक बाला साहेब देवरस जी को रखा था। प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सभी संघ कार्यकर्ता उनसे सम्पर्क साधते थे। संघ के समान विद्यार्थी परिषद् का ताना-बाना या महाराष्ट्र राज्य के कोने-कोने में सुसज्ज था। विद्यार्थियों के सत्याग्रह हेतु विशेष प्रयत्न किए—प्रा. देशपांडे, अशोक नाफडे, गणेश जोशी, सतीश मराठे, सुधीर जोगलेकर, सदाशिव देवधर आदि भूमिगत कार्यकर्ताओं ने ।

स्वातंत्र्य नामक समाचार पत्र

मुंबई में 'स्वातंत्र्य' नाम का एक चक्रमुद्रित गुप्त समाचार पत्र निकाला गया था जिसका घोष वाक्य था, ''लोक संघर्ष के लिए कटिबद्ध युवकों का मुखपत्र।'' इसके एक अंक में छपा था, ''अवश्य देखिए, इंदिरा प्रॉडक्शन का प्रेक्षणीय चित्र 'गणतंत्र की हत्या'। लेखक था दिग्दर्शक सब कुछ इंदिरा गांधी।'' एक अन्य विज्ञापन था। ''चाहिए—फर्जी प्रधानमंत्री को सहारा देने के लिए बहुत बड़ी संख्या में चमचे चाहिए।''

टेल ऑफ टू इमर्जेन्सी

श्री लालकृष्ण आडवाणी जी ने कारागार में ''टेल ऑफ टू इमर्जेन्सी'' नामक पुस्तक लिखी थी। मुम्बई के संघ कार्यकर्ताओं ने उसे विभागशः टंकमुद्रित करवाया। जेरॉक्स पद्धति से उसकी प्रतियाँ बनाई गईं। चालीस हजार प्रतियाँ छापकर देशभर में वितरित की गई थीं। इसे भूमिगत कार्य का एक विक्रम ही माना जाएगा।

पंधरा हजार रोटियाँ

भूमिगत आन्दोलन के अन्तर्गत प्रत्येक माह की 26 तारीख को रात को घण्टानाद में सामूहिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते थे। संक्रान्ति के अवसर पर जेलों में गुड़ की रोटियाँ भेजने का निर्णय लिया गया। पूना के प्रत्येक परिवार ने पाँच रोटियाँ बनाकर दीं। कुल तीन हजार परिवारों ने पन्द्रह हजार रोटियाँ बनाकर जेलों से भेजी जो जेल अधिकारी, सिपाही और बन्दियों में बाँटी गईं।

कुँओं की अवस्था

लोणावला शहर में दाण्डेकर इन्स्टिट्यूट ऑफ इकॉनॉमिक्स यह संस्था ग्रामों का अध्ययन करती है। ग्रामों में कुओं की अवस्था इस विषय का अध्ययन करने के लिए 86 गाँवों के 804 विद्यार्थी आगे आए। उन्होंने 91 तहसीलों के 1176 गाँवों में जाकर कुँओं का निरीक्षण किया। साथ-साथ आपातकाल विरोधी वातावरण बनाया।

मंदिरों में मनौती

गोवा में स्वयंसेवक भिन्न-भिन्न गाँवों के प्रसिद्ध मंदिरों में जाते थे और बंदियों की मुक्ति तथा आपातकाल की समाप्ति हेतु मनौती माँगते थे। 13 गाँवों के 38 तरुणों में 77 गाँवों ने जाकर 96 मंदिरों में यह कार्यक्रम किया जिससे आपातकाल के विरोध में वातावरण बनाने में सफलता मिली।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गोहत्या बंदी का प्रचार

संघ के भूमिगत कार्यकर्ताओं ने सर्वोदयी कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर गोहत्या बंदी का प्रचार-प्रसार किया। साथ-साथ उन्होंने आपात स्थिति विरुद्ध लाखों पत्रक वितरित किए। अर्थात् इस कार्य के कारण भी कई कार्यकर्ता गिरफ्तार किए गए।

सरसंघचालक का जन्म दिवस

सरसंघ चालक बालासाहेब देवरस जी के 60वे जन्मदिन के निमित्त महाराष्ट्र में 427 गाँवों में 704 स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित किए। इसमें 8000 युवकों ने तथा 4000 अन्य नागरिकों ने सहर्ष भाग लिया और आपात स्थिति का विरोध दर्ज किया।

काला दिन 26 जून

26 जून 1976 को आपात काल का एक वर्ष पूरा हो गया। महाराष्ट्र में यह दिन काले दिवस के रूप में मनाया गया। कुल 43 शहरों में 55 हजार और 3501 गाँवों में इस दिन आपातकाल विरोधी 20 हजार पत्रक बाँटे गए। 4 जुलाई 1976 को रा.स्व.संघ पर प्रतिबंध लगा। एक वर्ष पूरा होने पर 157 नगरों में 1017 जत्थों में 6900 युवक एकत्रित हुए और आपात स्थिति का निषेध किया।

लोकाधिकार समिति

दिल्ली से प्राप्त आदेशानुसार महाराष्ट्र राज्य में भी जनता पर होने वाले अत्याचारों का प्रकट विरोध करने के लिए लोकाधिकार समितियों का गठन किया गया। इस समिति की ओर से अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया तथा प्रान्तीय और जिला पत्रिका प्रकाशित कर अत्याचारों को उजागर किया।

बंदिवानों के परिवारों को सहायता

महाराष्ट्र राज्य में लगभग 600 ऐसे बंदी परिवार थे जिन्हें आर्थिक सहायता की आवश्यकता थी। उन्हें अनाज, दवाइयाँ, कपड़े, शिक्षा-शुल्क, पुस्तकें आदि की सहायता दी गई। जनसहयोग से धनसंग्रह किया जाता था। अनेक डॉक्टरों ने भी इन परिवार के सदस्यों को मुफ्त चिकित्सीय सेवा दी तथा मुफ्त दवाएँ भी दीं।

कारागार के संबंध में देशभक्तों की सोच

आपातकाल के विरोध में सरकार ने लगभग पैंतीस हजार सत्याग्रहियों को जेलों में ठूँसा। परंतु 7500 सत्याग्राहियों ने स्वयं आगे आकर जेल जीवन स्वीकारा और सत्ता को चुनौती दी। कारागार के सम्बन्ध में मराठी में निम्नांकित काव्य पंक्तियाँ प्रसिद्ध हैं —

''देशभक्ता प्रासाद बंदीशाला।
श्रृंखलांच्या गुंफिल्या रत्नमाला।।
कदान्नाला मिष्ठान्न गोड मानी।
शिव्या कष्टाना भोग म्हणुनी मानी।।''

भावार्थ : देशभक्त लोग कारागृहों को महलों के समान मानते हैं। बेडियाँ उनके लिए रत्नजड़ित आभूषण बन जाते हैं और बंदीशाला में मिलने वाला निकृष्ट भोजन उन्हें मीठा लगता है। वहाँ होने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वाली गाली-गलौच तथा कष्टों को वे भोग वस्तु समझते है।

उलटा न्याय

संत विनोबा भावे सर्वोदयी कार्यकर्ता थे। महात्मा गांधी के लाड़ले भक्त थे परन्तु उनसे मिलने हेतु पंजाब के सर्वोदयी कार्यकर्ता विदर्भ के पवनार ग्राम में गए थे तो उन सभी को पुलिस ने बंदी बनाकर सेंट्रल जेल की हवा खिला दी। उन्होंने न कोई प्रदर्शन किया था न तो कोई नारे लगाए थे। इसका एक कारण यह भी था कि सर्वोदयी कार्यकर्ता श्री दादाधर्माधिकारी जी ने कहा था कि, ''इंदिरा जी का अपातकाल अनुशासन पर्व नहीं यह तो आतंक पर्व है। वह निर्दय दमन पर्व है। आत्महनन कर उन्होंने पंचमहापातको से भी बड़ा पाप किया है।''

पैरोल में दुष्टतापूर्ण मनमानी

मीसा में बंद व्यक्तियों को हरदम पैरोल देने में इंकार कर दिया जाता था। गजाननराव रहटगाँवकर नागपुर जेल में बंद थे। उनके पिताजी मृत्यु शय्या पर थे। डॉक्टर गोडबोले के प्रमाण पत्र के साथ पैरोल की अर्जी गजाननराव ने दी। इस अर्जी पर विचार तो नहीं हुआ परंतु प्रमाण पत्र देने के लिए अमरावती के डॉक्टर गोडबोले को मीसा में बंदी बनाने की धमकी अमरावती के जिलाधीश ने दे डाली। गजाननराव के पिताजी की मृत्यु हो गई। मृत्यु का प्रमाण पत्र देने पर भी 17 घंटे बाद पैरोल स्वीकृत किया गया। सरकार के प्रति इसके कारण दोष बढ़ गया।

यवतमाल के मीक्षाबंदी गोविंद शेवडे ने माँ की गंभीर बीमारी पर पैरोल माँगा। उसका प्रार्थना पत्र अस्वीकृत किया और माँ के निधन के बाद भी उन्हें पैरोल नहीं दिया गया।

श्रीमती मृणाल गोडे की व्यथा

समाजवादी नेता और महाराष्ट्र राज्य विधान सभा की सदस्य श्रीमती मृणाल गोरे को अकोला के जेल में रखा गया था जहाँ चूहों और तिलचिट्टों की भरमार थी। उनकी बगल वाली कोठरी में एक पागल महिला थी और दूसरी ओर एक कोढ़ी महिला थी। सभी के लिए शौचालय तथा स्नानागार एक ही था।

डॉ. बोबडे की जेल में मृत्यु

विदर्भ के काटोल तहसील के संघचालक डॉ. सदाशिवराव बोबडे दिल के दौरे के रोगी थे। उन्हें गिरफ्तार किया गया। दौरा आने पर भी सामान्य वार्ड में रखा और उनका देहांत हो गया।

क्षीरसागर का निधन

रा.स्व.संघ के अ.भा. व्यवस्था प्रमुख पांडुरंग पंत क्षीरसागर रक्ताचाप तथ मधुमेह के रोगी थे। उन्हें प्रथम नागपुर सेंट्रल जेल में और बाद में ठाणे (मुंबई) जेल में रखा गया। पितृमोक्ष अमावस्या के दिन उनका निधन जेल में ही हो गया।

आपात स्थिति महाराष्ट्र के समाचार पत्र

श्रीमती इंदिरा गांधी ने कहा था कि वे अखबारवाले ही हैं जो जनता को भड़का रहे हैं तथा खतरनाक परिस्थिति पैदा कर रहे हैं। यदि समाचार पत्रों पर सेंसर लगा दिया जाए तो कोई आंदोलन ही नहीं होगा। तुरंत विद्याचरण शुक्ला ने दिल्ली में संपादकों की बैठक ली और कहा कि सरकार और प्रेस

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के मध्य किसी प्रकार का टकराव सहन नहीं किया जाएगा। इसके बाद समाचार पत्रों पर सेंआरशिप लगाई गई। सरकार विरोधी समाचार पत्रों को सरकारी विज्ञापन देना बंद किया गया। महाराष्ट्र के निम्नांकित अखबारों के विज्ञापन रोके गए थे —

अंग्रेजी दैनिक 1. फायनान्शियल एक्सप्रेस, मुंबई,
2. नागपुर टाईम्स, नागपुर

अंग्रेजी साप्ताहिक – सण्डे स्टेंडर्ड, हिम्मत (मुंबई), जनता (मुंबई) कॉमर्स मुंबई।

हिन्दी दैनिक – युगधर्म नागपुर, नवभारत नागपुर,

मराठी दैनिक – तरुण भारत (नागपुर–पूना)

लोकसत्ता–मुंबई आपला महाराष्ट्र (धूलिया)

मराठी साप्ताहिक – साधना (पूना), ओपिनियन (मुंबई), मदर इण्डिया (मुंबई), मराठवाडा टाईम्स (औरंगाबाद), सोबत (पूना), मार्मिक (मुंबई), मसूराश्रम पत्रिका (मुंबई), इंडियन एक्सप्रेस (मुंबई)।

'हिम्मत' यह साप्ताहिक पत्र को महात्मा गांधी के नाती राजमोहन गांधी प्रकाशित करते थे। 'हिम्मत' निर्भय होकर आपातकाल की आलोचना करना था। इसलिए इस प्रेस को सरकार ने ताला जड़ दिया।

'मैत्री' की प्रतियाँ जब्द कीं। संत विनोबा के पवनार आश्रम की पत्रिका 'मैत्री' की सभी प्रतियाँ 12 जून को जब्त कर ली गईं। इसमें आचार्य विनोबा भावे की घोषणा प्रकाशित हुई थी। घोषणा थी कि यदि 11 सितम्बर तक देश में गोवध बंदी पर पाबंदी नहीं लगी तो आमरण उपोषण करेंगे।

जनता दल का निर्माण

19 जनवरी 77 को श्रीमती इंदिरा गांधी ने लोकसभा चुनाव में कराने की घोषणा कर दी और भारत के गैर कम्युनिष्ट राष्ट्रवादी शक्तियों की एक संगठित राजनीतिक दल जनता पार्टी का उदय लोकनायक जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में हो गया। महानिर्वाचन की प्रक्रिया शुरू हो गई। देव–दानवों का संघर्ष या पांडव–कौरवों का महायुद्ध ऐसी स्थिति हो गई। 16 मार्च 1977 को देशभर चुनाव हो गए। 20 मार्च को मतगणना हुई। चुनाव जनतापार्टी के पक्ष में रहा। उत्तर भारत के सभी हिन्दी राज्यों में कॉंग्रेस को उखाड़कर फेंक दिया गया। इंदिरा गांधी और संजय गांधी भी हार गए। जनता पार्टी की सरकार मोरार जी देसाई के नेतृत्व में सत्ता पर आई। 11 फरवरी को राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद की मृत्यु। 21 मार्च 1977 को तत्कालीन राष्ट्रपति बी.डी. जत्ती ने आपात स्थिति के घोषणा की समाप्ति की। दिनांक 22 मार्च को रा.स्व.संघ सहित विविध संगठनों पर लगे प्रतिबंध समाप्त हो गए। सभी नेता और कार्यकर्ता जेल से मुक्त हो गए।

दुर्भाग्य से इस समय भी महाराष्ट्र विधानसभा में कॉंग्रेस को बहुमत मिला। इंदिरा का तानाशाही रवैया उनके समझ में नहीं आया।

प्रधानमंत्री पद का त्याग करने के पूर्व इंदिरा गांधी ने जेलों में बंद 15,000 राजबंदियों को मुक्त किया जिनमें 90 प्रतिशत लोग संघ के थे। लगभग 30 वर्ष दिल्ली के सिंहासन पर जमी कॉंग्रेस का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
उच्चाटन हुआ और पिछले 21 माह से जारी आंतरिक आपात स्थिति समाप्त हो गई।

हुतात्माओं की सूची

लोकतंत्र की रक्षा हेतु आपातकाल रूपी तानाशाही से कड़ा संघर्ष करते हुए स्वतंत्रता की वेदी पर न्यौछावर कर देने वाले सौ से अधिक हुतात्मा हुए हैं। विदर्भ-महाराष्ट्र के भूमिपर हुतात्माओं के नाम निम्नानुसार हैं।

विदर्भ -

1. डॉ. शंकरराव जी बोबडे, काटोल
2. केशवराव कुलकर्णी, गोंदिया
3. मधुकर बोबडे, बालापुर
4. अभय रानडे, अमरावती
5. रमेश भाजीपाले, भंडारा
6. पांडुरंगपंत क्षीरसागर, नागपुर
7. प्रभाकर वर्मा, पवनार

पश्चिम महाराष्ट्र —

1. काकासाहेब पटवर्धन, कुलाबा
2. मुकुंद धोंडो गुलवणी, सांगली
3. गोपाल कृष्ण देशपांडे, पूना
4. संग्राम शंकर जोशी, जलगाँव
5. दिगंबर कुलकर्णी, मुंबई
6. पद्माकर डोंगरे, कोल्हापुर
7. दत्ताजी भाले, औरंगाबाद

ई-8/209, बी त्रिलंगा,
भोपाल-39

संदर्भ साभार

1. माधवराव सप्रे संग्रहालय से प्राप्त सामग्री।
2. कम्प्यूटर पर उपलब्ध सामग्री।
3. मधु दंडवते के पत्र।
4. आपातकालीन संघर्ष गाथा-लेखक प्रगसहस्त्र बुद्धे और माणिकचन्द्र बाजपेयी।

***

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उमाशंकर जोशी

प्रतिभा भंग हो चुकी है *

अनुवाद : वंशीधर

राज्यसभा और पिछले पाँच साल के मेरे सम्बन्धों में आज के ये क्षण सर्वाधिक पीड़ादायी क्षण हैं। एक उपकुलपति और कवि के रूप में जब मैंने इस सदन में प्रवेश किया था तो मेरे मन में कई-कई तरह के अरमान थे। मैं सोचता था कि एक राष्ट्र के रूप में चाहे हम नये ही क्यों न हों, परन्तु एक प्राचीन जाति के रूप में प्रजातांत्रिक तरीके से हम अपने समाजवादी लक्ष्यों को पूरा कर सकेंगे। सभी ने यह अनुभव किया था कि भारत का निर्माण ही इसलिए हुआ है कि शांतिमय साधनों के द्वारा समाजवादी उद्देश्यों को पूरा किया जा सके। किन्तु यह बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण है कि कल गृहमंत्री ने देश के प्रजातंत्र की तमाम आशाओं पर पानी फेर देने वाला तथा आपातकाल के समर्थन में एक वक्तव्य दिया है।

अपने वक्तव्य में उन्होंने इसके लिए दोष का टोपला

---

* दिनांक 22 जुलाई 1975 को राज्यसभा में दिया गया भाषण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
विरोध पक्षों एवं कुछ घटनाओं के सिर पर ढाली है। मैं तो किसी 'पार्टी' या दल से जुड़ा हुआ नहीं हूँ, फिर भी मैं गुजरात की एक घटना की ओर आपका ध्यान खींचना चाहता हूँ। गुजरात में जब नवनिर्माण आन्दोलन की शुरुआत हुई, उस समय वर्तमान गृहमंत्री इस पद पर नहीं थे। उनका ध्यान दिलाना चाहूँगा कि उस आन्दोलन के आरंभ में स्वयं कांग्रेस के लोगों को उन युवकों में गांधीजी का दूसरा अवतार दिखाई दिया था। जहाँ तक मुझे याद है तब तक साम्यवादी पार्टी (सी.पी.आई.) भी उस आन्दोलन का समर्थन कर रही थी। हाँ, मंत्रीमण्डल के भंग होने के बाद इस स्थिति में बदलाव ज़रूर आया था। ऐसा क्यों हुआ? मैंने बार-बार ज़ोर देकर शासक पार्टी को यह बताने का प्रयास किया है कि मित्रो, कस्तूरी मृग, जिस कस्तूरी की खोज में व्यर्थ की दौड़भाग करके दम तोड़ देता है, वह तो उसके भीतर ही होती है, वैसे ही मेरे मित्रो जो आपके भीतर पड़ा है, उसे आप विरोधी पक्ष में खोजने की व्यर्थ कोशिश करते हैं। सत्ता पक्ष के विद्वान युवा मित्र कहते हैं कि आपातकाल की यह स्थिति तो दो वर्ष पहले ही घोषित कर देनी चाहिए थी। पर मेरा यह कहना है कि दो वर्ष पूर्व ही नहीं, कुछ और भी वर्षों पूर्व यदि आर्थिक कार्यक्रम के अमलीकरण के ये कदम उठाये गये होते तो अच्छा होता। फिर ऐसा तो हुआ नहीं, केवल एक ऐसी राजनीतिक शैली को ही विकसित करने में लगे रहे जिसके आधार पर भारी बहुमत जुटाया जा सके। किन्तु इसमें आप लोगों को यह ध्यान ही नहीं रहा कि इस शंभूमेले में जो तत्व घुसते चले आ रहे हैं वे ही पक्ष की प्रगतिशील नीतियों के अमलीकरण के समय पलटकर वार करेंगे।

मैं अधिक विस्तार में नहीं जाना चाहता, फिर भी एक सवाल ज़रूर मेरे सामने आता है कि गृहमंत्री ने विरोक्ष पक्षों के सम्बन्ध में जो कुछ कहा है, उसे सही मान लिया जाने पर भी उनके कथन से एक संकेत अवश्य फूट रहा है, वह यह कि जब विरोधपक्ष के लोग लोकतंत्र को खत्म करने को तुले बैठे थे, तो फिर हम लोग क्या बुरे थे? इसलिए क्यों न हम ही इसका — लोकशाही का गला घोंट दें। क्या यह कहना उन्हें शोभा देता है? मैं इसे देश के संदर्भ में दुर्भाग्य का क्षण मानता हूँ। बर्नार्ड शॉ कहते थे कि अंग्रेज जाति प्रत्येक काम सिद्धान्तों के तहत ही करती है। यदि राजा का सिरच्छेद किया जायेगा तो वह भी सिद्धान्त के अनुसार ही। हमारे विद्वान गृहमंत्री भी कहते हैं कि जो कुछ किया गया है और जो हो रहा है वह सब संविधान के अनुसार ही हो रहा है। अर्थात् अपने दल के बहुमत के बल पर आज वे संवैधानिक तरीके से संविधान का गला घोंटने जा रहे हैं। ज़रा विचार करें कि इस सबका अंत हमें कहाँ ले जाकर छोड़ेगा?

भारत में कभी भी 'प्रि-सेन्सरशिप' लागू नहीं की गई थी। अंग्रेजों के ज़माने में भी नहीं। पर हम सत्य से डरते हैं। समूचे देश को अपनी लपेट में लेने वाला यह डर-आतंक की यह कलमुँही परछाई कहाँ से आती है? 26 जून के बाद भेदों की असंख्य दीवालें खड़ी कर दी गई हैं। क्या आप चाहते हैं कि देश एक रहे? विच्छिन्न न हो। तमाम खबरों को दबाकर आपने एक झटके में इस देश के टुकड़े-टुकड़े कर डाले हैं। सत्य का गला दबाया जा रहा है और चारों ओर अफवाहों का बाज़ार गर्म है। यह है सत्य का भय और वह भी उस देश में जो सत्य की खोज के लिए प्रसिद्ध है। अन्य किसी भी बात की अपेक्षा इस घटना ने दुनिया के दरबार में हमारे देश के कपाल पर कलंक का टीका लगाया है।

इस सम्मान्य भवन के माध्यम से मुझे प्रधानमंत्री को विशेष रूप से यह बात पहुँचानी है कि पं.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जवाहरलाल नेहरू और लाल बहादुर शास्त्री के ज़माने में यह देश जब धूल में पड़ा था और गरीबी में से बाहर आने के लिए जूझ रहा था तब भी दुनिया के दरबार में इस देश की इज़्ज़त थी। इसका मस्तक ऊँचा था। जवाहरलाल ने अपनी पुस्तक 'संसार के इतिहास की एक झलक' के अंत में टैगोर के इन शब्दों को उद्धृत किया था :

'चित्त जेथा भय शून्य, उच्च जेथा शिर...'

— जहाँ मन भय से सर्वथा मुक्त है और जहाँ मस्तक उन्नत है... हे प्रभो, ऐसे स्वर्ग में मेरे देश को जागृत कर।

— नेहरू कहा करते थे कि उनका मन गांधी की तुलना में, टैगोर के साथ ज़्यादा मेल खाता था। दुनिया के तख़्ते पर जहाँ तक वे रहे, भले टीटो, नासिर और सुकर्णों जैसे उनके दोस्त थे तो भी उन सबके मध्य वे बालिश्त भर ऊँचे ही रहे। पर वर्तमान प्रधानमंत्री यदि विदेश में जायेंगे तो उनकी क्या दशा होगी? यह उचित भी है कि उन्हें विदेशियों के अभिप्रायों की विशेष चिंता रहती है, किन्तु प्रतिमा तो खण्डित हो चुकी है।

आज एक छोर से फतवे बाहर पड़ते रहते हैं और लोगों को तो सिर्फ़ सुनते ही रहना है। अभी कुछ ही दिनों पूर्व मैंने अहमदाबाद में सुना कि विनोबाजी ने जो संदेश दिया उसमें केवल इतना ही नहीं था कि ये 'अनुशासन-पर्व' है। मैं तो इसकी स्पष्टता करने की दृष्टि से वर्धा गया नहीं, पर ऐसी अफवाह है कि विनोबा जी ने 'नेताओं को मुक्त करो' और 'सेन्सरशिप हटावो' — यह भी कहा था। — अभी कोई उनके पास जाना भी चाहे तो वे तो मौन में हैं।

न तत् सत्यम् यत् छलम् अभ्युपैति — जो कपट का आश्रय लेता है वह सत्य नहीं होता पर आज तो हमारे आसपास यही सब चल रहा है। (बीच में कांग्रेस की सदस्यता श्रीमती पूर्वी मुखर्जी कुछ बोलीं। उसकी ओर संकेत करते हुए) इस अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष में मेरे लिए तो केवल आपको सुनना ही रह जाता है।

यदि आपको लगता था कि कुछ नेता षड्यंत्र कर रहे हैं तो उन्हें इन्साफ की अदालत में खड़ा किया जाना चाहिए था। चाहे फिर उनमें जयप्रकाश नारायण हों, मोरारजी भाई हों या अटल बिहारी वाजपेयी हों — जो भी हों! किन्तु आज इनके बारे में कोई जानकारी या सूचना नहीं मिलती है। व्यक्तियों का कहीं उल्लेख ही नहीं है। सभी मानो अव्यक्ति (अनपर्सन्स) हो गये हो और इस पर भी शासक-दल तो यह मानता है कि अधिकतर लोग उसके साथ हैं, तो फिर इनका दमन क्यों किया जा रहा है?

महाभारत के 'राजधर्म पर्व' में एक भयंकर बात कही गई है। भगवान व्यास ने उसका अत्यंत ही त्रासद चित्र उपस्थित किया है : 'ततो ब्रह्म ननाश ह!' — और उसके बाद पूरा व्यापक जीवन सत्य नष्ट हो ग़या। आज इस देश में हम ऐसी हालत में पहुँच चुके हैं कि जहाँ बिलकुल ही शांतिपूर्वक जीवन के सत्य का हनन किया जा रहा है।

अब तो केवल एक ही - शासक पक्ष शेष रह गया है इसलिए उसी से निवेदन कर रहा हूँ। वातावरण में स्पष्ट रूप से इस बात के संकेत मिल रहे हैं कि हम एक केन्द्री सत्ता की ओर, प्रमुख-केन्द्री

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संविधान की ओर तथा अलग-अलग राज्यों के संघों को नष्ट कर एक केन्द्री शासन की ओर जा रहे हैं। इस बात के पूरे संकेत हैं कि गुजरात और तमिलनाडु की सरकारों पर बहुत जल्दी ही संकट की गाज गिरने वाली है।

मैं राजनीति का व्यक्ति नहीं हूँ अत: मैं उनके साथ किसी बहस में उतरना नहीं चाहता। पर मैं उनसे जानना चाहता हूँ कि अभी तक कितनी सरकारों को बर्खास्त किया गया है? बाहर और स्वयं इस भवन या सदन में कितने लोग ऐसे हैं जो अपनी पार्टी छोड़कर शासक पक्ष में जा मिले हैं? हम तो नियुक्त और स्वतंत्र, निष्पक्ष सदस्य हैं। सत्तापक्ष यहाँ सामने बैठे विरोधी दलों के सदस्यों को मानो अपने में सोख लेता है। अब विरोध पक्ष जैसा बचा ही क्या है? उसमें जो लोग सर्वाधिक सबल थे शायद वे ही शेष रहे हैं। इसलिए उन्हें कारागार की सलाखों के पीछे धकेल दो। एक दल का शासन कर लो! राष्ट्रपति सर्वेसर्वा बन जाये, इस प्रकार का संविधान गढ़ लो! एक हत्या राज्य बना दो! ग़ैर कांग्रेसी सरकारों के प्रति बरती जाने वाली इस सूग ने भारतीय राजनीति का सत्यानाश करने में महत्त्व की भूमिका का निर्वाह किया है।

अभी कल ही मेरे सम्मानीय मित्र श्री राजू ने कहा कि कांग्रेस स्वयं तो कोई विरोधपक्ष बनायेगी नहीं। सही बात तो यह है कि इसे विरोध पक्ष को देखते ही उचाट या बेचैनी होने लगती है। मेरे जैसों को लगता है कि यदि गुजरात में विरोध पक्ष जैसा कुछ होता तो वहाँ नवनिर्माण आन्दोलन ही न हुआ होता। और मेरे जैसे लोग, जिन्हें राजनीति से कोई सरोकार नहीं है, उस आन्दोलन को समर्थन देने या उसमें हिस्सेदारी करने के लिए बाहर नहीं आते। क्योंकि यदि आमने-सामने दो पक्ष रहे तो वे एक दूसरे को संभाल सकते हैं। पर स्थिति ऐसी है नहीं। इसलिए मैं सत्तापक्ष के लोगों से अपील करता हूँ कि ज़रा अपने मन में उतरो, उसे टटोलो।

युवा मित्र समाचार-पत्रों की स्वतंत्रता को लेकर उसका मज़ाक उड़ाते हैं, किंतु मेरे जैसे लोग जो अपने कॉलेज जीवन के जवानी के दिनों में स्वाधीनता संग्राम में कूदे थे — इस बारे में अलग विचार रखते हैं। इस सदन में बैठे गृहमंत्री, पंजाब के आदरणीय लेखक गुरुमुख सिंह 'मुसाफिर' तथा अन्य और भी लोग जो यहाँ उपस्थित हैं, मैं इन सबसे क्षमा याचना के साथ स्पष्ट रूप से पूछना चाहता हूँ कि आप सब इतने वर्षों से यहाँ क्या करते रहे?

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः
न ते वृद्धाः ये न वदन्ति धर्मम्।

जहाँ वृद्ध लोग नहीं होते, उसे सभा नहीं कहा जाता और जो सही बात - धर्मयुक्त बात नहीं बोलते वे वृद्ध नहीं कहलाते। मैं पूछना चाहता हूँ कि भारतीय प्रजातंत्र के लिए आपने क्या किया? हम आज आपातकाल के कठिन क्षणों में यहाँ इकट्ठे हुए हैं। क्या आप लोगों ने एकत्र आकर प्रधानमंत्री से यह कहा कि हमारा चाहे जो हो पर हम अपने विचारों पर दृढ़ हैं। क्या प्रधानमंत्री ने देश के चिंतनशील लोगों से बातचीत का कोई नाता रखा है? अभी कृष्णकांत जी ने जिनके बारे में कहा, ऐसे कुछेक लोगों को अन्य लोगों के मकान की घास पर इकट्ठा कर लिया जाता है। प्रधानमंत्री तो लाखों लोगों की सभाओं को संबोधित करने की अभ्यस्त हैं, वहाँ इस कृषि प्रधान देश में कुछ किसानों को घास पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इकट्ठा किया जाता है। कैसी बेढंगी बात है। इस गृह में उपस्थित सदस्यों से मैं पूछना चाहता हूँ कि वहाँ प्रकट की जाने वाली आवाज़ ही क्या इस देश की आवाज़ है? 'न स सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः, न ते वृद्धाः ये न वदन्ति धर्मम्।' जहाँ बुजुर्ग राज पुरुषों - ओल्डर स्टेटमेन की उपस्थिति नहीं होती उसे सभा नहीं माना जाता और सत्य धर्मयुक्त बात नहीं कहने वालों को वृद्ध नहीं कहा जाता।

अपनी बात पूरी करने से पूर्व एक शब्द की ओर आपका ध्यान दिलाना चाहता हूँ (कांग्रेस के सदस्यों की ओर से कोहराम मचाया जाता है) यद्यपि यहाँ शब्द अर्थविहीन हो चुके हैं। पर मैं तो शब्दों का उपासक हूँ। मेरे अनुसार तो शब्द ही जीवन हैं। मैं कवि हूँ। नख-शिख कलाकार हूँ। भाग्य के ज़ोर से मैं यहाँ आ गया हूँ। मैं आज चारों ओर अंधे अविचारी समर्थन तथा सुख-भ्रांति का वातावरण देख रहा हूँ। मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि ऐसा क्यों है? वे लोग जो इस वातावरण के लिए जिम्मेदार हैं अपने स्वयं के साथ, आपके प्रधानमंत्री के साथ और इससे भी महत्त्वपूर्ण यह कि आप पूरे देश के साथ अन्याय कर रहे हैं।

सत्ता पक्ष एवं उसके नेता से मेरी एक ही अपील है कि आप जल्दबाजी में इस प्रथम लोकतंत्रीय प्रजा सत्तात्मक (फर्स्ट रिपब्लिक) पर पर्दा मत डाल देना।

— सी-90, सुकृति नगर,
दिवालीपुरा, जूना पादरा रोड, बड़ौदा-390007

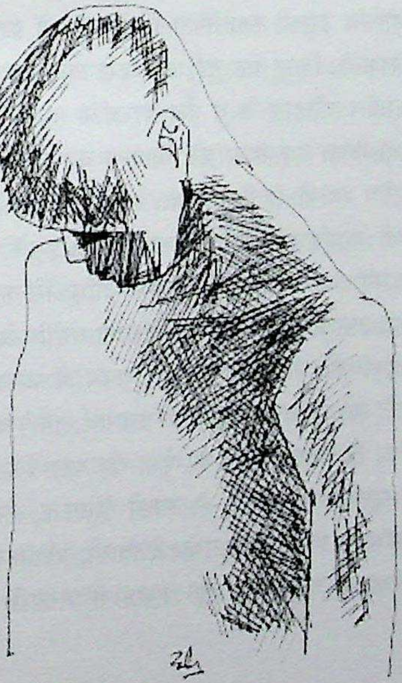

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बलदेव वंशी

एक ऐतिहासिक दस्तावेज

संस्कृति, और कुछ नहीं, मनुष्य की मनुष्य पर सदाशयता; उसकी अक्षय शक्ति-साहस पर आस्था का पर्याय है। जब मनुष्य पर से आस्था डिगती है, सुदीर्घ संघर्ष से अर्जित उसकी स्वाधीनता छिनती है, तो इससे बड़ी आपत्ति की बात हो नहीं सकती। किन्तु यह हुई; और इसे ख़ूब गौरव भी दिया गया। आपातकाल में भारतीय इतिहास के वे पक्ष उद्घाटित हुए जो कालिमापूर्ण थे; जिनमें मानवीय स्वाधीनता एवं न्याय को अपदस्थ करके देश के शासक-वर्ग द्वारा वैयक्तिक-दलीय स्वार्थों-हितों को चिर-स्थायी बनाने की अलोकतांत्रिक ही नहीं, फ़ासीवादी कार्यप्रणाली को अपनाया गया। इसके लिए लोक एवं लोकमत की चिंता को ताक पर रखकर नागरिक-अधिकारों का हनन कर सत्ता के दुरुपयोग इस हद तक बढ़ गये कि राष्ट्रजीवन का धर्मग्रंथ-संविधान तक को अपने हित में क्षत-विक्षत किया गया। इस समय में अन्य महत् मूल्यों-साहित्य, कला आदि को भी उक्त उद्देश्यों के प्रचारार्थ लगाने की ग़र्ज़ से सैंसर के अतिरिक्त आतंक, अत्याचार, दमन का ऐसा दौर चला कि देश और उसके वैध नागरिकों की मूल्यवान सम्पत्ति — उनकी नैतिकता, मर्यादाभाव, निष्ठा, साहस आदि को कुचलकर रख दिया गया। देशवासी, प्रतिक्रियाहीन प्रतिक्रिया में, समय की प्रतीक्षा में उतर गये। जून 1975 से जनवरी 1977 तक यह प्रतीक्षा चली।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1977 के चुनावों में इस प्रतीक्षा के परिणाम भी अपूर्व एवं अचंभित करने वाले सिद्ध हुए। विश्व चकित रह गया। व्यापक उत्तेजनों के परिणाम-स्वरूप यह सांस्कृतिक अनुक्रिया का फल था कि एक विस्तृत-गहन स्रोतों-साधनों से सम्पन्न, तीस वर्षीय सत्ता का भोक्ता दल धराशायी हुआ। महज भौतिक अर्थों-कारणों के परिणाम इतने आश्चर्यजनक नहीं हुआ करते। वर्तमान मनुष्य की अधुनातन बुद्धि की श्रेष्ठ समझ को झुठलाने वाले ये तभी बन पड़ते हैं, जब मनुष्य की भौतिकेतर लब्धि को — अस्मिता और धर्मभाव को, मुक्ति और न्यायभावना को — कोई इतने तेज अस्त्रों से छेड़ दे कि अनहद नाद छिड़ जाए। उससे तो फिर अभूतपूर्व ही सामने आता है, आया है। ये परिणाम उन अमूर्त्त अनुशासनों की उपज हैं, जो संस्कृति की अदृश्य बुनावटों में, मनुष्य के अवचेतन में, बड़े महीन बुने होते हैं और जो उसकी सामूहिक-जातीय अनुक्रियाओं को संचालित करते हैं। अतः सनकी अनुक्रिया भी उतनी ही अमूर्त्त हुई है। सांस्कृतिक अंधता की आँखें उसे देख नहीं पातीं, देख नहीं पायीं। इस सांस्कृतिक सत्ता में, जिसकी जड़ें सामूहिक अवचेतन में गहरी गड़ी हैं, अबकी बार ज़ोरदार धमकें पड़ी थीं। राजनीतिक अर्थों में जो ध्रुवीकरण है, मानवीय अर्थों में वही संस्कृतिकरण है। अतः प्रकटतः ओढ़ी हुई, दोग़ली, बनावटी, अर्द्धपूंजीवादी सरकारी संस्कृति की जन-संस्कृति के हाथों करारी हार हुई है।

सरकारी संस्कृति यानी तीस-वर्षीय शासन कालावधि में पनपे मासमीडिया-रेडियो, टेलीविज़न, समाचार-संस्थाएँ, साहित्य-संगीत-नाटक अकादमियाँ, सांस्कृतिक शिष्टमंडलों की वर्तनें, शासन-समर्थित शिक्षा-सांस्कृतिक सम्मेलनों-परिषदों की धूमें, साहित्यकारों-कलाकारों के पुरस्कार-प्रलोभन आदि के बल पर पनपे नवधनाढ्य, अफ़सरशाह, पूंजीपति और सत्ताधारी राजनेताओं के परिवार। जन-संस्कृति यानी अभावग्रस्त, शोषित, भूखा, फटेहाल जनसमूह — उसके तीस वर्षीय आन्दोलन, हड़तालें, शहादतें — अपने पेट, भाषा, अस्मिता की सतत लड़ाई में लगा भारत का लगातार पिसता, डरे हुए मस्तिष्क वाला कोटिक साधारण नागरिक। विजयी हुई यह आर्त्त जन-संस्कृति। इस अथाह-अगाध विश्वास की गहराइयों में शासकीय संस्कृति डूब गई। जिस बंदोबस्त पर उसे तैरते रहने का अभिमान था और आकांक्षाएँ अंधी हो गयी थीं, वही बंदोबस्त उसे बीच धार में धोखा दे गया। दो जीवन-दृष्टियों और मूल्य-बिन्दुओं की निर्णायक सुदीर्घ लड़ाई थी, यह। जब तक निर्णय परिपक्व होकर निष्कर्षों में परिवर्तित नहीं हुए, सांस्कृतिक विभेद प्रकटतः शत्रुता तक नहीं बढ़े (शासन की ओर से), विपक्षी जन-संगठन एक नहीं हुए — संघर्ष में एकतानता नहीं आयी, तब तक सभी लड़ाइयाँ अधूरी और विसंगत रहती आयी थीं। अफ़सरशाही शासकीय संस्कृति का कवच बनी रही। किंतु अपने व्यवहारों-नीतियों और वर्गीय सम्बन्धों के चरम पर पहुँचकर सभी नक़ाब और पर्दे छलनी हो गये। भारत के भोले मतदाता को भ्रम में डाले रखने के चिरपरिचित नुस्ख़े बेकार हुए। अबकी बार उसने अपने अनुभव से, अपनी आँखों से उसकी सम्पूर्ण नग्नता देख ली थी।

यह सांस्कृतिक विभेद और लड़ाई भारत की स्वाधीनता के साथ ही मानों आरंभ हो गयी थी, क्योंकि शुरुआत ही ग़लत हुई थी। दिशा ही ग़लत चुन ली गयी थी। नेतृत्व-निर्धारण ही गलत हुआ था। तब से इस लड़ाई के मोर्चे पर जन-संस्कृति अपने एक-से-एक बहुमूल्य रत्न उत्सर्ग करती आई थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कला और कविता की लड़ाई भी संस्कृति की लड़ाई है। इस सतत लड़ाई की प्रवेगी धारा में कभी-कभी तीव्रतर सामयिक उत्तेजनों से संघर्ष-मुखरता अत्यन्त प्रकट संदर्भों को लेकर ऊपर आ जाती है। स्वातंत्र्योत्तरकाल की हिंदी कविता में यह सतत लड़ाई अपने विभेदक-विग्रही स्वरूप और पहचान को गढ़ती हुई उत्तरोत्तर प्रखर होती गई है। इसका चरम विकास हुआ आपातकाल में।

भारत में आंतरिक आपात स्थिति की प्रकटत: बंधक स्थिति से बहुत पहले, स्वतंत्रता के कुछ बाद से ही, कविता में आज़ादी के छिन जाने, न्याय के अन्याय में बदलने, मानवीय समता के स्थान पर शोषण और शासन-व्यवस्था के पूंजीपतियों के हाथ में बिकने के साथ ही हिंसक-मानवघाती हो जाने के चित्रण बहुतायत से मिलते हैं। शासक वर्ग अपराधियों के संयुक्त परिवार के रूप में चित्रित किया जाने लगा। उसके जन-विरोधी कार्यों-प्रस्तावों को युवा कवियों ने सदा नंगा किया। मानव के पक्षधर विचार को, संवेदनाओं को खुलकर अभिव्यक्ति दी और जन-संस्कृति की लड़ाई में अपना हाथ बटाया। साक्षी हैं युवा हिंदी कविता के सैकड़ों संग्रह और हज़ारों पत्रिकाएँ।

जनता के जुलूसों की फ़र्यादी वाणी के विरुद्ध शासकदलीय-जुलूस आयोजित कर जन-वाणी को नक्कारख़ाने की तूती बना देने की धृष्ट युक्तियाँ, उन पर लाठी-गोली की दमनपूर्ण कार्यप्रणालियाँ, 'नेहरू-युग' में ही ईजाद कर ली गयी थीं, जो 'इंदिरा-युग' में चरम को पहुँचीं। क्या आपातकालीन हिंसा भी अपनी पुश्तैनी गोद में पली-पुसी हुई हिंसा को राजनीतिक अस्त्र के रूप में प्रमाणित नहीं कर गयी? श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा उठाए गये कदमों का समर्थन करने-करवाने वाले आयोजनों के दबावपूर्ण पूर्वाभ्यास बहुत पहले ही सम्पन्न नहीं हो चुके थे? इस हिमाकत और हिंसा के इतिहास को युवा हिंदी कविता में स्पष्ट लक्षित किया जा सकता है। इनके साथ ही ऐतिहासिक-परंपरित हिंसा को विश्व-क्षितिज पर लक्षित करने वाली कविताएँ भी कम नहीं लिखी गयीं। यों हिंदी कविता मानव विरोधी शोषक-शासक द्वारा लगाए हुए शाश्वत आपातकाल के विरुद्ध जन-साहित्य के मोर्चे पर तैनात है।

(जब भी सामूहिक मानसिक तनाव आकार ग्रहण करते हैं, उन्हें अपना एक जन-नेता मिल जाता है। ये तनाव अपने पराभौतिक (अध्यात्मिक) सूत्रों में मनुष्यों को अदृश्य रूप में बाँध देते हैं। इनके परिणाम इतिहास में सदा ही अजीबोग़रीब होते हैं।) तनावगत शक्तियों द्वारा उद्भूत वातावरण अपनी सक्रियता में एक विस्फोटक बिंदु ढूँढ़ लेता है। इस बिंदु को छू देने वाला कोई युग-चेता, इस भाव-जगत के उद्वेलित अस्तित्व का जानकर, आत्मीय निकटता से उसकी धड़कनों को सुनने-समझने वाला पारखी और गवाह अचानक ही उसे छू देता है और एक महाघटना का माध्यम बन जाता है। वह इस नई सामूहिक मानसिकता का वैध पुत्र होता है। चाहे वह लेनिन हो, गांधी हो, माओ हो या जयप्रकाश नारायण हो। उसके छूते ही सारी स्थिति, स्थिति की चिति अनवद्य, अश्रव्य, अदृश्य ही खुल पड़ती है। फिर परिणाम (स्थिति-माध्यम के अनुसार) चाहे रक्तिम क्रांति हो या रक्तहीन क्रांति।

'काला इतिहास' में हमने आपातकाल के उक्त सन्दर्भों को उठाने वाली स्थितियों की, उनकी विसंगत, विडम्बनापूर्ण, भयप्रद, घातक, हिंसक शक्लों की वास्तविक पहचान करानेवाली कविताओं को संकलित करने का प्रयास किया है। गहन विचारशीलता प्राय: इन सब कविताओं का स्थायी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिजाज़ है। यही पक्षधर विचार इनकी शक्ति भी है, क्योंकि विरोध या प्रतिकार का अस्त्र विचार ही होता है। इस धरातल पर ये कविताएँ कहीं वक्र व्यंग्य, कहीं कोड़ा बरसाता सपाट-कथन, कहीं गहरे अर्थवान बिम्बों-प्रतीकों-संकेतों को लिए हैं, जो स्थिति के साथ साक्षात्कार में हल्की-से-हल्की, सूक्ष्म-से-सूक्ष्म अनुगूँजों को भी बड़ी कुशलता से पकड़ पाने और व्यक्त करने में समर्थ हैं। अत: स्पष्ट ही इन कविताओं को कवि-सम्मेलनी, प्रचारी-उथली कविताओं से अलग संकलित करने की अनिवार्यता को पूरा करना आवश्यक था और इसलिए भी कि भविष्य के लिए सनद रहे।

भारतीय आज़ादी के खो जाने और उसकी पुन: प्राप्ति के संघर्ष, घुटन, भय आतंक और त्रासदी को रेखांकित करनेवाली आपातकाल की कुछ चुनी हुईं कविताओं को सामने लाना हमारे लिए किसी प्रकार की उत्सवधर्मिता में शरीक होना नहीं, अपितु स्थिति के साथ सीधे साक्षात्कार में एक लाज़मी ऐतिहासिक दस्तावेज प्रस्तुत करना है। समय के दबाव को, उसके सही तेवर को तथा साहित्यिकों की उस असामर्थ्य एवं आत्म-विश्लेषण को भी समझ लाना है, जो एक प्रभावी मंच एवं सामूहिक कार्यवाही के अभाव में सामने आये। बाहरी दबावों के कारण मौन साधने से लेकर ऊपरी स्वीकार तक की विसंगतियाँ जो उभरकर आयीं, उनके रहते भी रचना के स्तर पर लगातार प्रतिकार की यह रण-नीति ही कही जायेगी, कि उन्होंने इसे मन से कभी स्वीकार नहीं किया। इसी स्थिति की वजह से केन्द्रीय मंत्रियों ने अपने निजी प्रभाव से, अपने घरों पर मिलन और साहित्यिक गोष्ठियाँ आरंभ कर दी थीं और श्रीमती इंदिरा गांधी साहित्यकारों को, असहयोग के कारण अंत तक कोसती रहीं, किंतु सच्चे साहित्यकारों ने स्वीकृति में रचना नहीं की। सत्ता का, उसके दलालों का, दबाव इतना बेधक था, उसके चिर-स्थायी रहने के अंदेशें की पुष्टि एवं आशयों की पहचान तथा शुरू में साम्यवादी-समाजवादी देशों द्वारा समर्थन की पहल के नीचे भारतीय मेधा थोड़ी देर के लिए भटक गयी। प्रकट मौन के नीचे गहरे धधकते इनकार फिर भी अन्त तक बने रहे। हाँ, जिन्होंने अपने कृत्य को ही झुठला दिया या बढ़-चढ़ कर सत्ता से स्वार्थ-साधन में जुट गये, अपनी नीयत खराब कर ली तथा साहित्यिकों के मध्य जासूसी करने, उन्हें हर तरह से तोड़ने की दिशा में लगे रहे, उनके कार्य को कभी स्वीकार नहीं किया जा सकता।

'काला इतिहास' की कविताएँ अधिकांशत: छोटी साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही थीं। मैं आपातकाल में ही इन पत्रिकाओं को, जो देश के विभिन्न भागों से मेरे पास आती रहीं, सँजोकर रखता रहा तथा कविताओं की कतरनें एकत्र करता रहा। इस अवधि में दिल्ली, बम्बई, पूना, अमृतसर, साहिबाबाद आदि में होने वाले सम्मेलनों एवं गोष्ठियों में सम्मिलित होने वाले कवि-साहित्यकार इस बात के गवाह हैं कि इन अवसरों पर उपस्थित कवियों ने खतरे उठाकर भी अपनी आपातकाल-विरोधी कविताएँ पढ़ीं, जिनमें शासकीय धौंस, देश में न्याय-व्यवस्था का पतन, हिंसा एवं फ़ासीवादी कुकृत्यों के प्रति घृणा उभरकर सामने आयी। इसके साथ ही वे लघु पत्रिकाएँ भी प्रमाण हैं, जिनमें 'काला इतिहास' की अधिकांश कविताएँ छपीं। इनमें 'कल्पना', 'नया प्रतीक', 'उत्तरार्द्ध', 'ज़मीन', 'कंक', 'आवेग', 'संचेतना', 'पहल', 'आलोचना', 'निकेत' आदि उल्लेखनीय हैं। कुछ कविताएँ 'धर्मयुग' में भी छपीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह ज़रूर हुआ कि आपातकाल की घोषणा से, तत्काल एक वज्रप्रहार के पश्चात वाली आहत ख़ामोशी छा गयी, फिर धीरे-धीरे आपसी चर्चाओं, गोष्ठियों में, सीमित दायरों में कवितापाठ एवं चर्चाओं से सर्वग्रासी भय के चंगुल से निकलने का उपक्रम जारी रहा। इनमें 'दिल्ली साहित्यकार मंच' के तत्वावधान में आयोजित गोष्ठियाँ : डॉ. नरेन्द्र मोहन द्वारा सम्पादित पुस्तक - सिक्का बदल गया (अध्यक्षता - डॉ. हरिभजन सिंह, 11 जनवरी 76) डॉ. रामदरश मिश्र के उपन्यास 'अपने लोग' (अध्यक्षता - श्री विष्णु प्रभाकर, 22 मई 76), डॉ. महीपसिंह के उपन्यास 'यह भी नहीं' (अध्यक्षता - डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल) तथा 'निराला जयंती' (24 जनवरी, 1977) आदि मुख्य हैं। किंतु यह भी सच है कि भय विमुक्ति (?) का यह क्रम संकलित रचनाओं द्वारा और गोष्ठियों में जनवादी रचनाओं के वाचन से आरंभ हुआ और प्रशासनिक हल्कों (मंत्रियों) एवं उनके दलालों के प्रयत्नों द्वारा बार-बार आश्वस्त किये जाते रहने से (क्योंकि आधुनिक फ़ासीवादी बुद्धि, कम से कम, अपने चेहरे को साफ़ रखने की समझदारी को कैसे छोड़ सकती थी) वह और आगे बढ़ा।

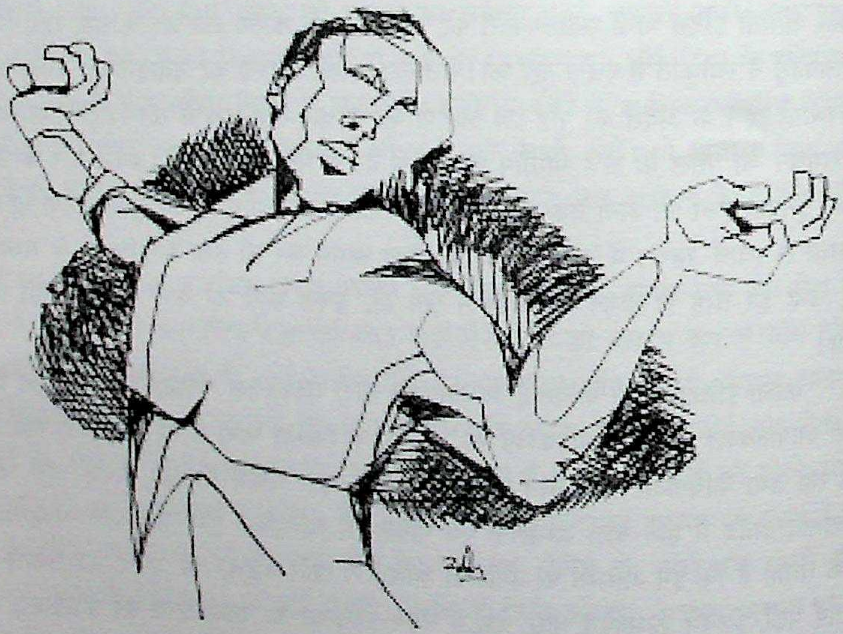

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धनंजय वर्मा

चंद यादें आपातकाल की याने 'देश को जुकाम हो गया'

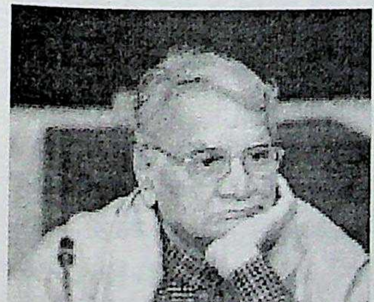

26 फरवरी 1976 का वह दिन आज भी भुलाए नहीं भूलता। सरकारी नौकरी में यूँ तो हज़ार बन्दिशें ऐसी होती हैं कि हर बन्दिश पे दम निकले लेकिन जिस मजबूर और परेशानी में वह दिन बीता, उसकी महज याद से आज भी शर्मसार हो जाता हूँ। बकौल हसरत मोहानी —

नाकामियों पे अपनी हँसी आ गई आज
सो कितने शर्मसार हुए बेकसी से हम...

उस दिन की बेकसी की तवालत से पहले उसका पसमंजर...

धर्मवीर भारती के 3 मई 1975 के पत्र के पुनश्च में एक वाक्य लिखा है — ''त्रिचूर की तैयारी करें। 13-14 सितम्बर को तिथियाँ निश्चित हुई हैं।'' ये तिथियाँ थीं समकालीन लेखक सम्मेलन के दूसरे अधिवेशन की, जो त्रिचूर (केरल) में सम्पन्न हुआ था। मेरी फाइल में मलयालम के एक दैनिक की कतरन के मुताबिक इस अधिवेशन की तिथियाँ हैं — 20-21 सितम्बर, जिसमें फिर भारती जी नहीं आये। मलयालम के प्रख्यात आलोचक और केरल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विश्वविद्यालय के कुलपति जॉसेफ मुलेरोरी की अध्यक्षता में मैंने उस अधिवेशन में 'क्रान्ति और साहित्य' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया था। अधिवेशन के बाद वह आलेख मैंने 'धर्मयुग' में प्रकाशन के लिए भेज दिया था। भारती जी के 2 अक्टूबर 1975 के संक्षिप्त पत्र के साथ आलेख वापस आ गया — "लेख पसन्द आया। लेकिन इस समय सवाल सम्पादक की पसन्द पर ख़त्म नहीं होता। प्रासंगिकता तथा क्रान्तिकारी साहित्य चिन्ता पर लेख जो स्वीकृत थे, सेन्सर ने नामंजूर कर दिए हैं, अतः अब जब इन सवालों पर खुली बहस की सुविधा होगी तभी इन सवालों को उठा सकेंगे। दीवाली अंक से फुरसत पाकर कुछ विषयों पर बात करेंगे और आपको लिखेंगे।" याने सेन्सर चालू था। 25 जून 1975 से शुरू आपात्काल को पूरे आठ महीने हो चुके थे। भारतीय जी की मशहूर कविता 'मुनादी' माहौल में गूँज रही थी...

मैं सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या महाविद्यालय टी.टी. नगर, भोपाल में सहायक प्राध्यापक और तथाकथित विभाग अध्यक्ष था। शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नरसिंहपुर में लगातार आठ बरसों तक रहने के बाद शिक्षा विभाग में उपसचिव श्री अशोक वाजपेयी के विशेष प्रयत्नों से यहाँ मेरा तबादला हुआ था। तब सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या महाविद्यालय (जिसे नूतन कॉलेज भी कहा जाता है) 1250 टी.टी. नगर (अब तुलसी नगर) के सेकण्ड बस स्टॉप के निकट शासकीय माध्यमिक कन्या विद्यालय के भवन में लगता था और मैं उसी के पास एफ-89/23 में रहता था।

26 फरवरी के पूर्वाह्न में महाविद्यालय पहुँचा। एक असामान्य-सी गहमागहमी थी। पूरा स्टॉफ बीच के प्रांगण में सक्रिय था और छात्राओं को कक्षाओं से बाहर एकत्र किया जा रहा था। प्राचार्य कुछ उद्विग्न से थे। एक शासकीय विज्ञप्ति पढ़ी गई। मफ़ीहूम यह कि, युवराज संजय गांधी की रैली में आप सबको अनिवार्य रूप से शामिल होना है। छात्राओं को इसके लिए एक दिन की अतिरिक्त उपस्थिति का लाभ मिलेगा। उनकी हाज़िरी और देख-रेख की जिम्मेदारी स्टाफ की होगी। ...और विशेष सभा विसर्जित हो गई। ...

शासकीय सेवा में यह पहला मौका था ऐसी आदेशात्मक विज्ञप्ति का। पूरा स्टाफ सशंकित था। रैली उसी अपराह्न होनी थी। छात्राओं पर तो कोई बन्दिश नहीं, वो आयें चाहे न आयें, लेकिन सरकारी मुलाजिम होने के नाते स्टाफ को तो रैली में शामिल होना ही है। यदि छात्राएँ न आयें तो हमारा क्या होगा? इसी उधेड़बुन में हम सब स्टाफ रूम में आ गए और फिर अपनी-अपनी कक्षाओं में चले गए। ...बमुश्किल तमाम एक घंटे का वक़्फ़ा बीता होगा कि फिर एक सूचना आई। 'सारा स्टाफ प्राचार्य कक्ष में एकत्र हो' ...पता चला कि अफसरों का एक विशेष दस्ता उस सरकारी आदेश की प्रतियाँ समेट रहा है जिसमें संजय गांधी की रैली में शामिल होने का फ़रमान जारी किया गया था। रैली में शामिल होना अब अनिवार्य नहीं है। पता यह भी चला कि होमी दाजी ने विधानसभा में यह मुद्दा उठाया था कि संजय गांधी की रैली में शमिल होने के लिए सरकार द्वारा विद्यार्थियों और प्राध्यापकों को विवश किया जा रहा है। उसके बाद शासन ने यह क़दम उठाया है। हम लोगों ने राहत की साँस ली और अपनी-अपनी कक्षाएँ लेकर घर लौटे।

'आसमान से गिरे, खजूर में अटके' वाली कहावत चरितार्थ करता हुआ एक ख़त घर पर मेरा मानो इन्तज़ार ही कर रहा था। लिफाफा खोल कर ख़त पढ़ा :

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मध्यप्रदेश कला परिषद

ललित कला भवन, टैगोर मार्ग, भोपाल-3

क्रमांक 1819 दिनांक 25/2

प्रति

श्री धनंजय वर्मा,

भोपाल

महोदय,

बुद्धिजीवियों और कलाकारों की एक बैठक मध्यप्रदेश कला परिषद भवन में दिनांक 26.2.1976 को दोपहर 2.30 बजे आमंत्रित की गई है। कृपया इस बैठक में आप ठीक समय पर पधारने का कष्ट करें।

भवदीय

(हस्ताक्षर : कृष्ण कुमार सक्सेना)

सचिव, मध्यप्रदेश कला परिषद् के लिए

मैंने घड़ी में समय देखा — तीन बजे थे। मन-ही-मन तय किया कि बैठक में नहीं जाऊँगा, इस बिना पर कि पत्र देर से मिला। अन्दर जाकर कपड़े बदलने ही वाला था कि एक स्कूटर बाहर रुका और दरवाज़े पर दस्तक हुई। सामने सक्सेनाजी जी खड़े हुए थे। उन्होंने पूछा — 'पत्र आपको मिल गया।' नहीं, कैसे कहता? वो दूसरा थमा देते...। 'मुझे वाजपेयी जी ने भेजा है, खासतौर पर आपको लेने' ...मैं मना कैसे करता? ...सक्सेना जी के स्कूटर पर कला परिषद् भवन पहुँच गया। ...

परिषद के प्रांगण में बुद्धिजीवियों और कलाकारों की भीड़ थी। अधिकांशत: सरकारी मुलाजिम, शासकीय महाविद्यालयों के मुदर्रिस! कुछ कला परिषद के सचिव — श्री अशोक वाजपेयी से उपकृत और कुछ उपकृत होने के उम्मीदवार मुझे सीधे सचिव के कमरे में ले जाया गया। वहाँ साहित्य परिषद् (अब साहित्य अकादमी) के सचिव श्री शानी भी मौजूद थे। श्री वाजपेयी मुझसे मुखातिब हुए :

—''संजय गांधी रैली के बाद सर्किट हाउस के पास वाले बंगले में गणमान्य नागरिकों, विभिन्न संगठनों और संस्थाओं के प्रतिनिधियों से मिलेंगे। प्रदेश के बुद्धिजीवियों और कलाकारों की ओर से उन्हें संस्कृति के सम्बन्ध में एक मैमोरेण्डम दिया जाना है। वह मैंने तैयार कर लिया है। इसे आप देख लें। इस पर यदि संजय गांधी कुछ पूछ-ताछ करें तो उसका जवाब आपको ही देना है...''

— ''मैमोरेण्डम चूँकि आपने तैयार किया है, तो बेहतर यही होगा कि आप ही उनका सामना करें'' ... मैंने कहा।

— ''मैं सरकारी अफ़सर हूँ और हम लोग मामले को सरकारी बनाना नहीं चाहते'' — वाजपेयी जी ने अंग्रेजी में कहा।

— ''आप सरकारी अफ़सर हैं, तो मैं भी तो सरकारी नौकर हूँ, आपकी तुलना में मेरी स्थिति अधिक वेध्य है'' — मैंने भी अंग्रेजी में निवेदन किया।

—''उसमें डरने की क्या बात है'' — शानी जी ने फरमाया।

— ''डरने की कोई बात नहीं है तो आप ही यह जिम्मेदारी क्यों नहीं ले लेते?'' ...मेरा स्वर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
ज़रूर तल्ख हो गया होगा।

—''देखिए, मामले को इतना मत उलझाइए। शानी जी स्थिति को सम्हाल नहीं पायेंगे। आपसे बेहतर यह काम कोई और नहीं कर सकता। इसीलिए हमने बहुत सोच-विचार कर आपको चुना है। इसमें परेशानी क्या है?''... वाजपेयी जी के स्वर में थोड़ी ख़फ़गी थी...।

फिर मुझे यह भी याद आ गया कि वाजपेयी जी कला परिषद के सचिव ही नहीं, शिक्षा विभाग में उपसचिव भी हैं और आईएएस हैं। बहरहाल, मैंने मैमोरेण्डम पढ़ा और अपने आप को मानसिक रूप से तैयार करने में लग गया।

वाजपेयी जी और शानी बाहर आ गए। बुद्धिजीवियों और कलाकारों का काफ़िला प्रोफ़ेसर्स कॉलोनी होता हुआ सर्किट हाउस के पास वाले बँगले की ओर खरामाँ खरामाँ चलने लगा। बाहरी गेट पर एक वरिष्ठ पूर्व केबिनेट मंत्री लोगों को पास बाँट रहे थे। हमें भी दिए गए। हम लोग बँगले की लॉन पर एकत्र हो गए। वहाँ मुख़्तलिफ समूहों में लोग जमा थे — कुछ परिचित, अधिकांश... अपरिचित! अफसरों की एक टोली हमारे पास आई।

—''अच्छा, आप लोग बुद्धिजीवी और कलाकार हैं? आइए, इधर आइए... यहाँ बैठिए... वह जगह छात्र-नेताओं के लिए आरक्षित है।...'' जैसे चरवाहे मवेशियों के झुण्ड को हाँकते हैं, लगभग उसी अन्दाज़ में अफसरों की टोली हमें एक-से-दूसरे और दूसरे-से-तीसरे तम्बू में बैठने के आदेश देती रही। अन्त: एक अफसर आया — ''आपके प्रतिनिधि कौन है?... सिर्फ वो मेरे साथ आए। बाकी आप लोग यहीं बैठे रहें...''

ज़ाहिर है मुझे सामने आना था। मैं उनके साथ हो लिया।

—''आप अकेले... आपके साथ एक और आ सकता है?...''

सत्येन कुमार मेरे साथ हो लिए। ...बारामदे में खासी भीड़ कंधों से कंधे रगड़ते हुए... धक्का-मुक्की झेलते हुए हम लोग दरवाज़े तक पहुँचे। दरवाज़े पर हमें रोक दिया गया। वो अफसर जाने कहाँ गुम हो गया जो हमें साथ लाया था। खासी रेलम-पेल के बाद वो फिर नमूदार हुआ और हमें उस कमरे में प्रवेश मिला जिसके दूसरे सिरे पर भीड़ से घिरे युवराज संजय गांधी और मुख्यमंत्री जी खड़े थे। उनसे मिलने वालों की मुन्तज़िर क़तार में हम भी खड़े हो गए। ...दायीं और निवर्तमान मुख्यमंत्री जी अपने किसी साथी के साथ खड़े थे — उदास और श्रीहीन!.. आखिर हमारा नम्बर भी आ गया। हमारा परिचय दिया गया —''प्रदेश के बुद्धिजीवियों और कलाकारों की ओर से संस्कृति के बारे में आपको एक मेमोरेण्डम देना चाहते हैं?...'' हमने श्री संजय गांधी को नमस्कार किया। उन्होंने मैमोरेण्डम लेकर, बिना उसे देखे, पीछे खड़े किसी अफसर को सौंप दिया। अफसर ने उसे कागज़ों से भरी एक टोकरी के हवाले कर दिया...

हमारा काम खत्म! फिर उसी धक्का-मुक्की और रेलमपेल के सहारे हम लोग बाहर आ गए। संजय गांधी के दर्शन मात्र से वंचित बुद्धिजीवियों और कलाकारों का दल पता नहीं कहाँ गुम हो गया था!...

दूसरे दिन स्थानीय अख़बारों में बड़ी प्रमुखता से यह खबर छपी। उसके साथ मेरी मजम्मत भी की गई थी यों कि जैसे मैंने कोई संगीन जुर्म किया हो। सबसे अधिक तकलीफ 'जनधर्म' साप्ताहिक के हमले से हुई जिसमें एक बॉक्स बनाकर पूरी ख़बर नमक-मिर्च मिलाकर, चटखारे लेकर, छापी गई थी। तकलीफ इसलिए कि उसके सम्पादक तब मेरे परम मित्र थे और ओमप्रकाश निर्मल की वजह से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उनसे हमारे रिश्ते लगभग पारिवारिक ही गए थे। मुझे उनसे यह उम्मीद कतई नहीं थी। कम-अज़-कम वो तो मेरी विवशता को समझ सकते थे और इस तरह खबर उछालने के पहले मुझसे पूरे प्रसंग पर बात कर सकते थे!... लेकिन उन दिनों अतिरिक्त उत्साह का जो माहौल, दोनों ओर था उसमें लोगों से संयम और संतुलन की उम्मीद करना भी बेवकूफी थी। दफ़्ती की तलवारें भाँजते हुए लोग एक-दूसरे को क़त्ल करने में मुब्तिला थे और शहादत न सही, बहादुरी के तमगे लटकाने में ज़रूर मशगूल थे... जबकि अपना हाल था, बकौल शकेब जलाली :

हमसे टकरा गई खुद बढ़के अंधेरे की चट्टान
हम सम्भलकर जो बहुत चलते थे नाचार गिरे...

लेकिन नाचार, हम सरीखे, सब नहीं थे। इसी भोपाल में तब इन्दिरा गांधी के ख़ास-उल-ख़ास कहे जाने वाले कवि - शिरोमणि श्रीकान्त वर्मा की पहल पर साहित्य परिषद और कला परिषद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित बुद्धिजीवियों, कलाकारों और लेखकों-कवियों के एक लगभग सरकारी सम्मेलन में डॉ. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय ने अपने वक्तव्य में साफ-साफ सत्ता विरोधी रुख़ अख़्तियार किया था जिससे, उन्हीं के शब्दों में —''तारीफ के तस्करों की तबियत दुरुस्त हो गई थी।''

और याद आ रहा है — समकालीन लेखक सम्मेलन का 7-9 अक्टूबर 1979 को सम्पन्न पूना अधिवेशन, जिसका उद्घाटन किया था महामहोपाध्याय दतो वामन पोतदार ने और अध्यक्षता की थी — श्री पी.वी. नरसिंहराव ने, जो उस वक़्त कदाचित कांग्रेस अध्यक्ष थे। उन्होंने शुरू से लेकर आखिर तक सभी गोष्ठियों में शिरकत की थी। पाँच संगोष्ठियों में विभिन्न विभिन्न विषयों पर, बावजूद आपातकाल के, खुलकर विमर्श हुआ था। दूसरे दिन के कवि सम्मेलन में ओमप्रकाश निर्मल ने इन्दिरा गांधी को सम्बोधित आपातकाल विरोधी कविता पढ़कर वाह-वाही तो लूटी ही, पूरा सभाकक्ष एक सकते में भी आ गया था। श्री पी.वी. नरसिंहराव की मौजूदगी की वजह से कवियों-लेखकों पर कोई आँच नहीं आई। यह सम्मेलन मेरी यादों में इसलिए भी बसा है कि इसके अन्तिम दिन शाम को मराठी में ख़ासा लोकप्रिय कार्यक्रम-कथाकथन-हुआ था जिसमें हिन्दी लेखकों के एकमात्र प्रतिनिधि थे — बाबा नागार्जुन। कथाकथन में मराठी के नये-पुराने कहानीकार अपनी नयी-ताज़ी कहानी, पढ़ते नहीं, सुनाते हैं — बाकायदा हाव-भाव और एकल अभिनय के साथ और हज़ारों श्रोता उसे मंत्र-मुग्ध होकर सुनते हैं। मराठी में कहानी की यह विलक्षण वाचिक परम्परा आज भी फल-फूल रही है। बहरहाल, नागार्जुन ने आशु-कवि की तर्ज पर जो कहानी सुनाई, वह मेरी जानकारी में उनके किसी संग्रह में संकलित नहीं है और शायद अब तक अप्रकाशित है चुनांचे मेरी यादों में वह जैसी बसी है, वैसी ही पेश है। बाबा नागार्जुन अपनी कविताएँ जिस तरह लगभग अभिनय के साथ पढ़ते थे उसी तरह उन्होंने पंचतंत्र शैली की यह कहानी पेश की थी :

एक जंगल में संयोगवश हुआ यह कि एक शेर, एक सुअर, एक ऊँट और एक खरगोश में अच्छी-खासी दोस्ती हो गई। चारों अपना-अपना भोजन करते और देर रात तक उनकी गप्प गोष्ठी चलती। एक दिन शेर ने एक बड़े-से बैल का शिकार किया और गोष्ठी के लिए नियत पेड़ के नीचे आकर बैठ गया। सुअर और ऊँट भी उसके आजू-बाजू आकर बैठ गए। सबसे अंत में फुदकता हुआ खरगोश आया और शेर के ऐन सामने बैठ गया। जब सब आराम से बैठ गए तब शेर ने बड़े ज़ोर से दायें बाजू सर घुमाकर, अपना पूरा मुँह खोलकर, डकार ली। उसका भभका सुअर की थूथन तक फैल गया। सुअर ने अपना मुँह फेर लिया। शेर के तेवर चढ़ गए। उसने पूछा —

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

—"क्यों तुमने अपना मुंह क्यों फेर लिया?..

—"ऐसा है मित्रवर शेर, तुम अपना मुँह तो कभी धोते नहीं हो फिर अभी अभी कच्चा माँस खाकर आये हो। तुम्हारी डकार में उसकी सड़ी हुई दुर्गन्ध आ रही है, सो में अपना मुँह न फेरता तो क्या करता, सुअर ने कहा।"

शेर को आ गया गुस्सा। दहाड़ता हुआ बोला :

—"साले सुअर, तू दुर्गन्ध की बात कर रहा है। मेरी छत्र-छाया में रहता है और मेरी ही आलोचना करता है।" ...उसने मारा झपट्टा और सुअर का काम तमाम हो गया। शेर उसे चीर-फाड़ कर खा गया।

ऊँट सकते में आ गया। शेर आखिर है तो जंगल का राजा। और राजा से दुश्मनी तो ख़तरनाक है ही, उससे दोस्ती में भी कम ख़तरे नहीं हैं। अब सुअर ने सच ही तो कहा था। किसी राजा को सच बर्दाश्त क्यों नहीं होता?... इसी उधेड़-बुन में शेर की तरफ मुँह किए ऊँट जुगाली करता रहा। ...शेर ने फिर पूरा मुँह खोलकर डकार ली। ऊँट स्थितिप्रज्ञ की तरह बैठा रहा। शेर ने गुर्राते हुए पूछा :

—"क्यों बे ऊँट, बोल क्या मेरे मुँह से दुर्गन्ध आ रही है?..."

—"अरे नहीं हुजूर। आपके मुँह से भला कभी दुर्गन्ध आ सकती है। आप हैं जंगल के राजा। आपके मुँह से तो सुगंध आ रही है — सरकार, सुगंध। इलायची की सुगंध..." ऊँट ने चापलूसी करते हुए कहा।

शेर के तेवर फिर चढ़ गए। दहाड़ता हुआ बोला :

—"साले ऊँट! मुझे बेवकूफ समझ रक्खा है। मेरे मुँह से सुगंध आ रही है! वह भी इलायची की। चापलूस कहीं के..." और शेर ने फिर मारा एक झपट्टा और चीर-फाड़कर उसे भी खा गया।

खरगोश यह सब देखता हुआ काँप रहा था। एक ने सच कहा। वह मारा गया। दूसरे ने झूठ बोलकर बचना चाहा। वह भी मारा गया। अब सच और झूठ के बीच क्या है?...

जब ऊँट का भी काम-तमाम हो गया तब शेर ने फिर एक ज़ोर की डकार ली। खरगोश दम साधे उसकी ओर टकटकी बाँधकर देखता रहा। शेर खरगोश की ओर मुखातिब हुआ :

—"बोल बे, खरगोश के बच्चे! तुझे मेरे मुँह से दुर्गन्ध आ रही है, कि सुगंध?..."

—"हुजूर जान की खैर बख़्शी जाय, तो कुछ अर्ज़ करूँ..." खरगोश थर-थर काँपते हुए बोला।

—"जा बख़्श दी तेरी जान! उस बैल को तो खा ही चुका हूँ। सुअर भी पेट में समा गया और अब यह ऊँट...! तू एक निवाले का तो है नहीं बोल क्या बोलता है?..." शेर ने कहा।

—"सरकार सच बात यह है कि पिछले एक महीने से मुझे सख़्त जुकाम हो गया है, न सुगंध का पता चलता है, न दुर्गन्ध का..." खरगोश ने कहा।

इसी तरह पिछले सोलह महीनों से पूरा देश खरगोश हो गया है और उसे जुकाम भी हो गया है। उसे न सुगंध का पता है, न दुर्गन्ध का!...

बाबा नागार्जुन ने कहानी ख़त्म करते हुए कहा और पूरा हाल देर तक तालियों से गूँजता रहा।

— 'करुणालय'

एम-433/ई-7, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462016

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विष्णु पण्ड्या

मीसा वास्यम्

अनु. बंशीधर

पहला दिन

वे आये, नाम पूछा और मैंने बताया। तभी एक और व्यक्ति धड़ाधड़ जीना चढ़ता है। अब मुझे ध्यान में आया कि पहले तीन व्यक्ति एल.आई.बी. के लोग थे, नागरिक पोषाक में। और बाद में आया व्यक्ति पोलिस वर्दी में इन्सपेक्टर था। उसने कहा, ''चलो, पोलिस थाने पर बुलाया है।''

''किसने?''

''साहब ने''

''क्यों?''

''मैं नहीं जानता।''

– किन्तु वह जानता था, मैं भी जानता था। कल 12वीं मार्च, शुक्रवार की सांझ, गुजरात की जनता मोर्चा सरकार को बिदा कर, आपातकालीन राज्य प्रसारित करने के लिए आई थी। चार बजे के आसपास मुख्यमंत्री बाबूभाई पटेल ने राज्यपाल को अपना त्यागपत्र सौंप दिया था, दो विश्वासघाती विधानसभा सदस्यों की नादानी ने पक्ष (दल) को हचमचा दिया था। इसका दु:ख जितना सरकार को था, उससे कहीं अधिक जनता को था।

.....क्योंकि सभी जानते थे कि इस सरकार के जाते ही सर्वत्र 'मीसा' की परछाई छा जायेगी।

इस भय को सही साबित करने के लिए गृह विभाग कई दिनों से परिश्रम कर रहा था। बड़ी सावधानी या सजगतापूर्वक उसने एक सूची बनाकर तैयार कर रखी थी- किसे-कब पकड़ना और कौनसी जेल में रखना। राष्ट्रपति शासन की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
घोषणा होते ही, शाम तक तो कई घरों एवं कार्यालयों पर पोलिसबँन पहुँच चुकी थी।

सारी रात गिरफ्तारियों का दौर चलता रहा, दूसरे दिन भी यही प्रक्रिया जारी रही।

'साधना' कार्यालय और पास के पोलिसथाने का पैदल रास्ता तीन मिनिट का है, पर मुझे वाहन में ही ले जाया गया। लम्बी पूछताछ चली। चप्पल की पट्टी टूट गई थी। उसे ठीक करवाने के लिए मैंने इन्स्पेक्टर से कहा; पता नहीं, जेल में ठीक होगी या नहीं? मुझे कोई जानकारी नहीं थी। पहला ही- और वह भी मीसा का- अनुभव। दिवस यों शुरू हुआ।

जिस पोलिसथाने में मुझे ले जाया गया था, वह पोलिस हेडक्वार्टर था। जिस भवन में यह हेडक्वार्टर था, उसे 'गायकवाड़ हवेली' कहा जाता है। एक ज़माने में जब गायकवाड़ शासन रहा होगा, तब यह हवेली भी नया रूप-रंग धारण करती होगी, अब तो यह पोलिसथाना होकर रह गई थी। मुझे इन्स्पेक्टरों ने एक विजेता की अदा से, मुख्य पोलिस अधिकारी के सामने ले जाकर खड़ा कर दिया। तुरन्त ही उसने मुझे पूछा : 'किस कारण से पकड़े गये?'

उसका सवाल सही था। प्रशासन द्वारा कड़ी मेहनत के बावजूद कई लोग तो उसकी पकड़ में आ ही नहीं सके थे; उसे कहाँ खबर थी कि जिस व्यक्ति को गिरफ्तार करके लाया गया है वह तो अपने ऑफिस से सीधा कॉलेज जाने वाला था, छात्रों की पढ़ाई के सत्र का अंतिम दिवस था। विद्यार्थियों का विदाई समारोह था। फोन करके प्रिन्सिपाल से विदा ले ली थी।

परन्तु समय भी कितनी शुष्क कार्रवाई से गुज़र रहा था।

हवेली में भी पूछताछ की गई। सगे सम्बन्धियों के नाम पूछ गये। 'जेल में कुछ हो गया तो हम किसको सूचना देंगे?' उसका तर्क सही था, पर तथ्य कम था- 'हिस्ट्री शीट्स' तैयार किये जा रहे थे, ताकि पकड़े गये व्यक्ति के स्वजनों को हैरान-परेशान किया जा सके।

उसके पश्चात दूसरी कार्रवाई। एक अंधेरी कोठरी। एक फोटोग्राफर। बन्दूकधारी पोलिस का जवान। हाथ में 'स्लेट' थमाई, देखा तो मेरा नाम लिखा था, और जेल जीवन की पहचान कराने वाला नम्बर। उत्सुकता से 'स्लेट' को उलट कर देखा तो एक नाम पढ़ने को मिला....सोचा कि इसके पहले ये महाशय पकड़ गये होंगे। पोलिस जवान ने उसे तुरन्त ही पौंछ डाला।

....''स्लेट लेकर मुझे करना क्या है?''

''.......हाथ में पकड़ कर खड़े रहो और फोटो खिंचवाओ।''

याद आया :

ज़रा गर्दन झुका लो।

हाँ तो तस्वीरें यार देख ली।

कल से अपराधियों के रजिस्टर में यह तस्वीर लटकाई जायेगी।

चलो, अच्छा है भविष्य में कोई इतिहासकार पोलिसथाने के दस्तावेजों में उपलब्ध इतिहास विषयक सामग्री पर लिखने बैठेगा तो यह तस्वीर देखकर उलझन में पड़ जायेगा- कौन सा गुनाह किया होगा इसने? चेहरे से तो लगता नहीं है कि इसने कोई अपराध किया होगा।

अब आगे तीसरा व्यूह भेदना था 'फिंगरप्रिन्ट' का। अपराध शास्त्र के निष्णात मानते हैं कि मनुष्य की हथेली उसकी पहचान का पर्याप्त साधन है तब से पोलिस विभाग इस बारे में पूरी सावधानी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बरतता रहा है। पाँच 'फिंगर प्रिन्ट्स' लिये जाते हैं और उन्हें एक बंद 'कव्हर' में सुरक्षित रखा जाता है। इस समय मुझे किसी समय लिखे गये मेरे निबंध का शीर्षक याद आ गया और मन ही मन पूछा : 'हथेली के आकाश'[1] से यह आकाश कितना भिन्न है?

अधिकारियों को तो झटपट विधि पूरी करनी थी और किसी दूसरे शिकार की शोध में भटकना था। एक समाजवादी बंधु हाथ लगा भी। उसको देखते ही ख़याल आया कि ये भी कोई अपना सम-दुखियारा पात्र। दोपहर तक जिनको भी पता चला (पोलिस की नज़र चुकाकर अपने कार्यालय की टेबल पर मैँ एक चिट्ठी लिखकर छोड़ आया था) वे सब हावले-बावले की दशा में आये। मित्रों व स्वजनों सभी के चेहरों पर हताशा थी। अकल्पित भविष्य की परछाईं सभी ओर पसरी हुई थी। मुझे उनसे कुछ कहना नहीं था, न उन्हें ही कुछ बोलने देना चाहता था। मात्र थोड़ी सूचनाएँ-कपड़ों तथा पुस्तकों के विषय में। किसे कहना? किसे नहीं? बड़ी सावधानी से बोले गये शब्दों एवं वाक्यों के टुकड़ों में अकथ्य शुष्कता थीं, पर उनके भीतर?

सांझ तक यही मनोमंथन चलता रहा।

'मीसा' के अंतर्गत पकड़े जाने का वास्तविक अनुभव तो अब शुरू होने को था। पोलिस अधिकारी ने पूछताछ की- अखबार, भूगर्भ पत्रिका, अन्य प्रवृत्तियों आदि के बारे में।

'अब क्या करोगे 'साधना' का?' एक मार्मिक प्रश्न यह भी था।

'करना क्या है? बहुत हुआ तो बंद हो जायेगी।' एक अनापेक्षित प्रत्युत्तर मेरे ओठों पर आ गया था। अब कौन चलावेगा पत्रिका, यह जानना चाहा था उसने; पर निष्फलता ही मिली उसे। वह हँस दिया...मैंने भी साथ दिया। रात देर, एक लिखित आदेश प्राप्त हो गया। तब तक कल्पना नहीं की थी कि गिरफ्तारी 'मीसा' के अन्तर्गत होनी थी अथवा 'भारत सुरक्षा धारा' के तहत। बस इतना अनुमान था कि ये दो ही विकल्प हैं। तीसरा कोई रास्ता नहीं है।

आदेश में लिखा था, इमरजेन्सी का असरकारक अमल करवाने के लिए यह गिरफ्तारी की गई है। बाकी और तो उसमें भारत सुरक्षा धारा- 1971 की उपधाराओं के जंगल के सिवाय कुछ भी समझ में नहीं आया।

इसी बीच एक फोन आ गया था। फोन था श्री चन्द्रकान्त दरू का जिन्होंने कानूनी संघर्ष करके 'साधना' को जीवित रखा था। बोले : 'विष्णुकान्तभाई, चिन्ता मत करना। ये सारे आदेश गैरकानूनी हैं। मैं इन्हें हाईकोर्ट में चुनौती दूँगा और तुमको मुक्त करा लूँगा...।'

हम जानते थे कि इतना करने तक तो श्री दरू को भी मीसावासी बना दिया जायेगा और न्यायालय में चुनौती देने के सारे अवसर सरकार छीन लेगी।

उसका प्रत्युत्तर तलाशने इतना समय भी कहाँ था? रात होने पर हमें कहा गया- कल तुमको ले जाया जायेगा। मजाक में साथी चिदम्बरम् ने कहा, ''तो, तब तक के लिए हम लोग घर लौट जायें?''

''नहीं, लॉक-अप में।'' इन्स्पेक्टर ने जवाब दिया।

जेल सुधार की शुरुआत करनी ही तो इस 'लॉक-अप' की कोठरी से की जानी चाहिए। अभी तक ऐसा किया नहीं गया है। जब तक अपराधी को विधिवत रूप से जेल के सुपुर्द नहीं किया जाता तब तक उसे जिस जगह रखा जाता है उसकी हालत तो देखिए। अंधेरी लम्बी कोठरी। मक्खियों-मच्छरों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
एवं खटमलों की पर्याप्त संख्या। दीवालें, जिनकी वर्षों से सफाई नहीं की गई है और असह्य गर्मी। गुनहगार अपना गुनाह कबूल कर ले, इसी विचार से शायद यह व्यवस्था रखी गई होगी?

जो भी हो, पर यहीं से अधिकारों की लड़ाई की शुरुआत होती है। ''हम राजनीतिक बंदी हैं, इसीलिए 'लॉकअप' में नहीं जायेंगे।'' चिदम्बरम अपनी छोटी सी ज़िन्दगी में सत्तर-अस्सी जेलें देख चुका था। इसमें किसी तरह की अतिश्योक्ति नहीं है। अत: अपने अनुभव के आधार पर उसने ज़रा उँची आवाज़ में उक्त बात कही थी। अधिकारी मान गये। हवेली में ही रात बिताने की व्यवस्था हो गई।

अनिद्रित रात अनेक तरह के विचारों की उथल-पुथल में पूरी हुई। सुबह जल्दी चार बजे के आसपास पोलिसवेन तैयार थी। उसमें एक इन्सपेक्टर तथा पाँच पोलिस जवानों के बीच में हमें बिठाया गया। अहमदाबाद के राजपथ पर अभी शांति थी। फुटपाथ पर रात बिताने वालों तथा दूधवालों की थोड़ी हलचल थी। बाकी रास्ते एकदम ठण्डे गार। पूरी तरह शांत। महानगर को पीछे छोड़कर दौड़ी जा रही 'वेन' की जाली में से निस्तेज रोशनी की तरफ नज़र डालने पर एक ही प्रश्न बार-बार पैदा होता था : 'इस अति परिचित नगर में फिर कब लौटने का होगा?'

भावनगर पहुँचने में घंटों का समय था इसलिए साथी बंदी जनों ने निश्चिंत होकर पोलिस वालों से गपशप शुरू कर दी। 'वेन' की पाटली पर मैं लेट गया। फागुन की ठण्डी रात थी इसलिए इन्स्पेक्टर ने अपनी शाल मुझे दे दी। कुछ ही देर में आँख लग गई। अंधेरे में कुछ परछाइयाँ उभरी विलीन हुईं। निद्रा और जागृति के बीच किसी मोड़ पर खड़ा था। कुछ भी स्पष्ट नहीं था। सब कुछ धुंधला, भविष्यहीन और अस्पष्ट मानव-स्वातंत्र्य छीने जाने की छोटी सी छोटी घटना से उत्पन्न मानसिक झंझावात भी कितना भयावह होता है?

अधूरे प्रश्नों एवं उनके प्रत्युत्तरों की दशा में ही किसी ने मुझे जगाया : 'साहब, आपको चलना है क्या?'

मैं उठ बैठा। सुबह का उजेला पसर गया था। आँखें मसलकर देखा तो आसपास खुला, विस्तृत आकाश था। जेल की दीवालें तो वहाँ कहीं नहीं।

इन्सपेक्टर ने स्पष्टता की : सामने खोड़ियार माता का मंदिर है। हम राजपूतों की कुलदेवी दर्शन के लिए जाना है? बाकी सब जा रहे हैं।

वास्तव में उन सबको दर्शन करने थे। एक-एक करके सब चल दिये। चिदम्बरम् ने मजाक में कहा, ''एकदम खुले खेत हैं...''

मैंने भी देखा। उसकी बात बिल्कुल सच थी। बंधन की मन:स्थिति प्रत्येक के मन में प्रतिपल ऐसा ही भाव पैदा करती होगी। मैंने हँसते हुए कहा, ''हमारा तो ठीक, पर शेष सबका क्या होगा?''

तब तक सभी लौट आये और 'वेन' में घुसेड़ दिये गये।

अन्तत: मुकाम आ ही गया।

शहर के बाहरी रास्ते से होकर जेल-ऑफिस के दरवाजे पर जाकर खड़े हुए और तुरन्त ही आसपास नज़र घूम गई। देशी राजाओं के समय में बनाया गया जेल का यह मकान मजबूत था। ऊँची दीवालें, विशालकाय दरवाजा। आसपास पोलिसवालों के रहने के लिए बनाये गये मकान। दरवाजे पर ही पहरेदार के रूप में खड़े संत्री।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दरवाजे का बड़ा-सा ताला खुला। आगे पीछे पोलिस के साथ हमने भीतर प्रवेश किया। दरवाजे पर खड़े संत्री के लिए इसमें कोई नवाई की बात नहीं थी। उसके लिए तो रोज का 'रूटीन' काम था। ताला खोलना-दरवाजा खोलना, फिर बंद करना, ताला मारना और चाबी संभालना- बस इतना ही। वह जानता था, पर उसे शायद इस बात की कोई अनुभूति नहीं थी कि वह आज तक कितने कैदियों की बंधन-मुक्ति का छड़ीदार रहा है?

जेल ऑफिस के लोग हमारे स्वागत के लिए तैयार ही बैठे थे। उन्हें पहले से ही सूचना दे दी गई थी कि दो राजनीतिक कैदी भेजे जा रहे हैं। रविवार का दिन था इसलिए सभी जाने की तैयारी में थे। जेल आफिस अंधकार ग्रस्त थी। जेलर की पीठ के पीछे वाली खिड़की से अंदर का साम्राज्य दिखार्द देता था। असामाजिक कैदियों को बेरकों में बंद करने में अभी देर थी इसलिए सभी खिड़की के पास आकर उत्सुकतापूर्वक देखे गये कि कौन नये मेहमान हैं? वे सब ऐसे थे कि अखबार पढ़कर अनुमान कर सकते थे।

जेल-प्रवेश भी किसी दूसरी दुनिया में प्रवेश करने से कम होता है। वहाँ जेल-आफिस इस बात का पूरा इन्तजाम रखता है कि व्यक्ति को अपने भूतकाल की काँचुली उतार कर एकदम नये भविष्य में पहुँचना है। रजिस्टर में नाम लिखा गया। नम्बर दिया गया। कहा गया : 'सारे रुपये पैसे निकालो।' जो था, सब दे दिया। दूसरा सवाल 'घड़ी या अंगूठी पहने हो? पेन है?' वह भी सौंप दिया। सामान की झड़ती ली गई। जेल में 'ब्लेड' जैसे तीक्ष्ण साधनों या मनोरंजन के लिए रेडियो-ट्रांजिस्टर रखने की सख़्त मनाई है। ब्लेड से कोई कैदी आत्महत्या कर बैठे तो?

लगा कि अन्य कैदियों से, राजनीतिक बंदियों के लिए अलग व्यवस्था है। उन कपड़ों की व्यवस्था भी वहाँ थी जो अपराधियों को पहनने को दिये जाते हैं। राजनीतिक बंदियों को अपने ही कपड़ों में वहाँ रहने की अनुमति थी (पर हमने बाद में स्वेच्छापूर्वक जेल के कपड़े पहनना शुरू कर दिया था)।

घंटे भर बाद हमारे लिए दूसरा दरवाजा खोला गया। असामाजिक तत्वों के रूप में पकड़े गये 'मीसा' के बंदियों एवं कैदियों के बीच 'वोलीबॉल' चल रहा था। वह अब पूरा हो चुका था। स्वागत करने की मुद्रा वाले इन खिन्न चेहरों के लिए कुछ भी बोलना मना था। चेहरों पर कुतूहल था, क्योंकि राजनीतिक बंदियों के रूप में यह पहला प्रवेश था।

'वार्डर' हमें उस ओर ले गया, जिस ओर हमारी पृथक व्यवस्था थी। बड़ी बेरकों से थोड़े अलग तरह के कमरे। वहाँ 1923 ई. की एक तख़्ती लगी हुई थी। अर्द्धशती तक यहाँ कौन लोग रहे होंगे? कल तक तो यहाँ जेल में रसोईघर का काम संभालने वाले कैदी रहा करते थे। जेल में इनका एक विशेष दर्जा रहता है। एक कमरा वहाँ 'आफ्टर' के लिए था। देर से आने वाले अपराधियों की गिनती करने में भूल न हो जाये इसलिए एक रात इसमें रखे जाते थे और दूसरे दिन उन्हें बेरक में भेज दिया जाता था।

हमारे कमरों के दरवाजे तो समान ही थे। लोहे के सलियों वाले, जिन्हें सांकलों से बंद किया जाता था। लोहे के सलिये काफी मोटे व भारी थे। संडास या शौचालय की व्यवस्था कमरे में ही थी। और दीवाल में ठेठ ऊपर की ओर दो छोटी जालियाँ थीं। जल्दी से कहीं से एक खाट तथा गादी वहाँ भेज दी गई। 'वार्डर' आकर नाश्ता रख गया। बड़बड़ाता गया : 'अभी गिनती होगी, भर दोपहरी में सब बेरक में।' उसकी बात बिल्कुल सही थी। सिरों की गिनती करने वाली टुकड़ी आ पहुँची। तीन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लोग थे कुल। चाबी खनखनाता हुआ एक जमादार और दूसरे दो पहरेदार। सिरों की गिनती की, नोट किया। हम दो बंदी थे, पर साथ में नहीं रखा हमें। दोनों को अलग-अलग कमरों में रखा गया था। हमारे अंदर जाते ही लोहे का भरी भरकम दरवाजा बंद करके ताला मार दिया गया।

टूटी-फूटी कुर्सी पर बैठा। चारों ओर की दुनिया पर दृष्टि डाली। टेबल पर पुस्तकों का ढेर रखा, उन्हें व्यवस्थित रूप से जमाने का साहस नहीं कर सका। 12×15 की इस कोठरी में मेरे पहले कोई चित्रकार कैदी रहा होगा। उसने दीवाल पर, कोयले से एक चित्र बनाया हुआ था- पंख फड़फड़ाते हुए पंक्षी का। और उसके बाद गिनती की कुछ चौकड़ियाँ बनाई थीं उसने। ऐसी कुल सत्रह चौकड़ियाँ उसने मारी थी। उसके बाद कुछ नहीं था वहाँ। सत्रह महीनों के बाद वह छूट गया होगा?

- परन्तु 'मीसा' में तो इस तरह की चौकड़ियाँ चित्रित करने की भी मनाई थी।

सलाखों के बाहर नज़र दौड़ाता हूँ। दोपहरी की धूप चारों ओर फैली हुई थी। थोड़ी ही दूरी पर जेल के आसपास बनी ऊँची दीवाल का एक भाग। उसकी आड़ में कनेर का एक पौधा और मेहँदी की बाड़। अनार का एक वृक्ष, थोड़ी ही दूर पर एक कुआं और उसके पीछे फैला हुआ जेल का बगीचा। वहाँ तक घूमने की अनुमति थी, यह बहुत ही राहत की बात थी। बाकी तो, दूसरी तरफ जेल के दरवाजे से बेरकों तक कैदियों की दुनिया-पसरी हुई थी।

भूख, पीठ थपथपाने लगी थी। थोड़ी ही देर में जाड़ी मोटी रोटी और लाल चटक शाक लेकर 'वार्डर' हाजिर हो गया। उदारतापूर्वक वह प्याज भी ले आया था। किसी तरह थोड़ा पेट में उतारा। कमरे में घूमना शुरू किया। थक गया तो कुर्सी पर बैठ गया। सामने पुस्तकें थीं, सब की सब अ-राजनीतिक।

तुरन्त याद आई : बाहर, राजनीतिक घटनाक्रम के इस चक्रवात में कितने लोगों को जेलों में बंद कर दिया गया होगा? कैसा उत्पात मचा होगा? इस तरह के बहुतेरे सवाल मिलकर मुझे दूर-दूर तक खींच ले जाते थे। विस्मृत न हो सकने वाले पात्र पीछे छूट गये थे। किसे? कब खबर होगी, इसे भी कौन जानता था?

बड़ी देर तक विचारों के वर्तुलों में घिरा रहा। दूर की बेरकों से कैदियों द्वारा किये जाने वाले भजनों की अस्पष्ट आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। कोई प्राचीन भजन था, 'मेरु रे डगे, पण मनडां न डगे, भले ने भांगी पडे रे ब्रह्मांड...रे' पहरे पर खड़े पोलिस वाले आकर झांक जाया करते थे। शाम हुई, रात पड़ी और खाट में जा पड़ा। पर नींद नहीं आई। अर्द्ध-निमीलित आँखें...भीड़ में, निपट एकान्त रास्ते पर निरुद्देश्य लम्बी भटकन...प्रत्येक घंटे के बाद सुनाई देने पड़ने वाली जेल के घंटे की आवाज़ और सलाखों में से घुस आयी बिल्ली की आवाज़।

...इसी तरह अनिद्रित अवस्था में पड़ा रहा। गूंगी बेरक में चक्कर लगाता रहा, अंत में थकी हुई आँखों ने कब नींद की अँगुली पकड़ ली- पता नहीं।

- तब हाथ पकड़ कर कौन खड़ा था, स्वतंत्रता और Destination? कौन जाने?

1. 'हथेली में आकाश' निबंध संग्रह पर 'गुजरात साहित्य अकादमी' की ओर से पुरस्कार घोपित किया था जिसे लेखक ने स्वीकार नहीं किया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कन्हैया सिंह

नैनी जेल में : पेरोल से वापसी

इमरजेंसी की जेल में बंद हम लोग आशा करने लगे थे कि अब जेल से शीघ्र ही मुक्ति मिल सकेगी। यद्यपि अब जेल हमारे जीवन-क्रम में ऐसी सच्चाई थी कि कुछ अजीब और नया नहीं लग रहा था पर बन्द चिड़िया की तरह हमारे पर सदैव इस दीवार के पार उड़ने के लिए फड़फड़ाया करते थे। जेल की ऊँची दीवारों के बाहर हमें केवल कुछ पेड़ दिखायी पड़ते थे। आदमी तो दूर थे रिक्शा, इक्का, मोटर आदि भी देखे कई-कई महीने बीत जाते थे। कुछ लोग कहते थे कि जेल अच्छी है पर मेरा दिल इस भाषा को यक़ीन नहीं करता था। अगर कोई रिहाई का आशाप्रद समाचार आ जाता तो हमें कितनी खुशी होती थी। जेल जीवन का तनाव भी लोगों में उभरकर दीखने लगा था। विश्वविद्यालय के दो प्रोफेसर जो एक ही कक्ष में रहते थे, एक दिन उनमें विवाद गाली-गलौज के स्तर पर उतर आया। इसी प्रकार कई श्रेष्ठ लोगों को जेल में बराबर रक्तचाप अधिक रहता था। उन्हें ठीक से नींद नहीं आती थी। इन सारी बातों से मुझे लगता था कि यह लम्बे जेल की अन्तर्वेदना और उसके तनाव का कुफल ही है।

उसके दूसरी ओर आशाजनक स्थितियाँ सामने आने लगी थीं। बीमारी के कारण लोकनायक पहले एक माह के पेरोल पर छूटे थे, बाद में उनके ऊपर से नज़रबन्दी उठा ली गयी थी। यद्यपि समाचार मिलते थे कि उनकी स्मरण-शक्ति अति क्षीण हो चुकी है और किडनी इतनी खराब हो गयी है कि शायद वे बचेंगे नहीं। अत: सरकार ने दिखावे के लिए उन्हें छोड़ दिया है। वे व्यवहारत: जेल के स्थान पर अस्पताल में बन्दी थे और उनसे मिलने-जुलने वालों की रिपोर्ट रखी जाती थी। अटल बिहारी वाजपेयी भी अस्पताल में रीढ़

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
की हड्डी के आपरेशन के पश्चात् अपने घर थे पर वहाँ भी वे पूर्ण बन्दी की हैसियत में थे। चौधरी चरण सिंह कई माह पहले छूट चुके थे। उनके छूटने के बारे में तरह-तरह की चर्चाएँ चलती थीं। आशा थी कि शायद अब धीरे-धीरे रिहाई हो सके, पर कई महीने बाद अशोक मेहता छोड़े गए तो हमें कोई उत्साह नहीं मिला क्योंकि चौधरी साहब के छूटने से जो आशा बँधी थी, वह धूमिल हो चुकी थी।

पर इस मई के महीने में कुछ साथियों के पेरोल आ चुके थे। प्रतापगढ़ के दो साथी एक-एक माह के पेरोल पर जा चुके थे। भारतसिंह चौहान तीन दिन के पेरोल से लोटे थे और पुनः पेरोल पर जाने का इन्तज़ाम कर आये थे। हमारे जिले के साथियों में रामनरेश यादव एक बार पेरोल पर जाकर वापस आ चुके थे। ईशदत्त जी भी जाकर वापस आ गए थे। 13 मई को मेरे भी एक सप्ताह के पेरोल की स्वीकृति यहाँ आ गयी थी। इस पेरोल-प्रक्रिया से भी कुछ अन्दाज़ लग रहा था कि संभव है, धीरे-धीरे इसी माध्यम से सरकार विरोधी नेताओं की गतिविधियों को समझकर सबकी रिहाई कर दे।

दूसरी ओर सरकार ने आपातकाल को अनुशासन पर्व के रूप में जिन विनोबा जी के नाम पर प्रचारित किया था, उन्होंने 26 जून 76 को अपने आश्रम में आचार्य-सम्मेलन बुला रखा था जो इस विषय पर विचार करने वाला था। इसके पहले भी उन्होंने एक ऐसा ही सम्मेलन किया था पर उस पर कोई ध्यान शासन ने नहीं दिया। यहाँ तक कि उसकी रिपोर्ट लेकर श्रीमन्नारायण जी दिल्ली गए थे तो इन्दिराजी ने उनसे भेंट भी नहीं की। फिर भी विनोबा - इन्दिरा के निकट-संबंध के नाते हम आशा करते थे कि शायद अपना राजनीतिक उद्देश्य पूर्ण करके अब श्रीमती गांधी बाबा के ही सिर पर सेहरा बाँध कर सबको छोड़ दें। यद्यपि ऐसा कुछ हुआ नहीं पर हम आशा लगाए रहे। इधर हाईकोर्ट आने जाने वालों से एक समाचार और मिला करता था कि मई के अन्त अथवा जून तक सभी विरोधी दलों को मिलाकर एक विरोधी दल बनेगा। उत्तरप्रदेश विधान मंडल में भालोद, जनसंघ, संगठन कांग्रेस और समाजवादी दल को मिलाकर एक विधान मण्डल दल बन गया था जिसका नाम 'लोकपक्ष' रखा गया था। आशा थी कि शीघ्र ही यह पक्ष अखिल भारतीय स्तर पर एक दल का रूप ले लेगा। 22 मई को रामनरेश यादव के नाम से विश्राम राय का एक पत्र आया था जिसमें यह लिखा था कि इन्द्रासन सिंह, ईशदत्त यादव और कमलाकान्त सिंह के पेरोल की संस्तुति लखनऊ गयी है जो शीघ्र ही स्वीकृत होकर आ जायेगी। उन्होंने यह भी लिखा था कि जुलाई 76 तक सभी बन्दी छूट जाएँगे और अक्टूबर-नवम्बर तक संसदीय चुनाव की संभावना है। इन सारी बातों से कुछ छूट-छाट के आसार नज़र आने लगे थे।

इतने दिनों की इमरजेंसी और इतने अधिक लोगों की नज़रबन्दी के बावजूद भी देश की हालत में कोई ख़ास सुधार नहीं आया था। डंडे के ज़ोर पर अशांति से लोगों को राहत थी। स्कूल-कॉलेज चलने लगे थे और परीक्षाएँ समय से हो रही थीं, पर न तो लोगों की आर्थिक स्थिति में कोई सुधार आया था और न ही शिक्षा एवं समाज की व्यवस्थाओं में कोई वांछित परिवर्तन आए थे। सत्ता में बने रहने के लिए इन्दिराजी के हथकंडों को लोग समझ गए थे। भीतर-भीतर एक ज्वालामुखी धधक रहा था। लोग यह अनुभव करने लगे थे कि इन्दिरा को केवल सत्ता प्रिय है, न उसे जगजीवनराम प्रिय हैं, न बंशीलाल; न हिन्दू प्रिय हैं न मुसलमान; न हरिजन प्रिय हैं, न आदिवासी। उदाहरण के लिए आपातकाल में उसने रा.स्व. संघ पर प्रतिबंध लगाकर मुसलमानों को प्रसन्न करना चाहा। पर जब उसे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
लगा इस देश का बहुसंख्यक हिन्दू उसके हाथ से निकल जाएगा तो उसने मुसलमानों पर जुर्म ढाना शुरू कर दिया। सुल्तानपुर और मुजफ्फर नगर के कत्लेआम तो दूर थे, वहीं अपनी नाक के नीचे तुर्कमान गेट और जामा मस्जिद के काण्ड कराये। आम मुसलमान की समझ में यह बात आ गयी कि यह औरत केवल ज़बानी हमदर्द है। और इसके हर आँसू घड़ियाली हैं।

इस वृत्ति का प्रकट रूप हमें प्रदेश विधान-परिषद् के चुनाव में देखने को मिला। इलाहाबाद स्नातक क्षेत्र से लक्ष्मीसहाय सक्सेना विरोधी उम्मीदवार थे जो हमीं लोगों के साथ जेल में मीसाबंदी थे। बन्दी के रूप में ही उन्होंने चुनाव लड़ा। वे जेल से चिट्ठियाँ खूब लिखते थे और बाहर उनकी श्रीमती जी चुनाव अभियान चला रही थीं। उनकी प्रचार-सेना संघ स्वयंसेवकों की थी। उनके प्रतिद्वन्द्वी कांग्रेसी उम्मीदवार इलाहाबाद शहर के ही एक बड़े डिग्री कॉलेज के प्रिंसिपल थे और असरदार आदमी थे। पर इस चुनाव में सक्सेना की जीत हुई। वह चुनाव वास्तव में आँख खोलने वाला था क्योंकि जिन मीसाबन्दियों को 'हिंसक, आराजक और देश के दुश्मन' की संज्ञा से विभूषित करके सरकारी रेडियो, टेलीविजन और अखबार प्रचार करते हैं, उन्हीं में से एक का चुनाव जीत जाना और वह भी इन्दिरा गांधी के गृहनगर इलाहाबाद से, यह एक महत्त्वपूर्ण बात थी। हम बन्दियों के लिए यह एक उत्साहवर्द्धक प्रसंग था। विश्वास होने लगा था कि अब वह दिन दूर नहीं है जब निरंकुश हाथ सत्ताविहीन हो जाएँगे।

21 मई को मेरे सप्ताह भर के पेरोल पर आज़मगढ़ से रिहाई आदेश आ गया। इस रिहाई के समाचार से मैं कितना खुश था कि घूम-घूमकर अपने मित्रों से मिल आया। रामधारी सिंह प्रिंसिपल, राजनाथ सिंह, गौरीशंकर यादव, सुमन्त कुमार, सत्यव्रत सिन्हा, मुरली मनोहर जोशी, वीरेन्द्र कुमार चौधरी आदि लोगों से मिल-मिलकर इस सुखद समाचार का प्रचार कर आया। नहा-धोकर 10 बजे विदा हो गया। जेल के विशाल फाटक से निकलने के पूर्व तक जो उत्साह और जो उमंग थी, वह बाहर निकलते ही ठंडी पड़ गयी। बाहर निकलकर शेड में बैठा हुआ नगर बस की प्रतीक्षा करता रहा जिसे आने में घंटों की देर थी। जेल की ऊँची-ऊँची दीवारों पर मुर्दनी छायी थी। बाहर बड़ा सन्नाटा था। न कोई चहल-पहल, न कोई जीवन का चिह्न। आते-जाते लोगों को मैं गौर से देखता था, उनमें अपने-अपने काम की धुन थी, कोई इन ऊँची दीवारों की ओर नज़र उठाकर देखता भी नहीं था कि इसमें सैकड़ों बेगुनाह मीसाबंदी भी जकड़े हैं जिनका भी रोज़ी-रोजगार है पर ठप्प पड़ा है। उनके भी बीवी-बच्चे हैं पर वे प्रतीक्षा के पल गिन रहे हैं। मैं थोड़ी देर अपने ही विचारों में डूब गया और मन फाँदकर चला गया इन ऊँची दीवारों के दूसरी ओर जहाँ चहल-पहल है, मस्ती है, रौनक है। बाहर मुझे एक सियाह अँधेरा के सिवा कुछ भी नहीं सूझ रहा था और ऊँची दीवारों के दूसरी ओर मुझे वह प्रकाश दीख रहा था जो इस अँधेरे का भेदन करेगा। नहाने के घाट याद आने लगे जहाँ दस-बीस की भीड़ लगी रहती है। हँसी-ठट्टे के साथ सामूहिक स्नान, खेल का वह भरा-पूरा मैदान ध्यान आया, जहाँ, विविधतापूर्ण चहल-क़दमी थी और एक-एक करके वे चेहरे याद आने लगे, जिनकी आँखों में विदा के क्षण आँसू उभर आये थे।

मैं बैठा-बैठा सोचता रहा कि भीतर से बाहर आते समय वाला मेरा उत्साह और मेरी वह उमंग

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहाँ तिरोहित हो गयी। अब सब सूना-सूनासा लग रहा है। एक मोह-भावना उमड़ रही है उनके प्रति, जिन्हें भीतर ही छोड़कर निकल आया हूँ। लगता है कि अपने परिवार से मिलने तो जा रहा हूँ पर एक वृहत्तर परिवार को छोड़कर जाना पड़ रहा है। आज लगता है कि तीसरा घर छोड़ रहा हूँ। 3/4 जुलाई 75 की रात में अपना घर छोड़कर आज़मगढ़ जेल आया तो आँखें गीली थीं। 10 फरवरी 76 को आज़मगढ़ जेल छोड़कर नैनी आया तो मन भीगा था, लगता था यह भी एक घर हो गया है और उसका विद्रोह खल रहा था। आज नैनी को छोड़ते समय भी मोती लुढ़क पड़े। सोचने लगा कि भीतर था तो बाहर की चाह थी, बाहर आया तो मन भीतर भाग रहा है, यह कैसी रचना है प्रभु की। घण्टे भर बीत गये पर नगर बस नहीं आयी। ऊब कर 3 रु. में एक रिक्शा किया, हिन्दी साहित्य सम्मेलन तक के लिए। रिक्शे पर बैठकर जा रहा था और उलट-उलटकर नैनी जेल की सुनसान और सन्नाटा भरी बाहरी दीवारों को देखता रहता था। जो दीवारें हमें काट खाती थीं, जिन्होंने हमें हमारे स्वजनों से दूर कर रखा था, आज उन्हीं दीवारों में बन्द स्वजनों की ओर मन भाग रहा था और इन दीवारों के ब्याज से मेरी पारदर्शी कल्पना भीतर के माहौल में डूब रही थी। रिक्शा जमुना के ऊपर बने नैनी ब्रिज पर चढ़ गया। हरे-हरे जल की गहरी जमुना को देखते-देखते रत्नाकर की पंक्तियाँ याद आयीं :

कान्ह गये जमुना नहान पै नये सिर सौं,
नीके तहाँ नेह की नदी में न्हाइ आये हैं।

सम्मेलन में अपने मित्र हरि मोहन मालवीय से मिलना चाहता था पर वे कहीं चले गये थे। अत: वहाँ से सीधे बस स्टेशन पहुँचा और 12.30 बजे की बस से आज़मगढ़ रवाना हुआ। रास्ते में बहुत से परिचित लोग मिले। बहुतों को यह भी पता नहीं था कि मैं सालों से जेल में बन्द हूँ। लोग समझते थे कि मैं इलाहाबाद किसी निजी काम से आया था और अब लौटकर घर जा रहा हूँ। कोई यदि जानता भी था कि मैं बन्दी हूँ तो वह मुझसे ही पूछता था कि आप लोग कब तक छूटेंगे? आपातकाल कब समाप्त होगा? मैं क्या जवाब देता, यही कह देता कि यह सब केवल इन्दिरा गांधी को छोड़कर और कोई नहीं जानता। मुझे अपनी इस 6 घण्टे की बस यात्रा में महसूस हुआ कि सारा देश ठण्डा पड़ गया है। हर आदमी डरा-डरा है। मीसा और डी.आई.आर. की डर से किसी से कुछ भी कराया जा सकता है। सारा मुल्क एक बड़ी जेल है, जबकि जेल में हम बन्द होकर भी ज़्यादा मुक्त थे। सुमन्त ने बड़ा आग्रह किया था कि मैं बाहर का हाल-चाल लिखूँ। मैंने उस समय के बाहर के हाल-चाल को लाक्षणिक रूप से एक कविता में लिख भेजा था, जो मेरे मित्र कन्हैया लाल नन्दन ने अपनी पत्रिका 'पराग' के मुखपृष्ठ पर छापी थी। वह कविता इस प्रकार थी :

सूरज ने गाल पर जड़ दिये चाँटे,
धरती के दर्द को कौन भला बाँटे,
लू लेकर खोज रही हाथों में बेंत।
ज़ोर-ज़ोर से धूप लगा रही ठहाके,
घर-घर में पड़ रहे गर्मी के डाँके,
लगती है दोपहरी जैसे हो प्रेत।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देखकर पौधों की झुलसी हुई खाल,
चिन्ता में सूख गये पोखर व ताल,
गंजे की खोपड़ी-सा दिख रहा खेत। (12.5.1976)

इस कविता में ग्रीष्म का आतंक और त्रास वर्णित था। इसी के माध्यम से मैंने अपने जेलवासी मित्रों को बाहर सत्ता के आतंक और त्रास का आभास कराया था।

आज़मगढ़ में सात दिन बातों-ही-बातों में बीत गये। श्रीमती जी की अस्वस्थता के प्रताप से पेरोल मिला था। अतः उन्हें जिला अस्पताल में भर्ती करा कर डॉक्टरी प्रमाण-पत्र लिया कि अभी भी ये अस्वस्थ हैं और इनकी चिकित्सा की आवश्यकता है। आजकल अधिकतर मीसाबंदियों की पत्नियाँ अस्वस्थ हो गयी हैं, क्योंकि उनकी बीमारी पर ही पेरोल मिलता था। इस बीच कहीं से भी कुछ समाचार खास नहीं मिला जिसे मैं अपने जेल के साथियों को सुनाता। सब मिलाकर इतने दिनों में मैंने अपनी नयी पेरोल के लिए दरखास्त मेडिकल सर्टिफिकेट के साथ दे दी। दूसरा काम यह हुआ कि हमारे कॉलेज के प्राचार्य डॉ. गुरसरन नारायन श्रीवास्तव ने मुझे आदेश दिया कि मैं प्रतिदिन कॉलेज आऊँ और उपस्थिति-पंजिका पर हस्ताक्षर करूँ। हमारी प्रबन्ध समिति के मन्त्री भी इसी मत के थे। इस संकट काल में मेरे महाविद्यालय के अधिकारियों और मित्रों ने मेरा बड़ा सहयोग किया। वे साथी भी जो मेरे बाहर रहने पर मेरे विरुद्ध रहते थे, मेरे प्रति सहानुभूति रखते थे।

आजकल हमारे कॉलेज के कुछ अध्यापकों ने 'फ्राइडे क्लब' बना रखा था। उसकी ओर से एक भोज 26 मई 76 की रात्रि में आयोजित हुआ। भोज तो क्लब की ओर से था जो उसके साप्ताहिक कार्यक्रम का अंग था, पर इसमें मेरी उपस्थिति से वह जैसे मेरे सम्मान में ही हो गया था। मैंने उसमें भाषण किया। इस समय प्राचार्य डॉ. गुरसरन नारायन श्रीवास्तव अस्वस्थ थे। उन्हें वायु-विकार से बड़ी परेशानी हो गयी थी। दो वर्ष पूर्व भी वे इसी प्रकार अस्वस्थ हो गये थे। वे चाहते थे कि इस अस्थायी उपस्थिति के काल में भी मैं पूर्व की भाँति उनके स्थानापत्र प्राचार्य का कार्य करता रहूँ, पर मैंने इसे स्वीकार नहीं किया।

आज़मगढ़ में ये सात दिन बीते। एक दिन भुजही और धरवारा गया। वहाँ के लोगों से भेंट की। कलकत्ता, बम्बई, रंगून आदि नौकरी-चाकरी या व्यापार करने वाले लोग जब गाँव में आते हैं तो समाचार पा-पाकर लोग उनसे मिलने आते थे। वैसे ही बहुत सारे लोग मुझसे मिल गये। हर कोई यही दो सवाल पूछता था कि कब तक बाहर रहना है और कब तुम छूटोगे? यही सब करते-करते 29 मई आ गयी जिस दिन मुझे नैनी जेल में पहुँच जाना था। यद्यपि मेरे नये पेरोल की दरखास्त संस्तुत होकर लखनऊ चली गयी थी, यदि 2-4 दिन गैर कानूनी ढंग से रुक जाता तो नया पेरोल आ जाता, पर मैंने यही मुनासिब समझा कि जितने दिन की अनुमति थी, उससे एक दिन भी अधिक बाहर रहना ठीक नहीं है।

मैं प्रातःकाल की बस से ही आज़मगढ़ से रवाना हो गया। बस पर छोड़ने घर-पड़ोस के लोगों के अलावा कुछ मित्र भी आ गये थे। जौनपुर भी सूचना चली गयी थी। अतः इन्द्रबहादुर अपने कुछ अध्यापक साथियों के साथ मिलने आ गये थे। लगभग बारह बजे मैं दारागंज पहुँचा और वहीं अपने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मित्र श्री गंगा पाण्डेय एडवोकेट के निवास पर उतर गया। दोपहर का भोजन और विश्राम वहीं हुआ। शाम को उन्हीं के स्कूटर पर घूमने निकला। डॉ. सत्यव्रत सिन्हा के घर गया। उनके परिवार वालों से भेंट की। फिर सिविल लाइन्स गया। वहाँ यूनिवर्सल बुक कंपनी में कुछ पुस्तकें खरीदीं। लोकभारती प्रकाशन में आकर कुछ हिन्दी पुस्तकें लीं।

लौटकर नैनी के लिए रिक्शा किया और कोई छः साढ़े-छः बजे नैनी जेल पहुँच गया। फाटक पर अपने को प्रस्तुत किया और भीतर ले लिया गया। बाक्स की तलाशी हुई। लिखा-पढ़ी हुई और आधे घंटे पश्चात् एक पक्का के साथ मुझे अपने निवास की सर्किल नं. 5 में भेज दिया गया। पिछली बार आया था तो इस फाटक के भीतर आना अच्छा नहीं लग रहा था। यहाँ के कष्टों की संभावनाएँ मन में गूँज रही थीं। आज़मगढ़ जेल तो घर हो गयी थी। वह अब जेल जैसी लगती ही नहीं थी। पर इस नयी जगह पर फिर से घर बसाना था। यहाँ की नयी-नयी बंदिशें भी थीं। आज़मगढ़ से आये चार-छः साथियों को छोड़कर सब नये ही होंगे। अलग-अलग स्वभाव-प्रकृति के होंगे। उसमें मेरा जीवन कैसा बीतेगा। ये सारे प्रश्न मस्तिष्क में टकरा रहे थे। पर इस बार ये सब सवाल नहीं थे। सहज ढंग से लग रहा था कि एक सप्ताह की छुट्टी बिताकर मैं पुनः अपनी बंदिशों से युक्त नौकरी में आ गया हूँ जहाँ खाने-पीने, रहने पहनने, दवा-इलाज की सभी साधारण सुविधाएँ उपलब्ध हैं, पर काम कुछ भी नहीं करना है। अपनी इच्छा और अपने कार्यक्रम के अनुसार चलना है। पिछली बार आया था तो नयी जगह और नये लोगों को देखने-मिलने की उत्सुकता-आशंका थी, इस बार उस पुराने स्थान का सारा चित्र आँखों के सामने था और सवा-सौ लोगों की टोली में कुछ अपने कहे जाने वाले लोगों से मिलने, बात करने और उन्हें बाहर कैसे बीता, यह सुनाने की उत्कंठा थी।

लगभग सात बजे रात में सर्किल नं. 5 के मैदान में दाखिल हुआ। अँधेरा हो गया था। लोग नित्य की भाँति टहल रहे थे। उत्तरी सिरे पर हमारे आज़म-गढ़िए भाइयों की चारपाइयाँ एक पंक्ति में लगी थीं। वहीं रोज शाम को कुछ और लोगों की बैठकी लगती थी। श्रीजनेश्वर मिश्र, डॉ. सत्यव्रत सिन्हा, राम प्रकाश गुप्त, डॉ. मुरली मनोहर जोशी, उदित नारायण शर्मा, रमेशकांत लबानिया और इन्द्रासन सिंह-विक्रमाराय की मण्डली जमी थी। मैं वहाँ दाखिल हो गया। सारी महफिल मेरी ओर उन्मुख हो गयी। मेरी वापसी की खबर सब ओर गूँज गयी। मेरे कई मित्र रामधारी सिंह, राजनाथ सिंह सुमन्तकुमार आदि आ गए। मैं एक घेरे में था। हर चेहरा उत्सुक था, मुझसे कुछ समाचार जानने को। लोगों के छूटने के, आपातकाल के समाप्त होने के सम्बन्ध में जेल में आने वाली खबरों, संसदीय चुनाव की संभावनाओं आदि के सम्बन्ध में भी लोग जानने को उत्सुक थे। पर मैं तो अपने इन अवकाश के सात दिनों में आज़मगढ़ छोड़कर कहीं गया नहीं कि कुछ उड़ती सी भी ख़बर मिलती। साथ ही बाहर आने पर मैंने देखा कि अच्छे-अच्छे लोग मुझसे ही यह सवाल पूछते थे कि आप लोग कब छूटेंगे और यह आपातकाल कब समाप्त होगा? लोगों के इन प्रश्नों का उत्तर मेरे पास कुछ भी नहीं था। नतीजा यह हुआ कि थोड़े ही समय में उत्सुक लोगों की भीड़ छँट गयी। केवल आज़मगढ़ के साथी तथा कुछ और नज़दीकी लोग निजी और घरेलू हाल-चाल पूछते रहे।

मैं अपने तीन नम्बर के बैरक के 15 नंबर के कमरे में पहुँचा। उजड़ी गृहस्थी को फिर से बसाने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का उपक्रम करने लगा। मेरे जाने के बाद बरेली से स्थानान्तरित होकर नैनी आये हुए मौलवी अबुल लैस ने मेरे कमरे में मेरी अनुमति से आश्रय ग्रहण किया था। वे इतने भले और शालीन प्रकृति के हैं कि मेरे आते ही उन्होंने अपना सारा साज-सामान कमरे से हटा लिया। वैसे उनके साथ रहने में मुझे कुछ भी असुविधा नहीं थी। उनका रहना न रहने के ही बराबर था। एकदम शान्त, दिन भर अध्ययन में रत तथा किसी से कुछ ख़ास सरोकार नहीं। ऐसे आदमी के साथ रहने में क्या असुविधा होती। हाँ असुविधा इतनी ज़रूर थी कि वे बुज़ुर्ग थे और हम लोग जेल के जीवन में बच्चे हो गये थे। हमारी बातें, हमारे विनोद और हास्य संभव है उन्हें असुविधाजनक न लगते पर हम तो ज़रूर असुविधा का अनुभव करते। मौलवी साहब जमायते इस्लामी के निरंतर बीसों वर्ष अखिल भारतीय अध्यक्ष रह चुके थे और पं. जवाहरलाल नेहरू के समय में राष्ट्रीय भावनात्मक ऐक्य समिति के सदस्य थे। हम लोग उनकी बड़ी इज़्ज़त करते थे। मैदान में ही जब मेरे आ जाने का समाचार फैल गया तो मौलवी साहब सीधे कमरे में गये और कोई एकाध घण्टे बाद जब मैं कमरे में दाखिल हुआ तो पूरा कमरा पूरी तरह खाली था।

रात में पहुँचने पर कभी-कभी चारपाई और बिस्तर नहीं मिल पाता था और एक रात किसी प्रकार-मित्रों के सहयोग से काटनी पड़ती थी पर मेरे लिए ऐसा नहीं हुआ। हमारी सर्किल में सामानों का स्टोर एक आजीवन कारावास के कैदी श्री मलखान सिंह के जिम्मे था। मलखान सिंह नाटे कद का गँठीला जवान था। खूब गोरा रंग तथा बातचीत के तौर-तरीके से ही भले घर का आदमी लगता था। आवाज़ बड़ी मधुर, पर जब कोई तब से बात करता था तो उसी ताव से वह उसे जवाब भी देता था। अत: सर्किल के कैदियों में उसके बारे में दो राय थी। कुछ लोग यह कहते थे कि वह भला आदमी है पर कुछ दूसरे इस राय के भी थे कि यह बहुत दुष्ट है। कुछ लोगों का विशेष ख्याल करता है, औरों को घास नहीं डालता। जो भी हो, मेरे लिए तो अच्छा ही था। मेरा काम दिलचस्पी से करता था। उस रात उसने मेरे लिए चारपाई-बिस्तर आदि का प्रबन्ध कर दिया था जिससे मुझे कोई असुविधा नहीं हुई। बात यह है कि दिन भर हमारी व्यवस्था में लगे रहने वाले इन कैदियों को सूर्यास्त के पश्चात अपनी बैरक में जाकर बंद हो जाना पड़ता था। अत: देर से आने पर स्टोर से चारपाई बिस्तर आदि नहीं मिल पाता था। पर मेरे आने की तिथि के हिसाब से ही मलखान सिंह चारपाई-बिस्तर निकाल गया था।

— राहुल नगर,
आजमगढ़

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिव बरुआ

कटीले तारों के इस पार

संकट, साहसी अथवा भीरू बनाता है। 'आपातकाल' के तीन महीने बीतने के बाद पुलिस को भी लगा कि उसने कांग्रेस के प्रतिशोध में भागीदार बनकर भूल कर दी। स्थानीय कांग्रेसी इंदिरा गांधी-विरोधियों की सूची तैयार कर पुलिस को थमा देते थे और पुलिस चुन-चुनकर मीसा कानून में जेल भेज देती थी। राजनीति करने वालों के बराबर बुद्धिजीवियों, साहित्यकारों, प्राध्यापकों, पत्रकारों, अभिभाषकों, चिकित्सकों की संख्या थी। पढ़ा-लिखा, सोचने-समझने वाला व्यक्ति प्रत्येक व्यवस्था के लिए खतरा होता है। यहाँ क्षेपक जोड़ता हूँ कि यही वर्ग जब राजनीति की झण्डावरदारी करता है तब 'जन' के नाम पर सत्ता का चाकर बन जाता है।

ग्वालियर जेल में संस्कृत के विद्वान प्रो. सी.बी. केलकर, हिन्दी के प्रोफेसर डॉ. यदुपति सिंह, साहित्यकार श्री जगदीश तोमर तथा साहित्य प्रेमी कामरेड शैलेन्द्र शैली एवं बादल सरोज बन्दी थे। जो लोग संकट से डर गए, वे माफी नामा देकर बाहर जा चुके थे। कुछेक लोग प्रतिबद्धताओं के कारण डटे हुए थे और कुछ मानते थे कि माफी माँगना आत्मा के साथ अपराध होगा।

समय व्यतीत करने के रास्ते खोजे गए। राष्ट्रवादी वर्ग जेल में एक घण्टे का कार्यक्रम करता था। इसमें लोकगीत राष्ट्रीय भाव प्रधान कविताएँ, हास्य-व्यंग्य की रचनाएँ पढ़ी जाने लगीं। ये रचनाएँ अन्य कवियों की थीं, लेकिन साहित्यप्रेमी मीसाबंदियों को कठस्थ थीं। अभिभाषकों एवं प्राध्यापकों ने संविधान संशोधन पर एक माह से अधिक बहस कराई। बाकायदा छाया-संसद बनाई गई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
जिसके अध्यक्ष समाजशास्त्री प्रो. मुनीन्द्र मोहन चतुर्वेदी थे। मीसा बन्दियों के दो पक्ष बने, जो प्रस्तावित संशोधनों पर बहस करते और मतदान द्वारा स्वीकृत-अस्वीकृत करते थे। आप आश्चर्य करेंगे कि जेल में सुझाये / स्वीकृत किये गये संशोधन आपातकाल हटने के बाद संसद ने स्वीकार किये। यद्यपि प्रस्तावक मीसा बन्दी नहीं थे। सांसद हुकुमचन्द कछवाय मिमिकिरी के उस्ताद थे और स्वरूपकिशोर सिंघल के समाचारों ने उनका नाम 'सिंघल रेडियो' ही रख दिया था। जेल में ज्योतिष विज्ञान तथा मराठी सीखने के लिए कक्षाएँ शुरू हो गई थीं। महापति चिकटे ऐसे व्यक्ति थे जो प्रत्येक मीसाबंदी सी चिंता करते और उसका मनोबल बढ़ाते। एक बार मार्क्सवादी मित्र बादल सरोज ने कहा कि यदि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ चिकटे जी जैसे प्रचारक तैयार करता है तो संघ अच्छा संगठन है।

जेल में साक्षरता अभियान चला। मीसा में बंद गाँवों के युवाओं को पढ़ाने का अभियान चला। ये लोग पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने लगे। कठिनाई अंग्रेजी पैदा करती थी। दो साप्ताहिक धर्म युग और इलस्ट्रेड वीकली, कादम्बिनी एवं स्थानीय समाचार पत्र आया करते थे। साक्षर हुए नौजवान 'इलस्ट्रेड वीकली' बोल नहीं पाते थे इसलिए उन्होंने उसका नाम 'अंग्रेजी का धर्मयुग' रख लिया था।

मेरे मन में रामकथा के पात्र 'लक्ष्मण' घुमड़ते रहे। अन्ततः लक्ष्मण पर केन्द्रित 'अनुगामी' उपन्यास का लेखन आरम्भ हुआ। 'अनुगामी' रामकथा के अन्तर्द्वन्द्व पर केन्द्रित उपन्यास है, जिसका बाद में प्रकाशन हुआ। वहीं शिवाजी महाराज के अनन्य प्रिय मित्र एवं सेवक 'मदारी' की खोजबीन शुरू हुई। जब मदारी का चरित्र प्रमाणों सहित उपस्थित हुआ तब 'मदारशाह' नाटक लिखा गया। आपातकाल के बाद आकाशवाणी ने 'मदारशाह' का प्रसारण करने से इंकार किया। अधिकारियों को धर्म-निरपेक्ष और साम्प्रदायिकता जैसे शब्द आतंकित किए थे। मैंने भी आकाशवाणी से कहा कि मदारशाह प्रसारित होगा तो आगे नाटक दूँगा अन्यथा नहीं। डेढ़ साल बाद मदारशाह का प्रसारण किया गया। श्री जगदीश तोमर की कविताएँ साहित्य परिषद (अकादमी) के सहयोग से प्रकाशित हुईं। संग्रह का नाम रखा — 'कांच की दीवार।'

तस्कर हाजी मस्तान और ढोलकिया ग्वालियर जेल लाये गये। उन्हें विशेष सेल में बन्द रखा गया। जेल प्रशासन उनकी सेवा कर गौरवान्वित था। 'सेल' के आगे 'डी' खींच दी गई थी, ताकि जेल के कैदी उनसे दूर होकर जायें। प्रो. मुनीन्द्र मोहन चतुर्वेदी को मालूम हो गया कि शिव बरुआ दोनों तस्करों से बातचीत करने में सफल हो गया है। मैं इन दोनों के तस्कर बनने की पृष्ठभूमि जानना चाहता था। किन्तु उन पर रोज पहुँचना कठिन भी था। चतुर्वेदी जी ने रास्ता सुझाया। इस आधार पर हमने अधीक्षक जेल को पत्र भेजा कि ग्वालियर जेल में दो तस्कर कैद हैं। ये दोनों अशिक्षित हैं। अपराध जगत में प्रवेश करने का एक बड़ा कारण इनका अनपढ़ होना है। यदि ये दोनों शिक्षित होते तो अपराधी नहीं होते। अतएव हम इन दोनों को पढ़ाना चाहते हैं। हमें अनुमति दी जाये। हम एक प्रार्थना पत्र तैयार कर हाजी मस्तान और ढोलकिया के पास पहुँचे। उनके अँगूठे लगवाये। दोनों से कहा कि आप लोग यह प्रार्थना पत्र अधीक्षक को देना। योजनानुसार हमने तथा इन दोनों ने अधीक्षक को पत्र भेज दिये। जेल अधीक्षक व्यास जी थे। उन्होंने मुझे बुलाया और पूछा कि इन दोनों (तस्करों) को मिल नहीं सकता। आप कैसे मिले, बताओ। हमने कहा — कहाँ मिले? हमने सुना है कि जेल में आये हैं। व्यास जी ने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहा — बरुआ, हेडराइटिंग एक ही है। खैर, हमें अनुमति नहीं मिली।

शैलेन्द्र शैली (स्वर्गीय) एवं बादल सरोज ने एक दिन कहा कि हम जेल में अख़बार निकालें। आइडिया जँच गया। दूसरे दिन रिम की लाइनदार शीट्स मगाई और स्केच पेन्स। प्रवेशांक के समय ख़बरों का संकट पैदा हो गया। खबरें कहाँ से लायें। पूर्व मंत्री श्री नरेश जोहरी ने सुझाव दिया कि 'मिलाई' (परिवार के सदस्यों से मिलना) के समय खबरें आती हैं, उन्हें न्यूज बनाओ। चुटकुले शामिल करो। बड़ी तैयारी के साथ प्रवेशांक तैयार हुआ। शैलेन्द्र शैली की राइटिंग अच्छी थी। इसलिए फाइनल हस्तलिखित प्रिन्ट (हम प्रिन्ट ही कहते थे। वही तैयार करते। रंगीन स्केज पृष्ठ को रंगीन बना देते। एक गत्ते का बोर्ड कवाड़ लिया था। उस पेज चस्पा कर बेरक के लोहे के सरियों से बाँधकर लटका देते। मीसा बन्दियों में पढ़ने की होड़ लगती। अब आपातकाल अख़बार की ख़बरों का दायरा बढ़ा। जेल में कैदियों के लिए वे सब्जियाँ आती थीं, जिन्हें सब्जी मण्डी में जानवरों के लिए फेंक दिया जाता होगा। सड़े टमाटर, बेमौसमी सब्जी, कद्दू, बेगन सबसे ज़्यादा आता था और लगातार आता था। सिंघल रेडियो से खबर प्रसारित हुई कि बेगन जानबूझकर खिलाया जा रहा है। बेगन का बीज आदमी को नपुंसक बनाता है। खबर सन्न करने वाली थी। हमने भी अख़बार में जगह दी। हमारे बीच शिव कुमार शुक्ला एडवोकेट थे। बड़े मस्ट और मजाकिया स्वभाव के व्यक्ति। वे पैरोल से लौटे। उन्होंने खबर का खण्डन देहाती भाषा में सार्वजनिक किया। शुक्ला जी बोले — "सिर्री है गए हो। हमतो घर तें आई रहे। घरते (श्रीमती) कह रही कि खटिया काहे को टोरे डात्त हो।" उनके हास्य को भी अख़बार में जगह दी गई।

'अख़बार' जेल प्रशासन के लिए सिरदर्द बनने लगा। हमारे सूत्र (सिपादी-कैंदी) गड़बड़-घोटाला बताने लगे। ये घोटाले (भ्रष्टाचार) खबरें बनने लगीं। मसलन - सब्जियाँ साफ किये बिना कढ़ाई में डाल दी जाती हैं। उसमें नमक डाला जाता है और राशन के मशाले ठेकेदार या भण्डार को वापस भेजकर राशि ले ली जाती है। यह कि कैदियों को साबुन, मंजन, बीड़ी नियमित रूप से नहीं दी जा रही। यह कि पहुँच वाले कैदी महिला बेरक में सामान पहुँचाने की ड्यूटी लगवाने के लिए पैसे देते हैं। यह कि हॉस्पीटल से पेट साफ करने का कार्बोनेट-मिक्चर कॉसंट्रेट अवस्था में दो रुपये प्रति पैक की दर से कैदी खरीदते हैं जो शराब जैसा नशा देता है। साबुन का साइज घटा या कपड़े नहीं बाँटें। यह श्री बाबूलाल शर्मा एडवोकेट की जेल प्रशासन के खिलाफ हाईकोर्ट में याचिका पेश करने से डिप्टी सुपरिटेंड का इंकार। वकील को डिप्टी ने धमकाया। फाँसी कोठा में बन्द करने या दूसरे जिला तबादला करने की धमकी। यह कि 26 जनवरी को मीसा बंदी काले झण्डे फहरायेंगे। यह कि आंधी रात में जेल गूँज उठी। मीसा बन्दियों ने बैरक नम्बर आठ की पहली मंज़िल से आपातकाल विरोधी नारे लगाये। ताकि आसपास की आबादी को लगे कि जेल में मीसा बंदियों के साथ कुछ हुआ है।

जेल प्रशासन के खिलाफ मोर्चा खोला जा चुका था। श्री बाबूलाल शर्मा की याचिका फेंकी जा चुकी थी। हमने शर्मा जी से कहा कि आप अंग्रेजी में एक एप्लीकेशन तैयार कीजिये। इसमें मेरी ओर से, हाईकोर्ट से, आपकी याचिका की कॉपी देने का आग्रह हो। शर्मा जी हँस पड़े। उन्होंने एप्लीकेशन तैयार कर दी। हम इस फिराक में थे कि सुपरिन्टेंडेंट छुट्टी पर कब है। एक दिन मौका मिल गया। हमने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डिप्टी सुपरिन्टेंडेंट को पत्र थमा दिया। जेल से वह पत्र हाईकोर्ट चला गया। कारण - जेल प्रशासन में अंग्रेजी समझने वाले केवल व्यास जी थे। और वे छुट्टी पर थे। इसलिए एप्लीकेशन भेज दी गई। किसी को समझ नहीं आया कि माजरा क्या है? कुछ दिन बाद हाईकोर्ट ने जेल प्रशासन से पूछा कि श्री बाबूलाल शर्मा की याचिका कहाँ है? उसे कब भेजा? अब जेल अधिकारियों के काटे खून नहीं। एक दिन तड़के सुपरिटेन्डेंट मय फौज फटाका के हमारे कैम्पस में आये और सीधे पूर्व मंत्री भी नरेश जौहरी के पास गए। कहने लगे - सर, शिव बरुआ ने हमें संकट में डाल दिया है। डिप्टी सुपरिन्टेंडेंट ने याचिका फेंक दी थी। गलती हो गई। अब हम हाईकोर्ट से कहें कि ऐसी कोई याचिका नहीं दी गई तो कोर्ट श्री बाबूलाल शर्मा और बरुआ को पेश करने को कहेगा। डिप्टी सुपरिन्टेंडेंट का प्रमोशन होने वाला है। सर, वह मर जायेगा। नरेश जी जौहरी ने कहा कि बरुआ हमारा (जनसंघ) कार्यकर्ता नहीं है। इसलिए वह मेरी मानेगा या नहीं, पता नहीं। सुपरिटेंडेंट ने संघ (आर.एस.एस.) के वरिष्ठजनों के आगे गुहार लगाई। जो भी हुआ हो। दादा बेलापुरकर कंधे पर साफी डालकर आये। कहने लगे - क्यों बरुआ? कविताएँ - उपन्यास लिखते-लिखते वकीलों की भाषा कब से लिखने लगे? समय को देखो। अभी ट्रांसफर कर दूसरे जिला में भेज देंगे। सभी को संकट पैदा हो जायेगा। कम से कम चर्चा करना चाहिए कि क्या करें, क्या न करें? तभी श्री महीपत चिकटे आ गए। उन्होंने कहा - दादा, बरुआ को मैंने अनुमति दी थी। रहा सवाल ट्रांसफर का, तो किसे डर पड़ा है। अब दादा चुप? यह सारी कथा हस्तलिखित अखबार में सुर्खी बनी। जेल के सिपाही, मेठ, राउंड ऑफीसर खबरें पढ़ने लगे और प्रशासन तक खबरें पहुँचने लगी। प्रशासन सरेंडर हुआ। एक दिन अधीक्षक, उप अधीक्षक, राउण्ड ऑफीसर आदि सुबह-सुबह हमारी बैरक में आ गए। डिप्टी सुपरिन्टेंडेंट ने श्री बाबूलाल जी से माफी माँगी। खूब रोया। सवाल नौकरी का था। खैर सब पसीज गए और वचन दे दिया गया कि आप कोर्ट को लिख दें कि श्री शर्मा ने कोई याचिका नहीं दी है। रहा सवाल बरुआ का, वह एप्लीकेशन वापस ले लेगा। इस खुशी में डिप्टी जेलर ने अपनी ओर से मीसा बंदियों को दाल-बाटी, गुलाब जामुन की पार्टी दी। उसके कुछ दिन बाद उसका प्रमोशन आर्डर आ गया।

जेल प्रशासन का स्वार्थ पूरा हो गया था। इसलिए अब सख्ती के मूड में आ गया। ठण्ड कंपाने लगी थी, लेकिन गर्म कपड़ों का वितरण नहीं हो रहा था। हस्तलिखित अख़बार में भ्रष्टाचार की खबरें आ रही थीं। जेल प्रशासन ने कहा कि अब यह अख़बार बन्द करो। हम भी अड़ गए। तनातनी बढ़ गई। रात में अख़बार तैयार किया गया। वह भी दो प्रतियों में। सुबह यथास्थान पर चस्पा हुआ। ग्यारह बजे सिपाही घुसे और हमारे विरोध के बीच अख़बार उखाड़ ले गए। कुछ सिपाही बेरकों में तलाशी लेने लगे। काग़ज़-पेन जब्त। शैलेन्द्र को इसकी भनक लग गई। वह दौड़ा और अख़बार के लिए रखे काग़ज़-स्केच आदि को तौलिया में लपेटकर देशी पाखानों के कोने में छिपा आये। तलाशी के बाद सिपाही चले गये तब अख़बार की दूसरी प्रति चस्पा कर दी। कुछ देर बाद जेलर फौज फटाका के साथ आया और सबको हड़का कर अख़बार के टुकड़े-टुकड़े बिखेर गया।

अख़बार है तो विज्ञापन होना चाहिए। विज्ञापन में होली पर हास्य रस का एक विज्ञापन बनाया गया। जेल में श्री नाथूलाल चौरसिया 'काका' बहुत मस्त स्वभाव के व्यक्ति थे। उन्होंने भिण्ड जिला के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गाँव के दो युवकों को अपना पुत्र घोषित कर दिया था। युवक अविवाहित थे। अतः विज्ञापन बने - आवश्यकता है दो बंधुओं की। काका चौरसिया के दो पुत्रों के लिए गृहकार्य में दक्ष दो वधुओं की आवश्यकता है। उम्र 18 साल ज़रूरी। नौ-नौ साल की दो-दो चलेंगी। प्राथमिकता-माता जी को साथ लाने वाली को प्राथमिकता दी जायेगी। सम्पर्क करें - चौरसिया, बैरक नं. 8, मीसाबंदी केम्पस, सेन्ट्रल जेल ग्वालियर। विज्ञापन पढ़कर काका से पूछा जाता - काका प्राथमिकता का मतलब क्या है? काका भी कहते - भैया बेटों के घर बस गए तो हम अकेले रह जायेंगे। कुछ इन्तज़ाम करना पड़ेगा। लोग पूछते - काका, दो माताजी आ गई तों? काका कहते - राजा दशरथ के तीन रानियाँ थी कि नहीं? बेकार की बात पूछते हो।

जेल में हास्य के बहाने ढूँढ़ लिये जाते थे। श्री जगदीश तोमर 'आचार्य जी' घोषित हो गए थे। इन्हें शवासन प्रिय था। गोपाल दण्डोतिया और हरिहर शर्मा जब विनोद में आते तो आचार्य जी के पास पहुँचते। कहते - आचार्य जी ऐसा अनुभव हो रहा है कि कविता जन्म ले रही है। तोमर जी हँस देते। फिर लोग घेरते - कविता सुनाओ - आचार्य जी। तोमर जी कविता सुना देते। तब कोई पूछता - आपकी ही है या पुराने धर्मयुग से मार ली।

जेल से पत्र व्यवहार दो तरह से होता था। एक तरीका था कि डाक राउंड ऑफीसर को दे दी जाये। वह सेंसर होकर जाती थी। दूसरा तरीका था कि जेल के बाहर जाने वाले किसी व्यक्ति को दे दी जाये। ऐसे पत्र व्यवहार में 'प्रति' सुरक्षित रहता था। सेंसर के अपने खतरे थे। मेरे जन्मदाता पिता श्री अशर्फीलाल बरुआ पं. नेहरू के प्रशंसक तथा कांग्रेस थे। वे नेहरू स्टाइल में अचकन-पाजामा पहन कोर्ट जाते थे। आप एडवोकेट थे। श्री नरसिंहराव दीक्षित (पूर्व गृहमंत्री) के कहने पर पिताश्री का पत्र आया। माफीनामा भेज दो, ताकि जेल से बाहर करा सकें। उन दिनों श्री माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं का असर था शहीद भगत सिंह के प्रसंग रटे पड़े थे। हमने पिताश्री को अन्य तरीका से पत्र भेजा कि मेरा अपराध क्या है जो गिरफ्तार किया गया? देश गुलाम है। जेल में वे लोग बन्द हैं जो स्वतंत्रता के लिए मरना पसंद करेंगे। हम जानते हैं कि इंदिरा गांधी हमें साइबेरिया भेजना चाहती हैं, ताकि यातनाएँ दे-देकर मार दिया जाये। हम लोग इसके लिए तैयार हैं। मैं ऐसा काम नहीं कर सकता जो मेरी आत्मा स्वीकार नहीं करती है। यदि मैं माफी माँगकर बाहर आ गया तो समाज को कौन-सा मुँह दिखाऊँगा? किसी से नज़र कैसे मिलाऊँगा - जब वह पूछेगा कि माफी माँगकर आये हो। आप कांग्रेस में आस्थावान हैं। यही कांग्रेस आज़ादी के लिए लड़ी। न जाने कितनों का बलिदान हो गया। आज़ादी के लिए 23 साल का भगत सिंह शहीद हो गया। संयोग से मेरी उम्र भी 23 रनिंग है। क्या भगत सिंह को माफी माँगकर जान बचाना चाहिए थी? यदि नहीं तो मैं माफी किस बात की माँगूँ। आज़ादी के लिए लड़ने वाली कांग्रेस एक महिला की दास बन गई है। देवकांत बरुआ जैसे भाट मौजूद हैं। इसलिए कांग्रेस देश को गुलाम बना रही है। मैं आपसे माफी चाहता हूँ कि मैं माफी नहीं माँग सकता। चाहे जेल में सड़ जायें या मार दिये जायें।

मेरे पिताश्री ने मेरे पत्र को बिन्दुवार (अदालत में जैसे जवाब दावा पेश होता है) जवाब डाक से भेजा। पत्र सेंसर हुआ और मीसाबंदी शिव बरुआ की फाइल में जोड़ दिया गया। क्योंकि मैं कट्टर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
व्यक्ति हूँ। इसका परिणाम यह हुआ कि सब लोग 19 माह में रिहा हो गए। हम 17 लोग लोकसभा चुनाव में इंदिरा गांधी की हार होने के बाद 19 मार्च 1977 को 21 माह की जेल काटकर आधी रात में रिहा किये गये।

जेल में राष्ट्रीय भावना वाले गीतों कविताओं को सुनाने वाले बहुत थे। बुन्देली लोकगीतों को सुनाने वालों ने होली पर जश्न का माहौल बना दिया था। एक मीसा बंदी फिल्म का गीत सुनाते - ए मेरे प्यारे वतन, ए मेरे बिछुड़े चमन, तुझ पे दिल कुर्बान। वह जब गाता तो गीत का संदर्भ गायब हो जाता। ऐसा लगता कि सचमुच हम लोग वतन से बिछुड़े हुए।

मैं एक गीत सुनाया करता -
पंथ पर तूफ़ान ने है, सिर उठाया
गीत मेरे मीत बनकर के चलो तुम।
मैं नहीं हारा कभी भी ज़िन्दगी से
आज तक का है यही इतिहास मेरा।।
विघ्न कितने ही पड़े आकर डगर में
किन्तु गति में ही रहा विश्वास मेरा।।
लक्ष्य मेरा घोर तमसा ने छिपाया
गीत मेरे मीत बनकर के चलो तुम।।

देवपुत्र के सम्पादक श्री विश्वनाथ मित्तल और कर्मचारी नेता तथा साहित्य लेखन में सक्रिय श्री दिवाकर वर्मा मीसा में बंद थे। मित्तल जी को षड्यंत्रपूर्वक गिरफ्तार कराया गया था। उनकी नौकरी गई, बंगला खाली करा लिया, जेल के द्वार तक बेटे को छोड़ने आ रही माँ स्कूटर के उछलने से सड़क पर गिरी और उनकी मृत्यु हो गई। बाहर, श्रीमती मित्तल छोटे बच्चों के साथ अकेली संघर्ष कर रही थी। मित्तल जी, बाल साहित्य लिख रहे थे, जबकि श्री दिवाकर वर्मा देशभक्ति तथा श्रम की स्थापना की कविताएँ लिख रहे थे।

ग्वालियर में श्री शैवाल सत्यार्थी की 'टाई' पहचान बन चुकी थी। ज्येष्ठ मास में नौतपा ही क्यों न हो? शैवाल जी टाई पहनकर साइकल पर सवार होकर प्रेस जाते मिलते थे। उनसे पत्र व्यवहार होता था। मैंने एक पत्र में कविता भेजी —

मित्र,
कटीले तारों के इस पार मैं
उस पार तुम हो,
मैं सोचता हूँ कि आप आज़ाद हैं
और आपकी दृष्टि में, मैं
दोनों ओर दहशत है
इधर, पता नहीं, कब क्या हो जाये,
उधर, पता नहीं, कब आपको धर लिया जाये,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहर से बचना है
फिर पलट वार करना है
लड़ना है, सिर्फ़ लड़ना है
युद्ध है, हारें या जीतें
माफी नहीं माँगेंगे
हौसला रखो, मित्र
काटें तोड़ेंगे
दूसरी आज़ादी छीनेंगे
तब तक
काटों के उस पार से तुम
इस पार से मैं
हाथ-हिलाकर 'हलो' कहें
आँखों ही आँखों में
जय के स्वप्न भरें।

— सेन्ट्रल साइकिल, सराफा,
लश्कर, ग्वालियर

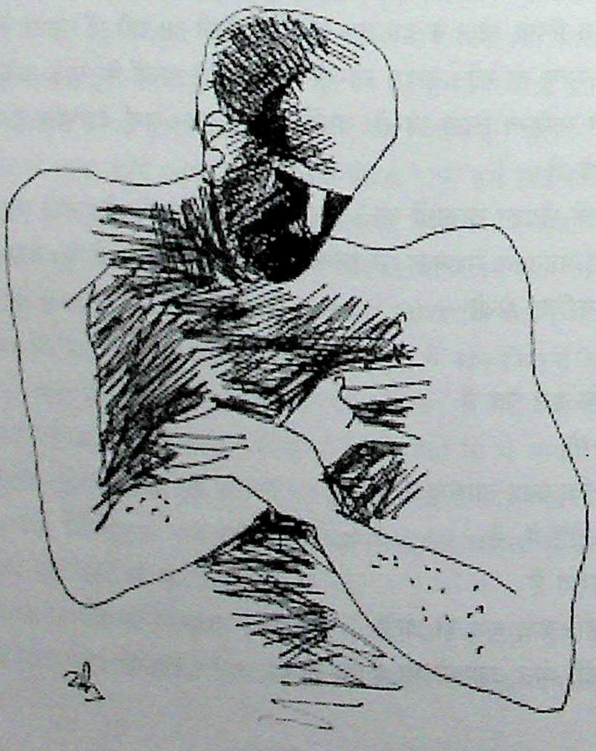

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जगन सिंह

इमरजेंसी का दंश और केदारनाथ साहनी

भारत में इमरजेंसी 25 जून, 1975 को कांग्रेस के शासनकाल में लगी थी और उसे लगाने वाली थी उस समय की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी। सन् 1971 के आम चुनावों में कांग्रेस भारी बहुमत से जीती थी। उस समय श्रीमती गांधी पर आरोप लगा था कि उन्होंने असंवैधानिक तरीके अपनाकर रायबरेली सीट से लोकसभा का चुनाव जीता था। इसी आरोप के आधार पर राजनारायण ने उनके विरुद्ध इलाहाबाद उच्च न्यायालय में याचिका दायर की थी। मुकद्दमा चला था और माननीय उच्च न्यायालय ने इन्दिरा गांधी पर लगाये गये चुनावी भ्रष्टाचार के आरोपों को सही ठहराते हुए रायबरेली से उनके चुनाव को रद्द कर दिया था और उन्हें आगामी छः साल तक चुनावों में भाग न लेने की सज़ा सुनाई थी। इन्दिरा गांधी के पास अब पद से त्यागपत्र देने के अलावा कोई चारा न था परन्तु वे सत्ता छोड़ना नहीं चाहती थीं इसलिये उन्होंने देश में आंतरिक अशान्ति का बहाना बनाकर 25 जून, 1975 को रात के बारह बजे अचानक देश में इमर्जेंसी की घोषणा कर दी। उन्होंने संविधान को अपने हाथ में ले लिया और जनता के मौलिक अधिकारों को समाप्त करके रातों-रात अपने विरोधियों को पकड़कर जेलों में ठूँस दिया। इमरजेंसी उन्नीस महीनों तक लागू रही। इस दौरान विपक्ष के 19332 व्यक्ति मीसा के अन्तर्गत देश की विभिन्न जेलों में बंद रहे। सरकारी दमनचक्र इन्दिरा गांधी के राजनीतिक विरोधियों तक सीमित नहीं रहा। हज़ारों निरपराध लोगों को भी, मनघड़ंत आरोप लगाकर, विभिन्न अवधियों के लिये जेलों में बंद रखा गया। कहा जाता है कि इमरजेंसी के दौरान, एक समय में, एक लाख व्यक्ति देश की जेलों में बंद थे। इनमें नेता, राजनीतिक दलों के कार्यकर्ता, व्यापारी, सरकारी और निजी संस्थानों के अधिकारी, समाजसेवी, वकील, लेखक, पत्रकार, विश्वविद्यालयों के प्रोफ़ेसर, छात्रनेता, छात्र, स्कूलों के प्रिंसिपल और अध्यापकगण और कुछ अन्य व्यक्ति

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भी थे। उस समय साम्यवादी पार्टी और उससे जुड़े हुए लोग जेलों से बाहर रहे क्योंकि उन्होंने इमरजेंसी से पहले और बाद में भी इन्दिरा गांधी को पूर्ण समर्थन दिया। सत्ता के साथ जुड़े रहने का उनका इतिहास बहुत पुराना है।

25 जून, 1975 की रात में दिल्ली में बड़े पैमाने पर गिरफ़्तारियाँ हुईं। गिरफ़्तार होने वालों में सर्वाधिक संख्या जनसंघ और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सदस्यों की थी। पुलिस ने रातों-रात घरों पर छापे मारकर लोगों को सोते से जगाया और लाकर विभिन्न थानों में बैठा दिया। अगले दिन सबको अदालत में पेश किया और मनघड़ंत आरोप लगाकर तिहाड़ जेल में ठूँस दिया। जनसंघ के बड़े नेताओं समेत बहुत से लोग पकड़े गये। शेष को पार्टी की ओर से भूमिगत रहकर काम करने का आदेश मिला। आदेश पाते ही वे अपने घर परिवार को छोड़कर अज्ञात स्थानों पर चले गये और तब लौटे जब इमरजेंसी समाप्त हो गई थी। इन भूमिगत हो जाने वाले राजनेताओं में केदारनाथ साहनी भी थे। इन भूमिगत नेताओं के जिम्मे दो तरह के काम थे। एक यह कि देश की जनता को इमरजेंसी के विरुद्ध जगाये रखना और सरकार की कारगुज़ारियों की सूचना उस तक पहुँचाना। दूसरा था — उन परिवारों की देखभाल जिनके कमाने वालों को पुलिस ने जेलों में बंद कर रखा था। यह कठिन काम था, जिसे करने के लिये केदारनाथ साहनी को पुलिस की निगाह से बचकर धनसंचय करके ज़रूरतमंद परिवारों तक पहुँचाने की व्यवस्था करनी थी। उनकी हारी-बीमारी में सहायता पहुँचाने का काम करना था। इसके लिये उन्हें लगातार भ्रमण पर रहना पड़ा और पुलिस से बचने के लिये लगातार ठिकाने बदलने पड़े। इससे भी कठिन था पत्नी, श्रीमती विमला साहनी को, अकेले पुलिस के दमनचक्र का सामना करते हुए देखना। दुर्घटना और बीमारी की सूचना पाकर भी घर न आने का फ़ैसला करना। केदारनाथ साहनी अंत तक इस फ़ैसले पर अडिग रहे। कभी दिल्ली आये भी तो घर आना तो दूर, ईस्ट पटेल नगर (जहाँ वे उन दिनों रहते थे) के आसपास भी नहीं फटके। विमला जी ने, उनकी अनुपस्थिति में, न केवल घर और बच्चों को संभाला बल्कि उनके काम में भी हरसंभव सहायता देकर विलक्षण जीवट का परिचय दिया।

जिस दिन इमरजेंसी लगी, उस दिन विमला जी की भाँजी का विवाह था। विवाह में शामिल होने के लिये साहनी जी सपरिवार जंगपुरा आये हुए थे। रात को डेढ़ बजे लड़की की विदाई हुई। परिवार के लोग घर को व्यवस्थित कर ही रहे थे कि 'मदरलैंड' के दफ़्तर से ड्राइवर बैनर्जी घबराया हुआ आया। उन दिनों श्री केदारनाथ साहनी भारत प्रकाशन के जनरल मैनेजर थे। भारत प्रकाशन से 'मदरलैंड' और 'आर्गेनाइज़र' निकला करते थे। भारत प्रकाशन का दफ़्तर करोल बाग़ में रानी झाँसी रोड पर था। बैनर्जी ने सूचना दी कि पुलिस ने भारत प्रकाशन का दफ़्तर सील कर दिया है। बिजली और टेलीफ़ोन के कनेक्शन भी काट दिये हैं। इस अचानक हुए घटनाक्रम से साहनी जी का माथा ठनका। उनके निजी सहायक मानसिंह नेगी उस समय भी उनके साथ थे। उन्होंने मान सिंह नेगी को अपने घर का जायज़ा लेने के लिये ईस्ट पटेल नगर भेजा। विमला जी की बहिन के घर में मौजूद लोगों को इस बात का पता चला तो सब एक कमरे में इकट्ठे हो गये। कोई कुछ बोल नहीं रहा था परन्तु सबके चेहरे पर तनाव साफ़ झलक रहा था।

लगभग आधे घंटे के बाद मानसिंह नेगी ईस्ट पटेल नगर में साहनी जी के घर के सामने पहुँचे तो वहाँ भारी संख्या में पुलिस बल तैनात था। मानसिंह नेगी को देखकर पुलिस सतर्क हुई। पुलिस अधिकारी ने रूखे स्वर में उनका नाम और पता पूछने के बाद कहा —''मिस्टर केदारनाथ साहनी से आपका क्या सम्बन्ध है?''

''जी, मैं उनका पी.ए. हूँ।''

''तब तो आपको पता होगा कि वे कहाँ हैं?''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''वे पंजाब गये हैं।''

''पंजाब में किस जगह?''

''यह तो मुझे नहीं मालूम।''

''आपने पूछा नहीं?''

''मैं कैसे पूछ सकता था!''

पुलिस अधिकारी उन्हें घूरकर चुप हो रहा। मानसिंह नेगी वहाँ से चल दिये। मोबाइल फोन तब थे नहीं, इसलिये ढूँढ-ढाँढ कर कहीं से फ़ोन किया। साहनी जी को सविस्तार सारी बात बताई और कहा कि पुलिस उन्हें गिरफ़्तार करने के लिये घर के बाहर बैठी है।

यह समाचार पाकर विमला जी एक पल के लिये हत्प्रभ हुईं परन्तु तुरन्त अपने को संभाल लिया। केदारनाथ साहनी ने पार्टी ऑफ़िस फ़ोन किया। भारतीय जनसंघ का दफ़्तर उन दिनों अजमेरी गेट में था। दो बार लाइनें व्यस्त मिलीं। साहनी जी का माथा ठनका, 'रात के तीन बजे टेलीफ़ोन की लाइनें व्यस्त हैं, ज़रूर कुछ हुआ है!'

अचानक नम्बर मिल गया। पार्टी ऑफिस से उन्हें बताया गया कि अटल जी और आडवाणी जी गिरफ़्तार हो गये हैं। उनके लिये आदेश है कि तुरन्त भूमिगत हो जायें और अगले आदेश की प्रतीक्षा करें। इसे लिये सम्पर्क बनाये रखें।

साहनी जी थोड़ी देर तक कुछ सोचते रहे। फिर जल्दी जल्दी ज़रूरत का सामान सहेजा और बिना किसी को कुछ बताये घर से कहीं चले गये। विमला जी ने पूछा भी परन्तु उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। वे उन्हें जाते हुए देखती रहीं। उस समय सुबह के चार बजे थे।

सवेर हुई। समाचार पत्र आया। इमरजेंसी की ख़बर शहसुर्खियों में थी। रिश्तेदारों के फ़ोन आने लगे। विमलाजी ने सबको एक-सा उत्तर दिया — साहनी जी पंजाब गये हैं। बाक़ी सब ठीक है। नौ बजे बच्चों को साथ लेकर वे ईस्ट पटेल नगर आ जायेंगी। तब विस्तार से बातें होंगी।

नौ बजे वे अपने घर के सामने गाड़ी से उतरीं। पुलिस ने रास्ता दे दिया। मानसिंह नेगी ने विमला जी से चाबी लेकर घर का ताला खोला। विमला जी और दोनों बेटे घर के अंदर चले गये। ड्राइवर गाड़ी से सूटकेस निकालकर कमरे में लाया।

ड्राइंगरूम के खुले दरवाज़े पर दस्तक हुई। मानसिंह नेगी वहीं थे। उन्होंने निगाह उठाई। पुलिस अधिकारी ने कहा, ''मैडम से कहिये, कुछ सवाल पूछने हैं।''

नेगी महसूस कर रहे थे कि विमला जी रात भर की जगी हुई हैं। उन्हें आराम की ज़रूरत है। वे पुलिस अधिकारी से थोड़ी देर बाद आने के लिये कहना ही चाहते थे कि विमला जी साथ वाले कमरे से चली आईं। बेरुख़ी से बोलीं, ''जो कुछ पूछना है जल्दी पूछिये और हमें चैन से बैठने दीजिये।''

''आप मुझे बतायेंगी कि मिस्टर केदारनाथ साहनी इस वक़्त कहाँ हैं?''

''वे पंजाब गये हैं।''

''किस शहर में?''

''मतलब?''

''पंजाब के किसी शहर या गाँव में तो गये होंगे?''

''शहर का नाम तो मुझे नहीं मालूम। पार्टी के काम से उन्हें जगह जगह जाना पड़ता है। मैं हर जगह का ब्यौरा थोड़े न उनसे पूछती हूँ। मुझे सिर्फ़ इतना पता है कि वे पार्टी के काम से पंजाब गये हैं और जल्दी ही लौट आयेंगे।''

''उसकी चिन्ता आप मत करो। आने का पता पुलिस खुद लगा लेगी।'' उसने कहा और चला

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गया।

विमला जी ने चैन की साँस ली। दोपहर का खाना खाने के बाद यों ही पिछला दरवाज़ा खोलकर गली में झाँका। दो सिपाही गली में खड़े थे। उन्हें बड़ी वितृष्णा हुई। उनकी स्थिति ऐसी हो गई थी जैसे अपने ही घर में क़ैद हों!

अगले दिन दूसरा पुलिस अधिकारी आया। पूछा —''मिस्टर साहनी की कोई ख़बर मिली?''

''ख़बर तो उनकी मिलती है जो रास्ता भूल जाते हैं। साहनी जी पार्टी के काम से पंजाब गये हैं। काम पूरा होने के बाद लौट आयेंगे।'' विमला जी ने उत्तर दिया।

वह थोड़ी देर चुप रहा फिर विनम्रता ओढ़कर बोला — ''देखिये, मेरा आपसे कोई ज़ाती बैर नहीं है। पुलिस की नौकरी ही ऐसी है कि हमें हर तरह की पूछताछ करनी पड़ती है। पुलिस को सूचना मिली है कि मिस्टर केदारनाथ साहनी देश छोड़कर चले गये हैं।''

''यह ख़बर गलत है।''

''आप उनका पासपोर्ट दिखा सकती हैं?''

मानसिंह नेगी पास ही खड़े थे। बोले, ''सर का पासपोर्ट तो मैंने दफ़्तर में देखा था।''

पुलिस अधिकारी ने झिड़क दिया, ''मैंने आपसे नहीं, मैडम से पूछा है।''

विमला जी ने कहा, ''ये ठीक कह रहे हैं। साहनी जी अपना पासपोर्ट और सारी ज़रूरी फ़ाइलें दफ़्तर में ही रखते थे। दफ़्तर आप लोगों ने सील कर रखा है।''

पुलिस अफ़सर निरुत्तर हो गया। जाने के लिये उठा ही था कि विमला जी के देवर कंवल नैन साहनी आ गये। वह उनसे पूछताछ करने लगा, ''आपका नाम? ...मिस्टर केदारनाथ साहनी से आपका क्या सम्बन्ध है? ... कहाँ रहते हैं आप? ... क्या काम करते हैं? ...टेलीफ़ोन नम्बर बतायें... घर का... दफ़्तर का... वग़ैरह।''

इससे बाद यह रोज़ का क्रम हो गया। जो भी मिलने आता उससे आधा दर्जन सवाल पूछे जाते। हर जवाब को काग़ज़ पर लिखा जाता। धीरे-धीरे हालत यह हो गई कि कोई राह चलता उनके घर की ओर देख भी लेता तो पुलिस उसे रोक कर तरह तरह के सवाल पूछकर डराती थी। धीरे धीरे मित्रों, रिश्तेदारों और पड़ोसियों ने आना कम कर दिया। सब डरते थे कि पुलिस कहीं उन्हें गिरफ़्तार करके जेल में न डाल दे। पड़ोसियों में अगर किसी ने दिलेरी दिखाई तो वे चंद्रप्रकाश पाहवा थे। चंद्रप्रकाश पाहवा लगातार उनके सम्पर्क में रहे। वे घर आते जाते रहे। उन दिनों लड़कों के स्कूल में छुट्टियाँ थीं, इसलिये दोनों घर पर ही रहते थे। बड़ा बेटा प्रदीप नौवीं जमात में था और छोटा संदीप सातवीं में।

दिन बीतते रहे। बच्चों के स्कूल खुल गये। साहनी जी का कुशल समाचार मिलता रहा। वे कहाँ रह रहे हैं? कैसे हैं? अगला प्रोग्राम क्या है — इसका पता चलता रहा। उन्होंने अपना नाम बदल कर डॉक्टर कपूर रख लिया था। विमला जी को संदेश देने के लिये वे अपने किसी मित्र के घर फ़ोन करते। मित्र किसी अन्य मित्र को फ़ोन करता। वहाँ से विमला जी को फ़ोन पर सारी सूचनाएँ दी जाती थीं। पुलिस चौबीस घंटे उनके घर का पहरा देती थी। कई बार आधी रात में दरवाज़ा खड़का कर पूछते थे, ''मिस्टर केदारनाथ साहनी अन्दर हैं?'' एक बार रात के साढ़े बारह बजे कहा गया, ''दरवाज़ा खोलिये। हम अन्दर आकर देखेंगे कि मिस्टर साहनी हैं या नहीं।''

विमला जी ने साफ़ मना कर दिया —''दरवाज़ा सुबह खुलेगा। साहनी जी नहीं आये हैं और अगर आयेंगे तो सवेरे तक चले नहीं जायेंगे। सवेरे देख लीजियेगा।''

घर में बाज़ार से सामान आता तो पुलिस उसकी तलाशी लेती कि शायद उसमें कहीं कोई सुराग़ हो, कागज़ का कोई पुर्जा जो उन्हें केदारनाथ साहनी तक पहुँचा दे। धोबी कपड़े लेकर आता तो एक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
एक कपड़ा उठाकर देखते कि कहीं बंडल में उनके कपड़े तो नहीं हैं।

इसी बीच एक दिन विमला जी को फ़ोन से संदेश मिला कि वे फलाँ दिन, फलाँ पते पर, फलाँ समय अकेली आकर डॉक्टर कपूर से मिल सकती हैं। विमला जी बड़ी प्रसन्न हुईं। वह दिन आया। विमला जी ने चतुराई से काम लेते हुए सीधे वहाँ न जाने का निश्चय किया। घर को मानसिंह नेगी की सरपरस्ती में छोड़कर बच्चों के साथ शाम के छ: बजे कार से निकलीं और सीधी अपनी माँ के घर जंगपुरा पहुँची। नानी प्रदीप और संदीप से मिलकर निहाल हो गईं। बेटी का सुख-दुख पूछा। साढ़े सात बजे विमला जी एक ज़रूरी काम का बहाना बनाकर वहाँ से निकलीं। ड्राईवर मदनलाल भरोसेमंद और होशियार था। बताये हुए पते पर आधे घंटे में पहुँचा दिया। गृहस्वामी जैसे प्रतीक्षा ही कर रहे थे। मदनलाल ने उस घर का फाटक खोला। विमला जी ने लान पार करके बरामदे में कदम रखा ही था कि गृहस्वामी लपकते हुए आये और एक पुर्जा उन्हें थमा कर आहिस्ता से बोले, ''इस पते पर मिलेंगे। समय कम है। जल्दी से निकल जाइये।''

अगले पते पर साहनी जी मिल गये। उनके मित्र विमला जी को ड्राइंगरूम में बैठाकर अन्दर चले गये। साथ वाले कमरे से साहनी जी निकल कर आये तो वे देखती रह गईं। उनके ऊँचे, लम्बे शरीर पर देसी लिबास की जगह पैंट और शर्ट भव्य लग रही थी। उन्होंने मूँछें रख ली थीं और अब वे केदारनाथ साहनी कम डॉक्टर कपूर अधिक लग रहे थे।

पन्द्रह, बीस मिनट की मुलाक़ात में साहनी जी ने सुखदुख की बातें कम कीं, हिदायतें ज़्यादा दीं। अंत में यह कि घबराना नहीं। थोड़े दिनों की बात है। इमरजैंसी ख़त्म होते ही मैं घर आ जाऊँगा। चलते समय वे विमला जी को बाहर तक छोड़ने नहीं आये। कहीं किसी को डॉक्टर कपूर पर केदारनाथ साहनी होने का शक न हो जाये।

अगस्त का अन्तिम सप्ताह चल रहा था। एक उमस भरी शाम को पुलिस की कई गाड़ियाँ एक के बाद एक आकर घर के बाहर खड़ी हो गईं। पड़ोसी घबराकर घरों से बाहर निकल आये पर किसी को आगे बढ़कर कुछ पूछने की हिम्मत नहीं हुई। पुलिस ने विमला जी से कहा कि 'हमें आपके घर का सारा सामान सील करने का आदेश मिला है', तो वे सन्न रह गईं। पुलिस ने उनका सामान उठाकर बैठक में रखना शुरू किया। घर का सारा फर्नीचर, पलंग, बिस्तरे, फ्रिज, बर्तन, गैस का चूल्हा, सिलेंडर, आटा, दाल, चावल, चीनी, यहाँ तक कि टेलीफ़ोन भी एक के ऊपर एक रखकर कमरे को ताला लगाकर सील कर दिया। सिर्फ़ दो सूटकेस छोड़ दिये। इनमें विमला जी के और बच्चों के गिनती के कपड़े थे।

पुलिस जिस समय सामान कमरे में इकट्ठा कर रही थी, विमला जी के पड़ोसी चंद्रप्रकाश पाहवा आकर खड़े हो गये। पुलिस ने उन्हें बतौर गवाह काग़ज़ों पर दस्तख़त करने के लिये कहा तो वे तनिक भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने सारे काग़ज़ों पर दस्तख़त कर दिये। जब पुलिस ताला लगाकर सील कर रही थी, संयोगवश साहनी जी के छोटे भाई कंवल नैन साहनी मिलने आ गये। पुलिस की ज़्यादती देखकर उन्हें बड़ा गुस्सा आया पर कर ही क्या सकते थे। ख़ून का घूँट पीकर रह गये। जाते समय पुलिस विमला जी के ड्राइवर मदनलाल को पकड़ ले गई। तीन दिन तक उससे पूछताछ करने के बाद कुछ भी हाथ न लगा तो चौथे दिन उसे छोड़ दिया।

उस रात विमला जी बरामदे में पड़े हुए पुराने तख़त पर बिना बिस्तर के सोईं। मानसिंह नेगी और दोनों बच्चे अलग-अलग कमरों में फर्श पर चटाइयाँ बिछाकर, बिना तकिया लगाये सोये। यही ग़नीमत थी कि पुलिस ने बिजली नहीं काटी थी वर्ना उस गर्मी में क्या हाल होता।

अगले दिन विमला जी की माँ ने बिस्तरे, पलंग, गैस का चूल्हा और सिलिंडर, बर्तन और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खाने-पीने का सामान भेजा। विमला जी ने अस्त-व्यस्त घर को नये सिरे से सहेजा और ज़िन्दगी की रफ़्तार फिर सामान्य हो गई। इसके कुछ दिन बाद विमला जी ने तीस हज़ारी कोर्ट में मुकद्दमा दर्ज करवाया कि उनका जो सामान सील किया गया है, वह स्त्रीधन है, इसलिये उसे सील करना कानून के विरुद्ध है। मुकद्दमा आठ नौ महीने चला। उन्होंने मुस्तैदी से मुकद्दमें की पैरवी की। अंत में माननीय अदालत ने उनके हक़ में फैसला दिया। अदालत के आदेश से पुलिस को सील तोड़कर सामान बाहर निकालना पड़ा। यह उनकी पहली और महत्त्वपूर्ण जीत थी।

जिन परिवारों के धन कमाने वाले सारे सदस्यों को सरकार ने जेलों में बंद कर रखा था, उनकी आर्थिक हालत बड़ी दयनीय थी। वे भूख का सामना कर रहे थे। साहनी जी उनके लिये फंड इकट्ठा करके भेजने की व्यवस्था लगातार करते थे। उन्हें बम्बई, मद्रास और कलकत्ता प्रायः जाना पड़ता था। पुलिस से बचने के लिये वे हवाई यात्रा करते थे। दिल्ली के आसपास की यात्रा कार से करते थे। आवश्यकता पड़ने पर वे अपने उन मित्रों के घरों में ठहरते थे जिनका राजनीति से दूर का भी वास्ता नहीं था। आमतौर पर वे दिल्ली नहीं आते थे। कभी-कभार थोड़े समय के लिये आते थे, तो ईस्ट पटेल नगर (जहाँ उनका घर था) के आसपास भी नहीं फटकते थे। एक दो बार वे रेल से आये तो फ़रीदाबाद और गाज़ियाबाद तक आये-गये। हवाई उड़ान वे जयपुर अथवा ग्वालियर हवाई अड्डे से लेते थे। वहाँ से उन्हें दिल्ली लाने-ले जाने का काम विमला जी कार से करती थीं। बच्चों समेत शाम के समय घर से रवाना होतीं और अपनी माँ अथवा किसी अन्य सगे सम्बन्धी के घर चली जातीं। बच्चों को वहाँ छोड़तीं और रातों-रात कार से जयपुर अथवा ग्वालियर, जहाँ भी तय होता, पहुँचतीं। वहाँ से साहनी जी को साथ लेकर फिर रात में चलतीं और दिल्ली पहुँचतीं। कभी दिन के समय वहाँ से चलना पड़ता तो चाय-नाश्ता, भोजन वग़ैरह रास्ते में पड़ने वाले ढाबों में करते। जहाँ दोपहर का खाना खाते, वहीं, अथवा आगे कहीं, रुककर रात होने की प्रतीक्षा करते। दिल्ली पहुँचकर विमला जी उन्हें उस घर में छोड़तीं जहाँ उन्हें ठहरना होता था। इसके बाद वे बच्चों के पास लौट आतीं। अगली सुबह बच्चों के साथ अपने घर ईस्ट पटेल नगर लौटतीं। यही प्रक्रिया वे तब भी दोहराती थी जब साहनी जी को दिल्ली से बाहर जाना होता था।

एक बार उनका बड़ा बेटा प्रदीप कई दिनों से तेज़ बुख़ार में पड़ा था और लगातार अपने पिता को याद कर रहा था। केदारनाथ साहनी उन दिनों फ़रीदाबाद में थे। विमला जी को उन्हें दिल्ली लाना था। वे बीमार लड़के को पड़ोसन के सहारे छोड़कर फ़रीदाबाद पहुँचीं। साहनी जी को प्रदीप की बीमारी से अवगत कराया। दिल्ली में उनके मित्र के यहाँ छोड़ने से पहले कहा कि सिर्फ़ दो मिनट के लिये घर चलकर बच्चे को देख लें पर वे नहीं माने। एक ही बात कही, ''मैं यह नहीं कहलाना चाहता कि साहनी घर गये थे इसलिये अरेस्ट हो गये।''

एक बार विमला जी अपने देवर के पीछे दुपहिया वाहन पर बैठकर घर आ रही थीं। बुद्ध जयन्ती पार्क के सामने से निकले तो रात के अंधेरे में सड़क में गड्ढा दिखाई नहीं दिया। स्कूटर उछला और पिलियन पर बैठी हुई विमला जी नीचे गिर गईं। गिरने के साथ थोड़ी दूर तक घिसटती चली गईं। उनके दोनों कंधों पर गहरी चोटें आईं। कंधों पर से ब्लाउज़ फट गया। घुटने छिल गये। क़िस्मत अच्छी थी कि सड़क पर ज़्यादा ट्रैफ़िक नहीं था। घर पहुँचे। डॉक्टर को बुलाया। मरहम पट्टी की गई। अगले दिन एक्स-रे करवाया। साहनी जी को सूचना भिजवाई परन्तु वे उन्हें देखने नहीं आये। चिन्ता करते रहे। तब पहली बार विमला जी के मन में आया कि उनसे तो वे महिलाएँ अच्छी हैं जिनके पति जेलों में बंद हैं। वे कम-अज़-कम उनसे मिल तो सकती हैं। उनके परिवार पर पुलिस का पहरा तो नहीं बैठा हुआ। पति भी, जेल में बंद होने के बाद से इस तनाव से बचे हुए हैं कि उन्हें फलाँ जगह पहुँचकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फलाँ काम को अंजाम देना है। उन्हें पुलिस से बचने का तनाव झेलते हुए यहाँ से वहाँ किसी के घर में शरण तो नहीं लेनी पड़ती। भूमिगत रहकर काम करनेवालों के पीछे हर समय पुलिस लगी रहती है और उनके परिवारों पर तरह-तरह के अत्याचार करती है। चाहने पर उनके घर का कोई भी सदस्य उनसे मिल नहीं सकता। हर तरफ़ ख़तरा मंडराता रहता है। वे चाहें भी तो अपने परिवार के सुख-दुख में शामिल नहीं हो सकते। खुद बीमार पड़ जायें तो...? इस पर भी लोग समझते हैं कि फलाँ आदमी खुशनसीब है क्योंकि जेल से बाहर है!

सेहत में सुधार होने पर विमला जी साहनी जी से मिलने गईं। उस समय भी वे चिन्तामग्न थे। चाहते हुए भी विमला जी ने मन की बात उनसे नहीं कही। वे नहीं चाहती थी कि वे अपने संघर्ष में कमज़ोर पड़ें।

कुछ दिन के बाद विमला जी को जयपुर जाना पड़ा। केदारनाथ साहनी जयपुर आने वाले थे और विमला जी को उन्हें हवाई अड्डे से कार द्वारा दिल्ली लाना था। इस बार वे रात में जयपुर के लिये रवाना हुईं तो उनके साथ उनके दोनों बेटे और उनका एक भांजा भी था। रास्ते में भेड़ों से भरा हुआ एक ट्रक उलटा पड़ा था। कुछ भेड़ें मर गई थीं। इस ट्रक के कारण दूर तक ट्रैफ़िक नहीं खुला। विमला जी ने ड्राईवर को खेतों से होकर आगे बढ़ने के लिये कहा क्योंकि सवेरे साढ़े सात बजे साहनी जी के विमान को जयपुर हवाई अड्डे पर उतरना था और उन्हें उससे पहले वहाँ पहुँचना था। वे खेतों के बीच में कच्चे रास्ते पर चल पड़े। हर ओर अंधेरा था। वे अनुमान से आगे बढ़ रहें थे। रास्ते में एक गाँव पड़ा तो वे वहाँ रुक गये। पौ फटी तो आगे बढ़े। भाग्य ने साथ नहीं दिया। हवाई अड्डे के रास्ते में पड़ने वाला रेल का फाटक बंद मिला। वहीं रुके-रुके फ़्लाइट का समय निकल गया। पाँचों जन सड़क पर दूर तक दृष्टि दौड़ाकर देखते रहे कि साहनी जी किसी वाहन से आ रहे हों तो दिखाई पड़ जाय। थोड़ी देर के बाद हवाई अड्डे की ओर से ताज शेराटन होटल की बस आती दिखाई दी। विमला जी और उनके ड्राइवर ने साहनी जी को बस में खड़े देखा और कार मोड़कर बस के पीछे लगा दी। साहनी जी ने भी उन्हें देख लिया था। वे जानबूझ कर बस में खड़े थे ताकि वे लोग रास्ते में हों तो उन्हें देख लें।

बस ताज शेराटन होटल पहुँचकर रुकी तो साहनी जी उतरकर कार में आ गये। इसके बाद कार जयपुर से निकली और दिल्ली की दिशा में फ़र्राटे भरने लगी। दो बजे दारूहेड़ा पहुँचे। एक रिसार्ट के पीछे बैठकर खाना खा रहे थे कि एक कांग्रेसी ने देख लिया। आकर पूछा, ''कैसे हो साहनी साहब?''

साहनी जी और विमला जी चौंके पर सामान्य बने रहे। बातों बातों में उसने बताया कि वह एक शादी के सिलसिले में जयपुर जा रहा है। साहनी जी वैसे तो वहाँ से चलने वाले थे परन्तु अब रुके रहे ताकि वह पहले चला जाय। वह रिसार्ट के अन्दर गया तो साहनी जी ने ड्राईवर को उसके पीछे लगाया ताकि वह देखता रहे कि वह व्यक्ति अन्दर से पुलिस को फ़ोन तो नहीं कर रहा। वह व्यक्ति बाहर निकला तो ड्राईवर से कहा कि उसकी गाड़ी पर नज़र रखे ताकि पता चले कि वह किस दिशा में गया है। थोड़ी देर के बाद ड्राईवर ने आकर बताया कि वह व्यक्ति जयपुर की दिशा में गया है। इसके बाद साहनी जी गाड़ी में बैठे और दिल्ली रवाना हो गये। जब वे रिसार्ट से निकल रहे थे तो उन्होंने लक्ष्य किया कि 'हेज' के पास खड़ा एक आदमी देर से उन पर निगाह रखे हुए है, जैसे पहचाने की कोशिश कर रहा हो। वे सतर्क हो गये। 'कहीं यह सी.आई.डी. का आदमी न हो।' जब तक गाड़ी दूर नहीं निकल गई, वे 'बैकव्यू मिरर' में लगातार देखते रहे कि कोई वाहन उनका पीछा तो नहीं कर रहा।

दिन ढले दिल्ली की सीमा पर पहुँचे तो वहाँ गाड़ियों की चेकिंग हो रही थी। पुलिस ने उनकी गाड़ी रोकी तो विमला जी ने सोचा — 'गये आज।' साहनी जी ने मुँह के सामने अख़बार तान लिया और कई बार पढ़ी हुई खबरें फिर से पढ़ने लगे। कांस्टेबल ने गाड़ी में झाँका। देखा, परिवार है,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इसलिये आगे बढ़ने का इशारा किया। विमला जी ने मन ही मन अपनी आराध्य, माता वैष्णो देवी का धन्यवाद किया —'आज तुम्हारी कृपा से बालबाल बचे हैं माँ। आगे भी इसी तरह रक्षा करती रहना।'

धौला कुआँ पार करके दक्षिण दिल्ली की उस कॉलोनी की ओर बढ़े जहाँ साहनी जी को ठहरना था। जब वे सड़क के उस मोड़ पर पहुँचे जहाँ मित्र की गली की ओर मुड़ना था तो उन्होंने देखा कि मित्र सड़क पर खड़े उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि एक झोले वाला आदमी सुबह से उनके घर का चक्कर लगा रहा है इसलिये वे एक घंटे से सड़क पर खड़े प्रतीक्षा कर रहे हैं ताकि ख़तरे से आगाह कर दें।

साहनी जी तुरन्त वहाँ से चल दिये। विमला जी और तीनों बच्चों को उनकी माँ के घर से थोड़ी दूर छोड़ दिया और स्वयं आगे बढ़ गये। शहर में उनके विश्वस्त मित्रों की कमी नहीं थी फिर भी विमला जी ने मन ही मन देवी माँ से गुहार की — 'रक्षा करना माँ। जहाँ भी रहें, सकुशल रहें।'

विमला जी तिपहिया लेकर माँ के घर पहुँचीं। बेटी की उद्विग्नता माँ से छिपी नहीं रही। पूछा तो बेटी ने बताया, ''सब ठीक है। जहाँ ठहरना था, वहाँ कुछ गड़बड़ का अंदेशा है। इसलिये किसी दूसरी जगह चले गये हैं। दो एक दिन में पता चल जायेगा कहाँ ठहरे हैं।''

एक बार साहनी जी को एक मीटिंग के सिलसिले में मुंबई जाना था। उड़ान जयपुर के हवाई अड्डे से लेनी थी। उड़ान का समय सुबह के साढ़े सात बजे था। साहनी जी का नाम 'वेटिंग लिस्ट' में था। विमला जी ने उन्हें एक दिन पहले जयपुर पहुँचा दिया। इस बार साथ में विमला जी के भाई यश नय्यर और उनकी पत्नी भी थीं। रात में वे लक्ष्मी विलास होटल में ठहरे। सवेरे पता चला कि विमान में सीट उपलब्ध नहीं है। अब क्या करें। कई जगह फ़ोन मिलाने के बाद पता चला कि अब एक ही उपाय बचा है कि भरतपुर से बम्बई के लिये फ्रंटियर मेल ले ली जाय। उन्होंने कार से भरतपुर पहुँचकर वहाँ से फ्रंटियर मेल लेने का फ़ैसला किया।

अचानक ड्राईवर मदनलाल ने आकर बताया कि बाहर दिल्ली की एक गाड़ी खड़ी है। नम्बर पहचाना-सा लग रहा है। साहनी जी और विमलाजी होटल से निकले और फ़िल्म देखने चले गये। फ़िल्म थी — उलझन। फ़िल्म देखने के बाद धूमधाम कर होटल लौटे। साहनी जी, विमला जी, यश नैयर और उनकी पत्नी चारों भरतपुर रवाना हो गये। समय रहते रेलवे स्टेशन पर पहुँच गये। फ्रंटियर मेल आई। साहनी जी ने कंडक्टर से पूछा, ''फर्स्ट क्लास की टिकट है?''

उसके हामी भरने पर वे फर्स्टक्लास के डिब्बे में चढ़ गये। साथ वाले डिब्बे से एक आदमी उतरा और यश भाई के पास आकर पूछा, ''ये साहनी साहब थे?''

हैरानी ओढ़कर यश भाई ने प्रति प्रश्न किया, ''कौन साहनी साहब?''

वह पहले तो सकपकाया फिर क्षमायाचना के से स्वर में बोला, ''लगता है, मैंने ठीक से पहचाना नहीं।''

एक बार फिर साहनी जी पहचाने जाने से बाल बाल बच गये थे।

14 नवम्बर 1975 को केदारनाथ साहनी विदेश चले गये। वहाँ भी वे कई जगहों पर ठहरे, कई देशों में घूमकर पार्टी का काम किया। इमरजेंसी समाप्त होने के बाद वे 20 फरवरी 1977 को लन्दन से भारत आये। दिल्ली हवाई अड्डे पर जनसंघ के चार-पाँच हज़ार कार्यकर्ताओं ने उनका स्वागत किया। आकाश 'भारत माता की जय' और 'केदारनाथ साहनी ज़िन्दाबाद' के नारों से गूँज उठा।

— सी-4, 86/2, सफ़दरजंग विकास क्षेत्र,
हौज़ख़ास, नई दिल्ली-110016

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कविता

रमानाथ अवस्थी

नदी

नदी बड़ी गहरी है
पता नहीं क्या होगा?

सहमे-सहमे लोग खड़े हैं
दोनों ओर किनारों पर
कुछ की नज़रें नीची-नीची
कुछ की चाँद-सितारों पर

आँधी कहीं ठहरी है
पता नहीं क्या होगा?

कुछ अँधियारा कुछ उजियाला
अजब तरह का मौसम है
मैं किसको आवाज़ लगाऊँ
रहा न कोई हमदम है

चाँदनी भी बहरी है!
पता नहीं क्या होगा?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्रीकांत जोशी

इसके पहले

इसके पहले कि वे लोग आकर
तुम्हें इत्मीनान से नेस्तनाबूद कर दें
कुछ कहो
इसके पहले कि कानूनों की खुदकुशी के मौसम में
वे, जाने कौन-सा जुर्म पेश कर दें
कुछ कहो
इसके पहले कि उनके अनंत कब्रिस्तान में
हमारे सत्य
ज़िंदा आदमियों की तरह दफ़न हों
उन्हें (बने तो) बचाओ
इसके पहले कि तुम्हारी आवाज़ें
कनाफूसियों से भी बदतर हो जाएँ
तुम जहाँ हो, जैसे हो,
वहीं से, वैसे ही, चिल्लाओ
तुम, जो कुछ भी कह सकते हो,
कर सकते हो सुना सकते हो,
कहो, करो और सुनाओ
फिक्र मत करो
तुम्हारे अर्थ सही मुकाम तक पहुँच पाते हैं या नहीं,
या तुम्हारी चीत्कारों से
वे, जाहिर भी हो पाते हैं या नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सदा ही, कहीं न कहीं, कुछ न कुछ प्रतीक-जन या शब्द
इतिहास की हथेलियों पर रच जाते हैं
जैसे
आँधियों के बावजूद रास्तों पर
कुछ न कुछ पद-चिह्न
मिटने से बच जाते हैं
ये कल गवाह होंगे
(इतिहास खुद एक गवाह ही तो है)
ये चौंकी हुई और परेशान ज़िंदगियों को
आश्वस्त करेंगे
ये,
जानें कितनी बेसहारा और खोज में जुटी हुई
निगाहों की निगाह होंगे
कोई, प्रश्निल आँखों से कह सकता है
'कोई भी क्या कर सकता है इन दिनों?'
पर जो, जो कुछ भी कर सकता है
उसका वह सब भी न कर पाना
इंसानियत के ख़िलाफ़
कभी मुआफ न किए जानेवाला गुनाह होगा

क्या यह हमारे लिए फ़ख्र की बात न होगी
हम कल के लिए एक याददाश्त, एक गवाह होंगे!
और कौन है, आ मुझसे पूछ सकते हैं,
जो यह सब इतनी विह्लता से
इतनी व्यक्तिगत चिंता से कह रहा है?
यह वह अंतर्वेदना-तप्त है
जिसे किसी चलते हुए शब्द से —
बाँधकर नहीं रखा जा सकता,
जो दकियानूस धर्म और शोषण के
राक्षसी हाथियों के विरुद्ध
पैदाइशी हक से लड़ रहा है
जो किसी भी तव्कोपरस्त से
एक क़दम पीछे नहीं है
जो शब्द-शब्द को खून से तौलकर लिखता है
और उन्हें अपना ख़ास दोस्त मानता है
जिसे उम्मीद है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हर आदमी को
खाने को रोटी, रहने को झुग्गी और
पहनने को लंगोटी तो
कम-अज-कम मिलेगी
और जो यह ख्वाब भी देखता है
ये रोटियाँ, ये झुग्गियाँ, ये लंगोटियाँ
आदमी को खरीद कर रख लेने के लिए
इस्तेमाल न होंगी

समय और हम

समय उतना गलत नहीं
जितने हम हैं
दी गईं परिस्थितियों
दहकते हुए प्रश्नों
और उजाले की शक्ल में घूमते हुए
अँधेरों से कम है
समय उतना गलत नहीं
जितने हम हैं

ज़िंदगी बड़ी चीज़ है
और हम लगभग
घुट चुके हैं
तुम्हें
शायद हों
शायद न हों
इतिहास को भारी ग़म है
समय उतना गलत नहीं
जितने हम हैं

ज्योतिकांक्षी प्रयत्न
अकेले
असहाय
और निंदित हैं
वास्तविक सूर्य
जुगनुओं की शक्ल में प्रदर्शित हैं
सत्य, एक विवश, मासूम मेमने की तरह,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चारों तरफ भेड़ियों के
दमखम हैं
समय उतना गलत नहीं
जितने हम हैं

किसी दिन
या तो हम ही न होंगे
या, यह समय
वास्तविकता की पहचान के बाद
छूट जाता है
बड़े से बड़ा भय
उस दिन की प्रतीक्षा में
हमारे यश उपक्रम हैं
समय उतना गलत नहीं
जितने हम हैं

(बंद न करना द्वार से साभार)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रमानाथ त्रिपाठी

कबूतर

मैं कैसा सुंदर गाऊँ,
मैं झूम-झूमकर नाचूँ
मैं काग सुंदरी
मीठी मेरी बोली,
उल्लू-चमगादड़
मुझसे करते नित्य ढिढोली

चुप कबूतर! क्या बकता है?
कतरों इसकी जीभ
गुटरगूँ क्यों करता है?
शूट करो ये सुग्गे
चोंचें खोल रहे हैं,
फोड़ो इनकी आँख
मुझे क्यों घूर रहे हैं?
हवा, करो जयगान
नहीं तो कैद मिलेगी,
जी हुजूर न कहे, तो
पाजी धूप मिटेगी

किसकी जुर्रत
कौन बोलता?
कि डाल-डाल पर
मेरी बीट पड़ी है

('आपातकाल की प्रतिनिधि कविताएँ' से साभार)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आशा रानी व्होरा

बहरी हवा, बेज़ुबान मौसम

झुका-झुका आसमान
घटा ठहरी है
मौसम बेचैन है
बेजुबान है
हवा बहरी है
घुटन गहरी है

खोल दो दरवाजे
दरवाजों पर थाप है
थाप देनेवाले
हाथों में ताप है
क्या यह थाप तुम्हें
सुनाई नहीं देती?
रुके हुए ताप की लौ
दिखाई नहीं देती?

सुनो,
थाप बढ़ेगी
बढ़ती जाएगी
तुम्हारे कानों से नहीं तो दीवारों से
टकराएगी
और दीवारें ढहेंगी
ढहती जाएँगी
तुम्हारे कानों की परतें तब

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह शोर सह नहीं पाएँगी
लेकिन यही लौ —
जो अब दिखाई नहीं देती
तुम्हें रास्ता दिखाएगी

दीवारों के कान और झूठ के पैर

सुना था
दीवारों के कान होते हैं
देखा न था
कितने बड़े होते हैं?
लेखा न था।
उफ!
इतने बड़े कान
आफत में जान
सलीब चढ़ी साँसें
सान चढ़ी आन
सुना था
झूठ के पैर नहीं होते
और
सत्य कभी मरता नहीं।
ओह!
इतने बड़े पैर
कि धम धम धम्म
सत्य का सिर
धँसता चला जाए
एक संभ्रम
गहरा गम
मथता चला जाए
लगे कि सत्य
शहीद हो गया
झूठ चश्मदीद हो गया

— जी-302, सेक्टर-2
नोएडा-201301

('आपातकाल की प्रतिनिधि कविताएँ' से साभार)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिवराजसिंह चौहान *

लोकतंत्र के सच्चे प्रहरी हैं मीसाबंदी [1]

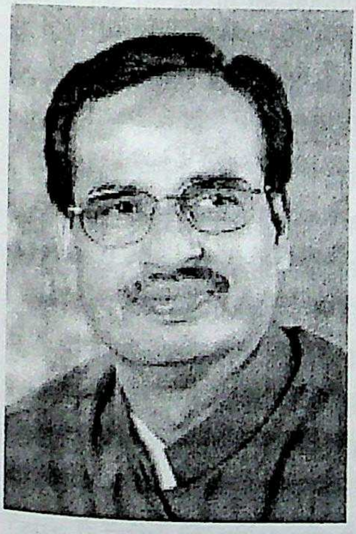

आपातकाल के दिनों में जब मुझे जेल भेजा गया तब मेरी उम्र मात्र सोलह वर्ष थी। आयु कम थी लेकिन देश की राजनैतिक स्थितियों से मैं पूरी तरह अवगत था। वैचारिक परिपक्वता नहीं थी लेकिन अच्छे-बुरे की समझ विकसित हो चुकी थी। सरकार ने विरोधी विचारधारा के लोगों को बिना प्रमाणों के कारावास में ठूँसना शुरू कर दिया।

मैं अपने अनेक वरिष्ठ साथियों के साथ भोपाल जेल में था। आपातकाल के दौरान जेल में जो सर्वधर्म समभाव का वातावरण निर्मित किया गया वह मेरे जीवन का अद्‌भुत अनुभव और सीख है। रोज सायंकालीन प्रार्थना (संझा) होती। हम सब उसमें शामिल होते। मेरे साथ कारावास में स्व. उत्तमचंद ईसराणी जैसे समर्पित स्वयंसेवक और संघ के वरिष्ठ पदाधिकारी भी थे। उनसे मार्गदर्शन मिलता। वे हमें भागवत् गीता के उद्धरण पढ़कर सुनाते, चर्चा करते और हम सभी न्याय और सत्य की विजय की कामना करते। अनेक मीसाबंदी नैराश्य के स्वर में कहते —"हम

---

* मुख्यमंत्री, म.प्र. शासन

1. उल्लेखनीय है कि मध्यप्रदेश सरकार द्वारा मीसाबंदी को सम्मान निधि दिए जाने के निर्णय के बाद छत्तीसगढ़ सहित अन्य प्रांतों में भी इस तरह के न्यायपूर्ण निर्णय लिए गए हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
शायद जीवन भर काल कोठरी से नहीं निकल पाएँगे'', तब स्व. ईसराणी जी हिम्मत बढ़ाते वे कहते थे ''रात्रि के पश्चात सूर्योदय होता ही है। हम अपने राष्ट्र के लिये इतना कष्ट तो उठा ही सकते हैं।''

कारावास में प्राय: अख़बार पढ़ने को मिल जाया करते थे। राष्ट्रीय स्तर पर जो राजनैतिक परिदृश्य था उसमें एक ही दल का प्रभाव दिखाई देता। अख़बार भी सच बता पाने में असमर्थ हो गये थे। भोपाल में श्री बाबूलाल भानपुर, श्री गुलाबचंद खंडेलवाल, श्री तपन भौमिक आदि भी बंदी रहे। मेरे अनेक साथी डायरी भी लिखते थे। कारावास में बीते उन दिनों की यादें स्मृति पटल पर एकदम तरोताज़ा हैं। मुझे किशोरावस्था में ही जीवन और व्यवस्था के इस कड़वे सच का साक्षात्कार करना पड़ा। अपने उन साथियों की वेदना मुझे आज भी तकलीफ देती है जिन्होंने कारावास में अकारण अत्याचार सहे।

आज से 34 वर्ष पहले 25 जून को आपातकाल लागू हुआ था। भारतीय लोकतंत्र और आज़ाद भारत के इतिहास में आपातकाल एक ऐसा पृष्ठ है जिसे कोई पढ़ना नहीं चाहेगा। लोकतंत्र और संवैधानिक प्रक्रिया पर कुठाराघात के प्रतीक आपातकाल के विरोध में संघर्ष करने वाले सभी लोग दरअसल देश की दूसरी आज़ादी के सम्मानित सेनानी हैं। आपातकाल का विरोध करने पर जेलों में निरूद्ध लोगों के संघर्ष, दुख और तकलीफों पर लिखा जाए तो एक वृहद ग्रंथ तैयार हो सकता है। देश को अंग्रेजों की दासता से आज़ाद करवाने के संघर्ष के सेनानियों को तो उनकी कारावास अवधि और दण्ड का पता होता था लेकिन आपातकाल के विरूद्ध संघर्ष के सेनानियों को तो यह भी पता नहीं था कि वे कब तक जेल में रहेंगे और उन्हें कहाँ अपील करनी होगी। इसीलिये दूसरी आज़ादी के संघर्ष के सेनानियों को मीसाबंदी न कहकर लोकतंत्र के सच्चे प्रहरी कहा जाना चाहिये जिन्होंने आपातकाल के विरोध ने भारतीय लोकतंत्र को मजबूती दी।

मेरा दृढ़ मत है कि भविष्य में भी यदि कभी देश की आज़ादी और लोकतंत्र को कोई खतरा उत्पन्न हुआ तो लोकतंत्र के इन प्रहरियों का संघर्ष लोगों को प्रेरणा देगा।

मेरा यह भी मानना है कि मीसा कानून में निरूद्ध लोगों के त्याग और तपस्या की क्षतिपूर्ति हो ही नहीं सकती। कम से कम ऐसे देश प्रेमियों के लिये सम्मान निधि कुछ भी नहीं है। मध्यप्रदेश सरकार ने मीसाबंदियों को सम्मान निधि देने का फैसला लेकर उसे लागू किया है। सरकार द्वारा दी जा रही यह निधि सिर्फ एक विनम्र प्रयास है लोकतंत्र के प्रति उनके समर्पण के सम्मान के लिये। लोकतंत्र के इन प्रहरियों का सम्मान कर मैं गौरवान्वित महसूस करता हूँ। आज अनेक मीसाबंदी दिवंगत हो चुके हैं। उनके द्वारा किये गये संघर्ष की स्मृतियाँ ही शेष हैं। अनेक लोकतंत्र के प्रहरी वृद्ध और बीमार अवस्था में हैं। आज भी ऐसे किसी प्रहरी से रू-ब-रू होता हूँ तो उसके चेहरे की झुर्रियों में उसकी जिजीविषा को पढ़ता हूँ। मीसाबंदी रूपी इन लोकतंत्र के प्रहरियों द्वारा सहे गये कष्ट उनके परिवारों के लिये किसी आपदा से कम न थे। लेकिन अन्याय का अंत हुआ और देश में लोकतंत्र ने करवट ली। मैं लोकतंत्र के प्रहरियों के इस ज़िद, जुनून और जज़्बे को नमन भी करता हूँ।

— मुख्यमंत्री भवन, श्यामला हिल्स,
भोपाल (म.प्र.)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रामभुवन सिंह कुशवाह

आपातकाल और जेल जीवन के वे दिन...!

आज हम जिस लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था में रह रहे हैं, उसे हासिल करने के लिए हमारे देश ने सैकड़ों सालों तक कड़ा संघर्ष किया था, उस लोकतंत्र के बारे में निसंदेह रूप से कहा जा सकता है कि वह सभी प्रकार की शासन व्यवस्थाओं में सर्वश्रेष्ठ है। आम आदमी को अभिव्यक्ति की आजादी, रहने जीने और अपना भविष्य स्वयं तय करने का अधिकार जितना लोकतंत्र में सहज रीति से मिल सकता है अन्य किसी भी प्रकार शासन प्रणाली में संभव नहीं है।

लोकतंत्र मात्र शासन प्रणाली ही नहीं है बल्कि जीवन जीने की पद्धति भी है, एक ऐसी पद्धति जो सम्यक लोकतांत्रिक सोच से विकसित होती है। जागरुकता, परस्पर सह-अस्तित्व, लोकतंत्र के प्रति अटूट निष्ठा का भाव और लोकमत का सम्मान, लोकतंत्र के आवश्यक लक्षण हैं। उसके बिना लोकतंत्र का कोई महत्त्व नहीं है। भारतीय जनता में यह गुण स्वाभाविक रूप से मौजूद है, यदि यह गुण न होता तो अपना यह देश भी पड़ौसी देशों की तरह तानाशाही के कड़े शिकंजे में जकड़ा होता।

25 जून 1975 के उस काली रात को भारत की जनता भला कैसे भूल सकती है जिस दिन श्रीमती इंदिरा गांधी की मदांध सरकार ने बिना सोचे-समझे देश का आपातकाल लगा दिया था। नागरिकों के मौलिक अधिकारों को समाप्त करके लाखों निर्दोष लोगों को राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के अंतर्गत जेल में डाल दिया गया। न अपील, न वकील और न दलील-एक तरह से सबके मुँह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बंद करने की कोशिश की गई। अख़बारों पर सेंसरशिप बैठा दी गई। यहाँ तक कि लोग मौसम के बारे में चर्चा करते हुए भी डरने लगे।

उस समय का हाल बताते हुए किसी कवि ने कहा था—

''मत कहो आकाश में कोहरा घना है।

यह किसी की व्यक्तिगत आलोचना है।''

देश पर आपातकाल थोपने से पूर्व ही तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने देश का वातावरण ऐसे बना दिया था कि कोई भी उसका प्रतिकार करने की हिम्मत न जुटा सके। सरकारी प्रचारतंत्र का सहारा लेकर उन्होंने स्वयं को देवदूत और उसके अपने विरोधियों को देश और गरीबों को दुश्मन साबित करने की कोई कसर छोड़कर नहीं रखी थी। आकाशवाणी और दूरदर्शन के सिवाय तब आज जैसे दूसरे न्यूज चैनल नहीं थे और उनका अधिकांश समय श्रीमती गांधी को महिमामांडित करने में व्यतीत होता था। 15 मिनट के बुलेटिन में 14 मिनट उन्हीं को समर्पित होते थे। विपक्ष तो एक तरह से ब्लेकआउट ही रहता था। काँग्रेस पार्टी में भी कोई उनके ख़िलाफ़ मुँह खोलने को तैयार नहीं था। दिल्ली सहित देश के तमाम शहरों में उनके समर्थन में फर्जी रैलियाँ निकलती थीं और उस समय की मीडिया उन्हीं खबरों को प्रसारित करने के लिए मजबूर थी।

चुनौती रहित काँग्रेस के शासनकाल में भ्रष्टाचार चरम सीमा पर था। काँग्रेस के एकाधिकार में प्रतिपक्ष को दबाने के लिए कोई भी हथकण्डा ऐसा नहीं था जिसे अपनाया न जा रहा हो। जब स्थिति सर से ऊपर हो गई तो लोकनायक जय प्रकाश नारायण उठ खड़े हुए। गुजरात में छात्र आंदोलन शुरू हुआ और वहाँ की चिमन भाई की काँग्रेसी सरकार को अपदस्थ होना पडा। उसी समय इलाहाबाद हाईकोर्ट ने श्रीमती इंदिरा गांधी का चुनाव निरस्त कर दिया। तत्कालीन केन्द्रीय सरकार ने एक अध्यादेश के माध्यम से उसे फैसले का प्रभाव तो समाप्त कर दिया मगर सत्तारूढ़ पार्टी में श्रीमती गांधी के ख़िलाफ़ असंतोष उभरने लगा। 25 जून 1975 को दिल्ली में जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में सर्वदलीय सभा हुई और उन्होंने भारत बंद का ऐलान कर दिया। तत्कालीन उप प्रधानमंत्री श्री मुरारजी देसाई सहित तमाम काँग्रेसी नेताओं ने भी भारत बंद का समर्थन कर दिया। इस सबका जवाब श्रीमती इंदिरा गांधी ने देश पर आपातकाल लगाकर दिया। आपातकाल लगाकर अभिव्यक्ति आजादी छीनने से लोकतंत्र का कोई मतलब ही नहीं रह गया।

25 जून 1975 की रात, मैं अपने गृह नगर भिण्ड में ही था। एक माह पूर्व भिण्ड में लोकनायक जयप्रकाश नारायण की सर्वदलीय सभा काफी सफल रही थी। प्रशासन के तमाम अड़ंगों के बाद भी एम जे एस महाविद्यालय के प्रांगण में आयोजित सभा उस समय की बहुत बड़ी सभा थी। उत्तरी मध्यप्रदेश में वैसे भी स्व. राजमाता विजयाराजे सिंधिया और तत्कालीन भारतीय जनसंघ का अच्छा ख़ासा प्रभाव था। मैंने उस सभा में बढ़-चढ़कर भाग लिया। मैं उस समय स्वदेश का संवाददाता था। स्वागत और सभा की तैयारियों के लिए सर्व दलीय समिति गठित की गई थी। दो प्रमुख दलों जनसंघ और समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं में समिति और सभा का अध्यक्ष बनने की जोड़ तोड़ चल रही थी। मेरे ही पहल पर एक सर्वोदयी युवक श्री सत्यनारायण शर्मा को आयोजन समिति और सभा का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
अध्यक्ष बनाया गया। लोक नायक जयप्रकाश नारायण की इस ऐतिहासिक सभा के कारण मैं जिला प्रशासन की आँख का किरकिरी बन गया। भिण्ड जिले में स्वदेश का सबसे अधिक प्रसारण था। मैं उन दिनों सरकार और सरकारी तंत्र की तीखी आलोचना करता था, इस कारण भी जिला प्रशासन के अधिकारियों और काँग्रेस के नेताओं को मैं हर समय खटकता रहता था। आपातकाल ऐसे लोगों के लिए वरदान बन गया। अब उनकी आलोचना करने वाला कोई नहीं था।

25 जून 1975 की रात को मैं निश्चिंत होकर सोया, सुबह के बुलेटिन में देश पर आपातकाल लगाए जाने की जानकारी दी गई। कुछ नेताओं की गिरफ्तारी की भी ख़बर मिली। पत्रकार होने के नाते मैं आपातकाल की ख़बर लेने सुबह घर से निकला और कोतवाली की ओर जा ही रहा था कि एक शुभ चिंतक पुलिसकर्मी ने मुझे कोतवाली जाने से रोक दिया और कहा कि वहाँ मत जाइए, आपको गिरफ्तार करने के लिए पुलिस आपके घर गई है। मैंने तुरंत अपना मार्ग बदला और अपने पत्रकार मित्र श्री रमेश जौहरी के घर पहुँच गया। एक दिन वहाँ रुकने के बाद में भूमिगत होकर आपातकाल के ख़िलाफ़ जन जागरण की तैयारी करने लगा। जून में ग्वालियर क्षेत्र में भयंकर गर्मी पड़ती है। इसलिए अपना मुँह और सिर एक कपड़े से ढक कर बस से रौन, लहार होता हुआ गोहद पहुँचा। गोहद बस स्टेण्ड पर जनसंघ के एक कार्यकर्ता का मकान था। मैं छुपकर उनके घर पहुँचा। कार्यकर्ता वकील साहब थे। वे तो मुझे देखकर घबड़ा गए। हाथ जोड़कर बोले, ''आपका वारंट निकल गया है। आपको तो गिरफ्तार होना ही है। मुझे क्यों आप गिरफ्तार कराना चाहते हैं। मैं गिरफ्तार हो गया तो बर्बाद हो जाऊँगा।''

उनकी यह स्थिति मुझसे नहीं देखी गई, मैं चुपचाप उनकी बैठक से निकलकर पुनः बस स्टेण्ड पर आ गया। मैं वहाँ खड़ा ही था की गोहद के थाना प्रभारी आ गए। उन्होंने कहा बैठिए मेरी गाड़ी पर और मैं चुपचाप उनकी गाड़ी पर बैठ गया। मैंने समझ लिया कि मुझे गिरफ्तार कर लिया गया है। थाना प्रभारी मुझे थाना ले जाने के बजाय अपने घर ले गए। उन्होंने आदर से खाना खिलाया और समझाया कि आपको इस तरह बस स्टेण्ड पर खड़ा नहीं होना चाहिए था। अब आप जितने दिन रहना चाहे यहाँ रह सकते हैं।

पुलिस अधिकारी की इस अयाचित कृपा से मैं अभिभूत था परन्तु मुझे डर भी लग रहा था। वे फर्जी मुठभेड़ के 'मास्टर' माने जाते थे। उनके जैसे पुलिस अधिकारियों के कारण ही पूर्व डी.जी.पी. श्री अयोध्यानाथ पाठक को वीरता के कई पदक मिल चुके थे। मुझे फर्जी मुठभेड़ में मारे जाने का भय नहीं था परन्तु यह डर तो था कि वह कभी भी मुझे गिरफ्तार करवा सकता है। पूरे दिन और पूरी रात मजबूरी में मैंने थाना प्रभारी के घर पर ही बिताई। अगली सुबह मैं चलने को तैयार हुआ तो उन्होंने फिर रोका। इस तरह कहाँ जाओगे बीच में कहीं भी पकड़ लिए जाओगे। मैंने कहा, 'मुझे जाना ही होगा।' इसके बाद उन्होंने बस स्टेंड तक मुझे पहुँचवा दिया। उनके ड्रायवर ने अपनी गाड़ी से मुझे भिण्ड जाने वाली बस में बैठा दिया। मैं चुपचाप बस में बैठ गया। पर जैसे ही वह रवाना हुआ, मैं बस बदल कर दूसरी दिशा की ओर जानेवाली बस में बैठ गया।

इस तरह कोई बारह दिन छुपता जिले भर में घूमता रहा। आठ जुलाई को मैं फिर भिण्ड पहुँचा। पत्नी और बच्चों से मिलने जब शाम को अपने घर पेच नम्बर एक में पहुँचा तो घर में घुसते मुझे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
किसी काँग्रेसी ने देख लिया और तुरंत पुलिस को खबर कर दी। सुबह ही पुलिस ने मेरा घर घेर लिया और मैं गिरफ्तार कर लिया गया। जिस समय मैं गिरफ्तार हुआ मेरे बच्चे अत्यन्त छोटे थे, पत्नी गर्भवती थीं। मैंने सावित्री को सलाह दी कि वे बच्चों को लेकर घर बाराकलां चली जाए। वे स्वाभिमानी और साहसी शुरू से थीं, उन्हें मेरी सलाह पसंद नहीं आई। वे गाँव मेरे भाई के पास नहीं गई और न मायके पिता के घर नहीं जाना चाहती थीं। उन्हें लगता था कि कुछ दिन बाद रिहा हो जाऊँगा पर जब अधिक दिन तक नहीं लौटा तो आखिरकार वे मेरे भाई के पास गाँव चली गई। कभी भिण्ड तो कभी बाराकलां वे आती-जाती रहीं। बच्चों को साथ में लेकर उनकी यह आना जाना कितना कष्टदायी था, यह समझा जा सकता है।

गिरफ्तार होने के बाद जब मुझे कोतवाली ले जाया गया। तब कोतवाली गिरफ्तार शुदा से भरी थी। तमाम कार्यकर्ता गिरफ्तार होकर लाए गए थे। अधिकांश कार्यकर्ताओं को आपराधिक मामलों में गिरफ्तार किया गया था और बाद में उन्हें अदालत ने रिहा भी कर दिया किन्तु मुझे 'मीसा' में गिरफ्तार किया गया था, इसलिए मुझे पुलिस वाहन से केन्द्रीय जेल, ग्वालियर ले जाया गया। रास्ते में मैंने जहाँ देखा लोगों को डरा हुआ ही पाया। पत्रकारों की हालत तो और अधिक खराब हो गई। भिण्ड, और ग्वालियर में अनेक पत्रकार मिले किन्तु वे भयभीत होकर मुझसे आँख भी नहीं मिलाना चाहते थे।

मैं जब ग्वालियर केन्द्रीय जेल पहुँचा तो वहाँ कोई चार पाँच सौ लोग मीसा में बंद थे। उन्हें देखकर मैं अपनी गिरफ्तार का गम और परिवार छोड़ने को दुःख भूल सा गया। केन्द्रीय जेल में मीसाबंदियों की अलग बैरिकें थीं। भारतीय जनसंघ के ग्वालियर संभाग के सभी बड़े नेता यथा सर्वश्री नारायण कृष्ण शेजवलकर, शीतला सहाय, नरेश जौहरी, गांगाराम बादिल, भाऊ साहब पोतनीस, इन्द्रापुरकर, डॉ. एमएम बत्रा, स्वरूप किशोर सिंहल, पी.डी. गुप्ता, रसाल सिंह, शिव कुमार शुक्ला नाथूलाल गोयल, 'मंत्री जी' जाहर सिंह शर्मा, जगन्नाथ सिंह, दादा दहीफले, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी, बाबा खानवलकर, दादा बेलापुरकर, चिंतामणि केलकर, मोघे जी, अन्ना जी, महीपत चिकटे डॉ. मराठे, सुघर सिंह कुशवाह, बाबूलाल गुप्ता और उनके युवा पुत्र राधेश्याम गुप्ता, सीताराम गुप्ता, शिवपुरी के बाबूलाल शर्मा एडवोकेट, हरिहर शर्मा, गोपाल दंडोतिया, विमलेश गोयल, गोपाल सिंहल, ओम प्रकाश गुरु, संयुक्त समाजवादी पार्टी के रघुवीर सिंह कुशवाह, धर्मस्वरूप सक्सेना, दांतरे, दंडोतिया, बाबू जबर सिंह, रक्षपाल सिंह, विजय सिंह, साहित्य क्षेत्र के सर्व श्री जगदीश तोमर, डॉ. शिव बरुआ, सीपीएम के शैलेन्द्र शैली और बादल सरोज आदि सभी लोग एक साथ मिल गए।

मीसा के प्रारंभ के दिनों में अचानक सैकड़ों लोग केन्द्रीय जेल आ जाने से जेल की प्रारंभिक व्यवस्थाएँ बिगड़ गई थीं। समाजवादी और साम्यवादी कार्यकर्ता इस अवसर का लाभ उठाकर आंदोलन करना चाहते थे, किन्तु राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और भारतीय जनसंघ से जुड़े लोग जेल में जेल के कायदे कानून के अनुसार रहने के पक्षधर थे। समाजवादी साम्यवादी, आनंदमार्गी और असामाजिक तत्वों ने मिलकर जेल में एक गुट बना लिया था पर वे विचारों और आचरण से अलग-अलग थे। संघ और जनसंघ के लोग विभिन्न श्रेणी में निरुद्ध किए गए थे। पर वे सामूहिक रूप से एक ही भोजन व्यवस्था

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में शामिल हो गए। स्वभाविक था कि उन सबका खाना बहुत अच्छा बनता था। उनका रहन-सहन भी व्यवस्थित था। सप्ताह के प्रत्येक दिन के लिए विभिन्न कार्यक्रमों तथा भोजनालय की व्यवस्था सबने मिलकर बाँट ली थी। जबकि समाजवादी साम्यवादी और असामाजिक तत्व में कोई साम्य नहीं था। वे आपस में लड़ते हुए भी मिलकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और जनसंघ की आलोचना करते रहते थे। संघ से जुड़े कार्यकर्ताओं की सक्रियता साढ़े पाँच बजे प्रात: जागरण से शुरू होती और रात तक चलती रहती। वे प्रात: सामूहिक प्रार्थना से करते, दैनिक क्रिया से निवृत्त होकर योगाभ्यास, गीतापाठ, स्वाध्याय, आदि करते थे उनका भोजन सामूहिक में से शुरू होता था। उनका खाना बनाने वाले कैदियों के साथ भी सभ्यता का व्यवहार था जबकि समाजवादी-साम्यवादी विचारों के अनेक लोग फालतू की बातें करते रहते थे। ताश आदि खेलना, जेल में जुगाड़ कर शाम को अपना गला भी गीला करना उनकी सामान्य दिनचर्या थी। उनका जेल कर्मियों के साथ व्यवहार भी अच्छा नहीं था। परिणाम स्वरूप उनमें हर समय तनाव बना रहता था।

केन्द्रीय जेल में हम लोग बंद ज़रूर थे किन्तु हमें जानकारी पूरी दुनिया की मिलती रहती थी। देश में क्या चल रहा है? नसबंदी को लेकर कैसी अफवाहें चल रही हैं देशभर में आपात काल के ख़िलाफ़ कितने भूमिगत आंदोलन चल रहे हैं सबकी जानकारी हमें सहज में ही मिला करती थी। मुझे संयोग से इस जानकारी के संयोजन की भी जिम्मेदारी दी गई थी और मीसाबंदी प्रमुख नरेश जौहरी का सहयोगी होने के कारण दोपहर चाय के बाद एकत्रीकरण में ही अक्सर सबकी जानकारी देता था। सभी गोपनीय दस्तावेज़ मेरे पास आते थे। उन्हें संभालकर रखना और उन्हें सूचीबद्ध करना यह मेरी ही ज़िम्मेदारी में था। यह बड़ी विचित्र बात थी कि जेल के बाहर के लोगों को उस वास्तविकता का पता नहीं था जो हमारे पास थी। बाहर के लोगों के पास तो अफवाहें ही थीं क्योंकि सही बात छापने की आज़ादी अख़बारों से छीन ली गई थी। हम लोगों ने जेल में एक ऐसा तंत्र भी खड़ा कर लिया था जिसके कारण बाहर की कोई बात हमसे छुपी नहीं रह सकती थी। जन आंदोलन की सभी खबरें ही नहीं सभी बड़े नेताओं के बीच के पत्राचार भी हमें उपलब्ध हो गए थे, जो बाबू जयप्रकाश नारायण और नानाजी देशमुख और अन्य नेताओं के बीच शुरू हुए थे। कहना न होगा कि जनता पार्टी का जन्म भी एक तरह से जेलों में ही हुआ।

जेल में हमें बहुत कुछ सीखने को मिला। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री काशीनाथ मोघे हमें नित्य व्यायाम और योग सिखाने के साथ शास्त्रीय संगीत भी सिखाते थे। डॉ. मराठे गीता के गूढ़ रहस्य सरल भाषा में हमारे समक्ष प्रस्तुत करते थे। डॉ. निवास्कर चिकित्सा में हो रहे परिवर्तन की भी जानकारी दे रहे थे और सरल तरीके से स्वस्थ और रोगमुक्त कैसे रहा जा सकता है यह बता रहे थे। यही नहीं वे इलोपेथी की जानकारी देने के साथ प्रमुख दवाइयों के बारे में भी सरल भाषा में हमें बता रहे थे।

डॉ. निवास्कर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के समर्पित कार्यकर्ता थे। वे शासकीय सेवा में रहकर ईमानदारी और आदर्श जीवन व्यतीत कर रहे थे। उनसे किसी को भी खतरा नहीं था फिर भी सरकार ने उन्हें पकड़ लिया। डॉ. निवास्कर अक्सर कहा करते थे कि रोग हमारा शत्रु है, वह हमें कमजोर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पाकर ही हमला करता है। इसलिए वे रोग से लड़ने के लिए शक्ति अर्जन पर जोर देते रहते थे। वे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विषयों पर भी जमकर बहस करते थे और मेरी उनसे अक्सर बहस हो जाया रहती थी। मैं उन्हें छेड़ने के लिए कभी-कभी कुतर्क का सहारा भी ले लिया करता था और वे गुस्से में अपने हाथ से मेरा मुँह बंद कर दिया करते थे। फिर हम सब लोग उनके इस व्यवहार का खूब मज़ा लेते थे। डॉ. निवासकर आज हमारे बीच नहीं हैं। वे असमय में ही हमें छोड़कर चले गए। उन्हें मैं आज भी 'मिस' करता हूँ।

सौभाग्य से रहने के लिए मुझे मीसाबंदियों की उस बैरक में स्थान मिला था, जिसमें संघ और जनसंघ के सभी प्रमुख नेता बंद थे। उनमें बड़ी संख्या ग्वालियर के लोगों की ही थी। उनसे प्रायः हर दिन कोई मिलने आता था। मिलाई के समय वे अपने साथ ढेर सारी नमकीन और मिठाइयाँ लाया करते थे। बैरिक में आकर वह खाद्य सामग्री लाने में एक तरह से बाहर प्रतियोगिता हो रही थी तो अन्दर खाने में प्रतियोगिता हम लोग कर रहे थे। साढ़े बीस माह के जेल जीवन में मेरी एक भी मिलाई नहीं हुई। मैंने अपनी पत्नी सावित्री को जेल आने से सख़्ती से रोक रखा था। भिण्ड जिले के एक गाँव से ग्वालियर आना उनके लिए मुश्किल भी था।

मुझे पूरे मीसाकाल में एक बार पेरोल मिली और वह भी आश्चर्यजनक ढंग से, क्योंकि मैंने ऐसी कोई माँग नहीं की थी। सुबह साढ़े नौ बजे के करीब जेल का एक कर्मचारी आता है और मेरा नाम पुकारकर कहता है कि आपकी रिहाई आई है। सब चौक पड़े उस समय बीस सूत्रीय कार्यक्रम का समर्थन करने का दौर चल रहा था। समर्थन का पत्र लिखते ही मीसाबंदी की जेल से रिहाई हो सकती है, यह धारणा थी। मेरी रिहाई की ख़बर से मुझे खुशी नहीं हुई बल्कि अपराध बोध सा होने लगा। मैं वारंट आफिस पहुँचा तो पता चला कि मेरी रिहाई नहीं बल्कि मुझे दो दिन का पैरोल मिला था। मुझे इस पर भी अपनी पत्नी पर गुस्सा आ रहा था। मैंने उससे कहा था कि न भेंट के लिए आना और न पैरोल माँगना। मैं जेल से भिण्ड पहुँचा तब पता चला कि कलेक्टर और एसपी ने मेरी पत्नी से आवेदन मंगवाकर पेरोल दी है और मेरे घर पर खबर भिजवा दी थी कि वे जब मैं वहाँ आऊँगा, तो कलेक्टर एसपी से अवश्य मिल लूँ।

मैं पैरोल पर गया और समय निकालकर मैं तत्कालीन कलेक्टर श्री सुयोग्य कुमार मिश्रा से मिलने भी गया तो उन्होंने तत्कालीन एसपी स्व. संतोष कुमार सक्सेना को भी बुलवा लिया। वे दोनों अधिकारी मुझसे क्षमा माँगने लगे। उन्होंने बताया कि उन्हें पता नहीं था कि आप सबको इतने दिनों तक जेल में रहना पड़ेगा। वे तो समझते थे कि लोकमान्य जयप्रकाश नारायण के अखिल भारतीय बंद के आह्वान तक के लिए मुझे निरुद्ध रखा जाएगा। मैंने उनसे शालीनता से कहा कि आपने मुझे मीसा में बंदकर मेरा हित ही किया है। मेरा स्वास्थ्य देखकर दोनों प्रसन्न भी थे। कलेक्टर श्री मिश्रा बाद में भोपाल के आयुक्त और प्रदेश के गृह सचिव भी बने और वे सदैव इज़्ज़त करते रहे।

पेरोल पर जब मैं अपने गाँव आया तो मेरा परिवार मुझे स्वस्थ देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। सावित्री ने तो उलाहना ही दे डाला कि वह तो मेरी चिंता में दुबली हो रही थी और मैं निश्चिन्त होकर पहलवान हो गया था। यह कुछ सीमा तक सच भी था, हम लोगों को मीसा में रहने का तरीका आ गया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

था, आपातकाल में देश की चिंता के साथ हम लोग भी अपने स्वास्थ्य की चिंता कर लिया करते थे। वास्तव में दुखी तो बाहर वाले थे जो बाहर रहकर भी जेल में ही थे। इसका कारण यह था कि आपात काल में पूरा देश जेल बन गया था। जेल में कितना भी सुख दिया जाए जेल तो जेल ही है। घर में कितने भी कष्ट हो घर, घर ही होता है। भिण्ड जिले के तीन चार मीसाबंदियों को मैं व्यक्तिगत रूप से जानता था जो अपने घरों में बड़े कष्ट में थे और जेल में अपेक्षाकृत सुखी रह सकते थे किन्तु उन्हें अक्सर रात में नीद नहीं आती थी और हर सुबह रिहाई के लिए प्रार्थनाएँ किया करते थे। उन्होंने 20 सूत्रीय कार्यक्रम का समर्थन भी कर दिया था उनके घरवाले उनकी रिहाई के लिए जी तोड़ कोशिश भी कर रहे थे। अक्सर मैं ऐसे लोगों को समझाने की कोशिश करता तो वे मुझ पर ही पलट कर हमला किया करते थे-'तुम्हें जेल अच्छी लगती है तो मज़े से रहो। जेल से छूटकर फिर किसी को लाठी मार कर आ जाना पर मुझे तो जाने दो।' मैं कहता था-'मुझे भी खुशी होगी जब हम जेल से छूटेंगे पर जब तक जेल में हैं तब तक जेल की तरह आनंद तो रहो।' पर मेरी सलाह उन्हें कभी भी अच्छी नहीं लगी।

संघ और जनसंघ के विचारों के समर्थक लोगों ने मिलकर एक वैचारिक कार्यक्रम बनाया था 'भावी भारत का स्वरूप' यह कार्यक्रम इतना लोकप्रिय रहा कि सभी विचारवान लोग यही चिंतन करते रहते थे कि अपने देश की तरक्की कैसे की जाए। 'भावी भारत का स्वरूप' पर चर्चा की रचना भी अत्यंत विचारपूर्वक की गई थीं। सरकार चलाने के लिए जितने भी विभाग हो सकते थे, उतनी ही समितियाँ बनाई गई थीं। हरेक समिति का एक संयोजक बनाया गया था। पहले सभी समितियों ने अलग-अलग बैठक आपस में चर्चा करके ड्राफ्ट प्रतिवेदन पर जो संशोधन आते थे उनपर गंभीरता से विचार किया जाता था। बाद में प्रतिवेदनों को अंतिम रूप देने का क्रम चला। इस कार्यक्रम में सभी की रुचि रहती थी। चर्चा इतनी रोचक और ज्ञान-वर्धक हो गई थी कि दिन-रात उसका ही जिक्र होता रहता था। सौभाग्य से मैं चर्चा में सबसे अधिक हस्तक्षेप करता था। अंतिम प्रतिवेदनों को अंतिम रूप देने में भी मेरी बड़ी भूमिका रहती थी। सभी विभागों में अंतिम प्रतिवेदन योग्य हाथों तक गए किन्तु जेल से घुटने और अनुकूल विचारों की सरकार बनने के बाद भी जेल में हुई उस कसरत का बाहर कोई फायदा नहीं मिला। यह दुर्भाग्य ही है कि हमारे नीति नियंता सत्ता में आने के बाद वे सब बातें भूल जाते हैं जो जनता के बीच में रहकर सोचते हैं।

जेल में मुझे व्यक्तिगत एक लाभ और हुआ कि मैं जमकर व्यायाम करता था। योग में मेरी पहले से ही रुचि थी। जेल में निरंतर अभ्यासों से मैं योगासनों में पारंगत हो गया। योग की पुस्तकों में जितने भी आसन हैं, केवल शीर्षासन को छोड़कर, मैं सभी आसनों को आदर्श ढंग से करने लगा। जेल में जब भी कोई बड़ा अधिकारी निरीक्षण को आता, मुझे आसन प्रदर्शन के लिए अवश्य प्रस्तुत किया जाता था। इसी बीच मेरा स्वाध्याय भी चलता रहता था। गीता, रामायण, प. दीनदयाल उपाध्याय की पुस्तक एकात्म मानववाद और नीति एवं सिद्धान्त का अध्ययन किया और उस पर जमकर चिंतन किया। लेखन कार्य तो मेरा मूलकर्म ही था वह भी चलता रहा। साढ़े बीस महीने के मीसाकाल में मुझे तमाम प्रकार के अनुभव हुए। कई प्रसंग उल्लेखनीय भी हैं, पर एक लेख में सभी विषयों को समाहित भी नहीं किया जा सकता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मीसाबंदियों में कुछ ऐसे भी थे जो संघ और जनसंघ के लोगों की खुली आलोचना किया करते थे उनमें समाजवादी प्रमुख थे। उन्हें शक था कि जेल अधिकारी उनसे हमसे मिले हुए हैं। कुछ तो काँग्रेसियों से मिली भगत का भी आरोप लगा रहे थे। नौ समाजवादियों के 'दस चूल्हे' यह कहावत शायद पहली बार जेल में ही बनीं। वे मिलकर रह ही नहीं सकते थे। वे दूसरों की तो आलोचना करते थे किन्तु अपने आचरणों को देखने की कभी चिंता नहीं करते थे। वे बार-बार जेल के अधिकारियों, कर्मचारियों और यहाँ तक सामान्य कैदियों से भी बदसलूकी करने में संकोच नहीं करते थे। मीसा की बैरिकों से निकलकर उन्हें सामान्य कैदियों से मिलना जुलना ज्यादा पसंद था। उन्हें उन जैसा बनने में अच्छा लगता था। इसके पीछे उनका तर्क था कि वे आम लोगों के साथ ही रहना चाहते हैं।

समाजवादी और साम्यवादी विचारों के कुछ मीसावादी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और तत्कालीन-भारतीय जनसंघ के कार्यकर्ताओं पर आरोप लगाया करते थे कि वे आंदोलन से डरते हैं जबकि हकीक़त में अंदर से वे ही अत्यंत डरे हुए थे, वे अक्सर कहते थे कि एक दिन हम सबको लाइन में खड़ा कर गोली मारी जानी है। उनका विश्वास था कि अब ज़िंदा जेल से निकलना मुश्किल है। उनमें से अधिकांश ने अपनी रिहाई के लिए बीस सूत्रीय कार्यक्रम का समर्थन भी कर रखा था। आपातकाल के बाद वे ही लोग जेल से बाहर आकर शेर की तरह दहाड़ने लगे। उन्होंने अपनी संख्या की तुलना में सत्ता पर अधिक हक प्राप्त करने के लिए लड़ना शुरू कर दिया। इस किस्म के लोगों की कलई तो तब खुली जब एक बार तीन चार दिन के लिए जेल में हड़ताल हो गई तब वे जेल के अंदर की दीवार फांदकर सामान्य बैरिकों से रोटियाँ माँगते पाए गए। वे जेल अस्पताल से मिले मक्खन तक को बेंच धूम्रपान और नशे की चीज़ें खरीद लिया करते थे उनमें कुछ लोग सभ्य व्यवहार के और सिद्धान्तवादी भी थे।

आपातकाल की घोषणा के ठीक 19 माह बाद लोकसभा के चुनाव हुए। सभी राजनीतिक दलों के कार्यकर्ताओं को छोड़ दिया गया और कहा गया कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और गैर राजनीतिक मीसाबंदियों को नहीं छोड़ा जाएगा परन्तु मुझे नहीं छोड़ा गया। भिण्ड जिले का शायद मैं ही एक अकेला कार्यकर्ता था जो पूरे साढ़े बीस माह जेल में रहा। ऐसा शायद मेरी सक्रियता और चुनावी राजनीति की योजना से किया गया था। संघ चालक श्री सुधर सिंह कुशवाह की रिहाई और मुझे संघ का मानकर जेल में रोक लिया गया। आखिर काँग्रेस बुरी तरह चुनाव में परास्त हुई और परिणाम के दूसरे दिन आपातकाल के हटाए जाने के बाद मुझे रिहा किया गया। ग्वालियर और भिण्ड मुझे जुलूस के लिए रोक लिया गया और मेरा सामान श्री नरेश जौहरी ने गाड़ी से मेरे गाँव पहले भिजवा दिया था। वे समझे कि मेरी मौत हो चुकी है इसीलिए केवल सामान भेजा गया है। सभी ने बहुत समझाया परन्तु सावित्री को तब तक संतोष नहीं हुआ जब तक उन्होंने मुझे प्रत्यक्ष देख नहीं लिया।

अंततः 1977 के आम चुनाव में श्रीमती इंदिरा गांधी और उनकी पार्टी को बुरी तरह पराजय मिली। यह भारतीय लोकतंत्र की अभूतपूर्व विषय भी थी। देश से आपातकाल हटा, हम सब रिहा हुए वे सुखद क्षण हमारे लिए अब केवल यादगार रह गए हैं। बाद तो सत्ता ने अपना प्रभाव दिखाया और राजनीति सेवा की बजाय एक विशेष किस्म के लोगों की क्रीतदासी बनकर रह गई इसके हम सब भुक्त

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भोगी हैं। मीसा और आपातकाल के ख़िलाफ़ भारत में एक बड़ा संघर्ष लड़ा गया और सच में तो वह संघर्ष आजादी के संघर्ष से किसी भी तरह से छोटा नहीं था। गांधी जी के नेतृत्व में लड़ा गया संघर्ष परकीयों के साथ था जबकि अपनों से लड़ना उससे भी अधिक कठिन दु:खदायी होता है। पहली आज़ादी की पूरी लड़ाई में मिलकर जितने लोग जेल में नहीं गए थे उससे कहीं ज्यादा आपातकाल के ख़िलाफ़ लड़ी गई दूसरी लड़ाई में सत्याग्रहियों ने आंदोलन किया। इस दूसरी आज़ादी की लड़ाई में सवा लाख से ज्यादा लोगों ने स्वयं को जेल के लिए प्रस्तुत किया। इस सबके बावजूद आपातकाल के ख़िलाफ़ संघर्ष को भारत के इतिहास में उपयुक्त स्थान भी नहीं मिल सका। इसके लिए दूसरे कोई जिम्मेदार नहीं है। विभिन्न विचारों, वर्गों और समुदायों में बिखरी हुई तत्कालीन और वर्तमान राजनीति ने अपने मूल मुद्दे ही छोड़ दिए। प्रसिद्ध उपन्यासकार सलमान रश्दी के अनुसार-"इमर्जेंसी 615 दिन लम्बी रात थी, लेकिन इस अंधेरे में कुछ ऐसे सवाल पैदा हो गए हैं जिनका अभी तक जवाब नहीं मिला। इन सवालों पर लोकतंत्र के लिए सक्रिय इमर्जेंसी-विरोधी ताकतें भी गौर नहीं कर पाईं। उनसे उम्मीद की जाती थी कि जब लोकतंत्र बहाल हुआ तो सबसे पहले इन्हीं सवालों को हल करते। दूसरी आज़ादी के कर्णधारों को इसके लिए फुरसत ही नहीं मिली। नतीजा यह हुआ कि अब सरकार और पार्टी में फ़र्क़ खत्म सा हो गया है।" सलमान रश्दी से पूरी तरह सहमत न होते हुए भी इतना तो माना ही जा सकता है कि आज़ादी के दीवानों से कहीं भूल अवश्य हुई है जिसका नतीजा पता नहीं हमें कब तक भुगतना पड़ सकता है।

— ई-100/44,
शिवाजी नगर, भोपाल-16

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कप्तान सिंह सोलंकी

संविधान के लिए खिलवाड़ और लोकतंत्र को चुनौती था आपातकाल

25 जून 1975 की वह काली रात्रि, जिसके अंधेरे में देश पर आपातकाल थोपा गया, आज भी एक अजीब तरह की सिहरन पैदा करती है। कष्ट इस बात का नहीं था कि मुझे गिरफ़्तार कर जेल जाना पड़ सकता है, चिंता व्यक्ति की नहीं समष्टि की थी। भारत को स्वतंत्रता एक लम्बे कालखण्ड तक लगातार संघर्ष करने के बाद मिली थी और उस स्वतंत्रता को एक व्यक्ति के लिए समाप्त किया जा रहा था। आसपास के सभी देशों में आज़ादी, तानाशाही के बूटों से कुचली जा चुकी थी फिर चाहे वह पाकिस्तान हो या बंगलादेश, मलेशिया हो या अफगानिस्तान या फिर चाहे रूस, चीन ही क्यों न हो स्वतंत्रता की रेलगाड़ी पटरी से उतर चुकी है अब अगर भारत में लोकतंत्र समाप्त किया गया तो समूची एशिया में उसका नाम लेने वाला नहीं बचेगा, यही सोचकर सारी रात करवटें बदल कर काटी। सुबह 5 बजे से ही भारतीय जनसंघ के साथ राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारियों की खबरें आना शुरू हो गई थीं। सभी शुभचिंतक सलाह दे रहे थे कि मैं कुछ दिनों के लिए भूमिगत हो जाऊँ परंतु मेरा मन गवारा नहीं कर रहा था कि मैं मुँह छुपाकर भागता फिरूँ। तत्कालीन संघ के अधिकारियों से चर्चा हुई और तय किया कि मुझे स्वयं गिरफ्तारी दे देना चाहिये।

मैं उस समय पार्वताबाई गोखले स्नातकोत्तर महाविद्यालय में अंग्रेजी का प्राध्यापक था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का दायित्ववान कार्यकर्ता होते हुए तब तक जिला प्रशासन के हत्थे नहीं चढ़ा था और अधिकांश अधिकारी मुझे मीसा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu.
में बंद करने के पक्ष में नहीं थे। मेरे से अधिक सक्रिय मेरे ही नाम से मिलते-जुलते बहुचर्चित प्रो. कोमल सिंह सोलंकी थे। हमारे प्रियजनों को लगता था कि यदि प्राध्यापकों में गिरफ्तारी होनी है तो बहुत से ऐसे लोग हैं जो जेल में बंद रहने योग्य हैं। मैं तो सीधा-सादा अध्यावसायी अध्यापक हूँ मुझसे भला समाज और शासन को क्या खतरा? फिर कुछ लोगों ने बताया कि वे मेरा नाम गिरफ्तार होने योग्य लोगों की सूची में देखकर आये हैं। फिर कुछ कहते और शायद वे मुझे धैर्य दिलाने के लिए ही कहते कि उन्होंने प्रोफेसर श्री सोलंकी जैसे शब्द तो सूची में देखे हैं। कह नहीं सकता कि कप्तान सिंह है या कोमल सिंह। इस सब चर्चा को मैं हवा में उड़ा देता और कहता 'पुलिस कोमल को क्यों पकड़ेगी, गिरफ्तार करेगी तो कप्तान को करेगी।'

और सच में ही एक दिन मुझे गिरफ्तार करने पुलिस दरवाजे पर आ गई। मैंने संक्षिप्त-सी तैयारी की और हँसते हुए उनके साथ चल दिया। बच्चे तब बहुत छोटे थे श्रीमती जी की चिंता स्वाभाविक थी परंतु राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता को उन सबकी चिंता करने की आवश्यकता नहीं थी। वैसे भी मैं घर में रहता कितना था? कॉलेज या कार्यालय (राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का ग्वालियर का कार्यालय) के बाद जो समय मिलता वह प्रवास में चला जाता। इस कारण बच्चों की देखभाल की जुम्मेदारी उन्हीं को सम्हालना थी। उनके लिए तो मैं उसी तरह था जिस तरह की कहावत अक्सर कही जाती है — ''जैसे कंता घर रहें वैसे ही रहें विदेश'' फिर भी गिरफ्तारी और जेल की ख़बर का असर मुझसे ज़्यादा मेरे परिवारजनों पर ही अधिक पड़ा था।

मुझे केन्द्रीय कारागृह ग्वालियर पहुँचाया गया। वहाँ 21 माह तक रहा। जेल के अन्दर की गतिविधियों के सम्बन्ध में अभी तक बहुत कुछ जानकारी सार्वजनिक हो चुकी है। हम सबने जेल में तमाम प्रकार की सामूहिक गतिविधियाँ चला रखी थीं। सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण 'भावी भारत का स्वरूप' चिंतन रहा जिसमें अधिक तन्मयता से हम इसलिये भी लगे रहे क्योंकि उस समय हमारे पास चिंतन के लिए पर्याप्त समय था। इस संपूर्ण चर्चा का समन्वयक और सूत्रधार मैं ही था। हमने आरंभ में विषय निर्धारित किए, उसके लिए समितियों का गठन किया गया। इन समितियों ने गहन मनन चिंतन करके अपने प्रतिवेदन तैयार किये। संयोजकों ने उन प्रतिवेदनों को प्रस्तुत किया। उन पर संशोधन आये। जमकर चर्चा हुई और अंत में भावी भारत के स्वरूप पर एक दस्तावेज तैयार किया गया। इस चर्चा के अलावा जेल में योग, व्यायाम, खेल, स्वाध्याय, पठन-पाठन, चर्चा परिचर्चा, हास्य परिहास निरंतर चलता रहता था।

मैंने जेल जीवन को गहन चिंतन के लिए चुना, मैं सोचता रहता था कि सभी प्रकार से संसाधनों से परिपूर्ण अपना यह भारत अन्य देशों की तुलना में पिछड़ा क्यों है? वे कौन-सी परिस्थितियाँ हैं कि एक अरब जनसंख्या वाले भारत पर एक व्यक्ति मनमानी करके आपातकाल लाद सकता है? चिंतन की धारा चलती तो कभी महाभारत काल के पतन की ओर चली जाती तो कभी परकीयों के हमलों तक सिमट जाती। एक हजार साल पूर्व की स्थितियों पर ही विचार करें तो हम पाते कि इतने बड़े समर्थ भारत पर मुस्लिम हमलावर आक्रमण करने का दुस्साहस कैसे जुटा सकें? वे तो पहले लुटेरों के रूप में आये थे। जब उन्होंने भारत की आंतरिक स्थिति देखी तो फिर उनकी रुचि शासन सूत्र सम्हालने में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बढ़ी। धर्मांतरण का उन्होंने सहारा लिया। मुस्लिम हमलावर शासक क्रूरता भी इसलिये करते थे ताकि भारतीय समाज टूट जाये परंतु वे अपने मिशन में सफल नहीं हो सके। उस समय भारत की बाह्य शक्ति कमज़ोर भले ही हों आंतरिक अध्यात्मिक शक्ति और प्रबल हो गई थी। चारों ओर निराशा की स्थिति में भी भारत एक था। देसी राजा आपस में लड़ रहे हों वे मुस्लिम शासकों की भले ही अधीनता स्वीकार कर रहे हो परंतु भारतीय समाज उस समय भी एकजुट बना रहा। भारतीय समाज के तीर्थ त्यौहार, परंपराएँ, संयुक्त परिवार प्रणाली यथावत चलती रही। यही कारण है कि उस समय को 'भक्तिकाल' कहा गया।

मुस्लिम हमलावरों और शासकों के अत्याचार ज्यों-ज्यों बढ़ रहे थे भारत की अध्यात्मिक शक्ति भी बढ़ती जा रही थी। आम निरक्षर भारतीय भी मान रहा था कि यह स्थिति अधिक समय तक नहीं चलने वाली, आम भारतीय भले ही भगवान के सहारे हो गया हो पर उसका धैर्य नहीं टूटा था। उल्टे विदेशों से हमलावर अंदर से टूट रहे थे। मुस्लिम शासक आपस में लड़ने लगे। इसी बीच सन् 1600 के आसपास अंग्रेज व्यापारी व्यापार करने के लिए भारत आये। प्रारंभ में तो भारतीयों ने विदेशी सामान नहीं खरीदा, तो चालाक व्यापारियों ने दूसरे हथकण्डे अपनाना शुरू किया। यूरोपीय व्यापारियों को तत्कालीन मुस्लिम शासकों ने महत्त्व देना शुरू कर दिया तो फिर ईस्ट इंडिया कम्पनी सक्रिय हो गई। हमारा कच्चा माल यूरोप जाने लगा और उसके बदले में उसी कच्चे माल से बनी सामग्री भारत के बाजारों में आने लगी।

भारत में जब ईस्ट इंडिया कम्पनी का जाल फैल गया जब ब्रिटिश हुकूमत ने राजनीतिक दृष्टि से अपनी सक्रियता बढ़ा दी। उसने प्रत्यक्ष सत्ता की बागडोर सम्हाल ली। वायसराय से लगातार कलेक्टर और सेना के सभी अफसर इंग्लैंड से आने लगे। अंग्रेजों ने अपनी राजनीतिक सत्ता को स्थायी बनाने के लिए भारत की फूट का लाभ तो लिया। उन्होंने इस बात पर भी विचार किया कि सत्ता पर लम्बे समय तक मुस्लिमों का कब्जा होने पर भी मुसलमान शासक भारत पर पूरा नियंत्रण करने में सफल क्यों नहीं हो सके। इसके लिए उन्होंने गहन चिंतन किया। तब उनकी समझ में आया कि जब तक भारतीय समाज को अंदर से नहीं तोड़ा जायेगा हम सफल नहीं होंगे।

जेल में रहते हुए हम चिंतन कर रहे थे। मैंने विचार किया अंग्रेजों ने भारतीयों का मानस बदलने के लिए हमारी शिक्षा पद्धति में बदलाव किया। जिसके कारण अंग्रेज शासकों को सत्ता संचालन के लिए नीचे के कर्मचारी तो मिले ही हम अंदर से भी टूटने लगे। हमारा रहन सहन ही अंग्रेजों जैसा ही हो गया बल्कि हमारी सोच भी वैसी ही होती चली गयी। पहले आम भारतीय भले ही निरक्षर हो परंतु अंदर से पर्याप्त शिक्षित ही नहीं तो परिपूर्ण ज्ञानी होता था। निरक्षर कबीर अपने आध्यात्मिक ज्ञान के बल पर संसार को ललकार सकते थे। तुलसीदास किसी स्कूल कॉलेज में पढ़ने नहीं गये थे परंतु उनकी रामायण जन-जन में लोकप्रिय हो गई। सूरदास जन्मांध थे पर उनकी कविता आँखवालों को भी भक्ति ज्ञान से झकझोरने के लिए पर्याप्त थी और अब अंग्रेजी शिक्षा के कारण भारतीयों ने बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ तो हासिल कर ली किन्तु अंदर से वे खोखले होते चले गये।

इसके बाद सन् 1885 में एक अंग्रेज लार्ड एच.ए. ह्यूम ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की। उसकी स्थापना का उद्देश्य भारत में अंग्रेजी शासन को शक्तिशाली बनाना था। सन् 1857 के प्रथम स्वातंत्र्य आंदोलन से अंग्रेज शासक बुरी तरह डर गये थे। इसलिये उन्होंने एक ऐसी पार्टी का निर्माण किया जिसके कार्यकर्ता नेता अंग्रेजों की मदद करते रहें। प्रारंभ में अनेक दशकों तक ऐसा हुआ भी। कांग्रेसी नेता आपस में बुरी तरह लड़ते हुए स्वयं को अंग्रेज भक्त साबित करने में लगे रहते थे। परिणामस्वरूप भारत का बहुसंख्यक समाज जो मुस्लिमों के अत्याचारों से नहीं टूटा था अपनों की अंग्रेज परस्ती से टूटने लगा।

इस बीच स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानंद, लोकमान्य तिलक, मदन मोहन मालवीय, राजा राममोहन राय आदि महापुरुष अपने अपने ढंग से समाज की पतनावस्था से भारत को उबारने का प्रयास कर रहे थे परंतु सहस्त्रों वर्षों की दुरावस्था से ग्रस्त भारतीय समाज में जागृति इतनी जल्दी नहीं आ सकती थी कि इन तमाम परिस्थितियों का मुकाबला सक्षम ढंग से किया जा सके। इन सामाजिक राजनीतिक सरोकारों के बीच एक युवक ऐसा भी आया जो इन सब बातों का समग्रता से अध्ययन कर रहा था। यह युवक और कोई नहीं डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ही थे। वे कांग्रेस के उग्रवादी दल के साथ काम करते हुए भी नरमवादी नेताओं के सम्पर्क में थे। उन्होंने आज़ादी के लिए संघर्षरत नेताओं को नज़दीक से देखा था। उन्हें लगा कि यदि भारत को आज़ादी मिल भी गई और नेतृत्व ऐसे लोगों के हाथ में आया भी तो भारत का कोई अधिक भला होने वाला नहीं है। इस सबके लिए ज़रूरत है भारत में जागरण का ऐसा वातावरण खड़ा करने की जिसमें से सक्षम नेतृत्व पैदा हो सके। इसके लिए अनुशासन, समर्पण और सेवा भाव आवश्यक है। डॉ. हेडगेवार ने समान विचारों के लोगों को संगठित करना शुरू कर दिया और विजयदशमी सन् 1925 को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसा संगठन इस देश को दिया।

दूसरी ओर महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वतंत्रता का आंदोलन जारी रहा। इस बीच दुनिया भर में साम्राज्यवाद के ख़िलाफ़ जबर्दस्त वातावरण बना और ब्रिटिश साम्राज्य का पलायन शुरू हुआ। अंत में भारत को भी स्वतंत्रता मिली किंतु अंग्रेजों की कूटनीति फिर काम कर गई। वे भारत को एक संगठित राष्ट्र के रूप में नहीं देखना चाहते थे। उन्होंने भारत को द्विराष्ट्र और बहुराष्ट्र कहना शुरू कर दिया और ऐसी स्थितियाँ पैदा कर दीं कि भारत विभाजन हो गया। कांग्रेस के कथित संघर्षशील नेता भी अंग्रेजों की इस चाल में आ गये। इसका कारण यह भी हो सकता है कि वे लम्बे समय तक आंदोलन चलाने से थक गये थे या फिर वे कुर्सी प्राप्त करने के लिए आतुर थे। मोहम्मद जिन्ना जो जाति से भले ही मुसलमान रहे हों विचारों से अंग्रेज थे, के नेतृत्व में भारत का विभाजन हुआ। इसीलिए 15 अगस्त 1947 को मिली आज़ादी को डॉ. संपूर्णानंद जैसे मनस्वी ने 'अधूरी क्रांति' की संज्ञा दी थी। गांधी जी जैसे लोग भी तब यह सोचते थे कि आज़ादी मिल जाने के बाद देश में ऐसा वातावरण खड़ा कर दिया जायेगा कि रामराज्य फिर लाया जा सकेगा। इसलिये उन्होंने साफ कहा कि अंग्रेजों के ख़िलाफ़ संघर्ष करने वाली कांग्रेस सभी वर्गों और विचारों की जमात है उसे या तो समाप्त कर देना चाहिये या उसका स्वरूप सेवादल जैसा सामाजिक परिवर्तन के अनुरूप बनाना चाहिये।

सत्ता प्राप्त होने के बाद सत्ता मदांध कांग्रेसियों को महात्मा गांधी का यह सुझाव स्वीकार नहीं था। सत्ता से कांग्रेस को तो दूर नहीं किया जा सका, गया उल्टे महात्मा गांधी को ही किनारे कर दिया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गया। महात्मागांधी की नृशंस हत्या के बाद सत्तासीन कांग्रेसी नेताओं ने गांधी हत्या का सर्वथा झूठा आरोप राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर मढ़कर उसे प्रतिबंधित कर दिया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और उनके सेवाभावी आदर्श कार्यकर्ता कुछ कांग्रेसियों को खटक रहे थे। प्रतिबंध के ख़िलाफ़ भारतीय संसद में कोई जब आवाज़ नहीं उठी तो फिर भारतीय जनसंघ की स्थापना की गई। केन्द्र सरकार में मंत्री रहे डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी को नई पार्टी का अध्यक्ष बनाया गया। कांग्रेस महात्मा गांधी की मंशा के विपरीत स्वतंत्रता का संपूर्ण श्रेय स्वयं लेकर मनमानी पर उतर आई तो राम मनोहर लोहिया, आचार्य कृपलानी आदि के नेतृत्व में कांग्रेस से ही अन्य नये दलों का गठन किया गया।

इस सबके बावजूद देश भर में अल्पसंख्यक, वनवासी अनुसूचित समाज के विभिन्न वर्गों को लड़ाकर कांग्रेस का एक छत्र राजनीतिक साम्राज्य कायम हो गया। महात्मा गांधी का सपना तो दूर कांग्रेस के शासनकाल में आम आदमी की आवाज़ भी दबाई जाती रही। लोकनायक जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में गुजरात के युवकों ने जब सत्याग्रह किया, मध्यप्रदेश में संविद के प्रयोगों और इलाहाबाद हाईकोर्ट के फैसले से कांग्रेस के ख़िलाफ़ वातावरण जो बना उसे कांग्रेस की तत्कालीन नेता एवं प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने आपातकाल लगाकर हजारों नेताओं को जेल में बंद कर तथा अख़बारों पर सेंशरशिप लगा कर अपने अनुकूल करना चाहा जिसके विरोध में सभी दल एकजुट हुए और देश में एक राजनीतिक विकल्प जनता पार्टी के रूप में सामने आया।

जेल में बंद रहते हुए हम लोग राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की निरन्तर शाखाएँ लगा रहे थे और नित्य विचार करते रहते थे कि देश को इस दुरावस्था से कैसे उबारा जाये। हमें जेल में भी साफ लगता था कि यदि सत्ता में जनता पार्टी भी आ गई तो भी कोई ख़ास परिवर्तन होने वाला नहीं है और आज जब हम मध्यप्रदेश में सत्ता में है और केन्द्र में पाँच साल सत्ता में रह आने के बाद भी नहीं लगता कि इससे संपूर्ण परिवर्तन हो जायेगा। परतंत्र भारत में आज़ादी के लिए संघर्ष करते हुए जो आशंकाएँ डॉ. हेडगेवार के मन में थी वैसे ही आशंकाएँ आज हमारे मन में बदस्तूर मौजूद हैं। विभिन्न जाति वर्गों में बँटा यह समाज कई दृष्टियों से आज भी स्वतंत्र नहीं है। आज देश में आपातकाल नहीं है परन्तु राजनीतिक परिस्थितियाँ ऐसी हैं कि बिना किसी घोषणा के आपातकाल लगा हुआ है। इन स्थितियों से हमें देश को उबारना है तो देश में फिर एक बार प्रभावी जनजागरण की आवश्यकता है जो स्वस्थ लोकतंत्र की स्थापना कर सकें।

— आकृति गार्डन,
नेहरू नगर, भोपाल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घनश्याम सक्सेना

पुनर्स्मृति के आईने में आपातकाल

गूँगी संसद बहरे सांसद संविधान बंदी... जिस कवि ने उपरोक्त पंक्तियाँ लिखीं वह निश्चय ही आपातकाल की चरित्रगत विशेषताओं को मात्र छह शब्दों में कलमबंद करने में सर्वथा समर्थ था। स्वतंत्र भारत के इतिहास में एक काल ऐसा भी आया जो परतंत्र काल से भी ज़्यादा त्रासद, कारुण और अमानवीय था। क्या राजसत्ता की लिप्सा हमें निरंकुश अधिनायकवाद की उस सीमा तक पहुँचा देती है, जहाँ हम प्रतिबद्ध न्यायपालिका, कठपुतली कार्यपालिका और भोथरी खबर पालिका सुनिश्चित करके डेमोक्रेसी को डेमनोक्रेसी में बदल देते हैं। पच्चीस जून 1975 का वह काला दिन एक ऐसा ही दिन था जब प्रजातंत्र की समष्टि निहित स्वार्थ की व्यष्टि की अज़दही पकड़ में जकड़ गई। देश में आपातकाल लागू हो चुका था।

मैं मध्यप्रदेश वन विभाग की पत्रिका 'वनश्री' का संपादक था और विभाग का जनसम्पर्क कार्य देखता था। सभी संचार-माध्यम सेंसर की प्रेतछाया में थे। 'वनश्री' तो शासकीय पत्रिका थी और उसे सेंसर के चश्मे से नहीं देखा जाना चाहिए था, लेकिन 'वनश्री' से सम्बन्धित एक आपातकालीन प्रसंग यह बताने के लिए काफी है कि इमरजेंसी की अवधारणा को असली जामा पहनाने वाला ढाँचा कितना जड़, सक्षम और ज़ालिम था। सत्तर के दशक में 'पर्यावरण' शब्द सार्वजनिक भाषा और मुहावरे का अंग नहीं बन पाया था। 'वनश्री' में वन और वन्यप्राणियों के संरक्षण सम्बन्धी लेख छपते थे। चूँकि उस समय यह पत्रिका वन-वानिकी के लोकप्रिय पक्ष को उजागर करने वाली एकमात्र हिन्दी पत्रिका थी, अतः इसमें देश भर के इन्हीं विषयों के लेखक लेख भेजा करते थे। सन्

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1975 के प्रारंभ में इस पत्रिका में 'युद्ध के समय वनों का सामरिक महत्व' शीर्षक से एक लेख छपा। बात आई गई हो गई। जुलाई 1975 में शासन की ओर से मुझे सीधे एक 'अति गोपनीय' पत्र प्राप्त हुआ जिसमें मेरा जवाब तलब किया गया था। शासन का मत था कि ऐसा लेख छापकर संपादक ने देश की सुरक्षा के लिए संकट उत्पन्न कर दिया है। 'अत: सात दिन के अंदर कारण बताएँ कि लापरवाही और कदाचरण के लिए आपके विरुद्ध अनुशासन की कार्रवाई क्यों न की जाए।'- पत्र का निष्कर्ष था। अब मुझे याद आया कि विनोबा जी ने इसे अनुशासन पर्व की संज्ञा यूँ ही नहीं दे दी थी। 'शासन' ने काफी रिसर्च करके कंडक्ट रूल्स की तमाम कंडिकाएँ उद्धरित की थीं, जिनके तहत मुझे टाँगा जा सकता था। मज़े की बात यह थी कि इसके विषय में मेरे विभागाध्यक्ष को कोई भी जानकारी न थी।

विभागाध्यक्ष एक सज्जन, सुहृदय और सुलझे हुए व्यक्ति थे। जब मैंने उन्हें यह प्रकरण बताया तो उन्होंने केवल इतना कहा कि शासन ने तुम्हें सीधे पत्र लिखा है इसलिए तुम सीधे उत्तर भेजो। दो महीने तक मुझसे बहुत से जवाब-सवाल किए गए। अंतत: मुझे विभागाध्यक्ष ने बताया कि उन्होंने तत्कालीन मुख्यमंत्री पी.सी.सेठी से अपने सम्पर्कों का सदुपयोग करके मुझे बचाया था। उस लेख का लेखक यू.पी. का एक रिटायर्ड फौजी अफ़सर था, जिसने अपने लेख के अधिकांश भाग में द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जर्मनी के ब्लेक फ़ारेस्ट में युद्ध के माडलों की चर्चा की थी। मेरी खुशकिस्मती थी कि किसी से मेरी शत्रुता नहीं थी वर्ना इस प्रकरण में मुझे टाँगने के लिए इमरजेंसी के पास काफी नख-दंत थे। इस प्रकरण में तो मैं बच गया लेकिन शासन ने मेरी पुस्तक 'द फ़ारेस्ट क्राइसिस' के प्रकाशन की अनुमति न देकर अपनी अप्रसन्नता तो व्यक्त कर ही दी। मेरे एक मित्र स्व. आग़ा सुल्तान हैदरी ने इमरजेंसी को लेकर जो नज़्म लिखी थी उसकी कुछ पंक्तियाँ प्रासंगिक हैं —

उनकी तलवार और अपना सिर
जान की ख़ैर मनाए साहब।
खूब अल्ला का दिया मौक़ा है,
आइए! बुग्ज़ सुनाएँ साहब।।

उन्होंने लोकनायक जयप्रकाश नारायण की गिरफ्तारी पर एक और नज़्म लिखी थी जिसकी चंद लाइनें मुझे याद हैं —

बाज़ारे बुग्ज़ो-किना में क्यों है चहल-पहल
नीलाम किस बुजुर्ग की दस्तार हो गई।
कागज़ की नाव एक दिन जो पार हो गई,
इससे समंदरों की कहाँ हार हो गई।।

श्री रामानंद सिंह (बाद को भाजपा-सांसद) जो इमरजेंसी के तत्काल बाद मध्यप्रदेश में गठित सरकार में वनमंत्री बने, मेरे पूर्व परिचित थे। उन्होंने मेरे जैसे अनेक परिचितों, मित्रों और प्रशंसकों के आग्रह पर 'अतीत के दर्पण में आपातकाल' शीर्षक पुसतक लिखी जो सन् 2000 में प्रकाशित हुई। इसमें अनेक ऐसे उदाहरण दिए गए हैं जिनमें प्रतिपक्षी नेताओं को तो छोड़िए स्वयं काँग्रेस सत्तापक्ष के ऐसे कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी का उल्लेख है जिन्हें स्थानीय मंत्री के विरोधी गुट का होने के कारण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जेल में ठूँस दिया गया था। इस पुस्तक की भूमिका में जार्ज फर्नांडीज ने लिखा था— ''आपातकाल के प्रति आम आदमी की प्रतिक्रिया तथा समकालीन राजनीतिक बिरादरी का हस्तक्षेप इस पुस्तक की प्रत्येक पंक्ति में दर्ज है। लेखक अब इसमें उस वर्तमान पीढ़ी को भागीदार बनाना चाहता है जो 1975-77 के काले युग में जन्मी थी और अब जवान हो रही है। उसने इस पीड़ा को भोगा नहीं है। मगर आज इस देश में अवसरवाद, व्यक्तिवाद और वंशवाद की वे शक्तियाँ पुनः सिर उठाने लगी हैं जिन्होंने आपातकाल के माध्यम से समाज को उत्पीड़ित किया था। इसलिए नई पीढ़ी तक आपातकाल के उत्पीड़न को पहुँचाना बहुत ज़रूरी है।''

मैं जब आपातकाल की आँच से बाल-बाल बच गया तब मुझे मेरे मित्र स्व. हैदरी ने दो पंक्तियाँ लिख कर भेजीं —

न तो की आह, आर लगा और न मीसा।
तुम तो महफ़ूज़ हो खुदा का शुक्र करो।।

सन् 1975 के अंत में मैं रायपुर में आयुक्त के समक्ष बैठा था। आयुक्त थे उस युग के अति व्यवहारिक, वर्ल्डली वाइज़ और कामयाब अफ़सर डी.जी. भावे। वहाँ एक बैठक चल रही थी। सी.ए.ओ. की ऐसी की तैसी की जा रही थी। ''जब सरकार ने फेमिली प्लानिंग के आपरेशनों का एक लक्ष्य दिया है तो फिर उसे निर्धारित समय में पूरा क्यों नहीं किया गया। हिम्मत अमली से काम लो। टार्गेट पूरा होना चाहिए। क्या सब अविवाहित और बुड्ढे मर गए हैं? प्रत्येक आपरेशन पर सरकार पैसा दे रही है। तुम्हारे पड़ोस में एक एग्ज़ीक्यूटिव इंजीनियर रहता है, उससे मस्टर रोल बनाना सीखो।'' बेचारा सी.एम.ओ.? शायद ऐसी ही व्यवस्था के प्रत्युत्तर में यह नारा बना था —

टाँके सड़ रहे हैं। डंडे पड़ रहे हैं। हम सुनहरे भविष्य की ओर बढ़ रहे हैं।

इमरजेंसी के दिनों में सबसे ज़्यादा रकम खुशामदियों और चुगलखोरों ने काटी। अतिउत्साही तंत्र 'मोर फ़ेयफ़ुल मैन द किंग' की भावना से आपातकाल को असली जामा पहना रहा था। एक सरकारी दफ्तर में आदेश था कि जो भी पत्राचार टाइप होता है उसे केवल एक कार्बन से टाइप किया जाए। शाम पाँच बजे एक पुलिसवाला वहाँ आएगा और सारे कार्बन थाने ले जाएगा। सरकारी दफ्तरों में प्रतिपक्षी नेताओं के मित्रों और संबंधितों की सूचियाँ बाक़ायदा तैयार की जा रही थीं। यदि आपने मैत्री शत्रुता की तो मैं धीरे से आपका नाम उस सूची में जुड़वा कर आपके कम्पलसरी रिटायरमेंट का केस बनवा सकता था। कहावत है कि दिवाली का लुटा और होली का पिटा कहीं शिकायत नहीं कर सकता। आपातकाल पर यह कहावत शब्दशः लागू होती थी।

इमरजेंसी के दिनों में संभवतः 1976 में भोपाल में एक कवि सम्मेलन और मुशायरा हुआ। उन दिनों पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ने लायक कुछ रहता नहीं था। कई अख़बारों ने तो संपादकीय की जगह खाली छोड़ना शुरू कर दिया था। कवि सम्मेलन में खूब भीड़ थी। निर्भय हाथरसी की यह पंक्तियाँ बेहद पसंद की गईं —

सुनो मेरी सरकार ज़माना चमचों का।
जय दिल्ली दरबार! ज़माना चमनों का।।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रसिद्ध काँग्रेसी शायर बेकल 'उत्साही' की यह पंक्तियाँ मुझे आज भी याद हैं —

गांधी का क़त्ल प्रार्थना सभा में नहीं हुआ।
गांधी का क़त्ल लोकसभा में किया गया।।

इन पंक्तियों पर बेकल को पाँच मिनिट तक भीषण दाद मिली थी। एक अनाम कवि की निम्नांकित पंक्तियों ने तो मुशायरा ही लूट लिया था—

हलके-हलके लोग मगर बातें कितनी वज़नी।
सोमनाथ को देश निकाला मठाधीश ग़ज़नी।।
बंगाले से चली हिमाले उलटी गंग बहे।
रानी अपना आगा ढाँको किससे कौन कहे।
मगर देश का दुश्मन है वह जो ख़ामोश रहे।।

— 4, प्रोफेसर्स कॉलोनी, भोपाल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संतोष कुमार शर्मा

आपातकाल : संघर्ष एक युवक का

दिनांक 25-26 जून 1975 को मध्य रात्रि में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने आपातकाल लगा दिया, साथ ही जनसंघ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं अनुसांधिक संगठन पर प्रतिबंध लगाने के बाद पदाधिकारियों को मीसा में बंद कर दिया गया। लंबे अंतराल बाद जब आपातकाल समाप्त नहीं हुआ तो आपातकाल हटाने हेतु आर.एस.एस. ने आंदोलन करने का निर्णय लिया। जिसमें जेल भरो आंदोलन प्रारंभ किया। मैंने दिनांक 20.01.1976 को सर्व श्री सुरेश गुप्ता, अशोक गर्ग (विदिशा), शंभू सोनकिया (होशंगाबाद) चन्द्रभान यादव, रमेश सिंह और मैं (संतोष कुमार शर्मा) चौक, भोपाल में प्रदर्शन किया। प्रदर्शन के पूर्व माला खरीदकर एक दूसरे को पहनाई तथा आपातकाल हटाने विरोधी नारे लगाए तथा जनता में बड़ी संख्या में पर्चे फेंके, 5 मिनट में ही चौक में बैठी पुलिस हमें गिरफ्तार कर थाने ले गई। ठंड बहुत थी हम सभी को लाकअप में बंद कर दिया। सर्दी के कपड़े भी पुलिस ने उतरवा दिये। सर्दी अधिक होने के कारण रात भर डंड बैठक, सूर्य नमस्कार, व्यायाम करके शरीर में गर्मी लाते रहे।

दूसरे दिन प्रातः आठ बजे टी.आई. सबलोक एवं अन्य पुलिस अधिकारियों के द्वारा सुरेश गुप्ता, अशोक गर्ग एवं शंभू सोनकिया को एक-एक करके 100-150 डंडे मारे। जब मेरा नंबर आया तो मेरी उम्र साढ़े चौदह वर्ष की थी। मेरा दुबला पतला शरीर देखकर टी.आई. ने ''बड़ा क्रांतिकारी बनता है'', कहते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हुए 10-15 डंडे मारे। इसके बाद लगभग 3-4 बजे कलेक्टर के पास पेश किया गया तथा हम सभी को मीसा के स्थान पर धारा 151 में भोपाल केन्द्रीय जेल में बंद कर दिया।

जिला प्रशासन की योजना के तहत दिनांक 2 फरवरी 1976 को धारा 151 हटाकर जेल से रिहा कर दिया। जैसे ही जेल के बाहर कदम रखा तो हम छः व्यक्तियों को 10-15 पुलिसवाले पुलिस वाहन में बिठाकर कोतवाली ले गये तथा शाम को ही डी.आई.आर. (भारतीय सुरक्षा अधिनियम) धारा-46 (1) बी में गिरफ्तार कर पुनः जेल में डाल दिया। राजनीतिक बंदी होने के बाद भी हम लोगों को हथकड़ी लगाकर न्यायालय में पेश किया। मैं बहुत छोटा था, दुबला होने के कारण मेरे नाप की हथकड़ी नहीं थी, हथकड़ी लगने के बाद भी मेरा हाथ निकल जाता था। मेरी उम्र छोटी होने के कारण संघ के प्रांत कार्यवाह श्री उत्तम चंद इसराणीजी ने श्री सीताराम यादव, अधिवक्ता से कहकर हम सभी की जमानत करवा दी, हमें यह ज्ञात नहीं हुआ कि जमानत किसने ली। दिनांक 09.03.1976 को जमानत पर जेल से छूटे।

आपातकाल होने से जेल के बाहर आने के बाद और अधिक संघर्ष करना पड़ा। स्कूल से नाम काट दिया गया, अन्य स्कूल लेने को तैयार नहीं। आपातकाल होने के कारण मित्र मंडली डरती थी, इस कारण कोई साथ खेलता भी नहीं था और न ही कोई घर आता भी था। मेरे पिताजी श्री शंकरलाल शर्मा, बी.एच.ई.एल. में भारतीय मजदूर संघ के पदाधिकारी होने से मुझे परिवार का सहयोग बहुत मिला। पिताजी उस समय अपनी विचारधारा के लोगों से धनसंग्रह कर मीसाबंदी परिवारों को आर्थिक सहयोग पहुँचाते थे। संघ के कार्यकर्ता श्री छोंकरजी की आटा चक्की थी वहाँ पर जो आटा इकट्ठा होता था मैं उसे ले जाकर जेल में बंद परिवार के घर आटा पहुँचाने एवं अन्य कार्य करता था। जेल में बहुत बीमार होने पर मीसाबंदियों को हमीदिया चिकित्सालय में भर्ती करते थे। श्री तपन भौमिक को डबल टाइफाईड जेल में हो गया था। इलाज हेतु हमीदिया में लगभग एक माह भर्ती रहे, उनकी देखरेख भी मैं निरंतर करता रहा। जब हशमत उल्ला वारसी को गंभीर अवस्था में जेल से हमीदिया चिकित्सालय लाया गया तो मैं मौके पर ही था परंतु इलाज के अभाव में उनकी मृत्यु हो गई।

आपातकाल हटने के बाद स्कूल में पुनः एडमिशन की अनुमति दी परंतु मेरे साथ मेरे पढ़ने वाले सभी छात्र नवीं से ग्यारहवीं में चले गये थे। मैं कक्षा नवीं में पढ़ने को तैयार नहीं हुआ तो मुझे गणित विज्ञान विषय छोड़कर कला विषय में ग्यारहवीं की प्रायवेट परीक्षा देकर पास हुआ। जिला न्यायालय द्वारा दिनांक 12.05.1977 को डी.आई.आर. के प्रकरण का निर्णय देते हुए मुख्य न्यायिक दण्डाधिकारी ने निर्णय देते हुए लिखा कि शांतिपूर्वक एक लोकतांत्रिक सरकार का विधिवत विरोध करने का अधिकार भारतीय नागरिक को संविधान के अंतर्गत दिया गया है। यह ध्यान में रखते हुए प्रजातंत्र को सुदृढ़ करने हेतु अनुमति देना न सिर्फ न्याय संगत होगा अपितु न्यायालय का परम कर्तव्य होगा। इस प्रकार प्रकरण समाप्त किया गया। मैंने शाह जाति आयोग में शिकायत की जिसकी जाँच रस्तोगी जाँच आयोग भोपाल द्वारा की गई थी।

मेरा संघर्ष यहीं समाप्त नहीं हुआ। 1987 में शासकीय सेवा में आने के पूर्व पुलिस चरित्र सत्यापन किया गया जिसे पुलिस की आपातकाल में बंद होने के कारण 'शासकीय सेवा के योग्य नहीं' है की टिप्पणी अंकित करने पर मेरी पदस्थापना नहीं हुई। मैंने तत्काल म.प्र. हाईकोर्ट, जबलपुर में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपील की। मेरे अधिवक्ता श्री कन्हैयालाल इसराणी जी थे। साथ ही मैं प्रशासनिक प्रयास भी निरंतर करता रहा। मेरे क्षेत्रीय विधायक श्री बाबूलाल गौर ने तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री अर्जुनसिंह से 15 अगस्त 1988 को भेंट कर मेरा आवेदन दिया तथा मुख्यमंत्रीजी से कहा कि संतोष कुमार शर्मा के साथ न्याय किया जाय तो मुख्यमंत्रीजी श्री अर्जुनसिंह जी ने सहृदयता दिखाते हुए एक माह के अंदर मूल नस्ती प्रस्तुत करने के निर्देश अपने सचिव को दिये। गृह विभाग में एक वर्ष से पड़ी फाईल पर ताबड़तोड़ कार्यवाही प्रारंभ हुई। अंतत: 'शासकीय सेवा के योग्य है' की टिप्पणी म.प्र. शासन गृह विभाग ने अंकित कर नवंबर-1988 को मेरी पदस्थापना आदेश लगभग 14 माह विलंब से जारी किया। इस कारण 650 कर्मचारियों से मैं कनिष्ठ हो गया।

— 217/2-सी,
साकेत नगर, भोपाल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शैवाल सत्यार्थी

महाकवि बच्चन और आपातकाल

आपातकाल की एक काली सुबह! आकाशवाणी ने एक समाचार प्रसारित किया —"हिन्दी-उर्दू के पाँच शीर्ष साहित्यकारों ने आपातकाल का समर्थन किया है।" इसमें पहला नाम सुनकर मैं हैरान रह गया, परेशान भी! यह नाम था — मेरे धर्म-पिता महाकवि श्री हरिवंशराय बच्चन का।

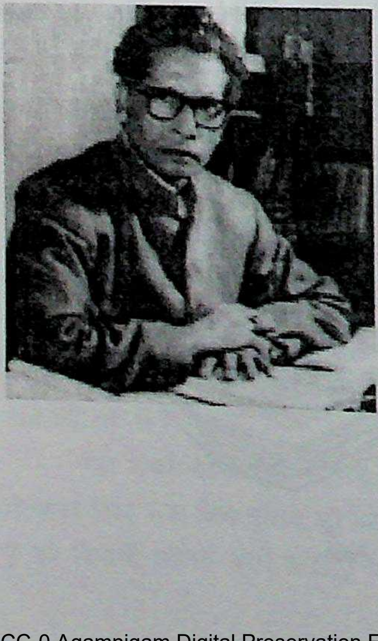

तभी, इसके तीन दिन बाद ही सोनीपत (हरियाणा) से मेरे अभिन्न प्रख्यात कवि मित्र प्रो. शैलेन्द्र गोयल का 13 जुलाई, 75 का पत्र आ पहुँचा। लिखा था —"तुम्हारे परम प्रिय बच्चन जी ने इन्दिरा जी के आपातकाल का समर्थन किया है। तुम तो इन्दिरा जी की नीतियों और आपातकाल के प्रबल विरोधी हो, तुम्हें यह समर्थन कैसा लगा?"

मैंने शैलेन्द्र से पूछा कि तुमने यह प्रश्न मुझसे ही क्यों किया? 22 जुलाई, 75 के पत्र में उन्होंने उत्तर दिया — "बच्चन जी से तुम्हारे आत्मीय संबंध हैं, अतः तुमसे पूछना ही था... यदि यह बच्चन जी की अन्तरात्मा का आलेख है, तब उससे असहमति या सहमति विचार के स्तर पर होनी चाहिए, और यदि यह उनकी दुर्बलता और सुविधापरस्ती का दस्तावेज है — तब उसका अस्वीकार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आत्मा के स्तर पर!''

अपने उत्तर में मैंने लिखा —''बच्चन-परिवार और नेहरू-परिवार के आत्मीय संबंध जग-जाहिर हैं। इस दृष्टि से, मेरी विनम्र सम्मति में यह समर्थन अत्यन्त स्वाभाविक ही है। कभी-कभी हमें अपने विचारों के विपरीत भी, निर्णय लेने पड़ते हैं। न जाने क्यों, हमें यह उनकी अन्तरात्मा की बात ही लगती है। उनके लिए किसी दुर्बलता या सुविधापरस्ती की बात सोच पाना भी मेरे लिए मुश्किल है।''

फिर भी, अपनी बात की पुष्टि के लिए मैंने 18 जुलाई, 77 को पापा (बच्चन जी) के लिए एक पत्र भेज दिया —''पापा, इधर कुछ समय से आप, अपने पत्र में — पत्र के लिए ध. (धन्यवाद) लिखते हैं, यह मुझे अच्छा नहीं लगता... क्या अमित-अजित (अमिताभ-अजिताभ) के पत्रों में भी आप ऐसा ही लिखते हैं? आपातकाल-संबंधी शंका समाधान की आपने स्वीकृति दी, तो मुझे लगा मेरे सिर से एक पहाड़ उतर गया है। कवि-मित्र से आपके संबंध में यह शंका सुनकर मन व्यथित हुआ, तो पूछना आवश्यक हो गया।

पापा, आपको स्मरण होगा, कुछ वर्ष पूर्व भी एक ऐसी ही उलझन आ गई थी, जब एक अन्य कवि-मित्र प्राचार्य जगदीश तोमर ने 'धर्मयुग' में प्रकाशित 'ईट्स को श्रद्धांजलि' वाली आपकी कविता की भावना पर शंका की थी कि आपने इसमें ईट्स की तुलना में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ की उपेक्षा की है... तब आपने अत्यन्त समाधानपूर्ण उत्तर दिया था। अब फिर एक बार आपके वैसे ही उत्तर की आतुर प्रतीक्षा है।''

तुरत ही, ठीक पाँचवें दिन मुझे पापा का 21 जुलाई, 77 का लिखा — मुझे लिखे उनके अनगिनत पत्रों में, अब तक का सबसे बड़ा और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पत्र मिला। इसे मैं आपातकाल का 'ऐतिहासिक दस्तावेज' कहूँगा। लिखा था —

13 विलिंगडन क्रिसेन्ट
नई दिल्ली-11
21.7.77

प्रिय शै. पत्र के लिए ध.।

'सर्वदेव नमस्कारः केशवं प्रति गच्छति' — किसी देवता को नमस्कार करो, वह भगवान को नमस्कार हो जाता है। धन्यवाद तुम्हारे लिए नहीं है। भगवान के लिए है।

●

द्वापर में एक राजा कंस हुआ। उसकी बहन का नाम देवकी था। देवकी का विवाह वसुदेव से हुआ। जब कंस अपनी बहन देवकी को विदा कर रहा था, आकाशवाणी हुई —

'तेरी इसी बहन की आठवीं सन्तान तेरा संहार करेगी!'

कंस ने तलवार खींच ली — 'देवकी को ही ख़त्म कर देता हूँ। न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी!'

वसुदेव ने प्रार्थना की — 'प्राणदान दीजिए। उसकी आठवीं सन्तान होते ही मैं सादर आपको समर्पित कर दूँगा।'

कंस ने वसुदेव को, देवकी को अपने साथ ले जाने की अनुमति दे दी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

●●

नारद जी कंस के पास पहुँचे। उससे बोले —'तुमने बड़ी भारी गलती कर दी। वसुदेव ने आठवीं सन्तान तुम्हें, वध करने के लिए देने को कहा है। क्योंकि आकाशवाणी के अनुसार उनकी आठवीं सन्तान तुम्हारी क्षारक होगी... पर आठवीं सन्तान कौन होगी, उसको भी समझने की कोशिश तुमने की?'

नारद ने चक्राकार आठ लकीरें खींचीं और क्रमश: एक-एक से आरम्भ करके, हर लकीर को आठवीं सिद्ध कर दिया —

कंस ने पूछा —'तो क्या मैं आठों सन्तानों को मार डालूँ?' नारद ने उत्तर दिया —'निश्चय!'

●●●

नारद चले जा रहे थे। रास्ते में श्री शुकदेव जी उनको मिले। अपने तप-बल से उनको पता लग गया कि नारद क्या करके लौटे हैं। बोले — 'हे महामुने, यह आपने क्या किया? कंस तो केवल आठवीं सन्तान को मारना चाहता था, आपने सात और मरवा दिए!'

नारद जी बोले —'सात सन्तानें और मारने की उसकी इच्छा का समर्थन मैंने इसलिए किया कि पाप का घड़ा जल्दी भरे और भगवान जल्दी अवतार लें!'

●

कलियुग में भी नारद अपना काम कराने के लिए अपने उपकरण खोज लिया करते हैं।

— शारदा प्रेस,
लोहिया बाज़ार, ग्वालियर-9

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ज्योत्स्ना मिलन

दरवाज़ा

यह एक समय है
जब कोई भी
तय नहीं कर पाता
कुछ भी
यह भी नहीं
कि उसे
दरवाज़ा खुला रखना चाहिए
या बंद

हर बार
दरवाज़ा खोलते हुए
थोड़ा-सा
हिचकिचाता है हाथ
अक्सर
तय नहीं कर पाती
कि मैं
दरवाज़े के इस तरफ़ हूँ
या उस तरफ़

— एम-4, निराला नगर,
भदभदा रोड, भोपाल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रॉबिन शॉ पुष्प

ओ मेरे राष्ट्रपिता

चुकी हुई अगरबत्ती के
शेष तिनके-सा
मैं हूँ
ओ मेरे राष्ट्रपिता!

प्रकाश वर्जित प्रदेश के
किस कोने में
मेरी गंध —
कीचड़ की तरह
थोप दी गई है
मुझे ज्ञात नहीं

मेरी नाक में
अपने ही गोश्त की
सड़ांध है
जो तीन शेरों की
खुराक बन गए
(ये तीन शेर
तुम्हारे तीन बंदरों के
परिवर्तित रूप हैं क्या...
ओ मेरे राष्ट्रपिता?)
मेरी हड्डियाँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जंग लगी बंदूक,
सस्ते जूते
यानी तुम्हारी अहिंसा के नाम पर
बर्फानी पड़ोसी के यहाँ
उछाल दी गई है

मेरा भविष्य —
लाल फीते में बाँधकर
रद्दी के भाव
बेचे जानेवाले काग़ज़ों में
ठूँस दिया गया है
और मैं
चंद यूनिटों का कार्ड लिए
सुबह से शाम तक
राशन की दुकान के बाहर झंडे-सा
गाड़ दिया गया हूँ और मेरे मुँह में
रोटी के बदले एक गीत ठूँस दिया गया है —
जय हे, जय हे, भारत भाग्य विधाता!
मेरे परिवार से
उसका घर छीन लिया गया
यह विश्वास दिलाकर कि
अब पूरा देश उसका घर है
उस जमीन पर —
राष्ट्र की प्रगति के लिए
कारख़ाने आवश्यक हैं ...
नक्शे बने,
परंतु जो भवन बना
वह किसी मंत्री का था
और मेरे पोते —
यानी मेरे बेटों के बेटे
काग़जी उपाधियों को फाड़-फाड़कर
उन पर थूक रहे हैं
कन्वोकेशन के गाउनों पर —
पेशाब कर
उनसे जूते पोंछ रहे हैं
क्योंकि उनके पास —
विश्वविद्यालय की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऊँची-ऊँची डिगरियाँ तो हैं
परंतु किसी मिनिस्टर की —
छोटी-सी सिफारिशी चिट नहीं...
और आज भी उन्हें —
जब नौकरी नहीं मिलती है,
जब घुन लगे खैराती गेहूँ से —
पेटों में ऐंठन पैदा होती है,
जब सर्दी के दिनों में —
किसी मंत्री-मुख्यमंत्री या अफसर का बेटा
होटल की किसी कोठरी में
उनकी बहन को
अंगीठी की तरह सेंकता है
तब वे चीखते हैं —
चिल्लाते हैं
ओ पितामह!
क्या इसी दिन के लिए —
हमारे पिताओं ने,
क्रांति की प्यालियों में
अपना लहू भर कर दिया था?
कि उसने
आज़ादी की पवित्र दस्तावेज़ पर
हस्ताक्षर कर
यह देश
इन्हीं लोगों के हाथों सौंप दिया जाए?

मैं जानता हूँ
ये प्रश्न हैं अनुत्तरित रहने के लिए...
क्योंकि हम (यानी जनता)
पहले हृदय थे,
अब केवल वोट हैं
जिन्हें तुम्हारे ही चुने हुए लोगों के लोग
हाथों में आज़ादी की दस्तावेज थामे
रुपयों के जोर पर
या फिर छुरे की नोंक पर
मतदान-केंद्रों तक खदेड़कर ले जाते...
और मत-पेटियों में डालकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
अपने लिए कुर्सियाँ खरीद लेते हैं
ओ मेरे राष्ट्रपिता!
माना, मैं चुकी हुई अगरबत्ती के शेष तिनके-सा हूँ
माना, यह राष्ट्र राख की तरह चुपचाप बिछा हुआ है
परंतु इसके नीचे की चिनगारी
अब सुलगने लगी है...
ईश्वर ही जाने —
इस पर कुर्सी रखकर बैठे हुए
तुम्हारे चुने लोगों के लोगों का क्या होगा
ईश्वर ही जाने क्या होगा?

जंगल की आग

माँ!
मेरा क्या अपराध था
तुमने मुझे इस जंगल में
क्यों छोड़ दिया?

यहाँ —
अपनी भाषा की बात
सभी करते हैं,
पर वे ही बच्चे —
पाठशाला की सीढ़ियों पर पैर धरते हैं,
जिन्हें विदेशी स्कूलों में दाखिला नहीं मिलता है
या जिनके अभिभावक निर्धन होते हैं...
माँ!
तुमने मुझे —
इस कौन-से जंगल में छोड़ दिया है?

विश्वविद्यालय ने मुझे
काग़ज़ों के बंडल दिए,
इस बोझ को लेकर
मैं कहाँ-कहाँ नहीं फिरा!
और आज महीने भर अपने को बेचकर,
जब दफ़्तर से बाहर आया हूँ,
तो मालूम हुआ है —
कि मेरे हाथों में सिक्के हैं,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मगर बाजार में राशन नहीं...

माँ!
तुमने मुझे —
इस कौन-से जंगल में छोड़ दिया है?
आज सोचता हूँ —
तो लगता है,

यहाँ सब गलत हो गया है...
वे लोग —
जो आज़ादी के लिए ख़ून देते रहे
बीमार और कमजोर होकर
रद्दी की टोकरियों में पड़े हैं...
और जो केवल भाषण देते रहे —
आज देश के भाग्य का निर्णय करते हैं,
और हममें से कुछ —
बहुत हुआ तो झंडे उठाकर
नारे लगाते हैं
और कुछ सड़कों पर तमाशा देखकर
चुपचाप अपने-अपने बिलों में
घुस जाते हैं,
वहाँ कितना तो अँधेरा है... धुप्प अँधेरा
क्या जंगल में आग लगेगी
तभी उजाला होगा माँ?

— रवीन्द्र नगर, सनवर बिल्डिंग,
95, सब्जी बाग, पटना-800004

('समर शेष है' से साभार)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बलदेव वंशी

चुप्पी

चिरते हुए देवदार की गंध को
आरे की भाषा में नहीं
मनुष्य होने की तमीज़ में पहचानते हुए
मैं जंगल में चुप हूँ!

सामने देवदार कटने का दृश्य है...

एक समय था जब देवदार भी चुप था
और काँटेदार कीकर कट रहा था
गंध तब भी थी
और आरा भी

पेड़ और आरे के मध्य फैले
प्रकाश वर्षों को
कुछ हाथों में बँटा देख
तब कीकर भी चुप था
आज मैं...

जब-जब हवा बही है तेज़
आवाज़ों का जुलूस
यों ही ख़त्म हुआ है
आरे पर
और बग़ल में बहती नदी के ढलानों पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ठट्ठ के ठट्ठ
मज़बूत लट्ठे
ऐसे ही लोटपोट गुज़रे हैं साक्षी में

पेड़ तब भी चुप थे
लगभग स्तब्ध
पेड़ आज भी चुप हैं!

('कंक' फरवरी, 76 में प्रकाशित)

पिरामिड

तुम क्या कर रहे हो?
'पत्थर ढो रहा हूँ।'
तुम क्या कर रहे हो?
'मिट्टी भिगो रहा हूँ।'
तुम क्या बना रहे हो?
'दीवार बन रही है।'
तुम क्या गढ़ रहे हो?
'मूरत बन रही है।'
तुम कहाँ जा रहे हो?
'राजा ने बुलाया है।'
आख़िर क्यों?
'उत्सव मनाया है।'

एक पर एक लहर
जनता गिर रही है उत्साह में
सदियों उधर
एक पर एक लहर
जनता घिर रही है उत्साह में
सदियों इधर

लोग काम में जुटे हैं
बिना जाने कि वे क्या बना रहे हैं
लोग जा रहे हैं
बिना जाने कि वे कहाँ जा रहे हैं

सिर्फ़ राजा जानता है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कि यह पिरामिड बन रहा है!
'होगा।'
सिर्फ़ राजा जानता है
कि पिरामिड का नक़्शा कैसा है!
'होगा'
सिर्फ़ राजा जानता है
कि पिरामिड के ऊपर सिर्फ़ एक चेहरा है!
'होगा।'

सिर्फ़ राजा को पता है
कि वह चेहरा इन्सान का और धड़ शेर का है!
'होगा।'
सिर्फ़ राजा को ही पता है
सदियों उधर
सिर्फ़ राजा ही यह सब जानता है
सदियों इधर...

इतिहास संदर्भ

कैसे
कैसे संदर्भ हैं अरक्षित दिशाओं के
जो खुल रहे हैं
खौफ़ के झिलमिलाते तिलिस्म के पर्दों-से
कि इतिहास-पुरुष के वक्ष पर लगे तमगे खनखनाते हैं
हवा में

आकाश में :
गुब्बार हैं
सेनाओं के जयनाद हैं
हाथियों की चिंघाड़ें हैं
घोड़ों की टापें हैं
: लिप्सा... लिप्सा...

जो रक्त-नद के वेग में बहते
इतिहास-पुरुष के वक्ष पर
टाँकती है तमगे
बाँटती है आलेख

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कलिंग पतन का शोक
पुंछ नहीं पाता कभी
दीख नहीं पाता कोई अशोक
(अ) शोक चक्र करता है पीछा
इतिहास में जीते कुणाल का
मेरा...

मैं जीता हूँ राजाज्ञा
: तिष्यरक्षिता... तिष्यरक्षिता...

आँखें गँवाकर कुणाल जीता है
सर्वस्व गँवाकर मैं जीता हूँ
भरोसे से
खोदता हुआ सुरंग
शकटार जीता है प्रतिशोध में

ये जीते हुए क्षण इतिहास को
कैसे दोहराते हैं?
पाटलीपुत्र में
कैसे संदर्भ हैं अरक्षित दिशाओं के
झिलमिलाते तिलिस्म के पर्दों से
कि इतिहास-पुरुष के वक्ष पर लगे तमगे
आज भी खनखनाते हैं
हवा में...

होता यही है

एक ही खेल के विभिन्न दृश्य हैं
आगे
पीछे। कुछ तब और कुछ अब घट रहे हैं

यदाकदा
बकरीदी दिन उभर आते हैं
सामूहिक वध
कभी दहाड़ते
कभी तुतलाते क्षण
बुलंद दरवाज़े या कीर्ति स्तम्भ बन जाते हैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक ही रक्तिम इच्छा लेती है आकार
कसमों के साथ
बाबर
तोड़ता है कीमती प्याले और भरे हुए मदिरा पात्र
(युद्ध के लिए युद्ध से पहले)
और कोई आज
भर रहा है उन्हीं प्यालों को
नयी कसमों के साथ
जब-जब ली जाती हैं राजसी कसमें
हाथों में कुरान, गीता या बाईबल उठा
(शांति भवन हो या युद्ध-शिविर)
हिंसक इच्छाएँ लेती हैं जन्म
और अदा की जाती हैं आरंभिक रस्में

होता केवल यही है
कि दृश्य बदल जाते हैं
कुछ वैसे आए थे
कुछ ऐसे आते हैं वैधानिक मार्गों से
नयी इच्छाओं के साथ
वही बकरीदी दिन
बाज से भारी पंख फड़फड़ाते हैं

होता यही है
कि दृश्य बदल जाते हैं!

('काला इतिहास' से साभार)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रकाश वैश्य

सत्ता का अंधा मोह

यदि तुम
पीढ़ियों तक
देश में अँधेरा पैदा कर
सत्ता की कुर्सी को
सुरक्षित रखना चाहते हो
तो तुम
उन कर्मों को करो
जो तुम्हें नहीं करना चाहिए
सत्ता की मायावी आँधी से
जनाकांक्षाओं की जलती मशालों को
बुझा डालो
आत्मा की आवाज़ को
जनमत के कब्रिस्तान में
गहरा दफ़ना दो
सूरज के आगे
पापों का काला - पर्दा टाँग दो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समाजवाद के नाम पर
स्वार्थों की रोटियाँ सेंकते रहो
देश के नक्कारख़ाने में
सिर्फ तुम्हारी ही
तूती सुनाई दे
और शेष सभी तथ्य
इतिहास की पृष्ठभूमि में
कालपात्र की तरह
जनता से छिपाकर रख दिये जावें
समग्र क्रांति
दिवा-स्वप्न बन जावे

— लोहा मण्डी,
ग्वालियर-474003

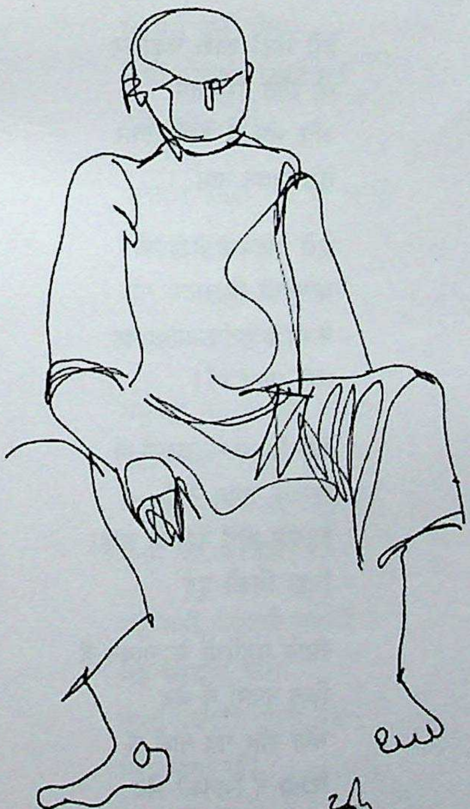

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बलवीर सिंह 'करुण'

कैसा प्रजातंत्र आया है

तेरी माटी शीश चढ़ाकर
जो सोते हर शाम
और भोर में जागें लेकर
तेरा पावन नाम

ऐसे देशभक्त बेटों को
कारागार मिला
कैसा प्रजातंत्र आया यह
मेरी भारत माँ!

राष्ट्र-देवता के चरणों में
मस्तक झुका नहीं
जिनके तीर्थ देश के बाहर
निष्ठा बिकी हुई

सिर्फ गड़रियों के गायन हैं
जिन नज़रों में वेद
गंगा और गंदे नाले में
दिखा न जिनको भेद

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज उन्हीं को राजमहल में
ऊँचा मान मिला
कैसा प्रजातंत्र आया यह
मेरी भारत माँ!

नागों के कंधों पर आसन
कितना विकट विरोध
भक्तों के माथे डसने का
चंदन पर आरोप

अमृतवर्षी हर बादल पर
लगा दिया प्रतिबंध
घूम रहे विष के व्यापारी
गली-गली निर्बंध

माली शील हरें बगिया का
किससे करूँ गिला
कैसा प्रजातंत्र आया यह
मेरी भारत माँ!

मलयज उगल रहा था लपटें
कितना झूठ प्रचार
और आग को बना दिया
उपवन का पहरेदार

मधुऋतु की हर बार उपेक्षा
पतझर का सम्मान
मावस की सौ-सौ मनुहारें
पूनम का अपमान

राष्ट्र नहीं, आदमी बड़ा है
यह सिद्धांत फला
कैसा प्रजातंत्र आया यह
मेरी भारत माँ!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आपातकालीन दीपावली

हर तरफ अमावस काली है
खुशियों के घर कंगाली है
जितना उजियारा दिखता है
सबका सब नकली जाली है।
कैसी मनहूस दिवाली है।

माली हो उठे दरिंदे हैं
बेहद लाचार परिंदे हैं
कब्रों में दफन देवता हैं
यह अलग बात, वे जिंदे हैं।

गूँगी परकटी जवानी है
मीसा की मेहरबानी है
सत्ता मदहोश निरंकुश है
कितनी बदनाम कहानी है।

फूलों के घर मातम का गम
काँटों के घर खुशहाली है।
कैसी मनहूस दिवाली है।

इस बार राम हारे हैं रण
जीता स्वेच्छाचारी रावण
भोले शिव का कैलाश छीन
उसके स्वामी बन बैठे गण।

अन्याय न्याय से जीत गया
सच कहने का युग बीत गया
विष का सागर लहराया है
अमृत का घट तो रीत गया।

सुरपुर के महलों की देखो
असुरों के कर में ताली है।
कैसी मनहूस दिवाली है।

जंगल उग आए नारों के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उमड़े तूफान प्रचारों के
कैसे गति बढ़े पालकी की
घायल हैं पाँव कहारों के।

हर कहीं घुटन, हर कहीं चुभन
खंडित हर आशा का दरपन
सपनों के कब्रिस्तानों में
कैसा पूजन? कैसा अर्चन?

मौसम का चेहरा जर्द हुआ
पतझर के मुख पर लाली है।
कैसी मनहूस दिवाली है।

— 67, केशव नगर,
अलवर-301001 (राजस्थान)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेमशंकर रघुवंशी

आकार लेती यात्राएँ

1.
करीने से सजते जाते
जूतों को क़तारों से सुरक्षित
चरण कमलों में और
चर्र-चर्र मुर्रादें छोड़ते
उसके नंगे पाँवों में कितना फ़र्क़ है

कौन जानता है?

उसके खौलते खून की आँच से
पिघल-पिघल कर
आकार लेती जा रही हैं यात्राएँ

हर तरफ बढ़ रहा है वह
काँटे खोबड़ों को रौंदता
पसीने की महक के साथ सर्राटे मारता
×××
एक बार सूरज ने
जमदग्नि प्रिया रेणुका को
दी थीं जो पादुकाएँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रह कर उभा ने खुद आज वही सूर्यकर्म
रतीराम के वंशज
आ रहे करते

पुश्तैनी वही प्रकाश साथ में लिए
रतीराम के बेटे
टकरा रहे रोज-रोज
मुखिया के उन बेटों से
हाथों में बन्दूकें-तलवारे हैं जिनके

उधर —
सूरज के झोले से
रतीराम के बेटे
लेते हैं — आग और
फूँक-फूँक कर उसको
लपटों में बदलते

इधर —
सत्ता चीन्ह-चीन्ह कर
सुख सिंहासन बाँटती
बर्फीली राजनीति के साथ
धधकती आग को
ठण्डक में तब्दील करने का
करिश्मा दिखाने के लिए
×××
सिलसिला शुरू हो गया है
धार-धार नदी बह रही है
हवा —
अन्धड़ में बदल कर
अपने अन्दर फँसी चीज़ों की
हड्डी पसली
एक किये दे रही और
सन्नाटा —
गेंवड़ों में तेज़ी से चटकने लगा है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2.

खटिया पर लेटी दादी माँ
शाम होते ही आँगन में
अपने नाती पोतों से
हाथ-पाँव दबवाती
सुना रही कहानी...

तो बेटो! पाँवों की सफाई पसंद राजकुमार
धूल से परेशान हो — पिटवाता है डोंडी —

बाहुकुम बामुलाहिजा होशियार!
फरमान है ये सरकार का — कि
दस दिनों के भीतर
धूल को देश निकाला दिया जाना है

चूँकि धूल बार-बार समझाने के
बावजूद बाज नहीं आती है — और
राजकुमार के साफ सुथरे पाँवों को
गंदा कर देती है — इसलिए
खासोआम सूचित हो आज से —

हटाना है धूल को
राष्ट्र की मदद करें
जो जहाँ है
वहीं जुट जाये काम में
साथ नहीं देगा जो
मौत की सज़ा उसको
बीच चौराहे दी जायेगी —
ढब्ब-ढब्ब-ढब-ढब-ढब्-ढब्

तभी हवा का हल्का झोंका आया
आँगन में फटकी ज्वार को
भूसी की धाँस भरता निकल गया
दादी ने छींका दो चार बार
कहानी बढ़ी आगे —

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दस दिनों की जगह
दस मास निकल गये
झाड़ुएँ टूट बनती रहीं कचरा
बरसते रहे कोड़े
सलाहकारों की उधड़ती रही खालें

बेटे रतीराम के ही
उस वक़्त आ गये आगे
भेंट किये जूते उन्होंने राजकुमार को

धूल के ख़िलाफ़ वह
पहला तोहफ़ा था आदमी का
जिन्हें पहने राजकुमार
इतराता दन्नाता जा बैठा
सिंहासन पर

पहला फरमान जारी हुआ राजकुमार का
काटे गये दोनों हाथ
रतीराम के बेटों के —
वे न्याय की शरण जायें इसके पूर्व
न्यायाधीश के सिर पर धर दिया गया जूता
रतीराम के बेटों की फरियाद
चिन्दी-चिन्दी उड़ा दी गई कचहरी के बाहर

बच्चे सिसक उठे
दादी माँ बोली —
रतीराम और उसके बेटों के हाथ तो —
जाने कब से
कटते आ रहे हैं
कटते ही रहेंगे

इतिहास में अक्सर
कहानियाँ
ऐसे ही बनती हैं
रोओ मत और सुनो!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राजकुमार ने तब से
सिंहासन के आस पास
उगवा लिया बगीचा
बीचोंबीच जिसके फिसलनी बनी एक
फिसलता रहा वह
गोल-गोल झूला भी झूलता
झूलते उसके चापलूस चाटुकार
काठ के घोड़ों पर — हाँ! जी!!, हाँ! जी!! करते
तालियाँ बजाते वे
गाते
नित नये गीत
फिसलनी के
झूले के

एक दिन धरती ने
काठ के घोड़ों को पकड़ लिया
गिर गया राजपुत्र
गिरा तो — फिर न उठा

''अच्छा हुआ फन्दा कटा''
खुश हुए बच्चे

दादी बोली बेटो —
राजकुमार मरता नहीं क ऽऽ भी ऽऽ
उसे बार-बार जिलाया जाता
सत्ता के चँवर से और
उसकी विरुदावलियाँ गाने
भेज दिये जाते भाट
गाँव-गाँव
नगर-नगर
तब तक दूसरे कुँवर को
पारस कह कर
बिठा दिया जाता गद्दी पर

जिसकी जूतियाँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भविष्य के
सपने ठुकराती — औरों के

इनके आगे जो
करते सिर नीचा
रहते वही ज़िन्दा
अब बोलो — कटा फन्दा...?
"........................."
नहीं न?

लेकिन कटेगा
अभी तक —
कान से — धरती से
घट से — मत्स्य से
जन्मा था आदमी
पर उस वक़्त
जब नंगे पाँवों से जन्मेगा
गाँठ-गाँठ, तार-तार तत्काल खुल जायेगा फंदा...

3.

धूप और धरती की
आँच से
भट्टे पड़े सख़्त पाँव
सफेद झक्क यात्रा के लिए
जाने कब से चल रहे हैं

हरी नसों के जाल-सी
मंज़िलें
कितनी-कितनी बार उभरी हैं
उसकी पिण्डलियों में
कितने ही महाप्रलय देखे हैं इसने वट-पत्र पर लेटे
चूसते हुए पाँवों के अँगूठे
या हिमालय की
ठण्डी चट्टान की छाँव में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उकड़ूँ बैठे हुए

इसके पाँवों को छूकर ही
उतरता आया
जल प्लावन का नशा

मुँह धोकर खड़ी होती रहीं वनस्पतियाँ
सागर की सेज पर
सोई धरती
अपने हरे-हरे कपड़ों को निचोड़ती
शर्मा कर बैठती आई है
जिसकी रेखड़ी से चाँद और
माँग से बार-बार जन्मे हैं नक्षत्र

स्वस्थ-मन से
देखता है आदि पुरुष
पूरब से उगता हुआ सूरज

जिसकी आँच में
तपाने लगता
दूर-दूर फैली सीलन

उलटता पुलटता यादें
भाप से —
उठने लगती सोंधी-गंध

जिसे चीर कर
काफी दूर से — ईथर-सी दमकती
झरनों-सी खिलखिलाती
फूले पलाशों वाली हँसी
भर लेती अपनी बाँहों में

मस्त हो जाता वह
भूल जाता सारी यातनाएँ और
गुफाओं को पार कर
मैदानों में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जन्माता हुआ अनेक सभ्यता-संस्कृतियाँ
गाँवों-कस्बों-नगरों-महानगरों को बसाता हुआ
चला आया — नंगे पाँव

×××

जादू टोनों के
कल्पना लोकों से हो कर

धर्म-दर्शन और मिथकों के
स्वप्न संसारों के
बीच से — दौड़ता —
भागता — हाँफता

चील-गरुड़-हंस और
कृत्रिम उपग्रह उड़ाता
आयुधों को बदल-बदल कर
पहले से अधिक

अपनी ही छानबीन में जुटा
इतिहास और प्रकृति का
अनूठा विस्मय
अपनी ही व्यवस्थाओं से जूझता हुआ
बढ़ता तो पाता है कि —

हर पाँच क़दम पर चस्पा है
सरकारी हुक्म

हर बार नहा-धोकर
नंगे पाँव निकलता सरकार बनाने और
हर बार अपनी तर्जनी पर पाता
अमिट काली स्याही का दाग
गणराज्य और काली स्याही का
क्या सम्बन्ध है
सोचते-सोचते
जब वह थक कर सो रहा होता
तब उसका घर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नीलाम कर दिया जाता
उस काले दाग़ के
कारकूनों द्वारा

उसे पहले ही
लग रहा था कि —
यह 'सुभ' नहीं है
गालियों का गण-पति पुराण सुन
गली में खड़ी
रोती है उसकी मेहरिया

वह आँखें फाड़-फाड़ कर
सरकार खोजना चाहता
किन्तु उसे —
वर्दीधारी सिपाही और
रुत्बे से खड़े साहेब
नज़र आते

कितने ही बूटों की रौंद
महसूसता वह अपनी पगड़ी पर

क्या इसी का नाम है —
सरकार —
आज़ादी!!
अब वह अपनी
पनहियाँ और पगड़ी फेंक
सरकार और आज़ादी से
रू-ब-रू होने के लिए
सड़क पर आ गया है

वह छब्बीस जनवरी से मिलने
ठेठ दिल्ली तक पैदल जाता है
किन्तु यह देख
हैरत में हो जाता कि
वे भी बैण्ड बाजों के साथ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संगीनों से लैस
नालदार जूतों की परेड और महामहिमों को
सलामियाँ देने में व्यस्त हैं

वह अब —
अच्छी तरह समझ गया कि
पाँवों के जूतों को
शट्ट से बजाकर
फुर्ती से
सलामी देने का नाम स्वाधीनता है

एक अजीब-सी
बदबू से भरे
इस समारोह के बीच से
अपनी नाक दाबे
लौट आता वह
काग़ज़, कलम, कैमरे वालों से
बचता हुआ — और
गाँव आ कर
चकमक पत्थरों में दबी
चिनगारियों-सी
परचाने लगा इच्छाएँ

वह अच्छी तरह
समझ गया कि
आज़ादी और सरकार

अपनी ही रगड़ से
अपनी ही आग से
जाने जा सकते हैं

4.

जूते वाले लोग
अपनी तिकड़मों में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाने कहाँ घूमघाम कर
अलस्सुबह तस्में खोलते तो

इनकी गैलरियों से
झरने लगती दुर्गन्ध
जिसे सूँघता हुआ
जन्म लेता दिन

शाम तक उसे
आते रहते झटके
उठती रहती पित्तियाँ

उगलता रहता
पूरा शहर घटनाएँ
रेडियो से
महामहिमों की खरखराहट
टेलीविजन से
कुबेरों की —
प्रियदर्शिनियों की
खट्टी डकारें
पूरे माहौल पर छाई रहतीं

रात होते ही
हिंसा, बलात्कार, कालाबाजारी के रंगों में
रंगे रहते इनके मन

निर्माण के नाम पर
इनके ज़हन में
विध्वंसकों के अलावा
कुछ भी नहीं आता

इनके लिए रोटियाँ
कोई बड़ा मसला नहीं

इनकी मान्यता में
आबादी—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पेट भर जाने के बाद
गुर्राने लगती है
इसलिए रोटी को
कई-कई टुकड़ों में
बाँटने की
आला से आला योजनाएँ
इनके फितरती दिलों में आती है

ये वो होमा चिड़िया हैं
जो माँस तो माँस
हड्डियाँ तक — स्वाद से खाती हैं
सुबह होते ही
अखबारों में छपता है
जो होमा को
अपने माथे पर बिठा लेंगे
वे चुटकियों में
ग़रीबी की रेखा लाँघ जायेंगे

यह सुनते ही
निकलते लोग
होमा की खोज में और
थक कर लौट आते

तभी ये थके हारों के पास
रोटियों के
टुकड़े लेकर जाते और
बदले में उनकी
अँगुलियाँ काट लाते

अँगूठे भर बचे रहते
ताकि वे —
खाता बहियों पर निशान और
बटनों को दबाने के काम आते रहें

नंगे पाँवों और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कटी अँगुलियाँ वाले हाथों से वह
कल-कारख़ानों
कार्यालय - दवाख़ानों में
काम करता

ठुट्टे पंजों से
सिखाता
मदरसों में
बच्चों को गिनती

बोता खेतों में
पटवारी की नक्शा
हरी-भरी फसलों तक ही
उसका होता और
खलिहानों में
आते ही
बोरों में लद-लद कर
आला हाकिमों —
बैंकों-लेव्ही और
साहूकारों की
तोंदों में समा जाता

5.

अपने पंजों और एड़ियों पर
हथेलियाँ फेरते हुए
उसे लगा कि

जाने कब से
काँटों का
एक जंगल ही समाया है उनमें — और

जूतों वालों के पाँवों में
बिवाइयाँ तो दूर
मोजे तक नहीं फटते
×××

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब वह
अपनी हथेलियाँ गौर से देखता
जो सुर्ख हैं
बार-बार
ठुट्टे पंजों में
अँगूठों को हिलाता हुआ

अपनी ही आँतों को
ताँत बना कर
जिस धनुष की
रचना पर सोचता

उसकी टंकारें
उसे साफ-साफ सुनाई दे रही हैं
×××
मिटेंगी
अवश्य मिटेंगी
ये बेडौले ऊँचाइयाँ और
गूँजेगा मुक्त राग

दूर-दूर उस पहाड़
रेत, मैदान और नदी तक
×××
वह बँधी मुट्ठी
भिंचे दाँतों से
उनकी ओर
देख रहा

सुन रहा
अपनी तरफ आती हुई

करोड़ों-करोड़ों पगध्वनियाँ और
गुन रहा
आदमी और आग के
शाश्वत सम्बन्ध
×××

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब सूर्योदय के
साथ ही उसे
सब कुछ
साफ़-साफ नज़र आने लगा है —

आदमी और
आग
कभी ठण्डे नहीं होंगे
आदमी और आग, आदमी और आग!!

— प्रताप कॉलोनी (चाल के पीछे),
हरदा-461331 (म.प्र.)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राजेन्द्र मिश्र

अपराध

मेरा यही अपराध है कि मैं अपने विरुद्ध नहीं गया हूँ
और काली आँखों की संवेदना मुझसे नहीं जुड़ पाई है
लगातार एक भीड़ में तुम मेरा पीछा करते रहे हो
और मेरे-तुम्हारे बीच वह भीड़
किसी चट्टान की तरह चलती रही है।
अपनी आत्मा के ख़िलाफ़ कहने पर मुझे बहुत सारी सुविधायें —
बहुत सारे अवसर मिल सकते थे
पर मैंने उन्हें स्वीकार नहीं किया
वे सारे प्रयत्न तुम्हें मुझसे मिलाने के लिये थे
जो मुझे मंजूर नहीं थे।
मैं सदा उस भीड़ के चलते रहने की
बाधा में बना रहना चाहता रहा
मेरे भीतर एक आदमी जो तमाम आदमियों से जुड़ा था
कराहता रहा
सड़क को निर्वसन करता हुआ एक जुलूस था
जो अपनी ख़ामोश आवाज़ को
एक लय में संयोजित कर चल रहा था
हर क्षण उसमें का हर आदमी
हर लय के साथ मर रहा था।
मेरा यही अपराध है कि मैं उस जुलूस के विरुद्ध नहीं गया हूँ
और ज़िन्दा कुर्सी का यथार्थ मुझसे अलग छूट गया है
लगातार मनुष्य होने के लिये भी मुझे संघर्ष करना पड़ा है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फिर भी तुम मेरा पीछा करते रहे हो
अपने विश्वास के ख़िलाफ़ मुझे उत्तेजित करने के
सारे प्रयत्न निष्फल होते गये हैं
जो मेरे पास आये
वे दूसरों से हटकर अपने होते गये हैं
मेरा यही अपराध है कि मैंने अपने से ही
विद्रोह की शुरुआत की है
और स्थापित लोगों की अन्धी यात्रा को अवरुद्ध किया है
जो अपनी मौत को सहज मानकर स्वीकार कर रहे थे
अब वे बागी होते जा रहे हैं
मेरा यही अपराध है कि वे अब
अपनी ही नींद से जागकर
तुम्हारी ओर आ रहे हैं

एक नंगा शहर

उछलती है क्रांति। मैं अपने हालातों में डूबा। एक नंगा शहर पाल रहा हूँ।
एक छोटी-सी बोतल से सीधे ही अपने भीतर बियर डाल रहा हूँ।
उठाओ लड़कियों को। पहले उनकी माताओं से विवाह कर लो।
फिर बनकर उनके पिता, उनके आसपास अपनी आँखों को सहलाते रहो।
स्टीरियो पर बजते हुए संगीत में नहाते रहो।

एक सिनेरियो सा है तुम्हारे अस्तित्व में। उसे महसूस करते रहो।
बदलते रहो हर क्षण। ज़िन्दगी उस ईश्वर से ज़्यादा कीमती है
तुम जिसके लिये जी रहे हो।
आदमी है उस ईश्वर का पिता। जिसे वह बनाता रहा है,
अपने भीतर अनेक निकायों में,
बाँट दिया है उसने अपने बेटे को अनेक संकायों में।

भुतहा सा लगता है सब कुछ। नक्शे मिटा दो और
बर्ताव करो खुद से अजनबीपन का।
हम आदम नहीं हैं, उससे या तो कुछ कम हैं या बहुत ज़्यादा
एक-दूसरे पर चढ़ने को आमादा।
उठो बिस्तर से, जानवर हो जाओ। कपड़े उतार दो। जला दो आकाश
जो नीचे पड़ा है। उस भीड़ में शामिल हो जाओ जो आक्रमण करती है,
प्रतिरक्षा की स्थिति तक इन्तज़ार नहीं करती।
दफ़ना दिया गया है विद्रोह। बलात्कार कर रही है व्यवस्था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं खिड़की भीतर मोड़ देता हूँ आँखों से,
धीरे-धीरे आवाज़ मरती जाती है। कफ़न बन जाता है सन्नाटा।
अनायास मेरा सूरज कभी न मिटनेवाले अन्धेरे में सो जाता है।

रोशनी की वल्गा

मैं, अपनी संवेदना खोकर एक चट्टान की तरह चुप हूँ,
आसपास एक परिवेश में जीने का तनाव मुझे बुनता है
भीतर का अंधकार, बाहर का सन्नाटा —
मेरा दम घुटता है।
सारे मूल्यों की सड़ाँध से बना मेरा व्यक्तित्व
महज एक किताब सा
जिसे पढ़ सकता हूँ
अमल में नहीं ला सकता
अपने अन्तर्विरोध से उपजा जमीन का एक यथार्थ / मेरे पास है
यंत्रणा के भय से मैं,
उस तक नहीं जा सकता।

मृत्यु की संभावना झेलते हुए भी मरने का दर्द
कल्पना में आते ही सिहर जाता हूँ —
सारी पीढ़ी की नपुंसकता का प्रतीक बनकर मैं जन्म ले रहा हूँ
नये परिवेश में
सारी धारणाओं को अपनी सुरक्षा के लिये बदल रहा हूँ
नये आदेश में।
अपने निजत्व के परायेपन से उपजा संत्रास मुझे ओढ़ता है,
एक पूरी शताब्दी का जनमानस
मुझे समर्पित समझकर छोड़ता है।

यथार्थ खुद को रच रहा है एक धारणा में
वायवी होने का सत्य अब समझ में आ रहा है
विकल्पों के चयन में,
मैं कितना प्रतिबद्ध हूँ,
रोशनी की वल्गा छूटती जा रही है
एक पूरी पीढ़ी ही टूटती जा रही है
मेरी रचना में महाभारत की जगह सामवेद गा रहा है
एक आग के पहाड़ पर बर्फ जम गई है
एक रात अब लम्बे समय के लिये थम गई है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शक्लों से डरे हुए

थम गया है सैलाब
रुकी है रफ्तार
एक ख़ामोशी लादे
शहर गये हैं लोग
इतिहास को बन्द कर
सुरक्षित रहने
लगता है कुछ देर
ठहर गये हैं लोग।

दर्शक हैं —
अपनी ही फिल्म में
देते हैं करने
प्रवेश अजनबी को —
तटस्थ हो स्वागत में
खड़े हुए लोग
मोम के पुतले से
जड़े हुए लोग।

बसता है अभिनय का
अनहुआ वजूद
फिर चलने लगते हैं
अपनी ही शक्लों से
डरे हुए लोग
भीड़ में स्थापित —
अपने ही जीवन में
मरे हुए लोग।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सूर्यभानु गुप्त

ग्यारह कविताएँ

1.

आदमी
आदमी हुआ फिर से
धूप, चिड़िया, हवा,
नदी, खुशबू,
दिल को हर चीज़ ने
छुआ फिर से

2.

अपने ही घर में हम
पराए हैं
ऐसा लगता था
देसी शक्लों में,
फिर से
अंगरेज लौट आए हैं

3.

जमते-जमते
पिघल गया सब कुछ
ऐसे झुमका गिरा
बरेली में,
एक पल में
बदल गया सब कुछ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4.

यूँ हवाओं के हाथ
बिकते थे
काली आँधी के
इस इलाके में,
ढूँढिए तो
दीये न मिलते थे

5.

एक जलती सलाख
दिल-दिल थी
ऐसा कर्फ्यू लगा था
शब्दों पर, मिलना अपनी खबर भी
मुश्किल थी

6.

सिर्फ नारों से
पेट क्या भरते
दोस्तो!
इंतजार गोदों का,
मुल्क के लोग
कब तलक करते!

7.

दलदलों में
उतर गए होते
लोग करवट अगर
नहीं लेते,
ज़िंदगी भर को
मर गए होते

8.

सर उम्मीदों के
रोज मुँड़ते थे
पूर्वग्रहियों के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुंभ मेले में,
नाइयों के
चिराग जलते थे

9.

बात आँगन की
कह गई यारो!
बाद बारिश के
धूप निकली तो,
कच्ची दीवार
ढह गई यारो!

10.

देर लगती अभी
सबेरे में,
एक कंदील
गर नहीं मिलती
यातनाओं के
धुप अंधेरे में

11.

रोज इक झूठ की
सलामी से
ऐसा लगता है
जैसे छूटे हों,
दूसरी बार
हम गुलामी से

— 2, मानकू मशीन
एस.एम. जाधव मार्ग,
दादर, मुंबई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अरुण कुमार भगत

आपातकाल में बिहार के साहित्यकारों की भूमिका

सन् 1974 के बिहार-आंदोलन और उसके बाद 25 जून, 1975 को घोषित आपातकाल के दौरान बिहार के साहित्यकारों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इस आंदोलन के दौरान पहली बार साहित्यकार नुक्कड़ों पर उतरे और भ्रष्टाचार, बेरोज़गारी, शैक्षणिक अराजकता और महँगाई के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलंद की। संपूर्ण क्रांति के पुरोधा पुरुष लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने न सिर्फ स्वयं कविताएँ लिखीं अपितु एहसास भी किया कि इसमें जन-जागरण की क्षमता है। बिहार के दर्जनों कवियों ने तानाशाही सरकार के ख़िलाफ़ लेख़नी उठाई और अग्निवर्षा की।

कवि-गीतकार गोपीवल्लभ सहाय को 'जहाँ-जहाँ जुल्मों का गोल, बोल जवानों हल्ला बोल' या फिर 'नेताओं को करो प्रणाम', 'भज लो राम, भजा लो राम' सरीखी पंक्तियाँ सुनते ही जयप्रकाश नारायण के आंदोलन की याद ताज़ा हो जाती है। सत्ता और व्यवस्था के ख़िलाफ़ जे.पी. के इस अभियान में बिहार में लेखकों-कवियों, रंगकर्मियों की सक्रिय हिस्सेदारी रही थी और स्वतंत्रता आंदोलन के बाद शायद यह पहला मौका था जब सृजनकर्म से जुड़े लोग सड़कों पर उतरे और 'तख़्त बदल दो, ताज बदल दो, तानाशाहों का राज बदल दो' सरीखे नारों के साथ लोगों को संपूर्ण क्रांति आंदोलन से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भूमिका निभाई। [1]

बिहार-आंदोलन को जिन प्राध्यापकों ने वैचारिक सहयोग देकर पुष्ट बनाया, आंदोलन समर्थक साहित्य का सृजन किया, आपातकाल में भी विभिन्न प्रकार की मौलिक अनुदित पाठ्य सामग्री तैयार करते रहे और अपनी लेखनी से उसे जाग्रत और उद्दीप्त करते रहे। उनमें डॉ. अमरनाथ सिन्हा का स्थान सर्वोपरि है। बिहार आंदोलन के दौरान जून 75 तक उन्होंने 'प्रदीप' में जो लेखमालाएँ लिखी थीं और उसके माध्यम से बिहार-आंदोलन की जो वैचारिक पीठिका बनाई थी उसे बिहार भूल नहीं सकता। [2]

इस पूरे आंदोलन के दौरान एक बात जो बहुत चौंकाती है और वह है दक्षिणपंथी व वामपंथी लेखकों, कवियों और चिंतकों का खुद को इस आंदोलन से लगभग अलग रखना। हालाँकि शुरुआत में वाम विचारधारा से जुड़े बाबा नागार्जुन और मधुकर सिंह ज़रूर इस आंदोलन से जुड़े लेकिन बाद में वे इस आंदोलन से अलग हो गए। [3]

आपातकाल में हिंदी लेखकों में बाबा नागार्जुन का रोल सबसे ज़्यादा रोचक रहा। बचपन का यह लेखक जयप्रकाश नारायण के साथ आंदोलन में शरीक हुआ। रेणु की तरह बिहार सरकार का माहवार वजीफा ठुकराया। चौराहों पर चीख-चीखकर अपनी कविताएँ सुनाई और बिहार-आंदोलन को तेजस्विता दी, गिरफ्तार हुए। [4]

इसके बाद जेल से छूटकर आने के बाद बाघिन के इस रचयिता ने बड़ी विचित्र भूमिका निभाई। 'पहल-आठ' ने नागार्जुन की दस कविताएँ उनकी जनवादी होने का प्रमाण देती हैं। संपूर्ण क्रांति के धुरंधरों की धोखाधड़ी से देश की जनता को एक नए स्तर से परिचित कराती है। बिहार के जन आंदोलनों के सिलसिले में नागार्जुन का कहना है कि मैं वेश्या की गली में जाकर लौट आया। 9 जुलाई, 1975 को लिखी उनकी पहली कविता के दो नमूने : [5]

खिचड़ी विप्लव देखा हमने,
भोगा हमने क्रांति विलास,
अब भी खत्म नहीं होगा क्या
पूर्ण क्रांति का भ्रांति विलास
उधर दुधारु गाय खड़ी थी
इधर सरकारी बक्कर था
समझ न पाओगे वर्षों तक
जाने कैसा चक्कर था
तुम जन कवि हो, तुम्हीं बताओ
खेल नहीं था, टक्कर था।

अपनी चौथी कविता में उन्होंने लोकनायक के लिए लिखा :

काहिल, आराम पसंद, संशयशील,
डरपोक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कपटी क्रूर;
भले मानसों से दिन-रात
घिरा होना सुख क्या था
आखिर

बिहार प्रांत देश का नेतृत्व कर रहा था और आपातकाल में अन्य प्रांतों की नज़रें बिहार की ओर लगी हुई थीं। बुद्धिजीवी वर्ग के नैतिक समर्थन के साथ-साथ सक्रिय समर्थन भी प्राप्त होने लगा और भूमिगत साहित्य का काम काफी तेजी से बढ़ने लगा। इस कार्य को करने में कठिनाइयाँ ही कठिनाइयाँ थीं, साथ ही खतरा ही खतरा नज़र आता था, लेकिन इस कार्य में लगे कार्यकर्ताओं की सावधानी और पुलिस विभाग की निष्क्रियता के कारण कठिनाइयाँ कभी बाधक नहीं बन पाई। [6]

जयप्रकाश नारायण का आंदोलन सिर्फ सामाजिक और सियासी नहीं था। बल्कि उसने देश में एक नए काव्य आंदोलन की भी शुरुआत की, जहाँ कविताओं ने अपना व्यापक श्रोता वर्ग बनाया। भ्रष्ट सरकारों के ख़िलाफ़ आंदोलन अधिकार जनता के पास हों। 1974 आंदोलन की बुनियाद दरअसल जे.पी. की इसी सोच पर आधारित थी। [7]

आज़ादी के बाद साहित्यकारों की जन आंदोलन से जुड़ने की भूमिका लगभग समाप्त हो गई थी, लेकिन जे.पी. आंदोलन ने लेखक, कवियों को भी नई सोच के साथ सामने आने के लिए प्रेरित किया।[8]

बिहार-आंदोलन ने न केवल विवेचनाशील गद्यकार प्राध्यापकों को कुरेदा, बल्कि प्राध्यापकों में भावुक कवि भी उद्वेलित हुए। आंदोलन समर्थक प्राध्यापक कवियों ने न केवल पत्र-पत्रिकाओं, बुलेटिन और पर्चों में लिखा, बल्कि नुक्कड़ कवि सम्मेलनों में भी भाग लिया और संघर्षशील रचनाकारों का एक संवर्ग बनाया, जिसने छात्र-आंदोलन को जन आंदोलन का स्वरूप देने की चेष्टा की। ऐसे प्राध्यापक कवियों में डॉ. रामवचन राय, प्रो. रविंद्र राजहंस, डॉ. श्याम सुंदर घोष, डॉ. शंभुशरण, डॉ. शत्रुघ्न प्रसाद आदि उल्लेख्य हैं। [9]

1974 के जे.पी. आंदोलन के साथ जुड़कर खासकर बिहार के रचनाकारों ने रेणु के नेतृत्व में सड़कों पर उतरकर जागरण का काम किया। रचनाकारों ने पहली बार बिहार में जुझारू भूमिका अपनाई थी। रेणु की वह भूमिका उन्हें बाकी रचनाकारों की तुलना में एक विशिष्ट धरातल देती है। आंदोलन के दौरान गीतकार गोपीवल्लभ सहाय ने दर्जनों गीत रचे। इस नुक्कड़ काव्य आंदोलन का उल्लेख वे अक्सर करते थे। अपनी कविता पुस्तक 'बंजर के बीज' में उस दौर को याद करते हुए उन्होंने लिखा था कि कविता से लोगों को सीधे संबोधित करने का दौर 1974-77 का वह कठिन समय था, जिसे हम रेणु समय कह सकते हैं। रेणु के साथ शुरुआत में परेश सिन्हा, गोपीवल्लभ सहाय, रविंद्र राजहंस, बाबूलाल मधुकर, बालेश्वर विद्रोही, विकट लाल धुआँ, सत्यनारायण, रॉबिन शॉ पुष्प, राज इंकलाब और रवींद्र भारती सहित दूसरे कवि इस आंदोलन में शामिल हुए। [10]

बाबूलाल मधुकर ने अपनी मगही कविताओं से आंदोलन की ज़मीन तैयार की। बाबूलाल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मधुकर ने अपनी मगही कविताओं का अलग संसार रचा। 'हमरो हाथ में भाला हो' में जब वे कहते हैं "अब तो तनिक न रुकबो देखा। पेट में लहकल जोआला हो। तू बंदूक-पिस्तौल संभाल। हमो हाथ में भाला हो", तो एक आक्रोश पूरा का पूरा दिखाई देता है। [11]

आम लोगों की भाषा और शैली में इन कवियों ने रचनाएँ कीं, और लोगों ने इन्हें आंदोलन में हथियार की तरह इस्तेमाल किया। यही कारण है कि नुक्कड़ काव्य आंदोलन की गूँज सिर्फ बिहार में ही नहीं सुनाई दी, बल्कि बिहार के बाहर के कवि और लेखक भी इस आंदोलन से प्रेरित-प्रभावित हुए। जे.पी. पर पुलिस ने जब लाठियाँ बरसाईं थीं, तब धर्मवीर भारती ने 'मुनादी' लिखकर इस लाठीचार्ज का विरोध किया था। [12]

भारती के अलावा सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने 'लड़ाई जारी है', रघुवीर सहाय ने 'न टूटे तिलिस्म सत्ता का, मेरे अंदर एक कायर टूटेगा' लिखी तो भवानी प्रसाद मिश्र ने आपातकाल के दौरान प्रत्येक दिन एक कविता लिखने का ऐलान कर इस काव्य आंदोलन को ताकत दी। [13]

संपूर्ण क्रांति आंदोलन में कवियों के इस रचनात्मक हिस्सेदारी से जे.पी. भी प्रभावित थे। जे.पी. ने एक बार खुद आग्रह कर आंदोलन से जुड़े इन कवियों को अपने निवास पर बुलाकर उनकी कविताएँ सुनी थीं। आंदोलन के दिनों के चर्चित कवि गोपीवल्लभ सहाय के शब्दों में, 'चौहत्तर आंदोलन के कवियों के नसीब में एक ऐसी शाम भी आई, जब उस क्रांतिकारी आंदोलन के शिल्पकार लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने उन्हें बुलवाकर तीन घंटे तक कविताएँ सुनीं।' [14]

करीब चार दशक से ज़्यादा के राजनैतिक-सामाजिक सफर में उन्हें इस बात का पता चल गया था कि समाज और देश पर उसके साहित्यकारों-रचनाकारों का भी अच्छा ख़ासा प्रभाव होता है। साहित्यकार, रंगकर्मी, कलाकार किसी न किसी रूप में समाज से जुड़ा होता है और एक बड़े वर्ग को वह अपने सृजनकर्म से प्रभावित करता है। जे.पी. इस सच को जानते थे और रचनाकर्म के महत्त्व का समझते भी थे। यही वजह है कि दिनकर, रेणु, रामवृक्ष बेनीपुरी, भवानी प्रसाद मिश्र, नागार्जुन, प्रभाष जोशी, निर्मल वर्मा, बी.जी. वर्गीज सरीखे रचनाकार - पत्रकारों से जे.पी. ने जब संपूर्ण क्रांति का नारा दिया और आंदोलन का एलान किया तो साहित्यकारों ने भी आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। [15]

कविवर गोपीवल्लभ सहाय हिंदी के ऐसे हस्ताक्षर हैं जिनकी रचनाओं ने सन् 74 के बिहार आंदोलन और उसके बाद आपातकाल के दौरान संपूर्ण क्रांति के समय लोकचेतना जाग्रत करने में अपने दायित्व का निर्वहन किया। पद, पदार्थ और पुरस्कार के लोभ में कविश्री सहाय ने मन की अभिव्यंजना को न तो कभी तोड़ा-मरोड़ा और न ही कभी किसी को प्रसन्न करने के लिए कविताएँ लिखीं। जब जी में जो आया लिखा और एक हस्तसिद्ध कवि की तरह सामाजिक सरोकार को रेखांकित किया। उन्होंने इस बात की कभी परवाह नहीं की कि उनके कवि कर्म के कारण उनकी सरकारी सेवा दाँव पर लग जाएगी। सन् 1975 ई. में आपातकाल के दौरान पुलिस विभाग में रहकर भी पुलिस के तानाशाही रवैये के ख़िलाफ़ उन्होंने लिखा और जमकर लिखा। उन्होंने पटना की नुक्कड़ कवि गोष्ठियों में अपनी कविताओं को सुनाकर अदम्य साहस का परिचय दिया। सन् 74 के छात्र-आंदोलन के समय उनकी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'हल्ला बोल' शीर्षक कविता काफी चर्चित हुई। 9 अप्रैल 1974 को पटना के गाँधी मैदान में लोकनायक जयप्रकाश जी की पहली सभा में इस रचना को उन्होंने सुनाया था।

जहाँ-जहाँ जुल्मों का गोल
बोल जवानों हल्ला बोल
नेताओं के चिकने चोल
काला चेहरा उजला खोल
झूठे नारे, नकली ढोल
लंबी कथनी, करनी गोल
खुलती जाती सबकी पोल
बोल जवानों हल्ला बोल

बिहार सरकार के पुलिस विभाग में जनसंपर्क पदाधिकारी तथा विभाग से प्रकाशित 'आरक्षी' पत्रिका के संपादक के पद पर रहते हुए भी 1974 के जे.पी. आंदोलन के वक़्त कविवर गोपीवल्लभ ने नुक्कड़ गीतों के माध्यम से न केवल अपने जागरुक नागरिक के कर्त्तव्यबोध का एहसास कराया बल्कि आम-जनमानस को झकझोरा। इसी प्रेरणा से शाम को नुक्कड़ों-चौराहों पर आंदोलन के पक्ष में जनता को प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से यह कवि कविता पाठ में सम्मिलित होता था। 8 मार्च 1974 को जब जे.पी. के नेतृत्व में पटना के गाँधी मैदान में जुलूस निकाला तब उस दिन उन्होंने लिखा। [16]

गाँधी नहीं मरा है
खून वही जो आज हमारी आँखों में उतरा है।
नाम साटकर गाँधी का जो सटे हुए अपने में
जीवित गाँधी देख बौखला रहे वही अपने में
वही बताएँ, ज़िंदा है गाँधी तो क्या खतरा है?
नासमझों ने तो गाँधी को एक बार मारा है
हमने सोच समझकर लेकिन, लगातार मारा है
गाँधी का यह देश गाँधियों से डरा-डरा है।

बिहार के राज्यपाल ने 7 जनवरी 1974 को बिहार राज्य की दिनों दिन गिरती आर्थिक अवस्था पर चिंता प्रकट की थी। स्पष्ट है कि स्थिति विस्फोटक हो रही थी। शासन का ध्यान आकृष्ट करने के लिए जनसंघ के महामंत्री श्री जगबंधु अधिकारी ने अन्य संगठनों से विचार कर बिहार बंद का आह्वान कर दिया। इस क्रम में कोडरमा में गोली चली। [17]

18 मार्च को छात्र संघर्ष समिति की ओर से प्रांत भर से आए छात्रों का एक विराट् प्रदर्शन आयोजित हुआ। सभी विरोधी दल सदन का बहिष्कार कर बाहर आ गए थे और सरकार ने बाँस-बल्लों से विधानसभा की सुदृढ़ घेराबंदी कर बीएमपी, बीएसएफ तथा सीआरपी के जवानों को तैनात कर दिया था। विशाल छात्र समुदाय शांतिपूर्ण ढंग से प्रदर्शन करते हुए विधानसभा को घेर बैठ गया था। उधर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शहर में कांग्रेसी-कम्यूनिस्ट साँठ-गाँठ से गुंडा तत्व खुलकर खेले। सांख्यिकी विभाग, राजस्थान होटल, सर्चलाइट तथा प्रदीप प्रेस में योजनापूर्वक आग लगाई गई और लूटपाट की गई। इसके बाद ही लाठीचार्ज, अश्रुगैस तथा गोलियाँ चलीं। पटना, धनबाद तथा मुंगेर में 'सूट एट साइट' लागू कर दिया गया। 50 से अधिक जाने चली गईं। 18 मार्च से 30 मार्च तक कर्फ्यू की हवा कायम रही। [18]

सरकार की तानाशाही और दमन नीति के ख़िलाफ़ लोगों में भयंकर आक्रोश उपजने लगा था। कविवर सहाय ने उस समय की परिस्थितियों को 'मैंने लिखा लहू से तो' कविता के निम्नलिखित पंक्तियों में रेखांकित किया है।

दरवाज़े पर दिया जलाकर
आँगन में तूफान दिया
×××
मैंने समझा जिसे सुधाकर
उसने विष का दान दे दिया

आपातस्थिति लागू रहने तक संविधान के अनुच्छेद 14, 21, 22 के अंतर्गत बुनियादी अधिकारों को लागू करने के लिए न्यायालय में जाने पर पाबंदी लगा दी गई। इस आदेश को राष्ट्रपति ने अनुच्छेद 359 के अंतर्गत जारी किया। यह जम्मू व कश्मीर प्रांत पर लागू नहीं माना गया, परंतु इसके अधिकार क्षेत्र में भारत में रह रहे विदेशी भी आते थे। [19]

अंतिम अस्त्र के रूप में सरकार 44वाँ संविधान संशोधन (जो बाद में 42वाँ संशोधन के नाम से पारित हुआ) को ले आई। यह विधेयक लोकसभा में 1 सितंबर 1976 को प्रस्तुत किया गया। वहाँ यह 3 नवंबर को 366 के मुकाबले 4 मतों से व राज्यसभा में 11 नवंबर को 191 के मुकाबले 0 मतों से पारित हो गया तथा 18 दिसंबर 76 को उसे कानून का रूप दे दिया गया। इस विधेयक पर चर्चा के दौरान विपक्ष ने संसद का बहिष्कार किया। यह केवल एक संशोधन नहीं था इसके द्वारा संविधान में 59 परिवर्तन किए गए, परंतु उन्हें एक विधेयक के रूप में सामने लाया गया था। इस संविधान संशोधन द्वारा भारत के जनतांत्रिक संविधान को लगभग एकाधिकारी संविधान में बदल दिया गया था। इसने संविधान की सर्वोच्चता समाप्त कर दी। उसे अपनी ही उत्पत्ति अर्थात संसद का अनुगामी बना दिया। [20] सत्ता पर एकाधिकार के लिए संविधान संशोधन किए जाने से कविवर सहाय मर्माहत हुए। उनकी पीड़ा 'इस एक बयान तक' में मुखरित हुई है —

दर्द का तय न हो सका सौदा
देने को हम तो जान तक आए
×××
जुर्म की हद कहाँ-कहाँ तक हो
हम अभी संविधान तक आए
रोज़ मर-मर कर जी रहे हैं हम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोई कितना मसान तक आए।

गोपीवल्लभ के गीत उनकी झेली हुई अनुभूतियों से निस्सृत हैं। व्यष्टि जीवन की सच्चाई ही समष्टि जीवन में स्पंदित होती है। यही कारण है कि जब समय ने लोगों के दुःख को देखा और संपूर्ण क्रांति की मशालों को थामने वाली कलम की तलाश की तो इस जनआंदोलन के शिल्पकार लोकनायक जयप्रकाश नारायण की आवाज़ को बुलंद करने वाली एक कलम गोपीवल्लभ की उठी जिसमें आग को गीतों में ढालकर जनता की बेचैनी को शब्द दिया। गोपीवल्लभ का कहना है — ''जो कविता जनजीवन के दुःख-दर्द को नहीं सहलाती वह चिरजीवी नहीं हो सकती।'' समय के आह्वान पर गोपीवल्लभ की कलम ने गर्म स्याही से गीत लिखे जिनसे लोक आकांक्षा मुखरित हुई। वह जो आँसुओं को पीकर फूलों की हँसी उगाता हो, काल के कुठाराघातों को अपने सीने पर झेलकर समय के धूल-धूसरित पाँवों की थकान मिटाता और जो चौराहे पर भौंचक खड़े इतिहास को सही दिशा की ओर मोड़ता हो उसे ही सच्चा कवि धर्म मानना चाहिए। अपने आँसू से बहुत-से मुस्कराते गीत-पुष्प खिलाएँ हैं और दूसरी ओर राजमार्ग पर भटके हुए विश्वासों को गीत में दीक्षित किया है। जो 'रोटी पर भूखे का नाम' लिख सकें और नुक्कड़ों की गलियों की उदास धड़कनों में जीवन संगीत भर सके। गोपीवल्लभ के गीतों में भाषा, भाव और शिल्प की यही नागरी निष्ठा है। [21]

सन् 1975 में जब आंदोलनकारियों द्वारा सत्ता के समानांतर गणतंत्र दिवस मनाया जा रहा था तब कविवर सहाय ने 'नेताओं को करो प्रणाम' शीर्षक कविता में व्यंग्य किया है। उनकी ये पंक्तियाँ देखिए —

नेताओं को करो प्रणाम
भज लो राम, भजा लो राम।
नेता ईश्वर, जनता धाम
भज लो राम, भजा लो राम।

आपातकाल के परितप्त परिवेश और संतप्त संवेदना का स्वानुभूति संस्पर्श हुआ है। कविवर परेश सिन्हा की कविता 'मौसम का हाल' में मिथक और प्रतीकों के सहारे उनकी अभिव्यंजना मुखर और प्रखर हो गई है। तानाशाही के ख़िलाफ़ संघर्ष के लिए उन्होंने जन-जीवन को ललकारा है। अमूर्त भावनाओं और आनुभूतिक विषर्यय को कविवर सिन्हा ने वाणी दी है।

किसने कहा इनसे कि शकुनि मर चुका है
दुर्योधन की टूट गई है जंघा
द्रौपदी को निर्वस्त्र करने वाले हाथ लुंज पड़ गए हैं।
किसने सुना है कौरव-पत्नियों का विलाप?
यह सब मात्र पांडवों का भ्रम था
×××
सारा कुछ माया थी कृष्णा की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उनका ही था कमाल
यह कोई कविता नहीं है
यह है मौसम का हाल।

आपातकाल में आम लोगों में निराशाजनक व्यवहार से उपजी परिस्थितियों का चित्रण कविवर परेश सिन्हा ने 'अपने भीतर' शीर्षक कविता में किया है। जन-जीवन की चुप्पी पर कवि को असह्य पीड़ा हुई है। कवि का संताप निम्नलिखित पंक्तियों में अभिव्यंजित हुआ है —

मैंने अक्सर खुद से सवाल किया है
कि सारा कुछ सब चुपचाप झेलते जाना
एक खुद्दार कौम के लिए क्या मुनासिब है
और तब
मुसलमान ख़ामोश लम्हों की एक लंबी
चादर तन गई है, गर्द-गिर्द
अपनी ही धड़कनों को सुनकर
अपने होने का एहसास लौटा पाया हूँ।

बिहार के चर्चित नुक्कड़ कवि परेश सिन्हा की रचनाओं में आपातकालीन परिस्थितियों से घायल मन की व्यथा गुंफित हुई है। उन्होंने भाषा के नए मुहावरे भी गढ़े हैं। भाव भूमि की दृष्टि से उनकी रचनाओं में प्राणवत्ता का संचार हुआ है। मानवीय संवेदनाओं की शाश्वतता के कारण यह रचना युगंकर हो गई है। देखिए निम्नलिखित पंक्तियाँ —

आँखों से पानी के पर्दे हैं टाँग दिए
शब्द के अर्थों से गूँगापन माँग लिए
यादों के तलछट पर सपनों की काई-सी,
पसर गई दर्दीली शाम।

विधि की विडंबना है कि जे.पी. को अंग्रेज अपना सबसे बड़ा शत्रु मानते थे और स्वतंत्र भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी भी उन्हें देशद्रोही, गद्दार और शत्रु मान बैठीं। जे.पी. भारत के अकेले ऐसे नेता हैं, जिन्हें ब्रिटिश हुकूमत ने जितना पीड़ित-प्रताड़ित किया उससे कहीं अधिक कांग्रेस की हुकूमत ने। 4 नवंबर, 1974 को जब जे.पी. पर पटना में लाठीचार्ज हुआ था, उस समय स्वयं उन्होंने कहा था कि अंग्रेजी राज में किसी ने उन पर लाठी नहीं मारी थी, यह अनुभव तो इंदिरा गाँधी शासन में ही हुआ।[22]

आपातकाल की घोषणा के साथ ही रातों-रात लोकनायक जयप्रकाश सहित अनेक स्वाधीनता संग्राम के सैनानियों को जेल के सीखचों में बंद कर दिया गया। सत्ता की तानाशाही ने उसे बेकार और फालतू समझकर उसकी बोलती बंद कर दी। आपातकाल की इन्हीं स्थितियों को चित्रित करती हैं कविवर रॉबिन शॉ पुष्प की कविता 'जंगल में आग की' ये पंक्तियाँ —

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जो आज़ादी के लिए खून देते रहे,
बीमार और कमजोर होकर
रद्दी की टोकरी में पड़े हैं...
और जो केवल भाषण देते रहे —
आज देश के भाग्य का निर्णय करते हैं।

कुर्सीवाद नेताओं की चरित्रबलहीनता तथा संस्कारहीनता का सहज परिणाम था। कहते हैं, ''जैसा राजा वैसी प्रजा।'' प्रजातंत्र में इसके विपरीत स्थिति भी हो सकती है — जैसी प्रजा वैसा राजा। अपने देश की स्थिति कुछ विचित्र है। मध्ययुगीन सामंती मानसिकता से अपने देश की जनसंख्या का एक बड़ा अंश अब भी मुक्त नहीं हो सका है। फलत: व्यक्ति पूजा की प्रवृत्ति प्रबल है। दूसरी ओर जनतंत्र के आदर्श भी हमारे प्रेरक रहे हैं। सामंती मानसिकता वाली अधिसंख्यक जनता को जनतांत्रिक मुखौटापरस्त नेताओं द्वारा बरगलाना यहाँ आसान रहा है। मध्ययुगीन मानसिकता का एक लक्षण यह भी है कि हम सहज ही विश्वास कर लेते हैं और वह भी खतरनाक सीमा तक। [23]

भारतीय लोकतांत्रिक परिदृश्य में श्रीमती गाँधी ने कुर्सी के खेल की परंपरा विकसित कर ली थी। सारी सत्ता उन्होंने मुट्ठी में कर ली थी। उनके इशारे पर प्रदेशों के मुख्यमंत्रियों को बदलना और पार्टी अध्यक्षों को बदलने के खेल पर कविवर परेश सिन्हा ने तीखा व्यंग्य किया है। 'सत्ता का खेल' शीर्षक कविता की निम्नलिखित पंक्तियाँ देखिए —

खेल भाई खेल, खेल भाई खेल
कैसा गजब यह सत्ता का खेल।
बेटे को हाथ लगा कार-कारख़ाना
पोसपुत के हाथ आई भारत की रेल
माता जी खेल रहीं कुर्सी का खेल
खेल भाई खेल, खेल भाई खेल।

आपातस्थिति की घोषणा के साथ ही श्रीमती गाँधी ने सूचना एवं प्रसारण मंत्री पद से इंद्र कुमार गुजराल को मुक्त कर इस विभाग की बागडोर विद्याचरण शुक्ल के हाथों में थमा दी। उन्हें बता दिया गया कि आपातस्थिति के दौरान स्थिति पर नियंत्रण रखने तथा वातावरण को अनुकूल बनाए रखने की जिम्मेदारी प्रमुख रूप से इसी विभाग की ही होगी। विद्याचरण शुक्ल ने भी बिना विलंब किए सभी प्रकार के प्रचार एवं प्रसार माध्यमों पर पंजा कसना प्रारंभ कर दिया। सबसे पहले तो उन्होंने अपनी पसंद के कुछ अधिकारियों को अपने विभाग में शामिल करवाया और फिर अपने करतब दिखाने आरंभ किए। श्रीमती गाँधी ने स्वयं भी इस विभाग की नीतियाँ निर्धारित करवाने तथा उनके क्रियान्वयन की पूछ-परख करने में व्यक्तिगत रुचि ली। [24] कविवर तपेश्वर नाथ ने 'समाजवाद आ गया' शीर्षक कविता में इस युग-यथार्थ का हृदयस्पर्शी चित्रण किया है —

समाचार पत्र जल रहे हैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रोशनी बुझ गई
जनवाणी ठप
बख्त्यार खिलजी फिर
नालंदा जलाने आ गया
×××
और लेखक,
जो एल.एस.डी.के नशे में चूर था,
अचानक गोली के धमाके से चौंककर पूछता है —
'सड़कों पर यह कौन-सी सदी बीत रही है?'
'मुनाफाखोर' आदमखोर कहते हैं — चौंको मत, चैन से सोओ
यह भारत का स्वर्ण युग है!

11 अप्रैल, 1972 की रात कुख्यात बागी मोहर सिंह जे.पी. से मिला और उसने हथियार डाल दिए। उसके ऊपर दो लाख रुपए का ईनाम था। जे.पी. के चरण पकड़कर उसने कहा, ''आप चाहें तो फाँसी पर लटका दें और चाहें तो बचा लें। हम कुछ नहीं कहेंगे। हमने तो अपना सिर आपके चरणों में डाल दिया है।'' ऐसा था जे.पी. का व्यक्तित्व - उसमें 'चंदन की शीतलता थी' और चुंबक का आकर्षण भी। [25]

लोकनायक के इन्हीं करुणाओं से प्रेरित होकर आपातकाल के चर्चित कवि सत्यनारायण की 'अपराधों की घाटी में' शीर्षक कविता में वेदना का भाव उभरा है। उनकी रचनाओं में सामाजिक पीड़ा टीसती हुई सी महसूस होती है, जिसके कारण बड़ी संख्या में लोगों ने हथियार उठाया तथा समाज व व्यवस्था को चुनौती दे रहा है। चंबल के बागियों के आत्मसमर्पण और आपातकाल से पहले की स्थितियों का चित्रण कविवर सत्यनारायण की निम्नलिखित पंक्तियों में हुआ है —

सवाल पिछवाड़े के बरगद को
ज़मीन की सतह तक
छील छाँटकर निश्चित हो जाने का नहीं है
हालात जड़ों के साथ
गहरे बहुत गहरे उतर चुके हैं
वैसे होने को कुछ भी हो सकता है
मगर आँखों पर
काला चश्मा डालकर तुम
अपने आपको धूप और लू से बचा लो
यह नहीं हो सकता
भिंड और मुरैना तो बस पाते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सरल भाषा में सीधे-सीधे जनता को संप्रेषित इनमें से कई कविताएँ आंदोलन का पाथेय बन गईं। रविंद्र राजहंस का 'जला आदमी' सत्यनारायण का 'कितने दिन' गोपीवल्लभ का भज लो राम, भजा लो राम आदि की पंक्तियों के पाठ से न केवल नुक्कड़ों पर खड़े लोग प्रभावित हुए, बल्कि सत्याग्राहियों के कंठों के माध्यम से ये पंक्तियाँ जेलों के भीतर तक पहुँच गईं और कारावासियों का उत्साहवर्धन करती रहीं। [26]

कविवर सत्यनारायण की 'कितने दिन...?' की निम्नलिखित पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं —

अजब हाल है, सब कुछ गोरखधंधा है
जनता की गर्दन शासन का फंदा है
कसती जाती फाँस, रहनुमा अंधा है
होश करो, यह हिटलरशाही कितने दिन
कितने दिन?

'बंदी होगी, धरना होगा' शीर्षक कविता में कविवर सत्यनारायण ने आपातकाल की परिस्थितियों का जनजीवन की सामान्य भाषा में सुंदर चित्रांकन किया है। सन् 1974 के आंदोलन और उसके बाद पटना के नुक्कड़ों पर काव्य पाठ करते हुए कविवर सत्यनारायण के निम्नलिखित छंद बरबस लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं। सफेदपोशों से हिसाब करने का आह्वान करते हुए देखिए कवि क्या लिखते हैं —

बंदी होगी, धरना होगा,
जो भी होगा, करना होगा।
नंगी देह, पेट खाली है
भइया कैसी बदहाली है
फिर भी, देखो, नेताओं —
सेठों की होली-दिवाली है
इन सफेदपोशों से अब तो
सब हिसाब तय करना होगा।

बिहार के ख्यात कवि पद्मश्री पोद्दार रामअवतार अरुण की कविता 'निज को बलिदान करो साथी' ललकारती है और चुनौती देती है। ये रचना आपातकाल की भीषण विभीषिकाओं से संघर्ष करने की प्रेरणा देती है। कविवर अरुण सभ्यता और संस्कृति के पर्याय गंगा, जमुना पर स्वाभिमान के साथ राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लिए अपने आप को न्यौछावर करने का आह्वान करते हैं। देखिए उनकी निम्नलिखित पंक्तियाँ —

चुप रहे सभी, तब तुम बोले,
सुन अग्नि पवन, किसलय बोले
उनचास पवन भी सुहराए —

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सन-सनन-सनन हौले-हौले
वासंती विप्लव पतझर का
कितना अनमोल अनोखा रे
सत्ता ने धोखा दिया किंतु,
तुमने न दिया है धोखा रे

कविवर केदारनाथ लाभ ने 'साथी नहीं धुआँओ' शीर्षक कविता में युद्ध क्षेत्र में युद्धकर्म का बड़ा ही इंकलाबी चित्रण किया है। इस कविता की एक-एक पंक्ति जनजीवन में रक्त का संचार तेज करने वाली है। सांग्रामिक चित्रण का तेवर इतना उप्लवी हो गया है, जो मानो मुर्दों में भी जान फूंकने वाला है। ऐसा लगता है कवि ने स्वयं क्रांतिकारी की भूमिका का निर्वहण किया है। कविवर लाभ की निम्नलिखित पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं —

इस क्रांति यज्ञ की तुम सर्वात्म समर्पण
करना तुम्हें पड़ेगा, कुछ और रक्त-तर्पण
हिल जाएगी धरित्री, गल जाएगा हिमालय
कुछ और जोर मारो, है बाट जोहती जय
तम काँपने लगा है, नूतन विहान लाओ
अंगार धार में निज कुछ और ज्वार लाओ
×××
तुम खड्ग-पथ पर चल, इतिहास नव बनाओ
तुम ताल में लहु के, साथी विहँस नहाओ।

राष्ट्रीय चेतना के कवि डॉ. शत्रुघ्न प्रसाद की तीन रचनाएँ 'आंदोलन की कविताएँ' में शामिल हैं। सन् 1974 आंदोलन के दौरान 'एक सड़ी लाश' नामक इनकी रचना काफी चर्चित हुई थी। अनेक स्मारिकाओं में भी यह प्रकाशित हुई थी। इस कविता के माध्यम से डॉ. प्रसाद ने कांग्रेस की तानाशाही व्यवस्था को सड़ी लाश के रूप में अभिव्यंजित किया है। इस कविता की कुछ पंक्तियों को देखिए —

सफेद धुले कपड़ों में
एक सड़ती हुई लाश
संगीनों के सहारे
हमारी गर्दन पर सवार है
×××
नौजवानों ने
अपनी बलिदानी मुस्कानों से
उसे सहमा दिया है।
लाश, गर्दन से नीचे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सरकने लगी है।

बिहार के ख्यात कवि डॉ. शत्रुघ्न प्रसाद 'सलीब के टुकड़े' शीर्षक कविता में सन् 1974 की न केवल परिस्थितियों का सटीक चित्रण किया है अपितु उत्तरार्द्ध में व्यवस्था के ख़िलाफ़ विप्लव का भी शंखनाद किया है। आंदोलन के आह्वान के बीच भी उनकी कविताओं में जनजीवन का शुक्लपक्ष दृष्टिगोचर होता है। उन्होंने केवल भूख, प्यास और संत्रास की ही बात नहीं की है अपितु जन न्यायालय की बात कहकर उसे समग्रता प्रदान की है। 'सलीब के टुकड़े' शीर्षक कविता की निम्नलिखित पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं :—

सलीब के टुकड़ों ने
अपराधियों को घेर लिया है
न्याय के तख़्त पर आसीन
महाकाल ने मुजरिमों को पहचान लिया है।
अभिनंदन है, युगांतर का!

काव्य पुरुष डॉ. शत्रुघ्न प्रसाद ने 'नया अभिमन्यु' शीर्षक कविता में तानाशाही सत्ता को ललकारा है। गर्जना और हुंकार के स्वर से मानो वातावरण अनुगुंजित हो रहा है। उनकी अंतश्चेतना की असीम ऊर्जा नए महाभारत में विजयी का उद्घोष कर रही है। 'नया अभिमन्यु' शीर्षक कविता की निम्नलिखित पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं :—

दुःशासन! संभल जाओ
दुर्योधन! सावधान हो जाओ
×××
नया अभिमन्यु
विषैला चक्रव्यूह तोड़ेगा,
नए महाभारत में
नया युग अंगड़ाई लेगा।

सन् 1974 के दौरान भ्रष्टाचार ज़ोरों पर था। राजनेताओं के शह पर अधिकारी-कर्मचारी घूस लेने लगे थे। किसी का कोई नियंत्रण नहीं रह गया था। उस समय की इन्हीं परिस्थितियों को अभिव्यक्ति दी है कविवर रविंद्र राजहंस ने अपनी कविता 'जला आदमी' में। कविवर राजहंस ने सामाजिक दुर्व्यवस्था का यथार्थ चित्रण इस कविता में किया है। देखिए निम्नलिखित पंक्तियाँ —

वहाँ सवाल पूछता है एक जला आदमी
अपने नगर में कहाँ रहता है भला आदमी?
सरकारी विश्वकर्माओं के बीच?
जिनकी पाचन शक्ति बड़ी कड़ी है
लोहे की छड़, सीमेंट, ईंट पत्थर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सब कुछ भष्म हो जाता है
जिनकी अंतड़ियों के अंदर।

14 अप्रैल 1974 को पटना में अनेक स्थानों पर अनशन और धरना के कार्यक्रम आयोजित हुए, जिनमें लगभग पंद्रह हजार लोगों ने भाग लिया। बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन के बरामदे पर सम्मेलन अध्यक्ष रामदयाल पांडे के नेतृत्व में कई साहित्यकार भी अनशन पर बैठे, जिनमें रेणु जी, डॉ. मुरलीधर श्रीवास्तव, डॉ. सीताराम दीन और अमरनाथ सिन्हा आदि शामिल थे।[27]

'अनशन के बाद' शीर्षक कविता में कविवर रविंद्र राजहंस ने भ्रष्टाचार में लिप्त व्यवस्था पर करारा चोट किया है। यह कविता 23 अप्रैल 1974 को पहली बार पटना सेंट्रल जेल के सामने 'इंडियन नेशनल' समाचार पत्र के पास हुए नुक्कड़ कवि गोष्ठी में सुनाई गई थी। देखिए निम्नलिखित पंक्तियाँ —

अनशन पर बैठ चुके
मत समझो गंगा नहा लिया
जुलूस में नारे लगा चुके
मत समझो सब कुछ है पा लिया
हो गए सबके सब भगत सिंह के भतीजे
इतनी गंभीर समस्याओं के
इतने जल्द नहीं निकलते नतीजे
सभी भ्रष्टाचार से ऊबे हैं
मगर सबके सब उसी में डूबे हैं।

कविवर मुकुटबिहारी पांडे की कविता 'आदमी आखिर आदमी ही तो है' में आम आदमी की पीड़ा और मनोव्यथा का चित्रण किया गया है। स्वाभाविक तौर पर लोकतंत्र के नाम पर अपनाए जा रहे राजतंत्र के कारण मन में उत्पन्न छटपटाहट की व्यंजना हुई है। कविवर पांडे ने जनजीवन की अनुच्चारित पीड़ा की वाणी दी है। कवि महसूस करता है कि कविता के नाम पर समाज की नहीं केवल सरकार की स्वतंत्रता है। उनकी निम्नलिखित पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं —

उसकी हर स्वतंत्रता छीनी जा रही है
लगता ऐसा है,
कि भारत में जनतंत्र नहीं राजतंत्र है
पूरा देश नहीं, केवल सरकार स्वतंत्र है,
तभी तो जो दिल में आता है वह करती है!
आदमी आखिर आदमी ही तो है!

आपातकाल के दौरान देश भयंकर अकाल से गुज़र रहा था। देश की आधे से अधिक आबादी दाने-दाने को व्याकुल थी। उन्हीं परिस्थितियों को रेखांकित करती है बिहार के रचनाकार सच्चिदानंद

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज़ाद की कविता 'तड़पन'। पेट की भूख मिटाने के लिए रोटी की याचना के बदले सत्ताधारियों के द्वारा कोरे नारों और खोखले आश्वासन से भूख न मिटने का सुंदर चित्रांकन हुआ है। जन-जीवन का भोगा हुआ यथार्थ उभरकर सामने आया है। करुणा और विषाद का मार्मिक चित्रण कविवर आज़ाद की इन पंक्तियों में अपनी करुण कथा-व्यथा बयान कर रही हैं —

मैंने तो अपनी अंतड़ियों को
अपने हाथों से दाबे
कातर भाव आँख में लिए
सिर्फ एक रोटी की याचना की थी
तुमने दिए कोरे नारे
खोखले आश्वासन
इससे जब हमारी भूख नहीं गई
मैंने आवाज़ लगाई
बदले में पाया —
लाठी, गोली और जेल।

कविवर चंद्रशेखर सिंह ने 'शील का अभियान' शीर्षक कविता में सत्ताधारियों द्वारा आपातकाल लादने को ठीक करार देने पर क्षिप्रता, तीव्रता और बेधकता के साथ व्यंग्य किया है। उन्होंने आपातकाल को काले रक्त की संज्ञा दी है और उनकी पुनर्व्याख्या में व्यस्त समाज के छोटे-बड़े लोगों पर उपहास किया है। देखिए इन पंक्तियों को —

पेट और पीठ के नंगेपन को
ढाँपती हुई तख़्तियाँ
काले रक्त की परिभाषा की
पुनर्व्याख्या में निमग्न —
शिशु से लेकर सन-से सफेद
बालों वाली इंसानी डंठलें

हिंदी के ख्यात कवि पंडित रामदयाल पांडे की 'होगी तरुणों की क्रांति सफल' शीर्षक कविता में कवि ने सत्ता के खिलाफ बगावत का स्वर बुलंद किया है। जन आंदोलन के लिए लयात्मक यह कविता तब काफी चर्चित हुई थी। कवि ने इस कविता के माध्यम से अपने कवि कर्म के नैपुण्य का भी प्रकटन किया है। उन्होंने इस कविता के माध्यम से संपूर्ण क्रांति का प्रमाणन किया है। देखिए इन पंक्तियों को —

सत्ता हो रुष्ट भले, कवि को
तो सत्य-कथन करना केवल
होगा अवश्य ही, दमन विफल,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

होगी तरुणों की क्रांति सफल
यह क्रांति सत्य पर आधृत है,
यह क्रांति न्याय की पुकार है।

कविवर पांडे ने आपातकाल के असीम अनाचार को मिथक के सहारे अभिव्यंजना के साथ गाया है। अत्याचार, भ्रष्टाचार की पीड़ा उन्हें कचोटती है, सालती है और फिर भी वे विचलित नहीं होते। कवि आत्मस्थ होकर मिथक के ही माध्यम से जुल्मों सितम की नेस्तानाबूदी पर तुला है। यह कवि की आशावादी दृष्टि को उजागर करता है। कवि की रचना में न केवल तानाशाही सत्ता के ख़िलाफ़ विद्रोह का स्वर मुखर हुआ है, अपितु उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से युवाओं के नस-नस में रक्त का संचार भी तेज किया है।

सीमा सहिष्णुता की टूटी
बढ़ गए असीमित अनाचार,
सुरसा-सा भ्रष्टाचार बढ़ा,
हनुमान बना तारुण्य ज्वार,
अतिमूल्य वृद्धि की शूर्पणखा
फैलाती मायाजाल प्रबल
होगी तरुणों की क्रांति सफल

हिंदी के ख्यात कवि और गांधीवादी चिंतक कलक्टर सिंह केसरी की 'एक प्रश्न' शीर्षक कविता में आपातकाल की पीड़ा, उत्क्लेश और उत्पीड़न का प्रवणतापूर्ण प्रकटण हुआ है। उनकी रचनाओं में सत्ता और समाज के बीच के संघर्ष का स्वरण हुआ है। कलह-कोलाहल और आकुल-व्याकुल मन को शब्दित करने में कवि सर्वथा समर्थ है। आपातकाल की परिस्थितियों से उत्पन्न व्यथा, विह्वलता और एक हद तक कहें तो विवशता इन पंक्तियों में टूटी है —

आज गोली और बोली में छिड़ा संघर्ष है —
देखना है कौन ज़्यादा कारगर पुरजोश है,
और इस गृह-युद्ध कोलाहल, कलह से
व्यथित गाँधी-भक्त हम हैरान हैं, ख़ामोश हैं

काव्य पुरुष कलेक्टर सिंह केसरी ने इस कविता में आवाम बनाम सरकार की शक्ति का तुलनात्मक विवेचन किया है। वे कहते हैं कि एक तरफ भूख, प्यास, संत्रास, उपवास और ग्रास से उपजा कलह, कोलाहल, कशमकश, क्रोध और क्रोश है तो दूसरी तरफ बेरहम, बधिर, बदहोश, शासन-शक्ति और शाही व्यवस्था की शहाना वक़्त। सत्ता के तानाशाही तांडव का उनकी रचनाओं में सम्यक् संज्ञापन हुआ है। देखिए इन पंक्तियों को —

अंध जब निर्वध उमड़ा इस तरफ जनरोष है,
कशमकश है, भूख है, आक्रोश है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और फिर उस तरफ शासन-शक्ति भी

बेरहम है, बधिर है, बदहोश है

'आंदोलन की कविताएँ' में डॉ. अमरनाथ सिन्हा की दो कविताएँ समाकलित हैं — 1. सत्ता और नेता के नाम 2. युवकों के नाम। इन दोनों ही रचनाओं में सत्ता के तानाशाही तांडव का चित्र उपस्थापित किया गया है। डॉ. सिन्हा मूलत: समालोचक के रूप ख्यात हैं, किंतु इन रचनाओं को पढ़कर लगता है मानो कविताओं पर भी उनकी पकड़ कहीं से ढीली नहीं है। आपातकाल के प्रति चिंतन के साथ-साथ कवि का पांडित्य भी इन रचनाओं में प्रतिच्छादित हुआ है। सत्तारूढ़ दल की तानाशाही प्रवृत्ति और उससे मर्माहत मन की अनुभूति के अवतरण में शब्द सार्थक और समर्थ साबित हुए हैं। 'सत्ता और नेता के नाम' शीर्षक कविता की ये पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं —

गौर से देखो सेक्रेटेरियट के आगे...

उन कफ़नपरस्त जवानियों के

जवान रगों से रिसते

वे खून के कतरे

आँसू बन चले हैं,

उनकी चिपड़ी बोटियाँ

एक बार फिर हाड़-माँस का पुतला

इंसान बनना चाहती है, ताकि एक बार फिर

तुम्हें चुनौती दे सकें

प्रो. आनंद नारायण शर्मा के मुक्तक उन दिनों काफी चर्चित हुए थे। अनेक छोटी-छोटी पत्र-पत्रिकाओं में भी ये मुक्तक छपे थे। इसमें व्यवस्था के ख़िलाफ़ विद्रोह है। सत्ता की सर्वोच्च कुर्सी को उनके मुक्तक डराते-धमकाते-से प्रतीत होते हैं। उनके मुस्तक की आधारशिला सत्ता के प्रति बैर, द्वेष की भावना पर ही आधारित है। उनके मुक्तक में कुल मिलाकर विप्लव, बगावत और बलवाई मनोभाव दृष्टिगोचर होता है। देखिए इन पंक्तियों को —

अपनी ऊँचाई पर ज़्यादा मत इतराओ

सब दिन मौसम का रुख न एक रह पाता है,

बच जाती हैं नन्हीं दूब मगर गिरते तरुवर

उन्मत्त प्रभंजन जब हहराता आता है।

सन् 74 के आंदोलन और सन् 75 में लागू आपातकाल पर लिखने वाले यूँ तो सैंकड़ों कवि और साहित्यकार हैं, जिसका उल्लेख एक आलेख में संभव नहीं लगता है फिर भी उन दिनों कविवर जयगोविंद सहाय 'उनमुक्त', भागवत प्रसाद सिंह, लक्ष्मीनारायण सिंह, डॉ. मनोरंजन झा, मिश्रीलाल जयसवाल, प्रकाश चंद्रायन का नामोल्लेख न किया जाए तो बेईमानी होगी। इन लोगों ने तानाशाही के ख़िलाफ़ लेखनी उठाई और विरोधी स्वर को मुखर किया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुल मिलाकर बिहार के रचनाकारों की कविताओं में चुनौती और ललकार के स्वर अनुगुंजित होते हैं। कवियों ने न केवल काग़ज़ों पर सत्ता के विरोध को रेखांकित किया अपितु चौक-चौराहों पर अपनी रचनाओं का पाठ भी किया। किसी ने लोकचेतना जागृत की तो किसी ने सत्ता के ख़िलाफ़ संघर्ष के लिए छंदोबद्ध नारे लिखे। नुक्कड़ों पर कभी गीत गाए गए तो कभी तुकांत कविताओं का सरस्वर पाठ किया गया। इसलिए उस समय की अधिकतर रचनाएँ तुकांत हैं। आज़ादी की दूसरी लड़ाई के रूप में इसे लड़ा गया। यही कारण है कि उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश इत्यादि राज्यों ने आपातकाल के भुक्त भोगियों को पेंशन देने की भी घोषणा की है। भारतीय लोकतंत्र के स्वर्णिम इतिहास में आपातकाल के काले अध्याय पर लेखनी चलाने वाले कवि-साहित्यकारों को सरकार के साथ-साथ अनेक स्वयंसेवी संगठनों ने भी सम्मानित एवं प्रशस्तित किया है।

— ए-448, डेयरी धरौली कॉलोनी,
मयूर विहार-3, नई दिल्ली

संदर्भ सूची :

1. श्री फ़ज़ल इमाम मल्लिक, जे.पी. आंदोलन में कविताएँ (आलेख) संवेद-13, संपादक : किशन कालजयी, प्रकाशन : नवंबर 2004, पृ.सं. 133
2. डॉ. शैलेन्द्रनाथ श्रीवास्तव, 'बिहार आंदोलन में प्राध्यापकों की भूमिका' (आलेख), छात्र आंदोलन से जनता सरकार तक, प्रकाशक : अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्, बिहार प्रदेश, प्रकाशन : 1977 पृ.सं. : 39
3. श्री फ़ज़ल इमाम मल्लिक, 'जे पी आंदोलन में कविताएँ (आलेख), संवेद-13, संपादक : किशन कालजयी, प्रकाशन : नवंबर 2004, पृ.सं. 133'
4. श्री अक्षय जैन, 'आपातकाल और हिंदी लेखक' (आलेख), हिमालय दर्पण, 9 दिसंबर 1996
5. वही
6. श्री विभाष चंद्र चौधरी, 'आपातकाल के दौरान भूमिगत साहित्य एवं उसके संकलित अंश' (आलेख) छात्र आंदोलन से जनता सरकार तक, प्रकाशक : अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् : बिहार प्रदेश, प्रकाशन : 1977 पृ.सं. 93
7. श्री फज़ल इमाम मल्लिक, जे.पी. आंदोलन में कविताएँ (आलेख), संवेद-13, संपादक : किशन कालजयी, प्रकाशन : नवम्बर 2004, पृ.सं. 134
8. वही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

9. डॉ. शैलेन्द्रनाथ श्रीवास्तव, बिहार आंदोलन में प्राध्यापकों की भूमिका (आलेख), छात्र आंदोलन से जनता सरकार तक, प्रकाशक : अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्, बिहार प्रदेश, प्रकाशन : 1977 पृ.सं. : 40

10. श्री फज़ल इमाम मल्लिक, 'जे.पी. आंदोलन में कविताएँ (आलेख), संवेद-13, संपादक : किशन कालजयी, प्रकाशन : नवंबर 2004, पृ.सं. 135

11. वही, पृ.सं. 136

12. वही, पृ.सं. 136-137

13. वही, पृ.सं. 137

14. वही, पृ.सं. 137

15. वही, पृ.सं. 134

16. श्री सिद्धेश्वर, 'जनबल को जगाना चाहते थे लोहिया और जे.पी.' (आलेख), विचार (त्रैमासिक), अंक-11, वर्ष : 4, पृ.सं. 23

17. डॉ. शत्रुघ्न प्रसाद, आपातकालीन संघर्ष में बिहार, संस्करण : 1978, पृ.सं. 7

18. वही, पृ.सं. 8

19. श्री रजनीकांत मुद्‌गल, 'कोर्ट से वोट तक', नागपाल पॉकेट बुक्स, दिल्ली 32, पृ.सं. 52-53

20. प्र.ग. सहस्रबुद्धे, मानिकचंद वाजपेयी, आपातकालीन संघर्ष गाथा, सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली-55, संस्करण : 1990, पृ.सं. 484-85

21. मैथिली वल्लभ परिमल, दुख का गाता चेहरा, (आलेख), विचार दृष्टि (त्रैमासिक), अंक - 11, वर्ष 4 पृ.सं. 23

22. डॉ. शैलेन्द्रनाथ श्रीवास्तव, लोकनायक जयप्रकाश नारायण, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली, संस्करण : 2002, पृ.सं. 159

23. डॉ. अमरनाथ सिंह, छात्र आंदोलन से जनता सरकार तक, प्रकाशक : अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्, प्रकाश : 1977, पृ.सं. 11-12

24. प्र.ग. सहस्रबुद्धे... मानिक चंद वाजपेयी, आपातकालीन संघर्ष गाथा, सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली 55, संस्करण : 1990, पृ.सं. 489

25. डॉ. शैलेन्द्रनाथ श्रीवास्तव, लोकनायक जयप्रकाश नारायण, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली, संस्करण : 2002, पृ.सं. 104

26. वही, पृ.सं. 201

27. वही, पृ.सं. 124

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उदय प्रताप सिंह

दूसरी आज़ादी का दस्तावेज

आज आधुनिक हिन्दी साहित्य की दशा और दिशा आलोचनात्मक पत्रिकाएँ तय करने लगी हैं। फलतः शाश्वत मूल्यों का स्थान तात्कालिकतावादी प्रवृत्तियों ने ग्रहण कर लिया है। साहित्य, समाज, मूल्य, नैतिकता सबकी तलाश राजनीतिमुखी हो गई है। तात्कालिकता की इस प्रवृत्ति ने गंभीर साहित्य के समक्ष एक बड़ा प्रश्न खड़ा कर दिया है। जीवन के अन्तर्नाद, आंतरिक सौन्दर्य की दृष्टि और भावात्मक आत्मीयता का प्रतिबिम्बन राजनीति के छल छद्म रूपी ताल में विलीन से हो गए हैं। वैचारिक कटघरे में खड़ी कुछ प्रतिबद्ध पत्रिकाएँ साहित्य का समाज शास्त्र गढ़ने का मुगालता अवश्य पाले हुए हैं पर समाज का शास्त्र और लय तोड़ने में भी वे पीछे नहीं हैं। साहित्य की आलोचना, विचारों का सिद्धान्त और मानकसाहित्य का 'माडल' पेश कर ऐसी पत्रिकाएँ समाज की आवाज़ को अपनी आवाज़ बनाकर स्वयं का प्रचारतंत्र गढ़ रही है। लोक साहित्य को जनवादी नाम दिया गया है। जो वस्तुतः न जनवादी है न मनुवादी (पारम्परिक)। वह कुछ प्रायोजित आलोचकों के अहंकार का 'भँड़ास' मात्र बनकर रह गया है। आमजन तो दूर ख़ासजन भी उसे नहीं पचा पा रहा है। साहित्य में ऐसे विचार और विचारक दोनों खतरा बने हुए हैं। इस विचार के लोग नारी की मुक्ति की अपेक्षा उसकी यौनमुक्ति के अधिक पक्षधर हैं। दलितों की बदतर स्थिति में सुधार इनका मिशन नहीं अपितु प्रतिशोध और वर्ग संघर्ष को उभाड़ना उद्देश्य है। आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों की अवलेहना तथा अतीत के उज्ज्वलतम पक्ष के निषेध के कारण मात्र साहित्य का गद्य और पद्य पाठकीय रुचि से विरत हो गए हैं। पाठकीय संवेदना का अभाव साहित्य को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्षयिष्णु बना रहा है।

साहित्य के ऐसे संक्रांति काल में भी हिन्दी जगत की कुछ ऐसी पत्रिकाएँ हैं जिनसे आशा की किरणें प्रस्फुटित होती हैं। मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् द्वारा संचालित 'साक्षात्कार' में कुछ इसी प्रकार के आयाम उभरते दिखाई पड़ते हैं। इसमें साहित्य के शुद्धता की तलाश और साहित्य-समाज के अन्तर्सम्बन्धों के मुद्दे विचार-विमर्श की परिधि में दिखाई पड़ते हैं। इस प्रकार की प्रवृत्ति इधर 2-3 वर्षों में प्रमुखता के साथ प्रकट हुई है।

स्वाधीन भारत में आपातकाल एक प्रकार से मानव की आज़ादी पर ग्रहण जैसा रहा है। तत्कालीन प्रधानमंत्री और काँग्रेस की नेता इंदिरा गांधी का चुनाव न्यायालय द्वारा निरस्त कर दिया गया था। उसकी प्रतिक्रिया और सत्ता की लिप्सा में सम्पूर्ण देश 25 जून 1975 को आपातकाल की काली छाया में जकड़ उठा था। विपक्षी नेताओं को बंदी बनाना कलम की धार कुंद करना और अधिकारों को निरस्त करना इस शासन की विशेषता रही है। स्वतंत्र विचारक और प्रचारक विद्वान तथा साहित्यकार बिना किसी कारण के मीसा में निरुद्ध कर दिए गए। अभिव्यक्ति पर ताले लग गए। अधिसंख्य साहित्यकार और पत्रकार प्रताड़ना के भय से दिल्लीश्वर की जय बोलने लगे। विनोबा भावे तक ने उसे अनुशासन पर्व कहा। पुलिस उत्पीड़न का ताण्डव, शासन का अविवेकी चेहरा और समाज की अंतहीन समस्याओं ने सम्पूर्ण देश में एक सन्नाटा ला दिया था।

आपातकाल के तीन दशक बाद उसकी चर्चा एक बारगी असहज अवश्य कर देती है, किन्तु वर्तमान समय में राजनीति, और प्रविधि की साँठगाँठ आधुनिक मानव समाज के लिए सबसे बड़ी समस्या है। इससे उबरने का उपाय सर्जनात्मकता ही हो सकती है। जिन मुद्दों को लेकर 1974 ई. में व्यापक राष्ट्रीय आंदोलन हुआ था, वे मुद्दे आज भी हमारे बीच जीवित हैं। बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, शैक्षिक अराजकता जैसी समस्याएँ शैतान की झाँत की तरह सब कुछ अपने अंदर समेट रही है। वर्तमान समय में लोकतंत्र के स्वरूप विकास के लिए आपातकाल पर विमर्श आवश्यक है।

साहित्य में समसामयिकता की माँग करने वालों वर्तमान समय में आपातकाल का संदर्भ अप्रासंगिक अवश्य लग सकता है, परन्तु सर्जनात्मक साहित्य का अर्थ सामयिक पत्रकारिता नहीं होता। वास्तव में घटनाएँ समसायिक नहीं होतीं, समसामयिक तो वह दृष्टि होती है जिससे हम उसे देखते हैं। साहित्य इतिहास को समय में बाँधता नहीं, समय में इतिहास का विस्तार करता है। नारी और दलित विमर्श वर्तमान में साहित्य प्रमुख विषय है, परन्तु आपातकाल के माध्यम से मनुष्य मात्र की स्वतंत्रता की आवाज उठाई गई है।

और अंत में यही कहा जा सकता है। आपातकाल के लेख और विचार उन व्यक्तियों के सहपात्री हैं, जिनके नाखूनों में खपाचें और पैरों में बेड़ियाँ पड़ी थीं। सचमुच यह देश की दूसरी आज़ादी थी और इसमें भाग लेने वाले देश के सच्चे प्रहरी। इनके हृदयों में बीस महीनों तक अनवरत प्रज्ज्वलित होने वाली स्वतंत्रता की आग में आज की विसंगतियाँ भी मोम बनकर गल जाएँगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रियंवद

संघर्ष का स्वर *

आपातकाल वास्तविक अर्थों में तानाशाही नहीं था और इसका छिटपुट विरोध तानाशाही के विरोध की तरह भी नहीं था। फिर भी पूछा जा सकता है कि क्या इस आपातकाल की कथित तानाशाही का विरोध करने के लिए किसी पत्रिका के संपादक या लेखक को जेल हुई? क्या किसी भी पत्रिका का संपादक, प्रकाशक या कोई बड़ा क्रांतिकारी लेखक इसलिए जेल गया कि उसने आपातकाल का विरोध किया था? क्या किसी की हत्या हुई? किसी को गोली मारी गई? कोई रातोंरात हमेशा के लिए गायब हुआ? कोई लोर्का, बेंजामिन मोलाइस की मौत मरा। सोल्झिनित्सिन, स्टीफन ज्विग की तरह उसे देश छोड़ना पड़ा? नहीं। फिर यह कैसी तानाशाही थी?

सच यही था कि वह सत्ता का एक नौसिखिया दमन था, क्योंकि सत्ता में बैठे लोगों ने भी कभी तानाशाही को देखा या भोगा नहीं था। पर अगर यह नौसिखिया दमन था भी, क्या कोई प्रतिरोध लेखकों, लघु पत्रिकाओं की तरफ से हुआ? वह भी नहीं हुआ। अगर हुआ होता तो हमारे पास विरोध करने वाली उन रचनाओं की उन पत्रिकाओं की, व्यक्तियों की एक लंबी सूची होती जैसी स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान की मिलती है।

---

* 5 जुलाई, 2009 जनसत्ता दिल्ली से साभार।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह देखना और भी रोचक है कि आपातकाल ख़त्म होते ही — जनता पार्टी की सरकार बनते ही — संस्मरण, डायरी, नोट्स, प्रतीकात्मक कविताओं, कहानियों की बाढ़ आई, जिनमें शहीदाना तरीके से आपातकाल के अपने मूल्यपरक संघर्ष, अपने विरोध को इतिहास में दर्ज करने के लिए लेखकों की भीड़ उमड़ पड़ी थी। प्रतिरोधी रचनाओं की पुस्तकें निकलीं, उन रचनाओं पर थीसिस लिखी गईं। उनकी प्रशस्तियाँ गाई गईं। (इनकी हमारे पास ज़रूर लंबी सूची है) सच क्या है? सच यही है कि यह सब आपातकाल के बाद हुआ। आपातकाल के चलते नहीं। उस समय गहरी चुप्पी थी। सच यही है कि हमने प्रतिरोध करने का भ्रम रचा, पर कोई प्रतिरोध, कोई संघर्ष नहीं किया। ऐसा इसलिए भी और कहा जा सकता है कि आज हम जिस तरह और जितने व्यापक और खुले रूप से, लघु पत्रिकाओं के लिए सरकारी, बहुराष्ट्रीय कंपनियों, बड़े सार्वजनिक निगमों, कॉरपोरेट जगत और आप्रवासी भारतीयों (यह एक नया वर्ग सामने आया है) से विज्ञापन या अन्य किसी रूप में आर्थिक मदद ले रहे हैं तो यह स्थिति अनायास या आकस्मिक रूप से पैदा नहीं हुई है। यह स्वाधीनता से आज तक के बासठ वर्षों में धीरे-धीरे हमारी झुकती हुई रीढ़ से पैदा हुई है। अगर आज हम ज़मीन से लगकर दुहरे हुए दिख रहे हैं, तो सामान्य तर्क बुद्धि से माना जा सकता है कि हमारी रीढ़ आपातकाल में भी कुछ न कुछ तो झुकी हुई ज़रूर थी। शायद इसीलिए हमने कोई सक्रिय, दिखाई देने वाला प्रभावी प्रतिरोध नहीं किया।

हम चाहें तो ये सब बातें, तथ्यों और प्रमाणों के साथ सिद्ध कर सकते हैं। इसके लिए बहुत दूर जाने की ज़रूरत भी नहीं है। इसके बहुत से प्रत्यक्षदर्शी, साक्षी या भुक्तभोगी हमारे बीच उपस्थित हैं, जो पूरा और कड़वा, दोनों सच जानते हैं। किसी विचारधारा, किसी पंथ, किसी खेमे, किसी संगठन ने ऐसा कोई प्रत्यक्ष विरोध नहीं किया था, जो उस समय लघु पत्रिकाओं की विचार नीति, प्रतिबद्ध रचनात्मकता और सरोकारों को दिखाता, उस मूल्यपरक संघर्ष को दिखाता, जो लघु पत्रिकाओं का मूल स्वर है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कृष्णदत्त पालीवाल

आपातकाल में प्रतिरोध था और संघर्ष भी *

प्रियंवद का लेख 'संघर्ष का स्वर' (5 जुलाई) अनेक भ्रामक तथ्यों से भरा हुआ है। प्रियंवद के इस कथन पर ध्यान गया कि 'आपातकाल खत्म होते ही, जनता पार्टी की सरकार बनते ही संस्मरण, डायरी, नोट्स, प्रतीकात्मक कविताओं-कहानियों की बाढ़ आई, जिनमें शहीदाना तरीके से आपातकाल के अपने मूल्यपरक संघर्ष, अपने विरोध को इतिहास में दर्ज करने के लिए लेखकों की भीड़ उमड़ पड़ी थी। प्रतिरोध रचनाओं की पुस्तकें निकलीं, उन रचनाओं पर थीसिस लिखी गई। उनकी प्रशस्तियाँ गाई गईं (इनकी हमारे पास ज़रूर लंबी सूची है)। सच क्या है? सच यही है कि यह सब आपातकाल के बाद हुआ। आपातकाल के चलते नहीं। उस समय गहरी चुप्पी थी। यह सही है कि हमने प्रतिरोध करने का भ्रम रचा। यह कोई प्रतिरोध, कोई संघर्ष नहीं किया।' सवाल है कि प्रियवंद का यह कथन कितना सही है? क्या यह गलत तथ्यों पर आधारित भावुक कथनों से भरा भ्रामक जाल मात्र है? क्या पाठक की स्मृति को इस तरह से धोखा देकर वाग्क्रीड़ा में बहलाया जा सकता है?

मैं ऐसा इसलिए कहने का साहस कर रहा हूँ कि आपातकाल के काले दिनों में हिंदी साहित्य में चुप्पी नहीं थी। आपातकाल का विरोध उसके बाद नहीं, उसके चलते हर जोखिम झेलकर किया जा रहा था। इसलिए यह कहना कि 'हमने प्रतिरोध करने का भ्रम रचा और कोई प्रतिरोध, कोई संघर्ष नहीं किया', इतिहास को धोखा देना है। सच पर पर्दा डालना है। हम कैसे भूल सकते हैं कि आपातकाल के दिनों में प्रतिरोध और संघर्ष का स्वर कविवर भवानीप्रसाद मिश्र

---

* जनसत्ता, दिल्ली, 26 जुलाई 2009 से साभार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ने बुलंद किया। उनके गांधी विचार चिंतन के भीतर से प्रतिरोध की प्रबल आग फूट पड़ी। उन दिनों की रची और छपी उनकी कविताएँ 'त्रिकाल संध्या' शीर्षक से प्रकाशित हुई हैं। आज इस सच को छिपाना इतिहास की आँखों में धूल झोंकना है।

दरअसल, आपातकाल की स्थिति की कथा-व्यथा के भार से लदी 'त्रिकाल संध्या' का प्रकाशन इस दमनकाल का इतिहास भर नहीं है। इस बात की हरिश्चंदी परीक्षा भी है कि असिधार (तलवार) पैनी है या मसिधार (कलम)। भवानीप्रसाद मिश्र ने हर चुनौती, हर जोखिम झेलकर सत्ता की काली करतूतों को निर्भयभाव से कवि कर्म में उजागर किया है। 'और न जाने क्या क्या बोला / आपातकाल में भवानी भोला।' यह भोला भवानी भाई पत्रकार बालमुकुंद गुप्त की तरह 'शिव शंभु के चिट्ठे' की 'टोन' में उनसे बीस क़दम आगे बढ़कर चित्रकाल संध्या की कविताएँ रचता है और 'भूमिका' में लिखता है जेल जुल्म को अंगूठा दिखाकर ''25 जून 1975 से लगभग अठारह महीनों की अवधि देश के इतिहास में 'न भूतो' तो थी ही, 'न भविष्यति' भी रहेगी। इस अवधि का इतिहास कितनी तरह से सारे संसार में संचित संकीर्ण और विकीर्ण किया जाएगा, कौन जानता है। मेरे हाथों यह कवित या कवितानुमा कृतियों में आया सो अनेक कारणों से।'' आपातकाल की हर स्थिति, परिस्थिति, संदर्भ, प्रसंग, प्रकरण, घटना को भवानी भाई ने आपातकाल के दिनों में शब्द मूर्त्त किया। सच बात यह है कि 'त्रिकाल संध्या' आपातकाल के समय का साक्षी इतिहास है।

असिधार से मसिधार ज़्यादा पैनी है की प्रेरणा ने ही 'त्रिकाल संध्या' में कहा ''अत्याचार बढ़ते रहे, आतंक और भय इतने घने हो गए कि बिना घोटे भी कई गले घुटे और फिर दूसरी तरह से ऐसे मुक्तकंठ हुए कि देख-सुन लाज से सिर झुकता था कि ये वे हैं जिनसे लोग आशा करते थे।'' तमाम साहित्यकारों, राजनीतिकों, प्राध्यापकों को जेल में देखकर उनके कवि ने कहा ''तमाम जोखिम लिए हैं एक जोखिम और लेता हूँ।'' जयप्रकाश नारायण की वाणी का प्रकाश इन कविताओं में फैलाया।

यह अलग बात है कि कई हिंदी पत्र जब सरकार की मलाई खा रहे थे तब भवानी भाई की निर्भयता और बढ़ी। उन्होंने त्रिकाल संध्या की भूमिका में ही कहा कि नागार्जुन जेल गए और माफी माँगकर जेल से बाहर आए। मार्क्सवाद के गोल पर यह सीधी मार पड़ी। व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई आपातकाल के पक्ष में कीर्तन करने लगे और हिंदी के विश्वभारती आचार्य आपातकाल के पक्ष में हस्ताक्षर उसकी आरती में जुट गए। इस समय अज्ञेय ने आपातकाल में सत्ता के सामने घुटने नहीं टेके, जिन्हें विचारधारा विशेष के आलोचक कलावादी फासिस्ट कहते हुए शर्म महसूस नहीं करते। फणीश्वरनाथ रेणु जेल गए, माफी नहीं माँगी और सत्ता के विरोध में लिखा भी।

आपातकाल के दिनों में सत्ता और शक्ति के सामने न झुकने का नाम है भवानीप्रसाद मिश्र, अज्ञेय, निर्मल वर्मा, बलदेव वंशी। भवानी भाई ने 'चार कौए उर्फ चार हौए' कविता शुभा वर्मा को साप्ताहिक हिंदुस्तान में छपने को दी। इस कविता में चार कौओं के नाम दिए हैं इंदिरा गांधी, संजय गांधी, यशपाल कपूर और कांग्रेस अध्यक्ष देवकांत बरुआ। काल का डमरूनाद करते हुए भवानी भोला ने लिखा था 1975 में 'बहुत नहीं थे सिर्फ चार कौए थे काले।' ये काले कौए सत्ता मद में अंधे थे तभी तो 'ये औगुनिए चार बड़े सरताज हो गए / इनके नौकर उल्लू, चील, गरुड़ और बाज हो गए।'

भवानीप्रसाद मिश्र ने सत्ता के साथी कवि श्रीकांत वर्मा को डपटा और कहा 'ले चलिए मुझे जेल।' और कहा आपातकाल तो 'मरण त्यौहार' है। फिर कहा 'रक्त को चंदन और कारावास को पूजाघर।' इसी महाभाव-विभाव से भरी इंदिरा गांधी पर कविता लिखी 'क्या तय नहीं हो गया है कि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं सबसे शक्तिशाली हूँ / महिषासुर मर्दिनी हूँ, दुर्गा हूँ, काली हूँ' कविता को शीर्षक दिया 'भयभीत शक्तिशालिनी।' मित्रवत, प्रधानमंत्री से लेकर यशपाल कपूर तक का इतिहास और जयप्रकाश नारायण से लेकर संजय गांधी तक का इतिहास इन कालचक्र की कविताओं में मुखरित है। ये कविताएँ आपातकाल का ऐसा पाठ है, जिनका भाष्य किया जाएगा तो जनता के दमनचक्र का काला रजिस्टर खुल जाएगा। इसलिए प्रियंवद का यह कथन सही नहीं है कि 'उस समय गहरी चुप्पी थी।'

हमें ध्यान है कि हिंदी स्वाधीनता संग्राम के दिनों से साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, अधिनायकवाद के विरोध की भाषा रही है। इसने हमेशा क्रांति के मधुर विद्रोह बीज माखनलाल चतुर्वेदी, नवीन, दिनकर, अज्ञेय और मुक्तिबोध तक बोए हैं।

निर्मल वर्मा ने लिखा और लेख का शीर्षक दिया 'पच्चीस वर्ष बाद अगर उस नैतिक त्रासदी से कुछ सीख सकें।' इस लेख में कहा है, 'आपातकाल के दौरान मैंने उनकी नीतियों का कड़ा विरोध किया था। पर आज पच्चीस वर्ष बाद जब पीछे मुड़ कर देखता हूँ तो सोचता हूँ, इंदिरा गांधी अपनी समस्त स्वार्थ केंद्रित कमजोरियों के बावजूद बीसवीं शती के तानाशाहों से कितना अलग थीं।' यहाँ भी निर्मल कहना नहीं भूले कि 'आपातकाल के सबसे घोर समर्थक थे — साम्यवादी दल और वामपंथी बुद्धिजीवी — जो वर्षों से सोवियत संघ में होने वाले बर्बर शासन का साम्यवाद के नाम पर समर्थन कर रहे थे। शायद उन्हें इंदिरा गांधी अपने सोवियत चीनी नेताओं का भारतीय संस्करण जान पड़ती थी। (नहीं) ये वही लोग थे जो गांधी को कभी 'जापानी एजेंट' कहते थे और आपातकाल में संपूर्ण क्रांति का नेतृत्व करने वाले लोकनायक जयप्रकाश नारायण को फासीवादी की संज्ञा देते हिचकते न थे।' निर्मल वर्मा ने लिखा 'जब इंदिरा जी ने हमारी लोकतांत्रिक परंपराओं की उपेक्षा करके समूचे देश पर इमरजेंसी लागू कर दी थी। इन सब घटनाओं ने मुझे भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीय अस्मिता, भारत और पश्चिम के अंतर्संबंधों के बारे में पुन: सोचने को विवश किया।' इस सोच को आपातकाल के बीच लिखे 'शब्द और स्मृति' और 'ढलान से उतरते हुए' निबंध संग्रहों में देखा जा सकता है।

जिन दिनों आपातकाल में चुप्पी का साम्राज्य था उन्हीं दिनों निर्मल वर्मा में आत्ममंथन तेज था। वे इमरजेंसी के मूल में सक्रिय मूल्यहीनता के विमर्श में व्यस्त थे। अंग्रेजी मासिक 'सेमिनार' के जुलाई 1976 के अंक में उनका लेख छपा है। इसी को उन्होंने 'अहिंसा और आज़ादी : आदमी के स्वयं आदमी होने की शर्त' शीर्षक देकर अपनी पुस्तक 'आदि अंत और आरंभ' में छापा है। इस लेख की शुरुआत इस कथन से होती है : 'आपातकाल लगाए जाने से पहले तक भारत दुनिया का एक अनोखा देश हुआ करता था। जो एक ही समय में गरीबी के भार से झुकता और लोकतंत्र की चेतना से चमकता भी था।' निर्मल वर्मा का लेख छपते ही सेमिनार पत्रिका के प्रकाशन पर पाबंदी लगा दी गई।

आपातकाल की तानाशाही और लोकतांत्रिक मूल्यों पर प्रहार के आज न जाने कितने काले चिट्ठे मौजूद हैं। इन्हीं गर्म हवाओं में सर्वेश्वर ने 'काला तेंदुआ' शीर्षक से कविताएँ रची हैं और इन्हीं अंधेरों में रघुवीर सहाय ने 'जहाँ रोज मरता है मतदाता' का सच पाया है। इन सभी ने माना है कि आपातकाल वास्तविक अर्थों में तानाशाही या आपातकाल में पत्रिकाओं पर प्रतिबंध लगा। रचनाकारों को जेल में डाला गया। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की हत्या की गई। मित्रवर, भूलिए मत, स्वाधीनता, स्वतंत्रता से बड़ी हत्या न कोई होती है और न हो सकती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पाठकमंच

पाठकमंच

आपातकाल की प्रतिनिधि कविताएँ : सं. कमलकिशोर गोयनका, अरूण कुमार भगत

'आपातकाल की प्रतिनिधि कविताएँ' हिन्दी कविताओं का ऐसा दस्तावेज है जो आपातकाल की विभीषिका को पारिभाषित और रेखांकित करता है। यह संग्रह तात्कालीन परिस्थिति से उपजे आक्रोश को अभिव्यक्ति देता है वहीं पीड़ित जन और जन प्रतिनिधियों की मार्मिक दशा को उजागर करता है तथा तानाशाह हुए जाते शासकों के ख़िलाफ़ मोर्चाबंदी भी करता है। यद्यपि पाठकों ने इस संग्रह को एक विशेष वर्ग, विचारधारा और खेमे का लेखा-जोखा करार दिया, तथापि लोकतंत्र पर हुए हमले की तरह मीसाकाल की कटु आलोचना भी की है। प्रस्तुत है पाठकों की प्रतिक्रिया—

झाबुआ : सुनील कुमार सिकरवार : कविताएँ पुराने एवं नये भावों को अभिव्यक्ति देती हैं। **जय वैरागी :** ये कविताएँ, एक यथार्थ मर्म को प्रस्तुत करती हैं। **गोपाल भूरिया :** भारत भूमि पर यह पहला और यथार्थ संग्रह अपनी सम्पूर्णता में भारतीय आपातकाल के जनमानस की पीड़ा और टीस को अभिव्यंजित करता है।

बरघाट : रमेश कुमार पटले : आपातकाल पर रची प्रतिनिधि कविताओं का यह संकलन राष्ट्रीय आक्रोश का खुला दस्तावेज है। **अनिरुद्ध तिवारी :** गांधी ने अंग्रेजी से आज़ादी की अहिंसक लड़ाई में विजय पाई, किन्तु आपातकाल लगाकर देश की आज़ादी को कलंकित कर दिया गया। **अजय निवारे :** ये कविताएँ भारतीय लोकतंत्र की रक्षा के लिये सवाल की तरह काम करेंगी। **प्रदीप कुमार तिवारी :** आपात से उत्पन्न सामाजिक कुंठा और नैराश्य का प्रतिबिम्ब इन कविताओं में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। **आर.एल. पन्द्रे :** इन कविताओं में जन जीवन का भोगा हुआ यथार्थ, प्रतिबिम्बित होता है। **किशोर कुमार प्रजापति :** इस कविता संग्रह में अलोकतांत्रिक परिस्थिति के चित्रण के साथ ही जन चेतना, ललकार और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चुनौती के स्वर मुखरित हुये हैं। **बालकृष्ण शर्मा :** इस काव्य संग्रह में जिन कवियों ने इमरजेंसी के काले कालखंड में जेल की यातना भोगी है, उनकी अभिव्यक्ति के स्वर बड़े मार्मिक हैं। **कैलाश अग्रवाल :** काव्य संग्रह में आपातकाल में आम आदमी की त्रासदी का दिग्दर्शन है।

बालाघाट : माला ठाकुर : राष्ट्रीय जनमानस के आक्रोश को व्यक्त करते हुए शासन की तानाशाही और सत्ता के केन्द्रीयकरण पर सशक्त प्रहार करने में पूर्णरूपेण सफल रहा है। **हेमलता गेडाम :** इन कविताओं का उद्देश्य है कि कभी भी कोई सत्ता शीर्ष पर बैठा सत्ताधारी, तानाशाही के माध्यम से लोकतंत्र की हत्या करने का प्रयास भी न करे। **नूंतन ताम्रकार :** आपातकाल की प्रतिनिधि कविताओं में लोकतंत्र के इस देश में घटित अलोकतांत्रिक परिस्थितियों का सटीक चित्रण स्पष्ट दिखाई पड़ता है। **शोभना नामदेव :** आपातकालीन इन कविताओं में व्यंग्य भी दिखाई देता है। **एल.सी. जैन :** कविताओं के माध्यम से कवियों ने यह स्पष्ट दिखला दिया कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। **प्रेमप्रकाश त्रिपाठी :** जनजीवन का भोगा हुआ यथार्थ इस कृति में समायोजित कविताओं में उभरकर सामने आया है। **जी.बी. राव :** आपातकाल की प्रतिनिधि कविताओं के माध्यम से साहित्यकारों ने यह बताने का प्रयास किया है कि आपातकाल कितना भयावह होता है। **जे.के. सुखदेव :** भारतीय इतिहास के कोयला युग की परत दर परत पोल खोलता यह दस्तावेज आपातकाल की प्रतिनिधि कविता तत्समय के वातावरण को प्रदर्शित करती है।

भाण्डेर : दयाराम जोशी : इस काल में लिखी गईं कवितायें उस समय की स्थिति का जीवन्त दस्तावेज है। **सुभाषेन्दु श्रीवास्तव :** आपातकाल का सामाजिक व राजनैतिक परिदृश्य इन कविताओं में मुखरित होता है। **रवीन्द्र सत्यार्थी :** तात्कालिक परिस्थितियों का भोगा हुआ यथार्थ बोलता है इन कविताओं में। **चेतराम प्रजापति 'चेतन' :** आपातकाल की इन प्रतिनिधि रचनाओं में अलोकतांत्रिक परिस्थितियों का यथार्थ रूप में प्रभावी चित्रण हुआ है। **रामसेवक पाल 'अरविन्द' :** तात्कालिक अफसरों, नेताओं और माफियों का असली चेहरा बेनकाब हुआ है इन कविताओं में। **शंकरलाल शुक्ल :** इन रचनाओं में तात्कालीन समय, भारतीय जनमानस की पीड़ा और दुख अभिव्यक्त हुआ है। **खेमराज विश्वकर्मा :** आपातकाल की लपटों की भयावहता को ताज़ा कर समाज को सावधान करने में इस पुस्तक की अहम भूमिका सिद्ध हुई है। **लीना मालवीय :** आपातकाल की कविताएँ, आपातकाल से गुज़रे समाज की पीड़ाओं की सच्चाइयों का मार्मिक चित्रण है। **रामप्रसाद सहज :** आपातकाल में देश की राजनीति, समाज और कानून विक्षिप्त हो गये थे जैसे। फिर देश ऐसा इतिहास न दोहराये यही हिदायत देती है यह कृति। **डी.एस. मालवीय :** किताब आपातकाल की कविताएँ केवल किताब नहीं बल्कि जन आक्रोश का ऐतिहासिक दस्तावेज हैं। **मनोज जोशी :** आपातकाल की प्रतिनिधि कविताएँ कृति में आपातकाल की विभीषिका का विद्रूपीय चेहरा सामने आया है।

छतरपुर : रामश्री लाल चतुर्वेदी : इस संग्रह में मीसाबंदियों या मीसा (आपातकाल) पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

केन्द्रित कविताएँ हैं जिनमें कुछेक को छोड़कर शेष प्रभावित नहीं करतीं। **शिवेन्द्र शुक्ला :** इन कविताओं में समाज का दुख-दर्द गायब है। सारे कवि, रचनाकार व्यक्तिगत धारणाओं व सुखों-दुखों में आत्मालाप करते दृष्टिगोचर होते हैं। **हरिसिंह घोष :** इन कविताओं में तात्कालीन परिस्थितियों का चित्रण भी हुआ है जिनमें बेरोज़गारी, अफसरों की मनमानी, मुनाफाखोरों तथा जमाखोरों का शोषण प्रमुख है। **बहादुर सिंह परमार :** इस पुस्तक के माध्यम से तत्कालीन कवियों की मन:स्थिति का प्रकटीकरण हुआ है। **सुरेन्द्र शर्मा 'शिरीष' :** इस संग्रह में कुछेक गीत अच्छे हैं तथा कुछ कविताएँ भी ठीक हैं। संग्रह में हर तरह की रचनाएँ हैं, इन्हें वैयक्तिक चश्मे से नहीं देखा जाना चाहिए।

मऊगंज (रीवा) : भोलानाथ मिश्र : कुंठा, नैराश्य और आत्म पीड़न की दर्द भरी झाँकी कविता में प्रस्फुटित हुई है। **मधुसूदन प्रसाद मिश्र :** आपातकाल के दौरान मिथक परिस्थितियों से जनमानस में फैली आकुलता का सजीव चित्रण इन कविताओं में दृष्टिगोचर होता है।

नागौद : आर.जी. सिंह : यह संकलन दस्तावेज की तरह महत्त्वपूर्ण है किन्तु भूमिका पूर्वाग्रह से ग्रस्त प्रतीत होती है। **अरुण नामदेव :** सामाजिक, राजनैतिक परिवेश से उत्पन्न कुण्ठा एवं यथार्थ का चित्रण संकलन की कविताओं में है। **बालेन्दु मिश्र :** संकलन तात्कालीन यथास्थिति को पाठक के सामने पूरी ताकत के साथ प्रस्तुत करता है। **बालेन्द्र सिंह :** संग्रह के माध्यम से उन पाठकों को, जिन्होंने आपातकाल की विभीषिका का अनुभव प्रत्यक्षत: नहीं किया, तात्कालीन जनांदोलन एवं आमजन की आकांक्षाओं के दमन का परिचय मिलता है, जो उनके लिए एक सबक हो सकता है। **आर.के. मिश्र :** संकलन ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है इससे इनकार नहीं किया जा सकता किन्तु इसमें संकलित कविताएँ एक ही पक्ष को उजागर करती हैं। **डी.पी. सिंह :** संकलन ऐतिहासिक साक्ष्य के रूप में महत्त्वपूर्ण हैं। **रमेश सिंह :** यह भारतीय लोकतंत्र के संघर्ष के लिए संकल्पित जनचेतना की धरोहर की झाँकी है। **देवीशरण 'ग्रामीण' :** संकलन, हमारे लोकतंत्रीय शासन के एक अवांक्षनीय पक्ष को हमारे सामने रखने में समर्थ है इसमें संदेह नहीं।

छपरा : एलिकजेंडर : कविताओं में भारतीय जन मानस की पीड़ा और टीस प्रदर्शित हुई है। **प्रशांत :** ये कविताएँ जनचेतना, ललकार और चुनौतियों के स्वर बुलंद होते हैं। **तिनोथी :** इस संकलन में बौद्धिक व्यायाम से अधिक शारीरिक श्रम अपेक्षित है। **मयंक :** अधिक से अधिक रचनाएँ होने पर भी इसे सम्पूर्ण नहीं कहा जा सकता।

सिंगरौली : पूनम गिरि : संग्रह का आवरण मनमोहक है जो पाठकों को सहज ही अपने ओर आकर्षित करता है। **वैशाली प्रसाद :** अजामिल जी की कविता 'गूँगा आदमी' पढ़कर मन रोमांचित हो गया। **महेन्द्र मेश्राम :** आपातकालीन समय का जो परिदृश्य था वह कितना भयावह था इस संग्रह को पढ़कर महसूस किया जा सकता है। **रोहित गुप्त :** संग्रह की प्राय: सभी कविताएँ अपना अपना वजूद रखती हैं। **संजय सिंह 'पद्म' :** संग्रह को पढ़ना आपातकाल को महसूस करना है। **साधु गिरि 'अनल' :** संग्रह-सक्षम व परिपूर्ण संग्रह है। **सुरेश गिरि प्रखर :** इन कविताओं में एक अर्थबोध है जो पठनीय

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

व अनुकरणीय है।

ग्वालियर : अशोक चैत्रवंशी : आपातकाल की प्रतिनिधि कविताएँ हैं। **जगदीश गुप्त :** रचनाएँ अपनी गुमनामी से बाहर आकर अगली पीढ़ी की धरोहर के रूप में उपस्थित हो पाई है।

सेंवढ़ा : हरिशंकर शर्मा : ये रचनाएँ आपातकाल के समय की कसौटी हैं। **अवध बिहारी पाठक :** इस संग्रह में संग्रहीत रचनायें दमनकारी राजनीति का विरोध किया गया है। **श्याम बिहारी :** विषय विवेचन की दृष्टि से संकलन की रचनायें साहसपूर्वक निंदा करने में समर्थ हैं। **रामस्वरूप :** इन रचनाओं में महँगाई है, भ्रष्टाचार है, बेरोज़गारी है और अफसरों की हृदयहीनता दशाई गई है।

दतिया : राजनारायण बोहरे : संग्रह में मूलत: दो प्रकार की कविताएँ हैं। एक वे जो प्रतीकों में लिखी गयीं यानी जिनमें काव्य-तत्त्व हैं। दूसरी वे जो सीधे पार्टी के नाम नेताओं के नाम और घटनाओं के उल्लेख के साथ लिखी गयी हैं। **कामता प्रसाद सड़ैया :** आपातकाल की ये रचनाएँ राजनीति की सकारात्मक दिशा देने वाले समाज में प्रखर प्रतिभाशाली कवियों के पीड़ा भरे उद्‌गार हैं। **सुरेश कुमार साटम :** इस कृति के कई आयाम हैं। प्रत्येक रचना अपनी बात पूरी ईमानदारी से कहती है। ये कविताएँ इतिहास का अभिलेख हैं। **रघुवीरदास कनकने :** ये कविताएँ छायात्मक, भावात्मक, तथ्यात्मक हैं लेकिन कथात्मक कम हैं फिर भी उनसे आपातकाल की भयावता तो प्रकट होती ही है। **रामकिशोर नीखरा :** कुछ कविताएँ राष्ट्रीय आक्रोश का दस्तावेज हैं। 'मुनादी' ऐसी ही कविता है। कुछ कविताओं में आपातकाल के आतंक की समर्थ, सजीव प्रस्तुत है। 'आतंक' कविता इसका उदाहरण है। **के.बी.एल. पाण्डेय :** ये कविताएँ एक निरंकुश समय में अवसन्न और पीड़ित समाज की स्थिति का चित्रण करती है।

शाजापुर : वेद हिमांशु : संकलन की सभी कविताएँ इस अर्थ में ऐतिहसिक हैं कि वे अपने समय का प्रखर साक्ष्य प्रस्तुत करती रचनाएँ हैं। **महेश बारबर :** 'आपातकाल की प्रतिनिधि कविताएँ' काव्य का अनूठा और दुर्लभ संग्रह है जो आपातकालीन तानाशाही के विरुद्ध संघर्ष करने वाले शहीद देशभक्तों के साथ-साथ साहसी एवं निर्भीक रचनाकारों से भी यह संकलन परिचित कराता है। **आबिद खान :** इन कविताओं को पढ़ते हुए लगता है कि जैसे हम ब्रिटिशकालीन समय की घुटन में जी रहे हों। **राजेन्द्र चौहान :** वास्तव में यह संकलन पूरे राष्ट्र की रचनात्मक अस्थिरता और आक्रोश से भरा दस्तावेज है, जो सत्ता के केन्द्रीयकरण पर गहरी चोट करता है। **प्रकाश सेन :** यह एक रचनात्मक पहल है जो लोकहित व देश हित में की गई है। **दिनेश वर्मा :** संकलन की अधिकांश कविताओं में आक्रोश, करुणा और वेदना के साथ ही व्यंग्य का चित्रण भी सहज रूप में हुआ है।

पन्ना : लेखकों, विचारकों तथा राजनैतिक ध्रुवों के आपातकाल के दौरान महसूस किये गये, भावों विचारों तथा अनुभूतियों को अत्यंत परिश्रम के साथ संकलित कर प्रस्तुत किया गया है।

नई गढ़ी : कैलाश प्रसाद शर्मा : प्रस्तुत पुस्तक 'आपातकाल' की जीती जागती तस्वीर प्रस्तुत करती है। कवियों ने बड़े साहस के साथ जेल की त्रासदी, भय, करुणा, उत्पीड़न व मानवीय संवेदना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को अपने काव्यमय विचारों से व्यक्त किया है। **रामायण प्रसाद त्रिपाठी :** पुस्तक भविष्य के सत्तासीनों को सचेत करने का उपयोगी कार्य करेगी ऐसा विश्वास है। **रामचरण :** आपातकाल को सत्तासीन व उनके समर्थक ने 'अनुशासन पर्व' बताकर उपयोगी सिद्ध करने के प्रयास किए हैं, जिसका इस पुस्तक के कवियों ने ज़ोरदार ढंग से खण्डन किया है। **जगदीश प्रसाद गुप्त :** सभी कवि अपने-अपने ढंग से बहुत सुन्दर व सरल भाषा में आपातकाल का दुखद वर्णन किया जो अपने आप में आत्मसात करने लायक है। **ब्रजमोहन प्रसाद मिश्र :** लोकतंत्र की रक्षा के लिए सदैव सजग रहने का संदेश यह संग्रह देता रहेगा।

सतना : सेवाराम त्रिपाठी : आपातकाल दक्षिणपंथी ताकतों पर नियंत्रण करने के लिये लगाया गया था किंतु इस संग्रह में तत्कालीन समस्त प्रतिनिधि कवियों जैसे बरबर राव, चंदन सिंह, या पॉस की कविताएँ नहीं हैं तथा इसमें अधिकांश कविताएँ अलग तरह के कवियों की हैं फिर भी इसका स्वागत किया जाना चाहिये। **देवीशरण ग्रामीण :** पुस्तक की भूमिका में प्रगतिशीलों की अनावश्यक निंदा की गई है किंतु प्रगतिशीलता में अतिवाद नहीं होता और उसमें क्रिया, व्यवहार तथा भावना का समन्वय होता है। **रामनारायण सिंह राना :** इस संकलन में आपातकाल के विरुद्ध कविता लिखने वाले नीरज जैसे कवि की कविता नहीं है और विंध्य क्षेत्र के कवियों की कविताएँ नहीं दिखाई देतीं। **विनोद पयासी :** सतत जागरुकता हमारे समाज का मूल्य होती है। प्रशासन को विवेक की आवश्यकता होती है और कवि को भावनाओं में बहना पड़ता है। **रामदास गर्ग :** आश्चर्य है कि इस संकलन में निर्भय हाथरसी जैसे कवि की कविताएँ नहीं हैं। **अजय तिवारी :** कई कवियों की कविताएँ बहुत अच्छी हैं और पाठक के मन में सीधे उतर जाती हैं। **अनिल अयान :** आपात स्थिति की समस्याओं को जनाधार के आधार पर सामने रखा गया है और व्यंग्य के माध्यम से चुनौती के स्वर दिखाई देते हैं। **आत्माराम तिवारी :** इस पुस्तक की भूमिका में लेखकों के एक वर्ग विशेष पर किया गया आक्षेप पुस्तक का ऋणात्मक पहलू है।

अमरपाटन : सुरेश शुक्ल : आपातकाल पर रची गई प्रतिनिधि कविताओं का यह संकलन राष्ट्रीय आक्रोश का दस्तावेज है। **वीरेन्द्र सोनी :** आपातकाल की अलोकतांत्रिक परिस्थितियों का चित्रण इस पुस्तक में हुआ है। असन्तोष, आक्रोश के स्वर, सामाजिक, राजनैतिक परिवेश से उत्पन्न कुण्ठा वैराग्य का बिम्ब प्रतिबिम्ब रचनाओं में दिखाई देता है। **राजेन्द्र सिंह :** संग्रह हमें आने वाली पीढ़ियों को याद दिलाता रहेगा कि हमें अपने लोकतंत्र की रक्षा के लिए सदा सजग रहना चाहिए। **इन्द्रपाल द्विवेदी :** संकलन में जीवन का भोगा हुआ आपातकालीन समय का यथार्थ इन रचनाओं में उभरकर सामने आया है। **सुमनोत्तम द्विवेदी :** आपातकाल की अलोकतांत्रिक परिस्थितियों का चित्रण इस संकलन में मिलता है असन्तोष, आक्रोश, सामाजिक, राजनैतिक परिवेश को व्यक्त करती हैं।

नीमच : निकलसन बक्षी : वास्तव में कवियों के हृदय की वेदना को कुछ इस तरह व्यक्त करती है मानो युगों-युगों का दबा हुआ आक्रोश का लावा सोए हुए ज्वालामुखी की तरह एकदम फूट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पड़ा हो। **कुसुम त्रिवेदी :** आपातकाल की प्रतिनिधि कवितायें उस दौर की मानसिकता का आईना है। **किशोर जवेरिया :** कवितायें अलग-अलग दृष्टिकोण से आपातकाल का निरूपण करती हैं। **शकुंतला :** ये कवितायें एक साथ पढ़ने पर पाठक को एकरसता के कारण उबाऊ लगती हैं। संकलन का ऐतिहासिक महत्त्व है। **गोपाल जोशी :** संकलन एक काल विशेष का दस्तावेज है। इसकी कवितायें सशक्त एवं प्रभावशाली हैं। **महिपाल सिंह चौहान :** आपातकाल की कवितायें तत्कालीन परिस्थितियों को स्पष्ट रूप से प्रतिध्वनित करती हैं। **भानु दवे :** ये कवितायें आपातकाल के उस काले समय को रेखांकित करती हैं, जिसमें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर अंकुश लगा दिया था।

अयोध्या नगर, भोपाल : दिवाकर वर्मा : कविताएँ कथ्य (भाव पक्ष) की दृष्टि से जहाँ समृद्ध हैं, वहीं शिल्प (कला पक्ष) की दृष्टि से भी नूतन उद्‌भावनाओं से संयुक्त हैं। **घनश्याम मैथिल 'अमृत' :** आपातकाल एक काला अध्याय के रूप में दर्ज है। उस दमनकारी क्रूर निर्णय के विरोध में उपजे आक्रोश की परिणति हैं ये कविताएँ। **प्रणय तलोकर 'कनक' :** आपातकाल के दौरान रची गईं इन कविताओं में तत्कालीन व्यवस्था के विरुद्ध कवियों ने कविताओं के माध्यम से युद्ध का बिगुल फूँका था। **कांति शुक्ला 'उर्मि' :** आपातकाल की प्रतिनिधि कविताएँ अपने समय के जन मानस की पीड़ा को अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं।

हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर : ब्रजेश श्रीवास्तव : आपातकाल की भयावहता और समाज की यातना को मुखरित करती कविताएँ कवियों की आत्मसंवेदनशीलता और उनकी संघर्षशीलता को व्यक्त करती हैं। **अरुण पण्डा :** अनेक कवि आपातकाल की भीषण त्रासदी के भुक्तभोगी रहे हैं। इसलिए उनकी रचनाओं में आक्रोश और अवसाद का गहरा असर है। **पंकज मिश्र :** कविताएँ आपातकाल के खट्टे अनुभवों से पाठक को परिचित कराने में समर्थ हैं। **मिथलेश चौबे :** आपातकाल के व्यापक सत्य से रू-ब-रू कराती ये कविताएँ लोकतांत्रिक व्यवस्था के टूटते स्वप्न और यथार्थ का सच्चा चित्र खींचती हैं। **आरती श्रीवास्तव :** यह संग्रह आपातकाल की पीड़ा का ऐतिहासिक दस्तावेज है। **चंद्रकान्ता :** संग्रह की कविताएँ प्रतिरोधी स्वर को बेखौफ उभरती हैं और भारतीय जनमानस की पीड़ा और आक्रोश को तल्ख शब्दों में व्यक्त करती हैं।

टीकमगढ़ : एन.डी. सोनी : मिश्र जी ने आपातकाल में देश के श्रेष्ठ चिंतकों, विद्वानों यथा कृपलानी जी, काका कालेलकर, रविशंकर महाराज आदि को चुप्पी साधकर बैठ जाने पर आश्चर्य व्यक्त करते हुए लिखा कि —'बतलाओ तो भला, किसने घोंट दिया इनका गला / हैं कोई ऐसे हाथ जो / घोंटकर इनका गला / इन्हें चुप कर सकते हैं।' **हरिविष्णु अवस्थी :** कवि देवेन्द्र दीपक ने अपनी कविता के माध्यम से चापलूसों और वफादारों को श्रेष्ठ ढंग से परिभाषित किया है। **अजित श्रीवास्तव :** नागार्जुन ने अपनी कविता में इंदिरा गांधी के बचपन के नाम 'इंदु' से सम्बोधन शुरू कर क्या कुछ नहीं कह डाला। **राजीव नामदेव :** धर्मवीर भारती की 'मुनादी' शीर्षक कविता का उल्लेख करते हुए कहा कि लोक नायक जयप्रकाश नारायण के नाम का उल्लेख किए बिना भारती जी ने कहा — एक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बहत्तर वर्ष का बूढ़ा आदमी / अपनी काँपती आवाज़ में / सड़कों पर सच बोलता हुआ निकल पड़ा है।

मंदसौर : रज्जन मिश्र : आपातकाल में सर्वाधिक दमन अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हुआ। संग्रह की एक चौथाई कविताओं में इसी दमन पर लिखा गया है। कई कविताओं में शोषण, भ्रष्टाचार को भी उजागर किया गया है। प्रगतिशील कवियों पर आरोप स्वयं संग्रह खण्डित करता है, संग्रह में ही कई प्रगतिशील कवियों की रचनाएँ प्रकाशित की गई हैं। **वेद मिश्र :** कविताओं में आम आदमी की पीड़ा है और आदर्शों के लिये लड़ने का जज़्बा भी है। मानवीय संवेदनाएँ, लोकतंत्र के खतरे, भय, भ्रष्टाचार, अफसरशाही, कुर्सी प्रेम सभी विषयों को कवियों ने छुआ है। **विनोद कुमार शर्मा :** पुस्तक में हर तरह की कविताएँ संग्रहित हैं। कई रचनाएँ कारावास में बैठकर लिखी गई हैं। कविताओं में आपातकाल घोषित करने वाली प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के प्रति रोष व्यक्त किया गया है। **जानकीलाल ओझा :** कविताओं में आपातकाल की पीड़ा का दर्द झलकता है। **डी.पी. शर्मा :** अधिकांश कविताओं में तत्कालीन प्रधानमंत्री एवं उनके पुत्र के प्रति आक्रोश व्यक्त हुआ है। कई कविताएँ पूर्व में प्रकाशित हैं। **हरनाम सिंह :** कविताएँ इतिहास क्रम का भाग हैं।

मण्डला : सावित्री देवी चौरसिया : ये कवितायें लोकतंत्र की रक्षा के लिए अपने संघर्ष की याद दिलाते ऊर्जा प्रदान करने में सहायक होंगे। **समरजीत शर्मा :** आपातकाल की प्रतिनिधि कविताएँ शासन सत्ता पर चोट करती, प्रखर मुखर विरोध कर यह सिद्ध करती हैं कि राष्ट्रहित से बड़ा कोई व्यक्ति नहीं हो सकता। **दीपक मालवीय :** यह संकलन तानाशाही व्यवस्था के ख़िलाफ़ आन्दोलित रहने के लिये उत्प्रेरक का कार्य करेगा। **रामेश्वर हरि :** आपातकाल नागरिक के मौलिक अधिकारों का हनन और आम जनता को उत्पीड़ित करने वाला अभिशाप था। **विजय चौधरी :** आपातकाल की एक कविता अपने में आशा, पीड़ा, आक्रोश, ललकार लिये है। **आभा वर्मा :** कविता जन जाग्रति करने वाली है। **जे.पी. चौरसिया :** कविता संकलन ज्योति पुंज है जो आने वाली पीढ़ियों का मार्गदर्शन करता रहेगा।

खण्डवा : श्रीराम परिहार : आपातकाल में धर्मवीर भारती की कविता —'मुनादी' का नुक्कड़ नाटकों की तरह मंचन तक हुआ था, जिसमें जन जन में जाग्रति फैली। **गोविंद गुंजन :** यदि कविता में अपने समय की विसंगतियों और पीड़ाओं का अंकन नहीं हो तो वह कविताएँ ज़िंदा नहीं रहतीं। **हेमंत उपाध्याय :** आपातकाल में किस प्रकार मानवीय अधिकारों का हनन हुआ उसके अनेक उदाहरण देते हुए इन कविताओं का आना अपने समय की पड़ताल करना है।

रतलाम : नवीनचन्द्र गेहलोत : आपातकाल के दौरान लिखी कविताएँ संकलित कर डॉ. कमल गोयनका ने 16 जून 1975 की घटनाएँ स्मृति पटल पर ताजा कर दी है। **मोहन मुक्त :** आपातकाल भारतीय जनतंत्र के इतिहास का काला पृष्ठ और तानाशाही के वीभत्स अन्त का गवाह यह काव्य संग्रह है। **अंसार अनन्त :** आपातकाल की चुनिन्दा ये कविताएँ जनजीवन का भोगा हुआ यथार्थ इन कविताओं में उभरकर सामने आता है। **दुर्गा शर्मा :** संकलन की कविताएँ महँगाई, भ्रष्टाचार और बेरोज़गारी के धरातल पर कुर्सी, नेताओं, अफसरों और माफियाओं की तिकड़ी पर भी गहरा प्रकाश

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डालती है।

देवास : मुमताज खान : इस काल में जो रचनाएँ रचीं उनमें आम लोगों की पीड़ा और उसका चित्रण हुआ है। **रामचंद्रराम :** आपातकाल में अराजकता की स्थिति ज़रूर निर्मित हुई थी लेकिन रेल, बसें समय पर चलती रहीं। **यतीश कानूनगो :** सत्ता को हथियाने के लिए इमरजेंसी लगाई गई थी। **मेहरबान सिंह :** आचार्य विनोबा भावे ने तो आपातकाल को अनुशासन पर्व बताया था। **एस.एम. त्रिवेदी :** लोगों द्वारा भोगे गए यथार्थ को रचना में उभारा गया है।

श्योपुर : स्वराज भूषण शर्मा : जो रचनाएँ तात्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में अथवा अन्य संकलनों में प्रकाशित हुईं जैसे आन्दोलन की कविताएँ, कैदी कविराम की कुंडलियाँ, समर शेष है, बंद कमरा, खुली कविताएँ, त्रिकाल संध्या, काला इतिहास आदि, निश्चित ही वे आपातकाल का प्रतिनिधित्व करती हैं। **सतीश शर्मा :** कविताओं को पढ़ते समय आपातकाल का रोमांचक स्मरण हो आता है। **राजेश शर्मा :** आपातकाल की प्रतिनिधि कविताएँ और साये में धूप (दुष्यंत कुमार, राधाकृष्ण प्रकाशन 1975) की गज़लें नदारद हैं। **ओ.पी. पाण्डे :** पुस्तक लोकमानस की प्रतिक्रिया का ऐतिहासिक दस्तावेज है। **मुकेश मीणा :** यादगारों की अंधेरी कोठरी ही खोल दी — शुक्रिया।

भेल, भोपाल : प्रफुल्ल सोलंकी : आपातकाल का नाम हम युवाओं ने बहुत सुना है लेकिन उस दौर की उत्कृष्ट रचनाएँ या लोगों का गुस्सा व प्रतिक्रियाएँ इन कविताओं में देखकर लगा कि लोगों ने उस दौर में भी विरोध किया था। **प्रेमसिंह भेड़ा :** फणीश्वरनाथ रेणु व अज्ञेय की कविता या फिर प्रो. उदयभानु हंस की रचनाएँ, यह उल्लेखनीय कार्य हैं। **हीरालाल पारस :** आपातकाल की इन कविताओं को राष्ट्रीय आक्रोश का नाम देना ही इस पुस्तक की सार्थकता है। **मीना वसुनियाँ :** अटल जी की रचनाएँ पढ़ीं। यह उस दौर में उनके विरोध प्रखरता की सूचक है। **भाऊ लाल पारदी :** यह महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है। **भानु प्रकाश :** इस पुस्तक में कई ऐसे नाम हैं जो आज भी हमारे सामने सृजनरत हैं उन्हें पढ़ना बहुत सुखद लगा।

नौगाँव : मनोज शुक्ला : आपातकाल के दौरान समाज में उत्पन्न गुस्सा सत्ता के प्रति विद्रोह और विशेष वर्ग को दबाने की कोशिश की तो कवि का मन इन रचनाओं में फूट पड़ा। **कुलदीप सक्सेना :** कवि हमेशा रूप और सौन्दर्य का पुजारी होता है लेकिन जब रूप और सौन्दर्य की जगह भ्रष्टाचार, शोषण और निचले वर्ग का दमन और सत्ताधारियों का मायाजाल नज़र आता है तो वह यह भूल जाता है कि उसके शब्द किसी का गुणगान करने की जगह उस व्यवस्था का विरोध कर रहे हैं। **शैलेश नगायच :** कुछ कवि ऐसे भी हैं जो अपनी रचनाओं से समाज को जागृत कर रहे हैं। **करण पाठक :** भाषा का विधान बड़ा रोचक है और उसमें सामंजस्य भी है। **पूरन लाल यादव :** भाषा बोली-वाणी में संयम है।

छिंदवाड़ा : लक्ष्मीप्रसाद दुबे : संकलन में कतिपय रचनाकारों ने तत्कालीन प्रधानमंत्री के अधिनायकवादी तंत्र के विरोध में उग्र, रोषपूर्ण और निंदात्मक भावों को पैने शरों का संधान किया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भीमसेन 'शाहिद' : आपातकाल ने अंधेरे में उजाले की उम्मीद दी तथा अधिकारों के प्रति जागृति पैदा की। **लक्ष्मीचंद :** संग्रह की सभी कविताओं का स्वर लोकतांत्रिक जागरण है। **रत्नाकर 'रतन' :** संग्रह की कविताओं में कवियों ने भोगे हुए सच को नहीं लिखा है हालाँकि कुछ कवियों ने मौलिक चिंतन किया है किन्तु आपातकाल जैसे अनुशासन पर्व पर राष्ट्र चिंतन को भविष्य की चुनौती के रूप में देखा जाना चाहिए। **परसराम तिवारी :** यह संकलन एकतरफा, एकांकी और एकपक्षीय है तथा कहीं-कहीं पर सत्य को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया गया है। संग्रह की रचनाओं से घटिया राजनीति की गंध आती है। **प्रभुदयाल श्रीवास्तव :** संग्रह की कविताओं में कवियों ने आपातकाल की स्थितियों पर खुल्लम-खुल्ला लिखा है। **उमेश शर्मा 'दीनबंधु' :** गागर में सागर की तरह बेबाक, सार्वकालिक, सर्वस्पर्शी रचनाएँ हैं, किन्तु संपादकों की भूमिकायें पूर्वाग्रह से ग्रसित लगीं। **जगदीश प्रसाद पांडेय :** संग्रह की अधिसंख्य रचनायें एक ऐसा अद्वितीय प्रयास है जो काव्य जगत में अतीत और वर्तमान के मध्य का दीपक सिद्ध होगी, किन्तु कुछ रचनायें तो आपातकाल की परिस्थिति को नहीं छू पाईं। **ओमप्रकाश 'नयन' :** रचनाओं में समकालीन परिवेश और वातावरण का तीखा स्वरूप मानवीय संवेदना और जन चेतना को जागृत करने के साथ ही सत्ता को चुनौती देने और ललकारने का भाव भी प्रदर्शित करता है। **लक्ष्मीनारायण सिंह :** अधिकांश रचनायें एकांगी, एकरसता और एक ही धारा की होने के कारण देश और समाज के तात्कालीन परिवेश को समग्रता से अभिव्यक्ति नहीं दे पाई हैं। **उमाकांत शुक्ला :** संग्रह की कविताओं में आपातकाल के दौरान व्यक्ति की संघर्ष क्षमता, निराशा, व्यवस्था में बदलाव की आशा के भावों की अभिव्यक्ति है।

सीधी : राघवेन्द्र प्रसाद : आपातकाल के समय उसके विरुद्ध लिखी गईं कविताओं को इकट्ठा कर जनमानस तक उस विरोधी स्वर को पहुँचाने का प्रयास है, जो अत्यंत स्तुत्य कार्य है। **हीरालाल वर्मा :** रचनाओं को पढ़कर आपातकाल के संकटों का पता चलता है। **अशोक तिवारी अकेला :** संकलन की सभी कविताएँ श्रेष्ठ एवं उपयोगी हैं। **वृन्दावन वर्मा :** इस संग्रह की रचनाओं को पढ़ने से ऐसा लगा किं सभी रचनाएँ आपातकाल के संकटों, दमनों या भ्रष्टाचारों का विरोध नहीं करतीं, बल्कि ये व्यापक अर्थबोध वाली हैं। **धीरेन्द्र त्रिपाठी :** इस संग्रह को पढ़कर अपने समय को किस प्रकार रचना में उसका उल्लेख करना चाहिए इसकी प्रेरणा मिलती है। **विजय कुमार सिंह :** रचनाएँ तो समझ में नहीं आयीं पर अधिकांश रचनाएँ अपनी अर्थ ध्वनि स्वयं व्यक्त करती हैं। **अशोक शर्मा अम्बर :** इस संकलन का प्रकाशन अभी हुआ है इसलिए एक ही विचारधारा और खेमे के लोग शामिल किए गये लगते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पाठकमंच

पाठकमंच

जंगल चुपचाप : माताचरण मिश्र

'जंगल चुपचाप' कवि माताचरण मिश्र की तीन दशक की काव्य-यात्रा है। ये कविताएँ कठिन समय और विद्रूपता के बीच एक भले और मासूम मानव का सृजन करती हैं जिसे प्रदूषित होते पर्यावरण और प्रकृति की घोर चिंता है — साथ ही झीजती जा रही मानवता को लेकर उसकी झटपटाहट साफ परिलक्षित होती है। कहना होगा कि ये मानव वास्तव में कवि का कोमल मन है जिसे एक तटस्थ व्यक्ति समय-असमय टटोलता रहता है।
'जंगल चुपचाप' की कविताओं की पाठकों द्वारा व्यापक प्रतिक्रिया हुई है —

सिंगरौली : पूनम गिरि : वर्तमान सामाजिक जटिलता के परिवेश में कविता के परिवेश बदल रहे हैं। अत: इस समय में काव्य संग्रह 'जंगल चुपचाप' विशेष सन्दर्भ रखता है। कविता जिस भाव-भूमि पर लिखी गई है वह काफी प्रभावात्मक लगती है। **सुमनलता डेहरिया :** यह संग्रह काव्य जगत को आलोकित करेगा इसमें कोई शक नहीं है। कविता 'तुम्हारे इस शहर में' पढ़ने में रुचिकर लगी। 'आदमी' कविता भी काफी प्रभावात्मक लगी। **आशा रैदास :** मैं यह महसूस करती हूँ कि कविता जीवन की रागात्मक व्याख्या है। 'तमाशा' कविता पढ़कर मन गहरे तक सोचने को विवश हो गयी। **रंजना श्रीवास्तव :** अच्छा संग्रह है 'जंगल चपुचाप' इसमें जीवन का हर आयाम मौजूद है। **राजीव शुक्ल :** 'जंगल चुपचाप' कविता बढ़ते समय मन गहरे तक प्रभावित हुआ। **रोहित गुप्ता :** मैंने जितना भी पढ़ा अच्छा लगा। कवि समर्थ है काव्य सृजन में। **संजय सिंह 'पद्म' :** कविता 'जीवन' और 'पाषाण युग-एक' और 'पाषाण युग-दो' पठनीय कविताएँ हैं। मानव का विकास एक रोचक तथ्य है जिसे पढ़ना, समझना और उस पर लिखना सुखद अनुभूति की बात है। **रामनाथ शिवेन्द्र :** काव्य संग्रह तथ्यपरक व लौकिक जीवन का वास्तविक उदाहरण है। उसी प्रकार से 'पितृ ऋण' भी अपने आप में एक अच्छी कविता है। **सुरेश**

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गिरि 'प्रखर' : आज कविता जिस प्रकार से अपना कथ्य व शिल्प गढ़ रही है वह साहित्य जगत के लिए आत्म संतोष की बात है। माताचरण मिश्र का काव्य संग्रह 'जंगल चुपचाप' कुछ इसी प्रकार का काव्य संग्रह है। जो पाठकों को अपने आप में प्रभावित करता है।

गुना : देवेन्द्र सलिल : पुस्तक में सामाजिक संवेदनाओं पर गहरी चिंता व्यक्त की गई है। मगर चिंता के प्रति कहीं कोई प्रतिबद्धता या झाँकता हुआ प्रभात दिखाई नहीं पड़ता। **देवेन्द्र :** अभिव्यक्ति कहीं व्यक्त, अव्यक्त रूप में अंतश्चेतना को संघर्ष करने की शक्ति देने में समर्थ या असमर्थ मानी जा सकती है। **जी.के. शर्मा :** लंबी चुप्पी के बाद माताचरण मिश्र की कविता की आवाज़ आई है, जो अपने भावों के विभिन्न स्वरूपों को उद्घाटित करती हुई वेग के साथ निकल पड़ी है। **लक्ष्मीनारायण शोभन :** मिश्र की इन कविताओं में एक मुकम्मल गठन और सघनता मिलती है। ये कविताएँ उस काल में जन्मी हैं जब कविता के लिए कठिन समय का बिगुल समाज में फूँका जा रहा है। **एच.एन. शर्मा :** यूँ तो कवि की कविताएँ प्रकृति में स्वच्छंद विचरण करती है, मगर वर्तमान के प्रति कवि का विरह अध्यात्म में बैठता प्रतीत होता है। इसलिए कविताओं को किसी एक साँचे में ढालकर नहीं देखा जा सकता।

मऊगंज : मधुसूदन प्रसाद मिश्र : कविताओं में बदलते हुये प्रतिमानों व परिदृश्यों का उल्लेख किया है। **भोलानाथ मिश्र :** माताचरण मूक आशावादी विचारधारा के सार्थक हैं, इसलिये उनकी रचनाओं का मूल स्वर आशावाद है। **अरुण कुमार तिवारी :** इस संग्रह की कविताओं का विषय वर्तमान एवं अतीत की समस्याओं का गुंफन है। संस्कृति, राष्ट्र प्रेम एवं प्रकृति प्रेम से इनकी रचनाएँ सराबोर हैं। **यदुवंश प्रसाद मिश्र :** रचनाकार स्तंभ विचारधारा का पोषक होता है। कोई सिद्धान्त या शून्य उस पर थोपे नहीं जा सकते। माताचरण मिश्र में ये विशेषताएँ हैं, इसी कारण उनकी कविता किसी वाद में न पड़कर आकर्षक शैली व शिल्प के साथ पाठकों के समक्ष उपस्थित हैं। **हरिशंकर द्विवेदी :** 'जंगल चुपचाप' कविता प्रकृति के रहस्य को उजागर करती है।

सतना : मोहनलाल वर्मा 'मुकुट' : 'जंगल चुपचाप' ऐसा काव्य संग्रह है जिसमें जटिलता है जो समाज, समय और रचनाधर्म से जुड़ा हुआ है। **ए.आर. तिवारी :** कविताओं का व्यापक फलक है। **चिंतामणि मिश्र :** जंगल के रूप में कवि का उद्देश्य आम आदमी से है पर उसके मन को नहीं छुआ गया। **विष्णुस्वरूप श्रीवास्तव :** सारे जंगली जानवर शहर में आ गये हैं इस कारण जंगल चुपचाप है। **विनोद पयासी :** इस संग्रह का कवि आशान्वित है कि स्थितियों में सुधार होगा। **रामनारायण सिंह 'राना' :** आज का साहित्य कमजोर पक्ष पर अधिक नहीं लिखा जा रहा और जो लिखा भी जा रहा है वह आम पाठक के पास नहीं पहुँच रहा है। **रामदास गर्ग :** जंगल चुपचाप का आशय यही है कि चुप रहकर भी बहुत कुछ कहा जा सकता है। **देवीशरण ग्रामीण :** कवि का कथ्य और शिल्प प्रशंसनीय है कविता सदैव अमिधा में लिखी जाती है लेकिन उसकी ध्वनि व्यंजना की होती है कवि ने समाज के सभी विषयों पर लिखा है।

सेंवढ़ा : श्याम बिहारी : समकालीन सोच को लेकर लिखी गईं इन कविताओं में खण्डित विश्वास, खण्डित सम्बंध व खण्डित आचरण सम्मिलित हैं। 'जंगल चुपचाप' की कवितायें जीवन संघर्ष में से गुज़री हैं। **मासूम अहमद :** माताचरण मिश्र के 'जंगल चुपचाप' में स्वतंत्र चिंतन की झलक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिल जाती है। सभी कवितायें अभिव्यक्ति की दृष्टि सें समर्थ हैं। **अवध बिहारी पाठक :** रचनाकार का भाषा पर अच्छा अधिकार है। इसी से हिन्दी, उर्दू के साथ अंग्रेजी शब्दावली का व्यवहार भी कवि ने धड़ल्ले के साथ किया है।

छपारा : एलिकजेंडर : संकलन की कविताएँ ऐसे पौधे के बिंब की याद दिलाती है जो ट्रीगाई के तमाम ताम-झाम को झटककर अपना सिर उठाए अब जैसे निहत्था खड़ा रहना चाहता है। **प्रशांत :** कवि प्रकृति से बेजार दिखाई देता है। कविताएँ पढ़ने से लगता है कि कवि सामाजिक सरोकारों से दूर कहीं अपने अंधेरे कोने में ही रहना चाहता है। **मयंक :** संग्रह में अनेक छोटी-छोटी कविताएँ हैं जो कवि की संवेदनशीलता के अनेक पहलुओं को उजागर करती हैं। **ठाकुर राम :** संग्रह की कुछ कविताएँ उदाहरण का सहारा लेकर खड़ी हैं झूठ बेचने व खरीदने का धंधा चल रहा है। **संतोष :** सभी कविताओं में कवि ने ढहते मानवीय मूल्यों को उजागर किया है।

शुजालपुर : दिलीप राणा : 'जंगल चुपचाप' की रचनाओं में उत्पीड़न और शोषण के ख़िलाफ़ लड़ने का मौन उद्घोष है। **लीना मालवीय :** 'जंगल चुपचाप' की रचनाएँ मानवीय मन की पड़ताल तो है ही, प्रकृति के प्रति हो रहा मानवीय दोहन भी रचनाकार की नज़र से नहीं बच सका। यही संवेदनशील और सतर्क रचनाकार की रचनाधर्मिता है। **आशुतोष सक्सेना :** माताचरण मिश्र जी की रचनाओं में एक विशेष समय आबद्ध है, जिसमें सामाजिक व राजनैतिक उथल-पुथल, सुख-दुख, प्रकृति प्रेम और एकाकी जीवन के उद्वेलित कर देने वाले पलों के सजीव चित्र हैं। **रामप्रसाद 'सहज' :** 'जंगल चुपचाप' की रचनाओं में रचनाकार के अपने गहन अनुभवों, चिन्तन-मनन, मान-अपमान, धर्म, राजनीतिक व सामाजिक उथल-पुथल को बहुत आत्मीयता से रेखांकित किया है। **बंशीधर 'बंधु' :** 'जंगल चुपचाप' की रचनाएँ रचनाकार के आत्मान्दोलन की रचनाएँ हैं जिसमें समाज में व्याप्त उत्पीड़न की अनुगूँज गुंजित होती है।

नई गढ़ी : समयलाल मिश्र : संग्रह का मूल स्वर सामाजिक संवेदना को उजागर कर समाज को जागृत करने का है। **रामायण प्रसाद त्रिपाठी :** प्रस्तुत संग्रह नई भावभूमि पर खड़ा है। इसमें छंद मुक्त कविताएँ पढ़ने को मिलीं। एक बार नहीं, कई बार पढ़ा; किन्तु वास्तविक आनन्द की अनुभूति नहीं हुई। **सन्तोष कुमार मिश्र :** भाषा प्रवाह संतुलित हैं। समाज की राजनीतिक सामाजिक परिस्थितियों की जटिलताओं, विद्रूपताओं को अपने सधे शब्दों द्वारा व्यक्त करने में कवि को सफलता मिली है। **ब्रजमोहनप्रसाद मिश्र :** मिश्र जी की कविताएँ मानव जीवन के अनेक पक्षों को उद्घाटित करती हैं इनमें अनुभूति की गहराई है।

बालाघाट : अशोक सिंहासने 'असीम' : 'जंगल चुपचाप' की कविताएँ आम आदमी की पीड़ाओं को जहाँ एक ओर दिग्दर्शित करती हैं। वहीं मानवीय दुराग्रहों की ओर भी संकेत करती हैं। **जी.व्ही. राव :** 'जंगल चुपचाप' कवि माताचरण मिश्र की सबसे अलग किस्म की मौलिक कविताओं का संग्रह है। इस संकलन की कविताओं में सरलता, सहजता और अकृत्रिमता है। **कृष्ण कुमार मिश्र :** 'जंगल चुपचाप' की अधिकांश कविताएँ मानवीय अनुभूतियों को व्यक्त करने में पूरी तरह सफल रही हैं। **योगेन्द्र पटले :** कवि मिश्र ने कई नवीन विषयों को पूरी गंभीरता से छुआ है और पाठकों को प्रभावित भी किया है। आम आदमी और उसकी पीड़ाओं की अभिव्यक्ति बड़ी सटीक है। **प्रेमप्रकाश**

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

त्रिपाठी : कविता 'मेरी हिन्दी' में इस बात की पुष्टि की गई है कि अनेक दुख-सुख सहती मेरी हिन्दी लगातार समृद्ध और समर्थवान होती जा रही है। **आर.के. पुरोहित :** 'जंगल चुपचाप' में सभी कविताएँ सारगर्भित हैं एवं मानव मन मस्तिष्क को छूती हैं। **एल.सी. जैन :** मानवीय समस्याओं और संघर्षों से युक्त अनेक रचनाएँ हमें जीवन के प्रति आस्थावान होने की प्रेरणा देती हैं। इस कृति की अनेक रचनाएँ हृदय को छूती हैं।

बरघाट : रमेश पटले : कवि ने भाषा पर आक्रमक लोगों का जंगल के भेड़िया और ऊदबिलावों के प्रतीकों के माध्यम से अपनी चिन्ता दर्शायी है। **सीताराम अग्रवाल :** 'लड़की का पिता' शीर्षक कविता में कवि ने सामाजिक स्थिति का विच्छृंखल दशा का चित्रण किया है। **अनिरुद्ध तिवारी :** वर्तमान कल कारख़ाना के युग में हमारे, आसपास का परिवेश प्रदूषित होते जा रहा है। यही स्थिति रही तो हमारा भविष्य अत्यंत कष्टप्रद होगा। इसी तथ्य को कवि ने 'पाषाण युग' कविता में उजागर किया है। **एस.पी. पाठक :** 'जंगल चुपचाप' में वर्तमान स्थिति की विषमताओं, यातनाओं, बढ़ता अनाचार, भ्रष्टाचार पर तीखा कटाक्ष किया गया है। ये कवितायें किसी वाद विशेष का आग्रह नहीं करतीं।

मुरार : महेश कटारे : संग्रह की अधिकांश कविताएँ एक गैर दुनियादार आदमी की कविताएँ हैं जो उसके अकेलेपन का साथ भी हैं और बयान भी। **अनुपमा कुशवाह :** कविताएँ बहुत दबी ज़बान में असहमति व्यक्त करती हैं इसलिये यह एक सुरक्षित असहमति बन जाती हैं।

भाण्डेर : राधाकृष्ण पाठक : माताचरण मिश्र के काव्य संग्रह की कवितायें मानव जीवन में आ रही टूटन और संबंध के विखण्डन को उजागर करती हैं। **रवीन्द्र सत्यार्थी :** संग्रह की कवितायें अपने आप में आस्थावान हैं। **रामप्रकाश मिश्र 'सरल' :** इतिहास के पन्नों में छिपी बातों को बड़े ही कलात्मक ढंग से आध्यात्म की ओर मोड़ती हैं। **शंकरलाल शुक्ल :** 'जंगल चुपचाप' की कविताओं में व्यक्तिगत सोच के साथ साथ समष्टि की समस्याओं का स्वर भी मुखरित है। **शालिग्राम त्रिपाठी :** माताचरण मिश्र का काव्य संग्रह 'जंगल चुपचाप' काल, चेतना, विचार, श्रवणता तथा सामाजिक संवेदनाओं को गति देने वाला कविता संग्रह है। **रामसेवक पाल :** माताचरण मिश्र की कविताओं में मन, स्वभाव, चरित्र और आचरण को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने वाले तत्व विद्यमान हैं। **धनीराम 'निर्भर' :** 'जंगल चुपचाप' की रचनाओं में कविवर माताचरण मिश्र मानवीय भीतरी दुराग्रहों को प्रभावी ढंग से व्यक्त करते हैं। **कृष्णकुमार तिवारी :** माताचरण मिश्र सामाजिक राजनैतिक परिवेश की चिन्ताओं और विसंगतियों की यातनाओं को रेखांकित करते हैं तथा आम आदमी का संवेदनहीन सपाट चेहरा दिखाते हैं। **चेतराम 'चेतन' :** संग्रह 'जंगल चुपचाप' की रचनायें प्रकृति में स्वछन्द विचरण करती हैं। स्मृतियों को उभारती हैं। **सुदामा प्रसाद श्रीवास्तव :** सरोकारों और अनुभूतियों को विभिन्न धरातलों पर एक साथ व्यक्त करने वाली इन कविताओं को किसी चौखटे में नहीं बाँधा जा सकता। **सुनीता मिश्र :** कविताओं में अध्यात्म को अपने में समेटे, प्रार्थना पूरी करके प्रेम की तलाश में निकल पड़ती हैं। **बिन्दु तिवारी :** काव्य संग्रह में लोगों से जुड़ी हुई चिन्ताओं और घटनाओं का मार्मिक चित्रण किया गया है वहीं जल, जंगल, जमीन के विनाश को बड़ी बारीकी से रेखांकित किया गया है। **शकुन्तला दुबे :** समाज में आतंकवाद का इतना खौफ है कि गोलियों और बमों से निर्दोष लोग मारे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाते हैं। **मेहरबान सिंह :** मिश्र जी की कविताएँ आम आदमी की पीड़ा को झिंझोड़ती हैं। **इक़बाल मोदी :** जाति मजहबी आतंकवाद नहीं है बल्कि इंसानियत दुश्मन लोगों पर हमला कर रहे हैं। **मीना जादव :** सामाजिक, राजनैतिक विसंगतियों को कविता समूह में वैचारिक दृष्टिकोण दिया है। **दीक्षा दुबे :** कविताओं में अनुभूति और अभिव्यक्ति ऐसी मिसाल कायम की कि पाठक वर्ग सोचने पर मजबूर होते हैं।

राजगढ़, ब्यावरा : सीमा जुलानिया : कविताएँ बहुत प्रभावित करती हैं। वे प्रार्थना से सांसरिकता को जीने की कला सिखाने को प्रेरित करती हैं। उनमें प्रकृति के प्रति अगाध लगाव है। **प्रदीप चौधरी :** 'जंगल चुपचाप' की कविताएँ मनुष्य को उसका दायित्व सिखाती हैं। **राकेश ठाकुर :** वन संपदा हमारी जीवन की साँसों को बढ़ाती है, इसलिए उसकी सुरक्षा ज़रूरी है। मनुष्य में मनुष्य रहे — संकलन की कविताएँ यही सिखाती हैं। **मार्तण्ड सिंह :** गर्वीले मेघों के प्रति कस्बे की सुबह, पाषाण युग, आखातीज जैसी कविताओं ने काफी प्रभावित किया है। **आर.एम. जैन :** माताचरण मिश्र का रचनाकार जिस तरीके से आदमी होने की नीयत को रचता है वह उनका प्रभावित करने वाला रचाव है। **शिवसिंह पतंग :** माताचरण मिश्र एक अलग ढंग के रचनाकार हैं, वे समकालीन कविता के रेखांकित हस्ताक्षर हैं। मनुष्य होने की सहजता को वे पूरी शिद्दत से मुखर करते हैं।

अयोध्या नगर, भोपाल : देवेन्द्र कुमार जैन : कविता संग्रह आदमी की तलाश के लिए प्रकृति, पशु-पक्षी, नगर नागर, पुराण गाथा और बोलते चित्रों से रस ग्रहण करते हुए एक सोंधी गंध इस तरह छोड़ता है, जो विश्वास दिलाती है कि जंगल भले चुपचाप है, परन्तु उसने खिलना नहीं छोड़ा है। **मेधा मैथिल :** कविताएँ हमारे आसपास के परिवेश को जिसमें हम हर पल जीते हैं, जिसे हम हर पल भोगते हैं, का यथार्थ वर्णन है। **घनश्याम अमृत :** कविताओं की भाषा सीधी व सरल है, कविताओं का पाठक के हृदय पर सीधा प्रभाव पड़ता है। **बृजभूषण शर्मा 'बिड़ला' :** कवि का संवेदनशील हृदय आम आदमी की पीड़ा को कविताओं के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान करता है। संग्रह की रचनाएँ प्रभावी हैं।

मण्डला : गीता झा : कवि ने समाज के सभी पहलुओं पर नज़र डालते बखूबी लिखा है। **रामेश्वर हरिद :** विभिन्न विषय पर लिखा गया है। भाव पक्ष साधारण है। **हेमन्त जैन :** संकलन की भाषा शैली सरल और सहज है। **शालिग नामदेव शील :** 'जंगल चुपचाप' के कवि ने अपनी भावनाएँ सरलता से प्रगट की हैं। **निशा अग्रवाल :** कविता संग्रह को प्रभावशील बनाती है। **दीपक मालवीय :** छोटी-छोटी कविताओं की कृति है। **विजय सिंह चौधरी :** काव्य तत्व और भाव पक्ष साधारण है। कवितायें सटीक और उच्चता प्राप्त नहीं है वरन् खिचड़ी-सी पका पाठकों के सामने परोस दी गई है।

नागौद : देवीशरण 'ग्रामीण' : माताचरण मिश्र की कविताएँ कविता की राह पर मंज़िल की ओर बढ़ती कविताएँ हैं। उनकी कविताएँ समाज के यथार्थ को चित्रित करती हैं। **बालेन्दु प्रभाकर :** 'चंगल चुपचाप' की कविताएँ कवि की स्वानुभव सामाजिक-राजनीतिक परिवेश की चिन्ताओं की कविताएँ हैं। **राहुल शुक्ल :** माताचरण मिश्र अनुभवशील रचनाकार हैं अत: उनकी रचनाओं में जीवन को गहराई से अभिव्यक्त किया गया है। **सी.एल. बिरहा :** वर्तमान की सामाजिक व्यवस्था एवं मानवीय सम्बन्धों की जटिल परिस्थितियों एवं तद्जन्य विसंगतियों को समझने में संग्रह मदद करता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रामगोपाल सिंह : मिश्र जी ने जो कविताएँ लिखी हैं वे सामाजिक सरोकारों से जुड़ी तो हैं पर वे भावनात्मक अधिक हैं। उनके हृदय में जो भाव आये हैं उन्हें बिना लाग-लपेट के रख दिया है। **रमाकान्त मिश्र :** मिश्र जी जिस उद्देश्य से रचना करते हैं, उसमें तो वे सफल हैं पर मात्र, यथार्थ की, वास्तविकता की, विसंगतियों की चर्चा से कुछ मिलने-जुलने वाला नहीं। **अरुण नामदेव :** कविताएँ मानवीय सरोकारों, अनुभूतियों, स्वभावों एवं चरित्र-आचरण को धरातल से जोड़ने वाली एवं पाठक के मर्म को स्पर्श करने वाली है। **दादू राम पाण्डेय :** इन कविताओं में, एक सामान्य पाठक के लिए भी बहुत कुछ जानने, समझने एवं उन पर गहराई से विचार करने के तत्त्व मौजूद हैं। **संतोष :** संग्रह में एक सामान्य आम आदमी के भावों की अभिव्यक्ति के साथ-साथ, प्रबुद्ध पाठक के लिए भी मानवीय बिन्दु समाहित हैं। **राणा प्रताप सिंह :** रचनाकार जिस भाव-भूमि में अपनी रचना करता है, निश्चय ही वह उसकी अपनी निजी सोच का परिणाम होती है। **अजीत प्रताप :** कविताएँ सहज-सरल तो हैं ही, उद्देश्यपूर्ण भी हैं, किन्तु कहीं-कहीं रचनाकार विरोधाभासी प्रतीत होता है।

मैहर : गयाप्रसाद चौरसिया : 'जंगल चुपचाप' आज के पूरे परिवेश को गहराई से उभारता है। **भागवत चौरसिया :** संग्रह की कविताओं में सहज आत्मीयता का अहसास समाया हुआ है। **के.पी. सिंह :** कवि देश की ज्वलंत समस्याओं को तल्ख़ी से उभारते हैं। **आर.के. चौरसिया :** संग्रह की कविताओं में एक आम आदमी की अनुभूति का विस्तार है। **सूरज दीन विश्वकर्मा :** कवि लोक जीवन की पीड़ा को गहनता से अनुभव करता है।

सिवनी : मसूद 'आतिश' : काव्य संग्रह जब पढ़ रहा था तो लगा कि कवि ने नाहक इसका नाम 'जंगल चुपचाप' रखा है, मगर जब कविता 'जंगल चुपचाप' कविता पढ़ी तो अपनी गलती का मुझे अहसास हो गया। **'भुजंग' राधेश्याम सेन :** मुझे 'जंगल चुपचाप' पठनीय लगा। अतुकान्त या गद्य रचनाएँ सहजता से समझ में आए ऐसी रचनाएँ काव्य संग्रह में पढ़ने के लिये मिलीं। **दिव्या झेण्डे 'दीपशिखा' :** 'जंगल चुपचाप' सर्वश्रेष्ठ रचना है इसके माध्यम से कवि ने कहा — वनों की अंधाधुंध कटाई करके मनुष्य बड़े-बड़े कारख़ाने खोल रहा है न उसे आने वाले ख़तरे का कोई डर है न पेड़ पौधों के बेरहमी से काटे जाने का दुख। अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए पक्षी पशुओं को कष्ट पहुँचाने में कोई कसर नहीं छोड़ता।

झाबुआ : अंजना सोलंकी : नयी कविता के माध्यम से कवि ने जीवन की सच्चाई को उजागर किया है। उनकी कविताओं में वर्तमान समय की आपा-धापी, पीड़ा, तनाव तथा विद्रोह झलकता है। **सिकरवार :** माताचरण मिश्र की इन कविताओं का वैशिष्ट्य इस बात में है कि इनमें मानव जीवन की सच्चाई के साथ-साथ उनका अनुपम अनुभव प्रकृति से है। **अरविंद रावल 'राज' :** हमारी आधुनिक के आवरण को, आधुनिकता के विभ्रमों को अमान्य करते हुए, हमारे अहसासों, स्मृतियों और आधुनिक परिवेश में प्रकृति की सौन्दर्यता को बहाने की कामना रूपी कविताएँ हैं। **अंजना ठाकुर :** कविताएँ मन को विवश कर देती हैं कि प्रकृति के साथ हमें सदैव सजग सहज होकर कदम से कदम मिलाकर दूषित होने से बचाना है। **भूरिया :** माताचरण मिश्र की ये कविताएँ आधुनिक समय के प्रति पूरी तरह से सजग और संवेदनशील हैं, नयी कविता की परम्परा में 'जंगल चुपचाप' का अपना विशिष्ट स्थान है।

नीमच : गोपाल जोशी : 'जंगल चुपचाप' की रचनायें पाठक से 'विज्ञान' की माँग करती हैं,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विजनहीन पाठक के लिये इन कविताओं का कोई महत्त्व नहीं। **'कुसुम त्रिवेदी' :** माताचरण मिश्र ने अपनी समस्त संवेदना के साथ इस संकलन की रचनाओं में सजग प्रहरी की भूमिका निभाई है। **विमल चंद्र जैन :** 'जंगल चुपचाप' में कवितायें चीख-चीखकर मानवता एवं मानवीय संवेदनाओं का उद्घोष करती हैं। सामाजिक, धार्मिक समस्याओं पर बेबाकी से प्रहार करती हैं। **किशोर जवेरिया :** 'जंगल चुपचाप' की कविताओं में प्रौढ़ता, प्रांजलता एवं भाव प्रवणता का विस्मयकारी समन्वय है। **निकलसन बक्षी :** माताचरण मिश्र को बीस साल की काव्य साधना के बाद 57 कवितायें अपने आप में इन अपेक्षाओं पर खरी नहीं उतरतीं जो पाठक के परिचय से पाठक के मन में उपजती हैं। **शकुंतला :** 'जंगल चुपचाप' की कुछ कवितायें अद्भुत हैं। कवि जिस समाज में रह रहा है उसकी प्रतिक्रियाएँ एवं प्रतिछायाएँ उसकी कविताओं में साफतौर पर दिखाई देती हैं। **प्रभु चंदेल :** संकलन में ऐसा कुछ भी नहीं लगता कि उसे याद रखा जाये। **महिपाल सिंह चौहान :** समीक्षा में आई हुई पुस्तक की पूर्ण समीक्षा होना चाहिये - कवितायें एकदम सामान्य हैं।

मंदसौर : शिवकुमार मिश्र : कविताएँ भाव प्रेरणा और शैलीगत आकर्षण से मुक्त हैं। सीधी स्पष्ट दो टूक भाव व्यंजना है, जिनमें आम आदमी के दर्द की गहराई है। **वेद मिश्र :** कविताएँ मनुष्य में सकारात्मक भाव खोजती है, प्रकृति, अध्यात्म, इतिहास प्रार्थना और प्रेम कविताओं के विषय रहे हैं। **भगवतीप्रसाद गेहलोत :** कवि ने परिवेश के अनुभव में आये मानवीय आचरण को सरल व सीधे शब्दों में व्यक्त किया है। काव्य संग्रह में समाज, राजनीति की दरंदिगी का खुलासा हुआ है। **डी.पी. शर्मा :** प्राचीन सन्दर्भों की तुलना में कवि आधुनिकीकरण के प्रति निराश है उसके अनुसार व्यक्ति का आसानी से ज़िंदा रह पाना मुश्किल हो गया है। कविताओं में संत्रास, कुण्ठा व निराशा अधिक अभिव्यक्त हुई है। **विनोद कुमार शर्मा :** काव्य संग्रह कवि के अनुभवों का लेखा-जोखा है, संग्रह में ग्रामीण जीवन का श्रेष्ठ चित्रण हुआ है। **हरनाम सिंह :** सरल शब्दों में सार्वजनिक और व्यक्तिगत चिंताओं को उजागर करने में कवि सफल रहा है। उसका रचना संसार बेहद विस्तृत है। शब्द चित्र बनाती कविताएँ पठनीय हैं।

दमोह : सूरज प्रसाद चौधरी : कवि माताचरण मिश्र की पुस्तक 'जंगल चुपचाप' सपाटबयानी में भी बहुत कुछ कहती है। **कीर्तिकाम दुबे :** इस कृति की कुछ रचनाएँ बेजोड़ हैं। कविताएँ मानवीय सरोकारों को उद्घाटित करती हैं। **रामचंद संन्यासी :** 'जंगल चुपचाप' में आम आदमी की आवाज़ मुखर हुई है। कवि की गहन अनुभूतियाँ व्यापक परिवेश को स्पर्श करती हैं।

श्योपुर : जय सिंह जादौन : 'जंगल चुपचाप' कविताएँ यही सिद्ध करती हैं कि कविता मात्र लोकरंजकता नहीं होती हैं। कविता का पर्याय कविता ही होती है। **अखिल भदौरिया :** सृजन का सुख अप्रतिम और अवर्णनीय होता है। रचना के माध्यम से सर्जक सहृदयों को भी सृजन सुख का आस्वादन देना चाहता है। अत: संप्रेषणीयता ही कविता की प्रथम आवश्यकता है। जंगल में चुपचाप की कविताएँ सम्प्रेषण के धरातल पर अद्वितीय हैं। **सत्यनारायण शर्मा :** माताचरण मिश्र अनुभव तथा अनुभूतियों के अप्रतिम कवि हैं। अत: जंगल चुपचाप में भी स्व-अनुभूति स्व-अनुभव तथा अनुभव की प्रमाणिकता की परिपक्व कविताएँ पढ़ने को मिलती हैं। **स्वराज भूषण :** 'जंगल चुपचाप' कविताओं का एक ऐसा दस्तावेज है, जो मनुष्य और उसके विकराल काल के बीच की जटिलताओं को उजागर करते हुए जीवन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संदेश देता है।

अमरपाटन : वीरेन्द्र सोनी : कविता संग्रह व्यक्तिगत अनुभूतियों, सामाजिक, राजनीतिक परिवेश की चिंताओं और विसंगतियों की यातनाओं का चित्रण करता आम आदमी का दर्पण-सा प्रतीत होता संग्रह है। **तरुण पाठक :** माताचरण की इन कविताओं में समय, मनुष्य, समाज में संबंधों के खण्डित होने के कारणों पर विचार करते हुए मानवीय मन में उपजी चिंताओं के भाव व्यक्त किए गए हैं। **नरेन्द्र सोनी :** 'जंगल चुपचाप' का वर्तमान परिस्थिति के प्रति मानवीय संवेदनाओं तथा सामाजिक सरोकारों को गति प्रदान करने वाला संग्रह है, जिसकी कविताएँ आम आदमी के हृदय में उपजी पीड़ाओं से उपजी भावनाओं को व्यक्त करती हैं। **सुरेश शुक्ला :** 'जंगल चुपचाप' माताचरण की कविताओं में समय, मनुष्य समाज में संबंधों के विखण्डन के समय का और उससे उपजे चिंताओं पर हताश होते हुए सहजता से मार्ग खोजने का उद्देश्य निहित है। माताचरण की इन कविताओं का मूल स्वर वाद विभक्त अस्थायी वाद है।

सांची : रीता शर्मा : कवि ने जीवन की सच्चाई से परिचय कराया है। **दिनेश मिश्र :** 'जंगल चुपचाप' में कवि ने जहाँ जीवन की वास्तविकता को उकेरा है वही कहीं एक आदमी के अंतस में व्याप्त वेदना का भी मार्मिक चित्रण किया है। **युगल श्रीवास्तव :** अधिकांश कविताएँ जीवन के यथार्थ को उजागर कर मन की गहराई में उतरती हैं।

विदिशा : जगदीश शरण : कवि के मन में विसंगतियों के ढेरों प्रश्न हैं जो कवि को उद्वेलित किये जा रहे हैं उन सारे प्रश्नों को कविता में उठाकर वह अपनी जागरुकता और चिन्ता को अभिव्यक्ति देता है। **दिनेश मिश्र :** मिश्र जी के भावावेग के कवि हैं जिस तरह मुनव्वर राणा को भावावेग का कवि माना जाता है कुछ वैसी ही रचनाएँ श्री मिश्र की हैं वे संवेदनाओं की गहराई में खुद भी डूबते हैं और औरों को भी डुबाते हैं। **कालूराम पथिक :** 'जंगल चुपचाप' शीर्षक से जो कुछ कहा गया है उसमें चुपचाप में भी लावा उबल रहा है कवि बहुत कुछ कहना चाहता है उसकी आग को उसके भावों में समझा जाना चाहिए।

नौगाँव : विकर्षण देव नायक : 'जंगल चुपचाप' सुप्रतिष्ठित कवि और रचनाकार हैं, माताचरण मिश्र के अनुभवों को एवं अनुभूतियों के फलक को विस्तृत करने वाला अप्रतिम और बहुप्रतिक्षित दूसरा कविता संग्रह है। **काशी नायक :** 'जंगल चुपचाप' एक सौंधी गंध है, कविता इस तरह आदि इत्यादि ऐसी कविताएँ हैं, जो अगढ़ भी हैं। **अखिलेश सोनी :** 'जंगल चुपचाप' की कविताओं में मानवीय जीवन के भीतरी दुराग्रहों को झिंझोड़ते हैं तथा अंतर संघर्ष को शक्ति देते हैं। **रामनायक :** 'जंगल चुपचाप' काल चेतना, विचार प्रवणता तथा सामाजिक संवेदनाओं को गति देने वाला कविता संग्रह जिसकी कविताएँ आम आदमी की घनीभूत पीड़ाओं में सम्मिलित होकर रचनात्मक संतुलन बनाये रखती है।

सीधी : अशोक अंचल : राजेन्द्र विश्वकर्मा : इस कविता संग्रह की कई कवितायें अर्थ की तथा अपने समय को व्यक्त करने की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। बहुत-सी कवितायें व्यक्तियों पर केन्द्रित हैं। **ज्ञानेन्द्र प्रसाद :** माताचरण मिश्र की कवितायें भूले-भटके हुए ख़्यालों में मशगूल कवि का सृजन लगती है। मुझे 'सपेरा' कविता अच्छी लगी क्योंकि इसमें आदमी के स्वार्थी मन को बहुत ही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करीने से पकड़ा गया है। **जगदीश मिश्र :** कविताओं में संकेतों में व्यंग्य है। मृत्यु और जीवन के अवसाद पर इन कविताओं का आधार खड़ा दिखाई देता है। **बृजेश सिंह :** कवि ने जिस विषय पर भी कविता लिखना चाहा है उसे बहुत तरीके से कहा है। ऐसा किसी कविता को नहीं कहा जा सकता कि इस कविता में कविताई नहीं हुई है।

छिंदवाड़ा : प्रभुदयाल श्रीवास्तव : संग्रह की कविताओं को एकाग्रचित्त होकर पढ़ने पर प्रतीत होता है कि किसी अंतर्जगत से सुनहरी रश्मियाँ आ-आकर आत्मा को प्रकाशित कर रही हैं, बिल्कुल चुपचाप। **लक्ष्मीप्रसाद दुबे :** संग्रह की कविताओं में प्रकृति प्रेम, दार्शनिकता और प्राणियों की जीवन्त जिजीविषा का चिंतन है। वादों और विचारधाराओं से अलग हटकर ये रचनायें श्रमिकों, महिलाओं, मेहनतकशों आदि के जीवन को अभिव्यक्ति देती हैं। **परसराम तिवारी :** संग्रह की कुछ कवितायें दिल को छूती हैं, किन्तु लक्षणा, व्यंजना से दूर ये रचनायें किसी निष्कर्ष बिन्दु पर नहीं ले जा पाती हैं। **शिवराम विश्वकर्मा 'उजाला' :** संग्रह की कविताओं के विभिन्न स्वरूप और आकृतियाँ हैं जिसमें कवि ने आप बीती का मुखर चित्रण करने के साथ ही मानवीय संवेदनाओं को भी उकेरा है। **उमेश वर्मा 'दीनबन्धु' :** पूर्वाग्रह और दुराग्रह से दूर संग्रह की कवितायें तटस्थता के साथ ऐसी मिठास देती है जिससे दिलो-दिमाग में आयी कटुता रस भरी बन जाती है। **ओमप्रकाश 'नयन' :** प्रेम, स्मृति, अनुभूति, घनीभूत पीड़ा, मानवीय चरित्र और स्वभाव, संस्कृति के व्यक्त करती ये रचनायें समाज की विभिन्न समस्याओं को वृहद संदर्भों से जोड़कर देखती हैं।

दतिया : राजनारायण बोहरे : इन कविताओं को भाव प्रवण लेकिन विमर्शहीन कविताएँ कहा जा सकता है। इनमें से कुछ कविताएँ बहुत अच्छी हैं। **रामकिशोर गुप्त :** कवि को व्यक्ति और समाज के टूटते हुए रिश्तों की चिन्ता है किन्तु इस चिन्ता में हताशा का स्वर नहीं है। कवि में आशावाद उसके अध्यात्म के कारण है। समुद्र और बूँद के रूपक की कविता इस अध्यात्म का उदाहरण है। **राजेन्द्र बुधौलिया :** इन कविताओं में न तो कोई भाषायी वैशिष्ट्य, न लयात्मकता है। **अनिल तिवारी :** इन कविताओं में हमारे जीवन के विविध पक्षों का चित्रण है। **राधारमण वैद्य :** कवि युग की जटिलता और आदमी में बढ़ रही जड़ता से बाखबर और चित्रित है। **सुरेश सौरभ :** इन कविताओं में कवि स्वयं को भीड़ में खोने नहीं देना चाहता है। कविता पढ़ना कवि का सहयात्री होना है। **के.बी.एल पाण्डेय :** इन कविताओं में अनुभवों का विविध और व्यापक संसार है। **जगदीश सुहाने :** स्मारकों की दुर्दशा पर कवि की यह टिप्पणी बहुत अच्छी है कि लोग पाषाणों में राष्ट्रीयता ढूँढ़ेंगे। कविताओं में भावों की सुन्दरता है और भाषा की रचनात्मकता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चिट्ठी चिट्ठी

साक्षात्कार का मार्च-अप्रैल का अंक अत्यंत विलंब से आज दिनांक 30.06.09 को प्राप्त हुआ। आवरण ठीक बने हैं। पूर्व में पूरे अंक में कलाकार के कई रेखांकन प्रकाशित करते थे, जिससे पत्रिका की किताबी एकरूपता थोड़ी भंग होती थी और पत्रिका रोचक बनती थी। अब बमुश्किल एकाध रेखांकन ही छापकर औपचारिकता क्यों निभाई जा रही है। संपादक को इस ओर ध्यान देना चाहिए। **— आनंद टहनगुरिया, भोपाल**

साक्षात्कार का 352वाँ अंक आज पूरा पढ़ सका हूँ। लूट, चोरी आदि के अपराधों में संलग्न भले घर के लड़कों को लेकर आपने बड़ी ज्वलंत और बुनियादी समस्या की ओर समाज और सरकार का ध्यान आकर्षित किया है। राष्ट्रकवि भूषण पर दिवंगत आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी का सुचिन्तित आलेख देकर बहुत अच्छा काम किया है। आचार्य त्रिपाठी ने भूषण-काव्य का समग्र अपने विवेचन का विषय बनाया है और उन्हें राष्ट्रकवि माना है। दो समकालीन कवियों ने अधुनातन कविता पर अपने विचार दिये हैं। ओम प्रभाकर साहित्य और विशेषत: कविता के क्षेत्र की अहम्मन्यता, अराजकता और घुसपैठ से क्षुब्ध हैं। अछांदिक कविता के वे घोर विरोधी लगे, जबकि अपनी लघु पत्रिका 'शब्द' में वे बेछन्द कविताओं और उनके कवियों को प्रोत्साहित करते रहे हैं। छन्दमुक्त कविता, नवगीत और ग़ज़ल में उनकी पहचान है। ग़ज़ल कहते-कहते ओम अवस्थी भिण्ड से देवास पहुँच गए। दूसरे कवि देवव्रत जोशी को पत्रिका में विशेष स्थान दिया गया है। उनका साक्षात्कार है और ग्यारह कवितायें हैं। वे अपने रचनाशील जीवन के 75वें वर्ष में हैं। उन्हें साक्षात्कार ने अमृत सम्मान दिया है। समकालीन कविता की दुरूहता से जोशी जी भी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चिन्तित हैं। इस अंक के ललित निबन्ध ने मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया है। उसमें लालित्य और चिन्तन का मणि-कांचन योग पढ़ते ही बनता है। तीन कहानियाँ हैं, जिनके कथ्य और कथन एक समान नहीं हैं। पहली कहानी मनोविश्लेषणात्मक है और बाद की दोनों कहानी में कहानीपन अधिक है। कवितायें विविध शैलियों में हैं देवव्रत जोशी की और राजकुमार कुम्मज की कवितायें पीछा करती हैं और विनय मिश्र, अंजुम की ग़ज़लें पढ़कर तो दिल ये कहता है कि शायरी कर लो। **— परशुराम विरही, शिवपुरी**

'साक्षात्कार' 351 मार्च अंक समय पर हस्तगत हुआ। हमेशा की तरह सर्वप्रथम प्रधान सम्पादक दीपक जी की कलम से लिखा हुआ सम्पादकीय 'पानी। पानी! पानी?' पढ़ा, अच्छा लगा। एक साधारण से दिखने वाले किन्तु महत्त्वपूर्ण विषय पर आपने अपने विचार रखे, खासतौर से पानी के उपयोग को लेकर किफायत बरतने के जो सहज सूत्र आपने बताए हैं, उन पर ध्यान देकर काफी पानी बचाया जा सकता है। 'तीरे-तीरे नर्मदा' अमृतलाल वेगड़ की कलम से सतत पढ़ ही रहे हैं, आनन्द आ रहा है, परन्तु वेगड़ जी से विनय त्रिपाठी की बातचीत बोझिल लगी, इस बातचीत से कुछ नया जानने को नहीं मिला। 'पत्र' के अन्तर्गत प्रेमशंकर रघुवंशी 'अभिनन्दन के गवाह : पत्रों के ये सार्थवाह' रोचक सामग्री है परन्तु अच्छी चीज़ की अधिकता भी ठीक नहीं होती, कुछ अधिक ही पत्रों को स्थान दे दिया गया। भारी भरकम अंग्रेजी शब्दों से भरी हुई कविताएँ समझ से बाहर हैं। चन्द्रसेन विराट व नरेश शांडिल्य के दोहे रुचिकर और प्रभावी हैं। दोहाकार द्वय को बधाई। **— घनश्याम मैथिल 'अमृत', भोपाल**

साक्षात्कार का 350 वाँ व 352 वाँ अंक एक साथ मिला। फरवरी 2009 का अंक खूब पठनीय लगा। वैविध्य से भरी सामग्री किसी भी पत्रिका की पठनीयता को बढ़ाती है। यह अंक इसका प्रमाण है। 'बातचीत', 'यात्रा', 'कहानी', 'लेख', 'व्यंग्य', 'कविता', 'समीक्षा' से भरा यह अंक बौद्धिक खुराक की विविध चासनी से परिपूर्ण है। ऊर्जा की चर्चाओं तथा दृष्टांतों से ऊर्जास्वित प्रस्तुत अंक का सम्पादकीय एक दिशाबोधक आलेख का रूप पकड़ चुका है। बाह्य ऊर्जा की अपेक्षा आंतकित ऊर्जा के प्रयोग से जीवन अधिक सुविधाजनक हो जाता है। मध्यकालीन भारतीय संत उसी ऊर्जा के प्रयोग से बड़े-बड़े प्रकाश कर सके थे। कबीर, दादू, तुकाराम के विचार इस लेख के मणिरत्न जैसे हो गये हैं। सम्पूर्ण भारतीयता सामाजिक, धार्मिक और आध्यात्मिक ऊर्जा से ही संचालित हैं। संतों की दृष्टि से यह आंतरिक ऊर्जा ही समाज और व्यक्ति दोनों को आलोकित करती है। सम्पादकीय में संतों की वाणियाँ और विद्वानों के उद्धरण देखकर सम्पादक की अध्ययनशीलता प्रकट होती है। इस अंक में कविताओं का खण्ड पर्याप्त प्रभावशाली है। दिनेश कुशवाह की अन्य कविताएँ भी मैंने पढ़ीं पर इन कविताओं को पढ़कर उनकी पैनी दृष्टि का अनुमान लग जाता है। जगदीश तो सिद्ध कवि हैं ही। मदन केसरी आदि की कविताएँ अभी कविता के प्रति चाहत का संसार बनाए हैं। गीत के विषय तो मन को झकझोर देते हैं। अश्वघोष का अतीत तो मन को ऐसा बाँधता है कि बंधन छूटता ही नहीं। यश मालवीय ने वर्तमान परिस्थितियों से संघर्ष का आह्वान कर गीत के फलक को बहुत दूर तक पहुंचा दिया है। अमृतलाल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वेगड़ की अंतहीन यात्रा बैठे-बैठे भी यात्रा कराती रहती है। इस अंक के लिए सम्पादक और उनकी पूरी टीम बधाई के पात्र हैं। साक्षात्कार का 352वाँ अंक कई महत्त्वपूर्ण सामग्रियों के साथ प्रकट हुआ है। सम्पादक ने अग्रलेख (सम्पादकीय) में बड़ी ही ज्वलंत समस्या को करीने से उठायी है। पुत्र, वित्त और यश के लिए मनुष्य क्या-क्या नहीं करता। शेष दो को छोड़ भी दिया जाय तो पुत्र की कामना तो अमीर-गरीब सबमें समान होती है। निर्जला एकादशी और न जाने कितने व्रतों के बाद जब पुत्र का जन्म होता है तो फूल की थाली बजती है — उत्सव मनाए जाते हैं। एक दलित के पुत्र की कामना आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपनी कविता में उक्त भावों को लेकर ही व्यक्त की थी — ''रहकर कई निर्जला एकादशी / माँ ने हमें पाया कहीं था गर्भ में / जन्म के दिन फूल की थाली बजी / ...हम अछूतों को बताते छूत हैं / कर्म खोटे खुद करे पर पूत हैं।'' यह अछूत की आह है — पर पुत्र की बलकती कामना उसमें भी भरी है। वही पुत्र जब सयाना होता है तो अपराधी बनकर लूट-पाट करता है। पिता-माता को संकट में डालता है। पर पुत्री की अपेक्षा आज भी उसे अधिक महत्त्व दिया जाता है। लिंग के आधार पर यह विभेदीकरण भारतीय समाज को तोड़ रहा है। भ्रूण हत्याएँ बढ़ रही हैं। पुरुष-स्त्री का अनुपात असंतुलित हो रहा है। इन समस्त समस्याओं को पुत्र कामना जैसे शीर्षक में समेटकर सम्पादक महोदय ने स्त्री विमर्श को नयी दिशा दी है। इस प्रकार के आद्यतन विचारों के लिए वह बधाई के पात्र हैं। इन विचारों में फतवा संस्कृति वाला विमर्श नहीं है, पक्षधरता वाला आक्रोश नहीं है अपितु मानवीयता के आधार सबको समान समझने की समझदारी है। इस अंक के अन्य आलेख भी उच्चस्तरीय हैं। पहला लेख तो पं. राममूर्ति त्रिपाठी पर मेरा ही है उस पर मुझे कुछ नहीं कहना। पर इतना तो कहा ही जा सकता है कि साक्षात्कार के इस अंक ने समय की नब्ज़ पकड़ी है। राममूर्ति जी हिन्दी-संस्कृत के धुरंधर विद्वान थे। उन पर आलेख और उनका आलेख देकर सम्पादक ने समय की गति को पूर्णतः समझा है। साक्षात्कार में सामग्री उच्चतम कोटि की होती है — पर समय से उसका प्रकाशन नहीं हो पाता है। जैसे विष्णु प्रभाकर आदि-आदि। पर मार्च 09 की अंतिम तारीख को दिवंगत होने वाले राममूर्ति पर अप्रैल अंक में चर्चा होना अंक के अद्यतन और स्मार्ट रूप को व्यक्त करता है। इस अंक में 'कितने पाकिस्तान' पर विस्तृत रपट प्रो. चमनलाल गुप्त की है, जिसने मूल पुस्तक नहीं पढ़ी है वह भी इस आलेख के माध्यम से रचना के आशय को आसानी से समझ सकता है। उपन्यास कैसा है — उसकी समीक्षा कैसी है — इस पर ध्यान न भी दिलाया जाय तो भी प्रो. गुप्त ने परिश्रम के साथ 'कितने पाकिस्तान' और उसके लेखक कमलेश्वर पर बेबाक टिप्पणी की है। भारतीय इतिहास और मार्क्सवादी कमलेश्वर की दृष्टि दोनों इस लेख में स्पष्ट नज़र आती है। पर कहीं-कहीं समीक्षक दृष्टि लेखक के साथ न्याय कम कर पायी है। 'कितने पाकिस्तान' से इस्लामी उग्रवादियों की पोल भी खुलती है इसकी चर्चा संभवतः लेख में कहीं नहीं है। बाबरी मस्जिद के इतिहास से कारगिल के युद्ध तक कमलेश्वर की दृष्टि हिन्दू विरोधी है। यह कहने का साहस भी लेख में नहीं है। पर समीक्षा की दृष्टि से कहा जाय तो यह सर्वान्गपूर्ण लगता है। उपन्यास लिखने का आधा श्रम इसकी समीक्षा में लगा होगा। इस अंक में श्यामसुंदर दुबे का ललित निबंध भी साहित्यिक मन वाले पाठक को आकर्षित करता है। इस लेख की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाषा और विषय दोनों अन्य लेखों से हटकर है। कविताएँ, समीक्षाएँ तथा मान्य स्तंभ अंक को महत्त्वपूर्ण बना देते हैं। इन दोनों अंकों को समेकित करके कुछ कहना हो तो कहा जा सकता है कि सम्पादक का मिशनरी (सेवाभावी रूप निरंतर निखरता जा रहा है। इसमें सरकारी काम का दबाव कहीं ध्वनित नहीं होता; अपितु हिन्दी की सेवा और श्रेष्ठ सेवा नज़र आती है।) **— उदय प्रताप सिंह, सारनाथ**

साक्षात्कार का मार्च 2009 अंक। अमृतलाल वेगड़ से विनय त्रिपाठी की बातचीत से शुरू। वेगड़ ख्यातनाम प्रकृति-प्रेमी कलाकार-साहित्यकार। नर्मदा उनके लिए जीवन-रेखा की तरह, मन-प्राण में प्रवाहित। गंगा की तरह कहीं नर्मदा भी वैसे ही प्रदूषित न हो जाय इसकी चिन्ता उन्हें है। प्रकृति के सौन्दर्य को उन्होंने चारों ओर बिखरा हुआ देखा, लाली मेरे लाल की जित देखूँ तित लाल की तरह। उनके अनुसार इस प्राकृतिक सौन्दर्य को देखने की दृष्टि चाहिए। उन्होंने उस सौन्दर्य को अपने भीतर समेट लिया है। वही उनके शब्दों-रंगों में बहते रहता है। विनय त्रिपाठी की उनके साथ बातचीत में यह सब भलीभाँति उजागर हुआ है। ऐसी बातचीत कलाकार-साहित्यकार के मन के द्वार खोलती है। अंक की उपलब्धि है फिर 'तीरे-तीरे नर्मदा' की पीठिका भी। इसी अंक में प्रेमशंकर रघुवंशी द्वारा प्रस्तुत 'अभिनंदन के गवाह : पत्रों के ये सार्थवाह' भी है — सबसे लम्बे पत्राचार को देकर लेखक क्या बताना चाहता है? उत्स केवल इतना ही है कि भाई भवानीप्रसाद का आत्मीय अभिनंदन हुआ, उसकी तैयारी की गई जैसी अन्य समारोहों की होती है, पत्राचार हुआ और अंत में भवानी भाई की महत्त्वपूर्ण अन्त:अनुभूति की अभिव्यक्ति से समारोह सानंद सम्पन्न हुआ। समारोह का मननीय-चिंतनीय पक्ष उतना ही था जो भवानी भाई के अन्तर से नि:सृत हुआ ''मुझे पीड़ा होती है कि मेरी कविता मेरे ही घर में नहीं पढ़ी जाती। तब काहे का मैं बड़ा कवि। बड़े कवि तो तुलसीदास हैं जो घर घर की ज़रूरत बने हुए हैं। जो कविता समाज की साँसों में रच बस जाए, वही तो कविता है। मैं ऐसी ही कविता लिखना तो चाहता हूँ पर लिख नहीं पाता'' और यह भी कि ''विचार जब भावना हो जाय, तब लिखना चाहिए। विचार रच-पच जाएँ, फूटें, तो अच्छा। नई कविता, पुरानी कविता — क्या अर्थ है इन सबका। कोई अर्थ नहीं है और अर्थ है। क्या 'मानस' को पढ़कर उसे पुरानी कविता कहेंगे और उसे नई कविता क्या कहें जिसे कवि खुद नहीं समझ रहा है।'' इतना लम्बा पत्राचार देना अर्थहीन है। कविताएँ और कहानियाँ पत्रिका के कलेवर की आवश्यकता है। कविताओं में श्यामसुंदर घोष की 'हाँका' इस तथ्य पर तीखी चोट है कि सभ्यता के विकास के साथ मनुष्य अधिक बिगड़ा है और उसने प्रकृति को और अधिक बिगाड़ा है। अगर प्रकृति मानव के विरुद्ध विद्रोह कर दे तो...? चंद्रसेन विराट और नरेश शांडिल्य के दोहों ने इस पारम्परिक छोटे छंद में अभिव्यंजना की शक्ति देखी है — बिहारी, रहीम के दोहे कोई यूँ ही अमर नहीं हो गये थे। कई वर्तमान कवि-शायरों ने इस विधा का सफलतापूर्वक निर्वाह किया है। पानी पर संपादकीय सामयिक और सार्थक है। **— एन.एल. खण्डेलवाल, भोपाल**

'साक्षात्कार' 353 मई 2009 अंक प्राप्त हुआ। सर्वप्रथम हमेशा की तरह प्रधान सम्पादक की कलम से 'लघु पत्रिका और पाठक का जनपद' सम्पादकीय पढ़ा, लघु पत्रिका आंदोलन के बारे में बड़ा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रभावी व विचारोत्तेजक आलेख है, परन्तु प्रूफ की अशुद्धियाँ देख मन खिन्न हो गया। अकेले इस सम्पादकीय में दर्जनों गलतियाँ हैं जो कि साक्षात्कार जैसी प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका के लिए अक्षम्य हैं। इसके अलावा अंदर के पृष्ठ भी प्रूफ की अशुद्धियों से भरे पड़े हैं। कई बार एक मात्रा के कम या अधिक हो जाने से पूरी रचना का अर्थ ही बदल जाता है। कई बार पाठक को यह भी सोचना पड़ता है कि लेखक अथवा कवि ने जो लिखा है कहीं वही तो सही नहीं, और मैं ही समझने या पढ़ने में भूल कर रहा हूँ। इस ओर विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है। किसी भी पत्रिका का आवरण बड़ा, महत्त्वपूर्ण होता है, किसी भी पाठक की दृष्टि सर्वप्रथम पत्रिका को हाथ में लेते ही आवरण पृष्ठ पर ही जाती है, यानि आवरण पृष्ठ अर्थपूर्ण मोहक व आकर्षक होना चाहिये, परंतु खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि साक्षात्कार के अधिकांश आवरण अनाकर्षक, आम आदमी की समझ से परे व नीरस होते हैं। मई अंक का आवरण ही देख लें, इसका मुख पृष्ठ हल्का रंगीन, जबकि अंतिम आवरण पृष्ठ अधिक चटख रंग लिए है, जबकि होना इसके उलटा था। यह कैसी कला दृष्टि है। इससे अच्छा तो साहित्यकारों, प्रकृति प्रधानचित्रों, अर्थपूर्ण रेखांकनों से युक्त आवरण पृष्ठ दिए जाएँ तो बेहतर होगा। पत्रिका में अंदर के पृष्ठों की जमावट कुछ ऐसी है कि कई पृष्ठ लगभग पूरे कोरे के कोरे छूटे हुए हैं, जिन पर मात्र 5 से 10 पंक्तियाँ ही छपी हैं। यह कोरे पृष्ठ बड़े अखरते हैं। इन पृष्ठों पर लघुकथाएँ, प्रेरक प्रसंग, अथवा लेख से संबंधित कोई चित्र अथवा रेखांकन देकर पृष्ठ को कोरा छोड़े जाने से बचा जा सकता है। 'उड़ गया उजाड़ से परिन्दा' ओम भारती जी का गीतकार नईम पर श्रद्धांजलि आलेख पड़ा, इस आलेख के ऊपर 'कथा' लिखा गया है जो कि ठीक नहीं है। श्री रंजन सूरिदेव से शत्रुघ्न प्रसाद की बातचीत पसंद आई, इस बातचीत से बहुत कुछ जानने-सीखने को नई बातें मिलीं। 'स्मरण' में पं. विष्णुकांत शास्त्री का आलोचना सिद्धांत, मनोज कुमार सिंह शोधपूर्ण आलेख शास्त्री जी की आलोचना दृष्टि को समझने की नई दिशा देता है। 'हिन्दू इतिहासबोध और रामायण' लेख शंकर शरण जो अज्ञेय की काव्य पंक्तियों से प्रारम्भ होता है। अंदर तक उथल-पुथल मचा देता है। यह लेख हमें चिंतन व चिंता की नवीन दृष्टि देता है, आगे भी ऐसे दिशा बोधक शोध आलेख देते रहें। आशा है पत्रिका की आलोचना को अन्यथा न लेकर सकारात्मक दृष्टि से लेंगे। **— घनश्याम मैथिल 'अमृत', भोपाल**

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

साहित्य अकादमी भोपाल के प्रकाशन

कविता

वृक्ष की शिराओं में (द्वि.सं.) 15-00
प्रमोद त्रिवेदी
नरक को कभी शर्म नहीं आती 15-00
हरीश पाठक
कच्चे घर के लिए 15-00
राजकुमार कुम्भज
मैथिली मंगल 12-00
शुकलाल प्रसाद पाण्डेय
अंगारों की सदियाँ 00-75
गौरीशंकर लहरी
चयनिका 20-00
रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'
खिड़कियों पर लगे कागज 15-00
हरिशंकर अग्रवाल
जारी हैं लेकिन यात्राएँ 15-00
विनोद निगम
सिर्फ आँख भर रोशनी में 40-00
शशि निगम
एक तीली बची रहेगी 35-00
प्रतापराव कदम
जो कुछ भी घट रहा है दुनिया में 30-00
नासिर अहमद सिकंदर
काल चित्र 35-00
प्रयास जोशी
यहाँ इस शहर में 30-00
भानुप्रकाश

नाटक

चिंदी मास्टर 12-00
राजेश जैन

कहानी

उन्नीस साल का लड़का 14-00
शशांक
औपचारिक अन्तःकरण (द्वि.सं.) 12-00
राजेन्द्रकुमार मिश्र
सरेआम 12-00
हरीश पाठक
जंग 40-00
ए. असफल
जुमराती मियाँ 40-00
विनोद मिश्र
जो सहमत हैं सुने 30-00
यशवंत व्यास

भाषण, आलेख, निबन्ध संग्रह

प्रेमचन्द आज (व्याख्यान) 15-00
सं.डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय
भारतीय भाषाओं में कृष्ण काव्य खंड 1 (व्याख्यान) 50-00
सं. डॉ. भगीरथ मिश्र
भारतीय भाषाओं में कृष्ण काव्य खंड 2 (व्याख्यान) 70-00
सं. डॉ. विनयमोहन शर्मा
पानी, पानी, पानी (निबन्ध) 15-00
कमला प्रसाद चौरसिया

आलोचना, अनुसंधान, मूल्यांकन, दर्शन, विवेचन, जीवनी

निरंजनी सम्प्रदाय के हिन्दी कवि 50-00
डॉ. सावित्री शुक्ल
मध्यकालीन हिन्दी साहित्य और तुलसीदास 5-00
डॉ. भगीरथ मिश्र
अनुष्टुप 20-00
पं. सूर्य नारायण व्यास का साहित्य
सं. डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय
अक्षर अनन्य 30-00
सं. अम्बाप्रसाद श्रीवास्तव
भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान 60-00
डॉ. हीरालाल जैन
रीवा राज्य का इतिहास 20-00
पं. गुरूरामप्यारे अग्निहोत्री
मध्यप्रदेश के संगीतज्ञ 100-00
प्यारेलाल श्रीमाल
समय में कविता (रचना समीक्षा) 15-00
सं. प्रभाकर श्रोत्रिय
अन्वय 50-00
सं. प्रभाकर श्रोत्रिय
महाकवि केशव 15-00
डॉ. बृजेश द्विवेदी
भगवान महावीर का बुनियादी चिंतन (21 वाँ सं.) 22-00
डॉ. जयकुमार जलज
पं. बालकृष्ण शर्मा नवीन 15-00
डॉ. प्रेम भारती
इक़बाल विमर्श 150-00
सं. पूर्णचन्द्र रथ
हमारा इक़बाल 60-00
सं. ममनून हसन खाँ
अल्लामा इक़बाल – बच्चों के लिए नज़्में 15-00
सं. फ़ज़ल ताबिश
निगाह 40-00
सं. पूर्णचन्द्र रथ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साक्षात्कार

Sakshatkar

June-July 2009

R.N. 30993/76

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant